पुस्तक 3

प्रह्लाद

नरसिंह त्रयी

केविन मिसल

Table of Contents

कवर
शीर्षक पेज
समर्पण
विषयसूची
लेखक का नोट
जनजातियाँ
अब तक कहानी
प्रस्तावना
अध्याय एक
अध्याय दो
अध्याय तीन
चौथा अध्याय
अध्याय पाँच
अध्याय छह
अध्याय सात
अध्याय आठ
अध्याय नौ
अध्याय दस
अध्याय ग्यारह
अध्याय बारह
अध्याय तेरह
अध्याय चौदह
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय उन्नीस
अध्याय बीस
अध्याय इक्कीस
अध्याय बाईस
अध्याय तेईस
अध्याय चौबीस
अध्याय पच्चीस

अध्याय छब्बीस
अध्याय सत्ताईस
अध्याय अट्ठाईस
अध्याय उनतीस
अध्याय तीस
अध्याय इकत्तीस
अध्याय बत्तीस
अध्याय तैंतीस
आभार
किताब के बारे में
लेखक के बारे में
कॉपीराइट

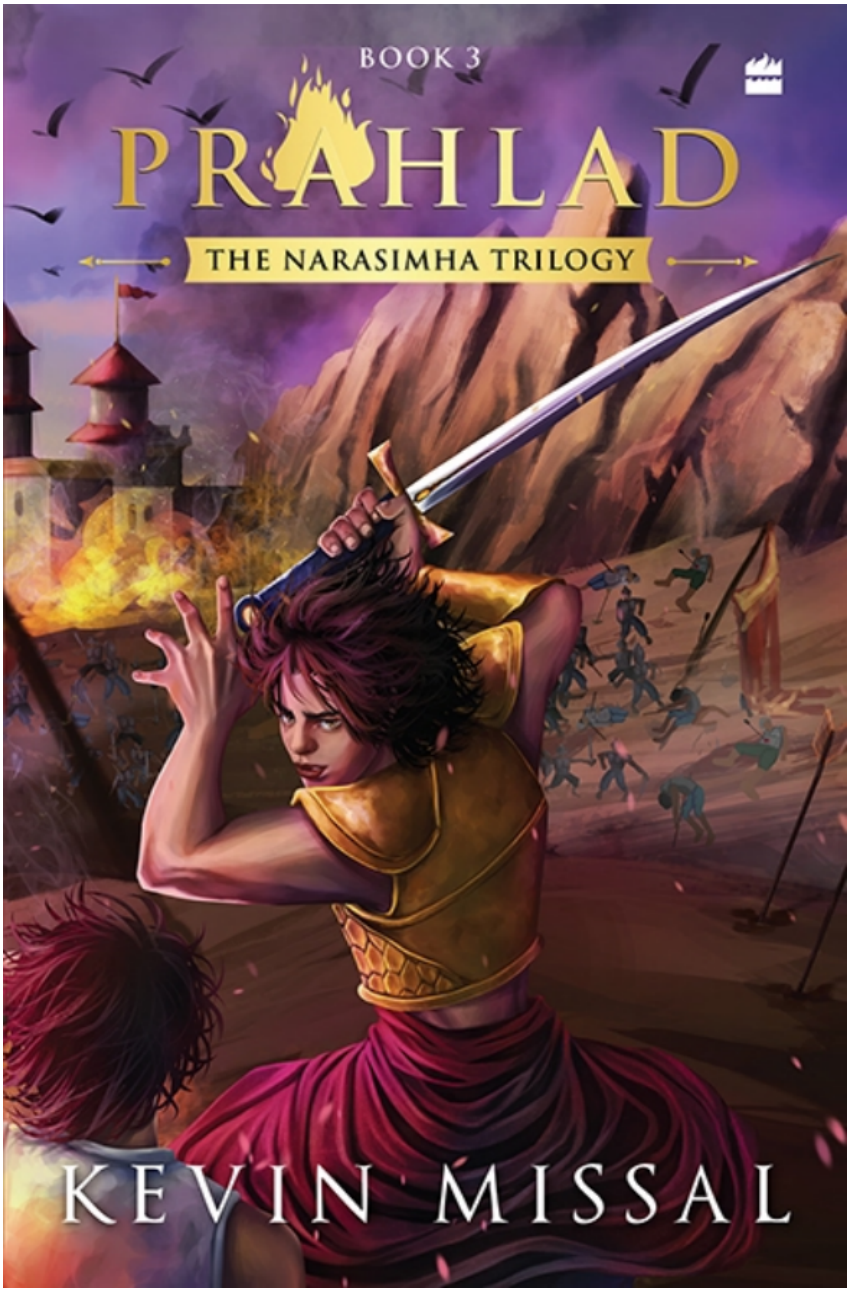
BOOK 3
PRAHLAD
THE NARASIMHA TRILOGY
KEVIN MISSAL

BOOK 3

PRAHLAD

THE NARASIMHA TRILOGY

KEVIN MISSAL

HarperCollins *Publishers* India

मेरे उन धैर्यवान पाठकों के लिए जिन्होंने इतना लंबा इंतजार किया। एक खूबसूरत श्रृंखला के समापन के मामले में यह पुस्तक मेरी हर उम्मीद पर खरी उतरती है।

अंतर्वस्तु

लेखक का नोट
जनजातियाँ
अब तक कहानी
प्रस्तावना
अध्याय एक
अध्याय दो
अध्याय तीन
चौथा अध्याय
अध्याय पाँच
अध्याय छह
अध्याय सात
अध्याय आठ
अध्याय नौ
अध्याय दस
अध्याय ग्यारह
अध्याय बारह
अध्याय तेरह
अध्याय चौदह
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय उन्नीस
अध्याय बीस
अध्याय इक्कीस
अध्याय बाईस
अध्याय तेईस
अध्याय चौबीस
अध्याय पच्चीस
अध्याय छब्बीस
अध्याय सत्ताईस
अध्याय अट्ठाईस
अध्याय उनतीस
अध्याय तीस

अध्याय इकत्तीस
अध्याय बत्तीस
अध्याय तैंतीस
आभार
किताब के बारे में
लेखक के बारे में
कॉपीराइट

लेखक का नोट

आपको सूचित किया जाता है कि यह पूरी तरह से काल्पनिक रचना है। इसमें विभिन्न स्रोतों से विचार और विषय लिए गए हैं और इन्हें मिलाकर एक व्यापक कहानी बनाई गई है। यह मूल ग्रंथों में वर्णित घटनाओं का सही क्रम बिल्कुल नहीं है। कृपया इसे मनोरंजन के उद्देश्य से पढ़ें, शिक्षा के उद्देश्य से नहीं।

जनजातियाँ

देवता

देव, इल्लावर्ती के उत्तर में स्थित स्वर्ग द्वीप से आए विदेशी हैं। उन्होंने देश के उत्तरी भाग पर कब्ज़ा कर लिया है और प्रमुख शहरों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया है। उनके शासक का नाम इंद्र है। वे अग्नि, जल और हिम जैसे प्रकृति के विभिन्न तत्वों की पूजा करते हैं। उनकी आयु लंबी होती है - दो से तीन सौ वर्ष। वे अत्यंत गोरे हैं और अक्सर सफेद रंग से जुड़े होते हैं। वे सोमास के निर्माता हैं, जो स्वर्ग में पाए जाने वाले सोमालिया पौधों से प्राप्त एक नीला औषधीय द्रव है। वे धर्म के साथ-साथ त्रिदेव - विष्णु, महादेव और ब्रह्मा में भी विश्वास रखते हैं।

असुरों

असुर पाताल द्वीप के विदेशी हैं, जो इल्लावर्ती के पूर्व में, काला सागर के पार स्थित है। वे भूरे रंग की त्वचा और सुनहरी आँखों वाले हैं और देवताओं की तरह तत्वों की पूजा नहीं करते, बल्कि शक्ति और वीरता जैसे गुणों की पूजा करते हैं। वे इल्लावर्ती के दक्षिणी क्षेत्रों पर शासन करते हैं और उनकी राजधानी कश्यपुरी है। उन्हें अक्सर बुराई से जोड़ा जाता है क्योंकि उनका कोई धर्म नहीं है और वे किसी धर्म में विश्वास नहीं करते। वे सोमा का सेवन नहीं करते। उनका कवच मजबूत होता है और वे युद्ध में कुशल होते हैं।

दानवस

दानवों को पौलोमा और कालकेय में विभाजित किया गया है। पौलोमा बौने विशालकाय प्राणी होते हैं, जिनकी ऊंचाई अक्सर दस से पंद्रह फीट तक होती है, जबकि कालकेय बीस फीट से अधिक ऊंचे होते हैं। वे विशेष रूप से उनके लिए निर्मित विशाल मीनारों में रहते हैं। वे बड़ी मात्रा में भोजन और पानी का सेवन करते हैं। वे ऐतिहासिक रूप से असुरों के रक्त संबंधी हैं और हिरण्यपुर में रहते हैं। निरंतर नींद और भोजन की आवश्यकता के अलावा, उनके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है।

सिम्हास

इलवर्ती में प्रचलित पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु ने बुराई के विरुद्ध अपने पहले युद्ध में सिंह वंश की उत्पत्ति की थी। सिंह वंश आधा शेर और आधा मनुष्य है। वे मृत शेर की खाल धारण करते हैं। वे भगवान विष्णु के लुप्त धार्मिक नगर वैकुंठ में निवास करते हैं। चूंकि देवता धर्म के पक्ष में हैं, इसलिए सिंह वंश देवताओं की ओर से युद्ध लड़ते हैं। वे अधर्म से संबंधित मानी जाने वाली प्रथाओं के विरुद्ध हैं। उनके पंजे मजबूत होते हैं और उनकी त्वचा पीली होती है। उनकी दाढ़ी लाल रंग की होती है। इस युग का अवतार सिंह वंश से ही होगा।

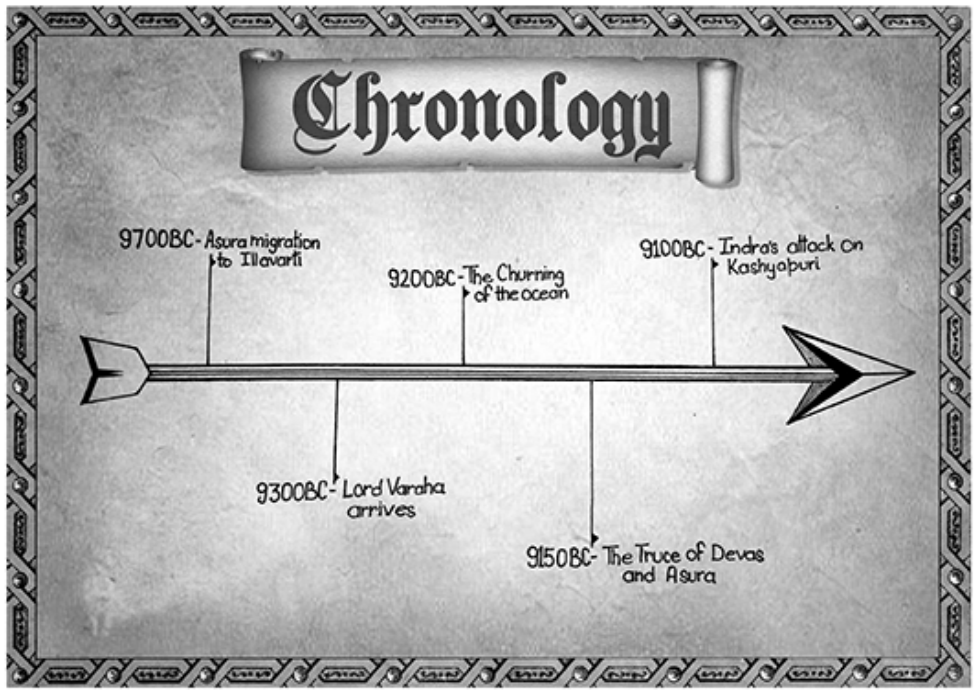
Chronology
9700BC - Asura migration to Illavarti
9200BC - The Churning of the ocean
9100BC - Indra's attack on Kashyapuri
9300BC - Lord Varaha arrives
9150BC - The Truce of Devas and Asura

अब तक कहानी

चौदह वर्ष पूर्व, असुरों और देवों के बीच की संधि टूट गई, जिसके परिणामस्वरूप असुर रानी की मृत्यु हो गई।

एक दशक से अधिक समय बीत चुका है। कश्यपपुरी में आक्रमण के सूत्रधार लगभग गायब हो चुके हैं।

जैसे ही हिरण्यकश्यप देवताओं के खिलाफ अपने प्रतिशोध की योजना बनाता है, वह अपने दिवंगत भाई के पदचिन्हों पर चलने का विकल्प चुनता है, और सिंहासन अपने ज्येष्ठ पुत्र अनुह्लद के बजाय अपने अनुभवहीन पंद्रह वर्षीय पुत्र प्रहलाद को सौंप देता है।

सिंह वंश के एक अनुभवी योद्धा नरसिम्हा अपने अतीत से व्याकुल हैं और मानव वंश के साथ छिपकर रहने का विकल्प चुनते हैं। लेकिन जब उनका भेद खुल जाता है, तो उन्हें हिरण्यकश्यप के भतीजे अंधक के विरुद्ध तीसरे शिव, भैरव, का साथ देने के लिए प्रेरित किया जाता है। पहले आक्रमण की रात, वे अंधक को सफलतापूर्वक परास्त कर देते हैं।

अंधका के नरसिम्हा के हमले से बच जाने की खबर सुनकर भैरव को गहरा आश्चर्य हुआ। भैरव इस बात पर विचार कर रहे थे कि क्या उन्हें अपने शत्रु के विरुद्ध पशुपतास्त्र नामक परमाणु हथियार का प्रयोग करना चाहिए, वहीं नरसिम्हा सोच रहे थे कि क्या इन लोगों की सहायता करने का निर्णय उन्हें इस युग का धर्म बना देगा। यह भविष्यवाणी की गई थी कि इस युग का धर्म समय से पहले ही समाप्त हो जाएगा और इस संसार का भाग्य अधर्म के हाथों में आ जाएगा।

अपने भाई के शोध का अध्ययन करते हुए हिरण्यकश्यप को पता चलता है कि वे ब्रह्मा के वंशज हैं और इसलिए अवतार मोहिनी के सार से निर्मित अजेय कवच के उत्तराधिकारी हैं। वह ब्रह्मा की तीन परीक्षाओं से गुजरकर उस अजेय कवच को पुनः प्राप्त करना चाहता है और फिर देवताओं को परास्त करना चाहता है।

कार्यवाहक राजा प्रहलाद अपने राज्य में गुप्त रूप से सक्रिय एक उग्रवादी संगठन, विष्णुसेना की जांच करते हैं। लेकिन जब उन्हें पता चलता है कि संगठन का नेता नारद है, जो एक मानव कुलीन और उनकी दिवंगत माता का विश्वासपात्र है, तो वे यह सोचने लगते हैं कि क्या यह संगठन वास्तव में उतना ही दुष्ट है जितना उनकी मौसी होलिका ने बताया था। वे यह भी सोचने लगते हैं कि क्या धार्मिक आस्था को बढ़ावा देने का संगठन का उद्देश्य अंततः असुर व्यवस्था में सुधार लाएगा।

पशुपतास्त्र के दुष्परिणाम देखकर भयभीत नरसिम्हा उस शस्त्र को नष्ट कर देते हैं और अंधक से शांति स्थापित करने का सुझाव देते हैं, जिससे भैरव बेहद नाराज हो जाते हैं। अपने स्वामियों का सम्मान प्राप्त करने और अपनी देखभाल करने वाले सिंहों में से एक के प्रति प्रेम विकसित करने के बाद, भैरव को लगता है कि अब उन्हें छिपने की जरूरत नहीं है और वे अवतार बने बिना ही शांति प्राप्त कर सकते हैं। जब भैरव अपने पुत्र को न बचा पाने के अपराधबोध को व्यक्त करते हैं, तो अंधक उन्हें शांति संधि पर बातचीत करने के लिए बुलाता है, इस शर्त पर कि वे पशुपतास्त्र लेकर आएं।

दोनों पक्ष शांति स्थापित करने के लिए मिलते हैं: एक ओर भैरव की सेना और सिंह वंश, और

दूसरी ओर असुर राजा के भाई अनुह्रद के साथ अंधका की सेना। अंधका उनकी पोल खोल देता है और खुलासा करता है कि वह भैरव का खोया हुआ पुत्र है। भैरव भावुक होकर अपने पुत्र को गले लगा लेते हैं, लेकिन पुत्र उन्हें छुरा घोंप देता है और कहता है कि वह अब वह बेचारा बच्चा नहीं, बल्कि अंधा राजकुमार अंधका है। क्रोधित नरसिंह उन पर युद्ध की घोषणा कर देते हैं और अनजाने में अनुह्रद को मार देते हैं। अनुह्रद बताता है कि उसने असुर साम्राज्य के विनाश के लिए अंधका का साथ इसलिए दिया था क्योंकि उसे लगा था कि इससे उसके मन में पनपी प्रतिशोध की भावना शांत हो जाएगी, क्योंकि उसके पिता ने उसकी प्रेमिका की हत्या कर दी थी। लेकिन उसे एहसास हुआ कि इससे उसे मृत्यु में भी अकेलापन ही मिला। वह बताता है कि अंधका के मृत्यु से बच निकलने का एक कारण है। वह दुविधा में फंसे नरसिम्हा से, जिसे लगता है कि उसने एक और निर्दोष को मार डाला है, अपने छोटे भाई की रक्षा करने के लिए कहता है, जो उससे कहीं अधिक गुणी है।

क्रोधित नरसिम्हा भागते हुए अंधका का पीछा करते हैं और उसके सभी प्रतिरूपों का वध कर देते हैं। शिव के त्रिशूल को असली अंधका के गले में घोंपते हुए, वे दांत पीसते हुए अवतार की भूमिका को स्वीकार करते हैं, चाहे कुछ भी हो जाए। वे अपनी प्रेमिका चेनचेन से कहते हैं कि अपने यौवन काल में निर्दोषों की हत्या और हिरण्यकश्यप को प्रतिशोध के मार्ग पर ले जाने के लिए वे स्वयं जिम्मेदार थे। और अब उन्होंने अपने एक और रिश्तेदार की जान ले ली है। वे कहते हैं कि अब उनका एकमात्र उद्धार कश्यपुरी के वर्तमान शासक प्रहलाद में ही है।

जैसे ही हिरण्यकश्यप किसी तरह तीनों परीक्षाएं पूरी कर लेता है, अग्नि की सेना उस पर घात लगाकर हमला कर देती है। हालांकि, उनका हमला बेअसर साबित होता है, क्योंकि अब अजेय हो चुके हिरण्यकश्यप उन सभी को शीघ्र ही पराजित कर देते हैं और अग्नि के देवता को घातक चोटें पहुंचाते हैं। अपनी अंतिम सांस लेते हुए अग्नि स्वीकार करते हैं कि भले ही उनके भाई इंद्र उनकी पत्नी की मृत्यु के लिए जिम्मेदार रहे हों, लेकिन उस घातक हमले को अंजाम देने वाला कोई और था। वह कोई और नहीं बल्कि नरसिंह नाम का एक सिंह था।

होलिका को अपने इस संदेह की पुष्टि हो जाती है कि प्रहलाद शायद उसी दुष्ट संगठन से मिला हुआ है जिसे नष्ट करने की उसने प्रतिज्ञा की थी। विष्णुसेना द्वारा लगाई गई आग में अपनी दत्तक पुत्री को खोने के बाद, वह प्रहलाद का सामना करती है, जिसकी इस गठबंधन से एकमात्र आशा असुरों को प्रकाश में लाना थी। वह नारद की हत्या कर देती है और प्रहलाद को सार्वजनिक रूप से मृत्युदंड देने का आदेश देती है। वह उसे बताती है कि अनुह्रद युद्ध में मारा गया है, जिससे युवा शासक को गहरा दुःख होता है। वह कहती है कि यदि उसके पिता को उसके विश्वासघात का पता चलता, तो वे भी मान लेते कि मृत्यु ही उसके लिए उचित दंड है। चूंकि प्रहलाद विष्णु में अपनी आस्था नहीं छोड़ता, इसलिए उसे चट्टानों से बांधकर उसके साथियों के उपहास के बीच पानी में डुबो दिया जाता है।

बाद में पता चलता है कि अंधका कश्यपुरी के पास पहुँचते ही एक बार फिर जीवित बच गया है।

जलमग्न अवस्था में प्रहलाद अपनी प्राण त्यागने ही वाला था कि दो परिचित हाथों ने उसे खींच लिया। बेहोश पड़ा कार्यवाहक राजा बाद में विद्रोही सेना के गांव विष्णुसेना में धृति के साथ जाग

उठा। नेतृत्व की कमी के कारण विद्रोही खेमा अपनी आगे की रणनीति तय करने में असमंजस में था, तभी प्रहलाद को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि एक संदिग्ध शत्रु ने उनसे गठबंधन करने का प्रस्ताव रखा है—सोनीतपुर का अंधा राजकुमार और उसका चचेरा भाई अंधका।

इसी बीच, ब्रह्मास्त्र से लैस हिरण्यकश्यप अपने राज्य में बचे हुए विष्णुसेना अनुयायियों का सफाया कर रहा है। वह अपने पुत्र को उनके प्रभाव से मुक्त कराने के लिए दृढ़ संकल्पित है। अपनी बहन होलिका के साथ मिलकर, अहंकारी राजा हर किसी का वध कर देता है, चाहे वह पुरुष हो, स्त्री हो या बच्चा। होलिका उसे भयभीत निगाहों से देखती रहती है, जबकि वह भगवान विष्णु को रक्षक मानने के विचार का उपहास उड़ाता है और धीरे-धीरे एक नन्हे बच्चे का गला घोंटकर उसकी हत्या कर देता है।

कश्यपुरी जाते समय नरसिम्हा की मुलाकात ऋषि भारद्वाज और उनके परिवार से होती है, जिन पर तीन पिशाच एक विशेष पक्षी-पुरुष की तलाश में हमला कर रहे होते हैं। नरसिम्हा उन्हें शीघ्र ही परास्त कर देते हैं और फिर उन्हें पता चलता है कि उस पक्षी-पुरुष को विष दिया गया था और वह इस समय ऋषि की शरण में है। बाद में पता चलता है कि यह भगोड़ा गरुड़ है, जो सुपर्णों का मुखिया और नरसिम्हा का पुराना साथी है। नरसिम्हा उसका उपचार करते समय ऋषि को बताते हैं कि वे दोनों एक समय इंद्र के अधीन सेवा करते थे, विशेष रूप से देवताओं द्वारा भड़काए गए सुपर्णों और नागों के बीच कुख्यात शत्रुता के बाद। देवता सुपर्णों को उनके उन्नत उड़ने वाले यंत्रों, जिन्हें विमान कहा जाता है, के कारण एक हवाई खतरा मानते थे और उन्होंने उनके अमृत, जो उनका मुख्य ईंधन स्रोत था, की आपूर्ति सीमित कर दी थी। उनकी बातचीत तब अधूरी रह जाती है जब बेहोश गरुड़ उनके हाथ को काट लेता है और विष नरसिम्हा को लग जाता है। जैसे ही सिंह चिकित्सक बेहोश होते हैं, गरुड़ को होश आ जाता है।

कश्यपपुरी पर आक्रमण की आशंका को भांपते हुए, असुर राजा हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन के साथ मिलकर वरुण के निवास और देव शस्त्र एवं सोमा के भंडार नागलोक पर पूर्व-आक्रमण की योजना बनाई। हालांकि, मोर्चे पर सिंह सैनिकों के अचानक आगमन से, वह ब्रह्मा की भविष्यवाणी के भय से भयभीत होकर, अपने ब्रह्मास्त्र के बिना ही आगे बढ़ गया - कि एक सिंह ही उसका अंत करेगा। उसने पूरी सेना का नरसंहार कर दिया और होलिका को प्रहलाद को खोजने का कार्य सौंपकर स्वयं नागलोक पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ गया।

जब नरसिम्हा को होश आता है, तो वह गरुड़ की स्थिति के बारे में पूछता है। गरुड़ बताता है कि यह एक असफल तख्तापलट का परिणाम था, जिसके कारण उसकी माता को बंदी बना लिया गया और सुपर्ण शिविर में घुसपैठ हो गई। वह यह भी बताता है कि उनके पास अमृत के भंडार, जो केवल नागलोक में मौजूद हैं, को खोजने के लिए एक सप्ताह से भी कम समय है। जब वे समुद्र मार्ग से सुपर्ण राज्य के लिए रवाना होने की योजना बनाते हैं, तो नरसिम्हा सोचता है कि क्या वह असुर राजा से प्रहलाद की रक्षा करने की अपनी शपथ का उल्लंघन कर रहा है।

इसी बीच, एक रहस्यमय व्यक्ति विष्णुसेना शिविर की ओर बढ़ता है, जिसका नेतृत्व अब सबसे वरिष्ठ सैनिक असमंज कर रहा है। नए नेतृत्व पर संदेह करते हुए, प्रहलाद का सामना अंधका से होता है, जो अनुह्रद की मृत्यु की खबर देता है। हत्यारे की पहचान के बारे में पूछे जाने पर, अंधका

अरुचि से अनुह्रद की मृत्यु को एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना बताता है और इसके बजाय, असुर साम्राज्य को उखाड़ फेंकने की अपनी योजना बताता है - वित्त मंत्री शांड का अपहरण करके और शहर के खजाने को लूटकर।

जब नरसिम्हा की प्रेमिका चेनचेन घायलों का इलाज कर रही थी, तभी अचानक भगवान इंद्र उनसे मिलने आते हैं और बताते हैं कि अंधका बच गया है और भाग रहा है। यह महसूस करते हुए कि उसकी मुलाकात नरसिम्हा से फिर हो सकती है, वह हाल ही में विधवा हुई पार्वती के साथ मातृकाओं के समूह को खोजने निकल पड़ती है, जो इंद्र के शासनकाल में गठित महिला भाड़े की सैनिकों का एक समूह है। चेनचेन द्वारा मातृका बनने की इच्छा व्यक्त करने पर, पार्वती इस यात्रा का कारण बताती हैं - उनके पुत्र स्कंद के बारे में एक भविष्यवाणी, जिसमें कहा गया है कि वह सात मातृकाओं की सहायता से महान सूर्योदय लाएगा। बाकी मातृकाओं से मिलने के बाद, मानव चिकित्सक को मृत्यु की देवी नृति से संपर्क करके स्कंद का पता लगाने का कार्य सौंपा जाता है। वह अपने अतीत के राक्षसों पर विजय प्राप्त करती है और परीक्षा उत्तीर्ण करती है, लेकिन उसे पता चलता है कि असली स्कंद एक असुर का पुत्र था और वर्तमान में विष्णुसेना के साथ है। बाद में वह मातृकाओं के साथ फिर से जुड़ जाती है जो स्कंद को खोजने का संकल्प लेती हैं।

नागलोक की सीमा पर, भगवान इंद्र के पुत्र जयंत के नेतृत्व में नागों ने नरसिम्हा और गरुड़ दोनों को पकड़ लिया। सलाखों के पीछे, उनसे जल्द ही देव राजकुमार मिलने आता है और बताता है कि गरुड़ की माता की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी और वह उनकी अस्थियों को पैरों से रौंद देता है। प्रतिशोध में, गरुड़ भागते हुए देव का गलियों में पीछा करता है और उसे मौत के घाट उतार देता है। औषधि की खोज में सोमगढ़ जाते समय, नरसिम्हा अपने धर्म को छोड़ने से इनकार कर देता है और गरुड़ को नागरिकों और नाग रक्षकों की सहायता के लिए पीछे छोड़ देता है ताकि वे असुर सैनिकों का मुकाबला कर सकें।

लगभग उसी समय, हिरण्यकश्यप नागलोक में जहाजों के एक बेड़े को चीरते हुए सिंहासन कक्ष में अपने विश्वासघाती चचेरे भाई वरुण का सामना करने के लिए पहुँचता है। बातचीत के तौर पर, वरुण उसे बंदी नरसिंह को सौंपने का प्रस्ताव देता है ताकि वह अपना बदला ले सके। असुर राजा नागलोक पर युद्ध की घोषणा करके वरुण को घातक रूप से घायल कर देता है। वह बाहर निकलता है, तभी उसे बंदरगाह पर नरसिंह मिलता है। दिव्य शस्त्रों से लैस होकर, दोनों के बीच युद्ध होता है जिसमें असुर राजा सिंह पर विजय प्राप्त करता है। वह नरसिंह को जंजीरों में बांध देता है और उसी स्थान पर उसे मृत्युदंड देने की कसम खाता है जहाँ उसकी पत्नी ने अंतिम सांस ली थी।

दूसरी ओर, होलिका को शांड के अपहरण की योजना का पता चल जाता है और वह उनका पीछा करने वालों के लिए जाल बिछाती है। धृति, प्रहलाद और असमंज जब शांड को पकड़ लेते हैं, तो होलिका उनका पीछा करती है, लेकिन वे अपने लक्ष्य के साथ भागने में सफल हो जाते हैं। विष्णुसेना के नेता शांड से पूछताछ करने के बाद कश्यपुरी के खजाने से सिक्के चुराने की योजना बना रहे होते हैं, तभी होलिका को विष्णुसेना के एक मुखबिर से विद्रोहियों की योजनाओं के बारे में एक पत्र मिलता है। अनजान विष्णुसेना जब सीवर के रास्ते महल में घुसते हैं, तो होलिका के आदमियों द्वारा उन्हें पकड़ लिया जाता है और प्रहलाद को बंदी बना लिया जाता है। पता चलता है

कि मुखबिर अंधा राजकुमार अंधक है।

जब नरसिम्हा को कारागार में डाल दिया जाता है, तो वे सोचने लगते हैं कि क्या वे सचमुच अवतार बन सकते हैं। बगल की कोठरी में बंद प्रहलाद, असुर राजा द्वारा बुलाए जाने से पहले, उन्हें विष्णु अवतार की भूमिका समझने में मदद करता है। होलिका, प्रहलाद की डायरी पढ़ने के बाद अपने कार्यों पर संदेह करने लगती है और उसके बारे में अपने निर्णय पर पुनर्विचार करती है। वहीं, व्याकुल हिरण्यकश्यप देवलोक पर अपना आक्रमण स्थगित कर देता है और अपने पुत्र का सामना करने का निर्णय लेता है। बार-बार विनती करने के बावजूद, प्रहलाद अपने पिता के शासन को राज्य पर कलंक बताने से इनकार कर देता है और उन्हें कड़वाहट और पीड़ा में डूबा हुआ व्यक्ति कहकर अपमानित करता है। हताश होकर, हिरण्यकश्यप उन्हें सार्वजनिक रूप से फांसी की सजा सुना देता है।

हालांकि, अंधक द्वारा मुक्त किए गए नरसिम्हा, प्रहलाद को हाथियों द्वारा कुचले जाने से बचाते हैं और राजकुमार को साथ लेकर कश्यपुरी की गलियों में दौड़ते हुए अंततः नदी में छलांग लगा देते हैं। नज़रों से ओझल होकर, प्रहलाद को सिंह की छाती पर श्रीवत्स चिन्ह चमकता हुआ दिखाई देता है, और तभी सिंह उनसे कहते हैं कि इस युग का अवतार व्यवस्था नहीं, बल्कि केवल अराजकता लाएगा। उन्हें अपने अतीत में भगवान रुद्र के साथ हुई एक बातचीत याद आती है, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था कि इस युग में धर्म अधर्म के हाथों पराजित होगा, और इसलिए उन्हें हर कीमत पर अवतार बनने से बचना चाहिए। जब दोनों चुपके से विष्णुसेना शिविर में प्रवेश करते हैं, तो वे मातृकाओं के आगमन को देखते हैं, और उनके साथ चेनचेन भी होती है, जो नम्रता से नरसिम्हा को गले लगा लेती है। नरसिम्हा अभी भी अवतार बनने के परिणामों के बारे में सोच रहे होते हैं, चेनचेन उनकी चिंताओं को यह कहकर शांत करती है कि उन्हें अपने भाग्य को स्वीकार करना चाहिए। जब दोनों पक्ष अंधका पर कब्जा करने के संबंध में विचारों का आदान-प्रदान कर रहे थे, तभी असुर साम्राज्य की ओर से अचानक एक शांति संधि का प्रस्ताव आया, जिसमें उनसे लाख के घर में समझौते पर हस्ताक्षर करने का अनुरोध किया गया था।

मातृकाओं और नरसिम्हा द्वारा असली अंधक को पकड़ने के लिए एक छलावा रचने के दौरान, असमंज का दल तय स्थान पर पहुँचता है, जहाँ उन्हें एक अजीब से वस्त्र में लिपटी हुई एक स्त्री मिलती है—होलिका। असमंज असुर राजा से इस्तीफ़ा देने की माँग करता है, जिसे होलिका अस्वीकार कर देती है। फिर वह मूर्ति पूजा को पुनर्जीवित करने और कश्यपुरि के मूल नाम मानवपुर को पुनः स्थापित करने का प्रस्ताव रखता है, जिसे भी अस्वीकार कर दिया जाता है। इसके बाद असमंज को घर से बाहर ले जाया जाता है ताकि चाची और भतीजा आपस में बात कर सकें। होलिका इस बात पर खेद व्यक्त करती है कि वह उसकी बेहतर मार्गदर्शक बन सकती थी, और उसे अपना अग्निरोधी वस्त्र देते हुए समझाती है कि यह सब एक चाल थी। उसके प्रति न्याय की भावना से प्रेरित होकर, वह ब्रह्मास्त्र की कमज़ोरी का खुलासा करती है। अचानक, घर आग की लपटों में घिर जाता है, और होलिका मलबे के नीचे दब जाती है। लड़खड़ाते हुए बाहर निकलकर प्रहलाद और धृति बच निकलते हैं। दूसरी ओर, अंधका को फिर से पकड़ने में असफल रहने पर, पराजित मातृकाएँ और नरसिम्हा शिविर में लौट आते हैं। चेनचेन नरसिम्हा के घावों की देखभाल करता है

और उनसे वादा लेता है कि वे अपने क्रोध को खुद पर हावी नहीं होने देंगे, जिसके बाद वे उनके साथ प्रेममय रात्रि बिताते हैं। वे साथ रहने का संकल्प लेते हैं।

आग लगने की घटना के बाद, कश्यपपुरी के मानव नागरिकों में तनाव बढ़ जाता है और वे अपने राजा की मृत्यु की कामना करते हैं। हिरण्यकश्यप नरसिम्हा को दोषी ठहराने का फैसला करता है और फिर अपनी प्रजा की देखभाल करने का निश्चय करता है। चूंकि वह एक और रक्तपात बर्दाश्त नहीं कर सकता, इसलिए वह अनजान विष्णुसेना पर हमला कर देता है।

इंद्र की सूचना पर कार्रवाई करते हुए, मातृकाओं ने अंधका का पीछा करते हुए यक्षलोक जाने का निर्णय लिया। तभी, असुर सेना ने विद्रोहियों पर हमला कर दिया, लेकिन गरुड़ के नेतृत्व में सुपरणों ने उनके प्रयासों को विफल कर दिया। इस कलह को हमेशा के लिए समाप्त करने का संकल्प लेते हुए, प्रहलाद ने दोतरफा हमले का प्रस्ताव रखा—वह शहर के द्वार पर आत्मसमर्पण कर देगा जबकि नरसिम्हा नालियों के रास्ते चुपके से अंदर घुस जाएगा। साथ ही, मातृकाएं अंधका के रथ का पीछा करेंगी।

जब तक चेनचेन यह बताती है कि वह नरसिम्हा के बच्चे को गर्भ में धारण किए हुए है, मातृकाएँ रथ तक पहुँचने में कामयाब हो जाती हैं, लेकिन वहाँ वे इंद्र और उनकी मानव सेना के साथ पहुँच जाती हैं। इंद्र बताते हैं कि उन्होंने बदला लेने के लिए उन्हें इस तरह से बुलाया था और उन्होंने अंधका को भागने में पहले ही मदद कर दी है। चूंकि नरसिम्हा ने उनके पुत्र की हत्या की थी, इसलिए इंद्र के लिए नरसिम्हा के बराबर किसी को अपना बनाना उचित ही था। कोई गवाह न छोड़ने की इच्छा से, इंद्र मातृकाओं पर हमला कर देते हैं। तीरों से छलनी होने के बावजूद, मातृकाएँ बच जाती हैं; सिवाय चेनचेन के। आँसू भरी पार्वती अंधका के साथ अपने संबंध को त्याग देती हैं और मातृकाओं के नए मिशन की घोषणा करती हैं—उसे ढूँढ़कर मार डालना।

प्रहलाद को जनता के जयजयकार के बीच सड़कों पर घुमाया जा रहा था, तभी उसने अपने पिता के सिंहासन पर दावे को चुनौती दी और घोषणा की कि भगवान विष्णु सर्वत्र विद्यमान हैं। विक्षिप्त हिरण्यकश्यप ने महल के सभी स्तंभों को ध्वस्त कर दिया, जबकि नरसिम्हा ब्रह्मास्त्र की कमजोरी की सभी शर्तों को पूरा करने के लिए सही समय और स्थान की प्रतीक्षा कर रहे थे। अवसर पाकर, वे प्रकट हुए और असुर राजा के शरीर को चीरते हुए अत्याचारी असुर वंश का अंत कर दिया।

दुखी नरसिम्हा चेनचेन की चिता को देखता है और शांतिप्रिय व्यक्ति बनने के बजाय हिंसक हत्यारे के रूप में अपना भाग्य स्वीकार करने का निश्चय करता है। सत्ता के शून्य में डूबे शहर की स्थिति का जायजा लेते हुए, वह अप्रत्याशित रूप से प्रहलाद से घोषणा करता है कि वह, नरसिम्हा, कश्यपुरी का सिंहासन ग्रहण करेगा और देवताओं के आगामी आक्रमण का अंत करेगा।

प्रस्तावना

कुछ साल पहले...

उत्तर की हवाओं में निराशा की एक बेलगाम भावना छाई हुई थी।

उम्र और भयावह अनुभवों से क्षीण हो चुका एक व्यक्ति किनारे पर अपनी छड़ी के सहारे झुका खड़ा था। उसके पैरों की उंगलियों के बीच जमती बर्फ उसकी हड्डियों तक को कंपा रही थी। वह व्यक्ति पीला पड़ गया था, मानो धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से अपने अंतिम क्षण की ओर बढ़ रहा हो। ठंड के बावजूद, उसका माथा अजीब तरह से गर्म महसूस हो रहा था। उसने अपनी छड़ी को ऐसे पकड़ रखा था मानो वह उसके जीवन का आखिरी सहारा हो।

उसके पीछे, उसके आदमी, दो भरोसेमंद रक्षक जिनके पास पट्टे से बंधे भेड़िये थे, अपने दस्ताने पहने हाथों को आपस में रगड़ रहे थे और उन पर फूंक मार रहे थे, उनकी गर्म सांस उनके सामने धुंध की तरह फैल रही थी।

उस व्यक्ति के सामने, उत्तर का पथरीला जल तेजी से बह रहा था और संगमरमर की चट्टानों से टकरा रहा था जो मनुष्यों के बीच देवताओं की तरह खड़ी थीं।

और इन सबमें उसे अपशगुन दिखाई दिया।

वह इंतज़ार करता रहा। उसने बहुत लंबे समय तक इंतज़ार किया। एक ऐसे मुलाक़ात के लिए जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उसे करनी पड़ेगी। लेकिन उसने ऐसा उन कारणों से किया जिन्हें वह सबसे अच्छी तरह जानता था; उसे किसी को बताना ही था...।

उन्होंने अपना वचन कायम रखा।

पहले जहाज के पतवार पर वह व्यक्ति खड़ा था जिससे वह मिलने की प्रतीक्षा कर रहा था। लगभग सात फीट लंबा, वह विशालकाय था, और उसके दो लंबे सींगों वाला सुनहरा हेलमेट और चमकदार पीली कवच उसे और भी बड़ा दिखा रही थी। उसकी निगाहें घातक थीं; उसकी निगाहें भेदक, क्रूर और भयावह थीं। उसके विशाल कंधों पर फर का कोट लिपटा हुआ था और उसका भारी लबादा हवा में लहरा रहा था। उसकी बड़ी कमरबंद पर तलवार के लंबे टुकड़े म्यान में रखे हुए थे।

जैसे ही नाव किनारे के पास पहुंची, उसने बिना सोचे समझे उससे छलांग लगा दी।

वह कश्यपपुरी के राजा के अलावा और कोई नहीं था।

हिरण्यकश्यप.

जैसे-जैसे उनके चारों ओर कोहरा घना होता गया, दोनों विरोधी एक-दूसरे को निहारते हुए, निगाहों में आँखें गड़ाए खड़े रहे। छड़ी वाले व्यक्ति ने कभी नहीं सोचा था कि वह दिन भी आएगा जब उसका सामना अपने कट्टर शत्रु से होगा। वह धर्म के पक्ष में था और हिरण्यकश्यप अधर्म का प्रतीक था, लेकिन वह मजबूरी में यह कदम उठा रहा था।

'तुम थके हुए लग रहे हो,' हिरण्यकश्यप ने मुस्कुराते हुए कहा, जबकि उसके आदमी नाव को किनारे पर सुरक्षित कर रहे थे। 'मुझे खुशी है कि यह कोई अचानक हमला नहीं था।'

मैंने तुमसे कहा था कि ऐसा नहीं होगा।

'साफ़ है, तुम अपनी बात के पक्के हो। ईमानदार। मेरे विपरीत।' हिरण्यकश्यप मुस्कुराया। 'तो बताओ, तुमने मुझे इतनी दूर उत्तर में क्यों बुलाया है? मेरी हड्डियाँ और अंडकोष जमा देने के लिए?'

और मुझे लगा था कि किसी भी बात पर चर्चा करने से पहले मुझे आपको दावत देनी पड़ेगी।

'ओह, मैं तो जल्दबाजी करने वाला आदमी हूँ, धैर्य रखने वाला नहीं।'

'ठीक है। मेरे पीछे आओ।'

क्या यह घात लगाकर हमला है?

'अगर मैंने ना कहा, तो क्या तुम मुझ पर विश्वास करोगे?'

हिरण्यकश्यप ने अपने आदमियों को आदेश दिया, 'परिधि को सुरक्षित करो। अगर तुम्हें कुछ भी संदिग्ध दिखे, तो संकेत देना, वरना मैं अपने मित्र का गला काट दूंगा।'

छड़ी लिए वह आदमी किसी और चीज़ से ज़्यादा ऊबा हुआ लग रहा था। वह राजा की शक्ति से प्रभावित नहीं था, बल्कि उसने बस उसे किनारे-किनारे उस गुफा के मुहाने की ओर चलने का इशारा किया जहाँ पानी रिस रहा था। उनके आदमी उसके पीछे नहीं गए।

'आप मुझे कहाँ लाए हैं, बूढ़े आदमी? आप मुझसे किस जादू-टोने के बारे में बात करने वाले हैं?'

'हमारे भविष्य के बारे में, अगर आप सुनना चाहें तो।'

मेरा भाग्य मेरे हाथों में है।

वे गुफा में दाखिल हुए, उनके कदमों की आवाज अंधेरे में गूंज रही थी।

'यहीं पर आप गलत हैं।'

'तुम्हारा क्या मतलब है?' हिरण्यकश्यप ने पूछा, उसके हावभाव में असुरक्षा की झलक थी।

'कयाधु कैसा है?' बूढ़े व्यक्ति ने सवाल को नजरअंदाज करते हुए पूछा।

'वह ठीक है। हमारा अभी-अभी एक बच्चा हुआ है।'

'जी हां।' बूढ़े आदमी ने आह भरी। 'उसे मेरा प्यार देना। वह एक अच्छी औरत है।'

'तुम ये बेकार की बातें क्यों कर रहे हो? मुझे बताओ हम कहाँ जा रहे हैं।'

वे अचानक रुक गए। उनके सामने एक चबूतरा खड़ा था।

'यह क्या है?' हिरण्यकश्यप ने पूछा।

चबूतरे पर एक तलवार रखी थी जिस पर हल्की-सी चमक थी। आपस में गुंथी हुई हड्डियों और धातु से बनी वह तलवार इतिहास के एक खतरनाक अवशेष की तरह वहां पड़ी थी।

'हमारी मुक्ति,' बूढ़े व्यक्ति ने कहा। 'वही जो हमें बचाएगा।'

'यह तलवार...' हिरण्यकश्यप पास आकर उसका निरीक्षण करने लगा। 'यह बनी है...'

'हड्डियाँ। हाँ। कुछ हद तक। मेरी। मेरी रीढ़ की हड्डी।' बूढ़े व्यक्ति ने दर्द को ध्यान में रखते हुए धीरे से अपनी पीठ के निचले हिस्से को छुआ; घाव अभी भी भर रहा था।

कश्यपुरी का राजा भय से लगभग हांफ उठा। 'तुम अपने आप को इतना कष्ट क्यों दे रहे हो?'

दूसरे व्यक्ति ने कहा, 'क्योंकि भविष्यवाणी में कहा गया था कि विष्णु के अवतार को मारने के लिए शिव के रक्त को संरक्षित रखना आवश्यक है।'

‘लो, फिर वही बात!’ हिरण्यकश्यप ने आंखें घुमाईं। ‘हमेशा इसी अवतार की बात क्यों होनी चाहिए? ऐसा कुछ है ही नहीं!’

‘आप ऐसा कहते हैं, लेकिन मैं इससे सहमत नहीं हूँ। जैसा कि आप जानते हैं, विष्णु का अवतार इस युग में संसार का अंत करने वाला है और उसे रोकना होगा।’

'किसके द्वारा?'

‘अधर्म की कसम। तुम।’

‘तुम्हारी ये तुच्छ बकवास मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती। तुम्हारी भविष्यवाणी झूठी है और तुम्हारा आकर्षण और अधर्म का तर्क बेतुका है। मैं भी तुम्हारी तरह ही भ्रष्ट और तर्कशील हूँ।’

‘हाँ, ज़रूर,’ बूढ़े आदमी ने स्पष्ट और निर्मम भाव से कहा। ‘लेकिन हम यहाँ बहस करने नहीं आए हैं।’

‘आप मुझसे इसका क्या करवाना चाहते हैं?’ हिरण्यकश्यप ने पूछा।

इसे अपने साथ ले जाएं। इसे सुरक्षित रखें और जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल करें।

हिरण्यकश्यप ने तलवार उठाई और कुछ देर तक उसका निरीक्षण किया। उस पर बढ़िया नक्काशी थी, लेकिन उसमें वेल्डिंग का बहुत काम बाकी था। वह उम्मीद के मुताबिक नहीं थी। उसकी सबसे साधारण तलवार भी इस बेकार चीज़ से बेहतर होती।

‘मैं नहीं कर सकता।’ उसने दूसरे व्यक्ति के प्रति सम्मान दिखाते हुए तलवार को सावधानीपूर्वक पीछे रख लिया।

'क्यों?'

‘क्योंकि मैं इसमें विश्वास नहीं करता। अगर मैं इसे अपनाता हूँ, तो यह तुम्हारे बेतुके विश्वास के समान होगा और मैं उस अवतार से डरूँगा जो मुझे मार डालेगा,’ हिरण्यकश्यप ने कहा। ‘मैं नहीं चाहता कि भय मेरे जीवन को नियंत्रित करे।’

‘लेकिन डर आपको तैयार रहने में मदद करेगा,’ बूढ़े व्यक्ति ने जवाब दिया।

हिरण्यकश्यप ने आह भरी। उन्होंने दूसरे व्यक्ति की मूर्खता पर कोई टिप्पणी नहीं की। “इतनी दूर आने में बहुत ऊर्जा खर्च हुई...” बुदबुदाते हुए वे जाने के लिए मुड़े। “हे रुद्र जी, मेरा सुझाव है कि आप इस जादू-टोने के अलावा अन्य चीजों पर ध्यान दें।”

इतना कहकर वह रुद्र को अकेला और असमंजस में छोड़कर चला गया। रुद्र ने कभी नहीं सोचा था कि उसे इस तरह ठुकरा दिया जाएगा।

लेकिन उन्हें विश्वास था।

उनका मानना था कि तलवार को पवित्र रखना चाहिए, हर चीज और हर किसी से दूर रखना चाहिए।

उन्हें विश्वास था कि इसका उपयोग एक दिन जरूर होगा।

अध्याय एक

अब ...

वीरभद्र को इस स्थान के बारे में कुछ समय से जानकारी थी।

इसे एक मिथक माना जाता था; लोग इसके बारे में दबी आवाज़ में बात करते थे। जब वे भगवान शिव बने और भगवान भैरव के सिंहासन पर आसीन हुए, तो उन्हें अपने गुप्त कक्ष में कुछ ऐसे कागज़ और नक्शे मिले जिन पर रहस्यमयी स्थानों का उल्लेख था, जिनसे रुद्र के अस्त्र, शरभ (जो रुद्र की रीढ़ की हड्डी से बना था) का पता चलता था। उनके सहायक ने भैरव के मृत्युशय्या पर रहते हुए इस अस्त्र के बारे में नोट्स बनाए थे और इस जानकारी को अगले शिव के लिए गुप्त रखा था।

लेकिन वह स्थान... भैरव ने उसे खोजने में वर्षों बिताए थे, और अब वीरभद्र उसकी तलाश कर रहा था। हालांकि, किसी को भी उसका पता नहीं था।

हाल ही में एक खोज होने तक यही स्थिति थी।

उत्तर के एक स्थानीय कस्बे में एक बूढ़ा व्यक्ति कोमा से जागा था। इतना बूढ़ा कि उसे कुछ याद नहीं था। इतना बूढ़ा कि उसकी बात पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया जा सकता था। वीरभद्र के सैनिकों ने उसे शरभ के बारे में बड़बड़ाते हुए सुना था। जाहिर है, वह भगवान रुद्र के समय में एक सैनिक था और उसने चुपके से हिरण्यकश्यप और रुद्र का गुफा में पीछा किया था।

वीरभद्र ने पहले तो अफवाहों पर विश्वास नहीं किया, लेकिन उसने मान लिया कि रुद्र के पास कोई कारण जरूर रहा होगा। वह उस बूढ़े व्यक्ति के साथ उस स्थान पर गया जहाँ बर्फ से ढका हुआ द्वार खड़ा था, जमा हुआ, किसी अन्य बर्फ की चादर की तरह। पीछे एक विशाल पहाड़ी थी, साथ ही एक चट्टान भी, जहाँ से अगर कभी धूप निकली तो जमा हुआ पानी नीचे गिरेगा। किनारा गीले, बर्फीले पौधों से भरा था और दूर तक काला सागर फैला हुआ था। उसके आदमी बर्फ को तराशने की कोशिश कर रहे थे जबकि वह बाहें मोड़े, काला लबादा पीछे लहराते हुए, ठंड से लाल हुए गालों और रीढ़ की हड्डी में गहरी सिहरन के साथ इंतजार कर रहा था।

मुझे उम्मीद है कि यह समय की बर्बादी नहीं होगी।

वह बूढ़ा आदमी गलत हो सकता है। हो सकता है वह किसी और का रूप धारण कर रहा हो या फिर मनगढ़ंत बातें कर रहा हो।

लेकिन वीरभद्र कभी भी मिली हुई जानकारी को नहीं छोड़ते। उनके लिए बात सीधी-सादी थी। उन्हें शरभ हथियार चाहिए था। एक ऐसा शक्तिशाली हथियार जिसका इस्तेमाल केवल आवश्यकता पड़ने पर ही किया जाए।

हिरण्यकश्यप मर चुका था। लेकिन बुराई कभी नहीं मरती। वह जीवित रहती है और इस तलवार को तब तक अत्यंत गुप्त और सुरक्षित रखना आवश्यक था, जब तक कि कोई इसे खोज न ले।

एक ज़ोरदार धमाका हुआ, जिसके बाद उसके आदमियों ने घबराकर चीखना शुरू कर दिया। बर्फ टूट गई थी और जमा हुआ हिमखंड ढह गया था। उसके आदमी सदमे से चीखते हुए पीछे हट

गए। वह बिना विचलित हुए आगे बढ़ा और देखा कि बर्फ के टुकड़े अंधेरी गुफा के प्रवेश द्वार को आंशिक रूप से अवरुद्ध कर रहे थे।

'अपनी मशालें जलाओ,' उसने अपने आदमियों को आदेश दिया, और वे तुरंत आज्ञा का पालन करने लगे।

लकड़ी के डंडों पर तेल लगे कपड़े लपेटकर आग लगाई गई। वीरभद्र ने आदमियों को अंदर ले जाकर आग जलाई। धधकती लपटों की गर्मी से ठंडी गुफा गर्म हो गई। बर्फ पिघलने लगी और जगह-जगह से पानी टपकने लगा।

'क्या यही है?' वीरभद्र ने मन ही मन बुदबुदाया।

फिर उसने उसे देखा—घोर अंधेरे से घिरा एक पुल, जो मशालों की रोशनी को भी निगलता हुआ प्रतीत हो रहा था। और पुल के उस पार एक ऐसी रोशनी थी जो उसने अब तक देखी किसी भी रोशनी से कहीं अधिक चमकदार थी। वह स्वयं तलवार थी, जो उस रोशनी में जगमगा रही थी।

'यह आ गया, दोस्तों!' वीरभद्र चिल्लाया।

उनके सैनिकों ने विजय और आशा की जयकार के साथ जवाब दिया।

लेकिन उन्हें सावधान रहना चाहिए था। क्योंकि पुल के चारों ओर का अंधेरा हिलने लगा। वीरभद्र को एहसास हुआ कि यह पानी या चट्टानें नहीं थीं, बल्कि...

लोग।

जीव-जंतु।

उनके शरीर मरोड़ते और मरोड़ते हुए, वे अपनी लेटी हुई स्थिति से उठे, उनकी चीखें गुफा में गूंज उठीं। काली आँखें, काले चेहरे, चमकते सुनहरे दाँत—वीरभद्र तुरंत समझ गया कि वे कौन हैं।

भूत।

भूत। रुद्र ने इन्हें यहाँ इसलिए छोड़ा है ताकि ये शरभा के अधिग्रहण में बाधक के रूप में कार्य करें।

जाहिर है, वह इसे आसान नहीं बनाएगा।

'लोहे का इस्तेमाल करो, पुरुषों!' उसने गुस्से से कहा और फिर दृढ़ता से शरभा की ओर बढ़ा, जबकि सैनिकों ने कांपते हाथों से अपनी तलवारें निकालीं और उन प्राणियों से लड़ना शुरू कर दिया।

वीरभद्र ने सुना था कि शिव भूतों को अपने आदेश का पालन करने के लिए बुला सकते हैं, लेकिन केवल उन्हीं भूतों को जिन्हें उन्होंने स्वयं मारा हो। भूत वे शव थे जिनका विधिवत अंतिम संस्कार नहीं हुआ था। वे केवल अपने स्वामी के आदेश का पालन करते थे... यहाँ स्वामी भगवान रुद्र थे।

वीरभद्र तलवार की ओर दौड़ा और उसे पकड़ ही रहा था कि तभी किसी ने उसका पैर पकड़ लिया। धधकती आँखों वाला एक बालक भूत उसे टखने से पकड़े हुए था। वीरभद्र ने तुरंत तलवार से बालक के चेहरे पर वार किया और लड़ाई में कूद पड़ा। फुर्तीले और लचीले भूतों ने उसके आदमियों को घेर लिया था और वे उनके सिर नोच रहे थे।

मुझे भागना होगा।

और उसने ऐसा ही किया, लेकिन जब वह भीड़ के बीच से गुजर रहा था, तो उसके दिल ने उसे भागने से मना किया। उसे तलवार ढूंढनी थी। उसे वापस लाना था। यही सम्मानजनक कार्य था।

अपनी भारी तलवार से उसने एक भूता पर वार किया जो उसके एक सैनिक के ऊपर चढ़ गया था। भूता गिर पड़ा और सैनिक ने राहत की सांस लेते हुए तुरंत उठ खड़ा हुआ।

'भागो!' वीरभद्र ने आदेश दिया।

तुरंत ही, वे लोग गुफा के प्रवेश द्वार की ओर भागे। भूत चीखते-चिल्लाते उनका पीछा करने लगे। वीरभद्र गुफा के प्रवेश द्वार पर पड़े बर्फ के टुकड़ों पर लुढ़कते हुए गुफा के बाहर, तेज चमकती चांदनी में जा गिरे। हालांकि उनकी चीखें गुफा के बाहर तक उनका पीछा करती रहीं, लेकिन भूत अंदर ही रहे। भूतों को उस स्थान तक सीमित रखा जाता था जहाँ उन्हें बुलाया जाता था और वे केवल अपने बुलाने वाले के आदेश पर ही बाहर निकल सकते थे। और इसीलिए वीरभद्र ने लड़ने के बजाय भाग जाना बेहतर समझा था। वे अभागे जीव थे जिन्हें भाड़े के सैनिकों के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था। उन पर फिर से हमला करके उन्हें मारना उचित नहीं होगा।

वीरभद्र ने चारों ओर देखा। उसके कुछ सैनिक बच निकले थे, लेकिन कई पीछे छूट गए थे, जिन्हें भूतों ने खा लिया था। वीरभद्र ने अपने सैनिकों की मृत्यु पर शोक व्यक्त करने के लिए कुछ क्षण लिए, फिर उसने अपने हाथ में पकड़ी तलवार को देखा। वह हड्डियों से बनी प्रतीत होती थी, और उसका हैंडल शुद्ध कांसे का था।

‘शरभा,’ उसने मन ही मन फुसफुसाया। ‘धर्म का संहारक।’

अध्याय दो

मैंने आज एक राक्षस देखा।

प्रहलाद का इरादा ये बात ज़ोर से कहने का नहीं था। जैसे ही ये शब्द उसके मुँह से निकले, उसने पछतावे से अपनी ज़बान दबा ली। ये एक विचार था जो उसके मन में कौंध गया था—निराशा की एक हल्की सी झलक ही इसकी वजह थी। उसने खाना बंद कर दिया और खाने की मेज के उस पार धृति की ओर देखा।

अब वे पहले जैसे गली-मोहल्ले के दंपत्ति नहीं रहे थे। चारों ओर सोने-चांदी और शान-शौकत का बोलबाला था। यहाँ तक कि उनकी खाने की मेज भी इतनी लंबी थी कि वे ठीक से निजी बातचीत नहीं कर पाते थे। प्रहलाद ने अपने तंबू में चारों ओर देखा। यह उन कई तंबुओं में से एक था जो उसके लिए आरक्षित किए गए थे—कश्यपपुरी के प्रधानमंत्री के रूप में। हालाँकि उसे राज्य के दैनिक कामकाज संभालने चाहिए थे, फिर भी वह अपने पिता के शासन वाले शहर के बाहरी इलाके में स्थित युद्ध क्षेत्र में फंसा हुआ था, जहाँ वह झड़पों में टुकड़ियों का नेतृत्व कर रहा था और एक शक्तिशाली सेना से लड़ रहा था।

इंद्र की सेना।

वज्रचिह्न वाले ऊंचे झंडे दूर से ही दिखाई दे रहे थे। दिन-रात बीतते चले गए, लेकिन यह पता नहीं चल पाया कि कौन जीत रहा है। प्रहलाद अपने पिता के समय में इसी तरह के युद्ध का हिस्सा रहा था, लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि उसे फिर से ऐसे ही युद्ध का सामना करना पड़ेगा।

पिछले कुछ महीनों में वह काफी सख्त हो गया था। उसकी मांसपेशियां विकसित हो गई थीं और उसका चेहरा सामान्य से अधिक परिपक्व हो गया था। उसकी गर्दन और माथे पर निशान थे। और चाहे वह कितनी भी बार नहा ले, उसके बाल चिपचिपे ही रहते थे। उस पर दुनियादारी की एक ऐसी थकान छाई हुई थी जो उसे बोझिल कर देती थी और उसके कंधों को झुका देती थी।

धृति ने पूछा, 'तुमने क्या कहा?'

प्रहलाद उसे देखता रहा और उनके बीच सन्नाटा छा गया। वह बदल चुकी थी, अब वह वैसी आवारा और हत्यारी नहीं रही थी जैसी पहले हुआ करती थी। अब जब उसकी शादी उससे होने वाली थी, तो उसे एक सभ्य महिला की तरह दिखना था—जो अच्छा खान-पान रखती हो, अच्छे कपड़े पहनती हो और शालीनता से व्यवहार करती हो। आख़िरकार, अब वह एक पत्नी बनने जा रही थी।

'मैंने एक राक्षस देखा,' उसने दोहराया।

उसकी आंखें सिकुड़ गईं। 'कहां?'

'क्षेत्र में।'

उन्हें दूर से युद्ध की चीखें और गूंज सुनाई दे रही थीं। उन्हें याद था कि वे कब से इन शिविरों में रह रहे थे।

'वो कौन था? इंद्र?'

प्रहलाद ने उस राक्षस को याद करते हुए अपने जबड़े भींच लिए। वही राक्षस जो उसके सपनों

में आता था—और जो बाहर भी मौजूद था।

प्रहलाद युद्ध के मैदान में था, लेकिन अतीत के उन समयों के विपरीत जब वह युद्ध के केंद्र में रहकर अपनी पूरी शक्ति से लड़ता था, वह अपने घोड़े पर सवार था, कवच और हेलमेट के बोझ तले दबा हुआ था, और कमर पर भारी कमरबंद था, फिर भी वह आदेश दे रहा था। शाही अंगरक्षक उसके सामने ढाल की तरह खड़े थे, रक्त से लथपथ, लाशों से भरे मैदान पर इंद्र की सेना की शक्ति को चुनौती दे रहे थे। दोपहर का समय था और सूर्य आकाश में चमक रहा था, फिर भी चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था।

प्रहलाद ने अपने सैनिकों को आगे बढ़कर युद्ध में शामिल होने का आदेश दिया। तलवार निकालते हुए उसने निर्देश दिया, 'बाएँ किनारे पर हमला करो!' तुरंत ही, उसके बाईं ओर के तीरंदाजों ने जलते हुए तीरों की बौछार कर दी, जो एक चाप में उड़ते हुए दुश्मन सैनिकों को ढेर कर गए और वे एक तरफ गिर पड़े। अन्य सेनापतियों और कमांडरों ने भी अपने सैनिकों को युद्ध में शामिल होने का आदेश देना शुरू कर दिया था।

'महामहिम, स्थिति नियंत्रण में है,' बाईं ओर खड़े सैनिक ने प्रहलाद से कहा।

प्रहलाद ने सिर हिलाया, उसकी निगाहें अब गुस्से से चिंघाड़ते हुए आ रहे हाथियों पर टिकी थीं। उसने देखा कि वे अपने बड़े-बड़े लोहे के दांतों वाले मुकुट से घुड़सवारों और पैदल सैनिकों को रास्ते से हटा रहे थे। वे भगदड़ मचाते हुए, तोड़फोड़ करते हुए और ज़ोरदार आवाज़ें निकालते हुए युद्धक्षेत्र में गूंज रहे थे। प्रहलाद भली-भांति जानता था कि इंद्र जैसे ही हारते नज़र आएंगे, अपने विकृत जानवरों को भेज देंगे।

'गुलेल का इस्तेमाल करो!' उसने आदेश दिया, क्षण भर के लिए किसी और को युद्ध के मैदान में प्रवेश करते देख उसका ध्यान भटक गया।

कोई ऐसा व्यक्ति जिसकी उसे उम्मीद नहीं थी।

कश्यपपुरी का राजा।

नरसिम्हा।

नंगे बदन। अंधेरे आसमान के नीचे उसका श्रीवत्स चिन्ह अजीब तरह से चमक रहा था। उसके पास कोई कवच नहीं था, लेकिन उसके लोहे के शक्तिशाली पंजों के कारण उसे कवच की आवश्यकता भी नहीं थी। उसकी बड़ी शेर की खाल उसके कंधों पर कसी हुई थी और पीठ पर एक लबादे की तरह लटक रही थी। जैसे ही उसने मैदान पर कदम रखा, सब लोग भय से कांपने लगे।

अपने रक्षक दस्ते के साथ, प्रहलाद ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया। उसने भयभीत होकर देखा कि नरसिम्हा शत्रु सैनिकों को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था, यहाँ तक कि उन सैनिकों को भी जिन्होंने लड़ाई छोड़ दी थी। भय एक प्रकार का भय होता है। शत्रु की आँखों में प्रहलाद को वही भय दिखाई दिया। परन्तु नरसिम्हा की आँखों में केवल क्रोध था, और उससे भी कुछ अधिक—क्रूरता। वह नरसिम्हा को हिंसा में, रक्तपात के प्रति अपने प्रेम में आनंदित देख सकता था। वह नरसिम्हा को सैनिकों को काटते, उनके पेट चीरते हुए मुस्कुराते हुए देख सकता था। उसकी पीठ तीरों से छलनी थी, फिर भी वह अपने रक्तपातपूर्ण अभियान पर आगे बढ़ता रहा।

अचानक हाथी पर राजा की नज़र पड़ी। वह अमानवीय गति से गुर्राते हुए उसकी ओर झपटा, अपने पंजे जानवर के शरीर में गहरे तक गाड़ दिए और उसे चीर डाला। जैसे ही बेचारा जानवर दर्द भरी चीख के साथ गिर पड़ा, उसकी आंतें उसके सबसे करीब खड़े लोगों पर बिखर गईं और उन्हें खून से लथपथ कर दिया, नरसिम्हा ने दूसरे जानवर पर छलांग लगाई और उसे भी वैसा ही घातक प्रहार किया। नरसिम्हा फिर से दहाड़ा। इस बार उसकी दहाड़ इतनी शक्तिशाली थी कि प्रहलाद की रीढ़ में सिहरन दौड़ गई।

'तुमने क्या किया है?' उसने बुदबुदाते हुए कहा, अभी भी वह उस दृश्य से कई कदम दूर था जो उसकी आँखों के सामने घट रहा था।

रक्त से लथपथ, कांस्य और लाल रंग के मिश्रण से सना हुआ शरीर लिए नरसिम्हा, चमकते हुए पंजों के साथ, अपने सामने खड़े शत्रु पर क्रूर दृष्टि गड़ाए खड़ा था। उसे देखकर सैनिक सहमने और कांपने लगे। लेकिन उसने उन्हें अधिक देर तक कष्ट सहने नहीं दिया, क्योंकि उसने अपनी सेना के साथ एक और आक्रमण शुरू कर दिया, जिसने शीघ्र ही यह महसूस कर लिया था कि वह शत्रु का मुकाबला कर सकती है और उससे दब नहीं सकती।

अपने सैनिकों के गुजरते समय नरसिम्हा जरा भी विचलित नहीं हुए। मनोबल बढ़ाने का अपना नैतिक कर्तव्य पूरा करने के बाद, उन्होंने अपनी निगाहें प्रहलाद की ओर मोड़ीं, जो बढ़ती हुई दहशत के साथ उन्हें ध्यान से देख रहा था।

वह अब वह व्यक्ति नहीं रहा था जैसा वह खुद को कभी समझता था।

'एक राक्षस को कैसे वश में किया जाता है?' प्रहलाद ने पूछा।

धृति ने चेतावनी देते हुए कहा, 'आप हमारे राजा के बारे में बात कर रहे हैं। आपको पता है ना कि आप क्या कह रहे हैं?'

मुझे अब और कुछ नहीं पता।

'तुम्हें सपने आ रहे हैं।'

'हाँ।'

'किस?'

'विनाश और तबाही का।'

'क्या आपको लगता है कि ये सपने वास्तविकता की उपज हैं? आप यहाँ जो कुछ भी देख रहे हैं, वह सब आपके दिमाग की उपज है।'

'शायद।' प्रहलाद ने इस बारे में सोचा। 'शायद। मुझे नहीं पता कि मैं क्या करना चाहता हूँ।'

'तुम उससे बात क्यों नहीं करते?'

'वह मुझसे दूर-दूर रहने लगा है। मैं कोशिश करती हूं, लेकिन वह मुझे नजरअंदाज कर देता है। लेकिन मैं फिर से कोशिश करूंगी। मुझे हार नहीं माननी चाहिए।'

'हाँ। अन्यथा, आप जानते हैं कि क्या करना है...'

प्रहलाद ने धृति की आँखों में देखा। उसकी आँखों में विष था।

'हां। मैंने पहले जो किया था।'

अध्याय तीन

नरसिम्हा ने अपने सपनों में बहुत कुछ देखा था, लेकिन उसने उसे लंबे समय से नहीं देखा था।

लेकिन आज उसने ऐसा कर दिखाया, युद्ध के मैदान में उस भयानक क्षण के बाद जब उसने अपना क्रोध प्रकट किया और दुनिया को अपने सामने झुकने पर मजबूर कर दिया। हर कोई उससे और उसके क्रोध से डरता था, और उसे यह अच्छा लगता था। उसे बस इसे जाने देना था और उसकी छाती पर बना वह चिन्ह, जिसे वह दुनिया से छिपाना चाहता था, चमक उठेगा।

उसके सपने में, वह किनारे पर खड़ी थी, हवा उसके बालों को उसके चेहरे पर उड़ा रही थी, उसकी आशा भरी आँखें ज़मीन को निहार रही थीं। वह अलौकिक प्रतीत हो रही थी।

वह अपनी त्वचा के बिना, अपने पंजों के बिना—नग्न था।

'तुम यहां क्यों हो?'

'आपको चेतावनी देने के लिए।' उसने मुड़कर अपनी बाहों में कंबल में लिपटे एक शिशु को दिखाया।

'क्या यह... हमारा बेटा है?' उसने नम आंखों से पूछा।

वह मुस्कुराई। लेकिन फिर उसकी मुस्कान गंभीर हो गई। 'तुम्हें सावधान रहना होगा। तुम अपनी भावनाओं को खुद पर हावी नहीं होने दे सकती।'

'लेकिन जब मैं सिर्फ एक वैद्य था, तब उन्होंने तुम्हें मार डाला था,' उसने क्रोधित होकर उत्तर दिया। 'अब जब मैं एक योद्धा हूँ, तो वे मुझसे डरते हैं। वे मेरा सम्मान करते हैं।'

'डर से डर पैदा होता है, सम्मान नहीं। सम्मान कमाना पड़ता है।'

उसने उसकी ओर देखा। 'जिन शत्रुओं से हम लड़ते हैं, उन्हें हराना होगा। मुझे पता है कि यह कैसे करना है। मैंने अपना सिंहासन, अपना राज्य, तुम्हारे लिए बनाया है। इंद्र से निपटते ही मैं हमेशा के लिए चला जाऊंगा। मैं चला जाऊंगा।'

'तुम्हें यही लगता है,' उसने कहा। 'तुम कभी हार नहीं मानोगे। अपने पूर्ववर्ती की तरह उसी जाल में मत फँसो। क्या तुम भूल गए हो कि उसके साथ क्या हुआ था?'

मैंने उसे मार डाला।

और अगर तुम नहीं रुके तो कोई तुम्हें मार डालेगा।

'तो मैं एक उद्देश्यपूर्ण व्यक्ति के रूप में मरूंगा।'

वह मुस्कुराई। अब माहौल गंभीर नहीं था। लेकिन उसकी मुस्कान उसकी आँखों तक भी नहीं पहुँची। 'हिंसा के नाम पर हासिल किया गया कोई भी उद्देश्य, उद्देश्य नहीं होता।'

हालांकि नरसिम्हा थके हुए उठे थे, लेकिन उनके घाव तेजी से भर रहे थे। जब से उनके सीने पर श्रीवत्स चिन्ह प्रकट हुआ था, तब से वे युद्ध के मैदान में अधिक समय तक लड़ पा रहे थे। उनकी सहनशक्ति और सामर्थ्य के साथ-साथ उनकी ताकत भी बढ़ गई थी। उन्हें अपनी अपेक्षा से कहीं अधिक चोटें लगी थीं।

वह अपने मुख्य तंबू से बाहर निकला, जो बाकी सभी तंबूओं से अलग था और भारी हथियारों से

लैस सैनिकों, बड़े-बड़े फाटकों, नुकीली कीलों और हथियारों से घिरा हुआ था। उसकी कड़ी सुरक्षा की जा रही थी।

आखिरकार, वह राजा था।

इस मुकाम तक पहुंचने का सफर लंबा था, हालांकि इसमें कुछ ही महीने लगे थे। जब नरसिम्हा ने प्रहलाद को राजा बनने की इच्छा बताई, तो प्रहलाद ने बिना किसी विरोध के प्रधानमंत्री का पद स्वीकार कर लिया। नरसिम्हा को कश्यपुरी की जनता के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जिनमें से अधिकांश असुर थे और सिंह राजा नहीं चाहते थे। लेकिन वे कमजोर थे और उनका नेतृत्व करने वाला कोई राजा नहीं था, जबकि नरसिम्हा के पास प्रहलाद था। इसलिए, जनता के पास उनकी बात मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। विरोध करने वालों को पूर्व में स्थित अपने वतन लौटने की अनुमति दे दी गई। सुपर्णों और स्थानीय जनजातियों के साथ गठबंधन के बल पर, नरसिम्हा ने राज्य पर कब्जा कर लिया, और अपने समर्थक असुर मंत्रियों के साथ साझेदारी की, जिन्होंने उनके सर्वोपरि शत्रु इंद्र के खिलाफ उनके उग्र अभियान के लिए धन दिया।

हालांकि नरसिम्हा के शासनकाल में उनकी शक्ति कम हो गई और अन्य जनजातियों—मानव, यक्ष—की ताकत और अधिकार बढ़ गए, फिर भी असुर शांत रहे... क्योंकि प्रहलाद के कारण। वे मानते थे कि वही सही नेता है, और वे जानते थे कि उन्हें हिरण्यकश्यप ने गुमराह किया था।

जब वह अपने विचारों में खोया हुआ था, तभी उसने देखा कि कोई उसकी ओर आ रहा है। वह मजबूत शरीर और मनमोहक मुस्कान स्पष्ट रूप से पहचानी जा सकती थी।

आज तो वाकई बड़ा तमाशा था, लड़के? अरे बाप रे, मेरा मतलब था, "महामहिम"। उसकी आँखों में एक चमक थी।

‘गरुड़।’ नरसिम्हा मुस्कुराए। ‘मैंने तुम्हें युद्ध में नहीं देखा।’

उनके पुराने मित्र गरुड़ भी उनके अभियान में शामिल हो गए थे, इस उम्मीद में कि वे अपनी माता की उस भूमि को पुनः प्राप्त कर लेंगे जिस पर कभी वरुण का शासन था, लेकिन अब इंद्र के क्षत्रप द्वारा शासित थी।

‘मैं पूर्वी सीमा पर, जहाँ घाटियाँ हैं, जाल बिछा रहा था। वे वहाँ से हमला कर सकते थे, इसलिए तीरंदाजों को तैनात किया गया था।’

'बहुत अच्छा।'

‘लेकिन मैंने सुना है कि तुमने क्या किया। मैं तुम्हें बता रहा हूँ, हर कोई डरा हुआ है। डरा हुआ!’ गरुड़ हँसा। ‘पिछली झड़प से कुछ युद्धबंदी बचे हैं। मेरा मानना है कि तुम्हें उनसे मिलना चाहिए। हमने उनसे पूछताछ की है, लेकिन वे सहयोग करने से इनकार कर रहे हैं।’

नरसिम्हा ने सिर हिलाया। 'आगे चलो।'

'क्या आपको यकीन है? आप अभी भी भारी मात्रा में दवा ले रहे हैं।'

नरसिम्हा ने आंखें घुमाईं। 'मैं ठीक हूँ।'

इसके जवाब में गरुड़ मुस्कुराया, उसकी मुस्कान नरसिम्हा की मुस्कान से दोगुनी बड़ी थी, और उससे उसके सोने जैसे हृदय का पता चलता था।

युद्ध कक्ष के पास, लगभग एक दर्जन कैदी ज़मीन पर घुटने टेककर बैठे थे, उनके मुंह पर पट्टी बंधी थी और हाथ बंधे हुए थे, जबकि सैनिक उन्हें घेरे हुए थे। नरसिम्हा के गरुड़ के साथ आते ही कैदी भय से सिकुड़ गए, उनकी आँखें मानो किसी देवता के सामने झुकी हुई थीं।

वे तुमसे डरते हैं। उनसे जो चाहो पूछो। वे शायद हमें इंद्र की योजना के बारे में बता दें।

नरसिम्हा ने गरुड़ की बात का कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि कैदियों में से एक की ओर बढ़े, उसके बाल पकड़े और उसका सिर पीछे की ओर खींच लिया। उसकी आँखों में देखते हुए उन्होंने गुर्राते हुए कहा, 'तुम जानते हो कि मैं यहाँ क्यों हूँ, इसलिए बोलो।'

'वह डरा हुआ है। उसे पता है कि वह जीत नहीं सकता।' कैदी ने सिसकते हुए जवाब दिया, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। 'हम तो बस पैदल सैनिक हैं, महाराज, कृपया हमें मत मारिए। हमें लड़ने के लिए न्यूनतम मजदूरी मिलती है। हम अपने परिवारों के लिए लड़ते हैं। मुझे बचपन में ही सेना में भर्ती कराया गया और सैनिक के रूप में प्रशिक्षित किया गया। मैं अपनी बहन के लिए लड़ता हूँ। मैं अपनी माँ के लिए लड़ता हूँ। मैं बस आदेशों का पालन करता हूँ।'

नरसिम्हा ने उस आदमी को छोड़ दिया। उसने एक दूसरे सैनिक से पूछताछ की, लेकिन उसे कोई उपयोगी जानकारी नहीं मिली। वह गरुड़ के पास वापस गया और उससे कहा, 'ये निकम्मे हैं।'

'वे अच्छे गुलाम बन सकते हैं। मेरा मानना है कि वे मजदूर के रूप में काम कर सकते हैं,' गरुड़ ने कहा।

नरसिम्हा को यकीन नहीं हुआ और वे इस विचार पर मनन कर रहे थे कि अचानक उन्होंने युद्ध कक्ष से एक परिचित चेहरा निकलते देखा। घुंघराले बालों वाला, सुनहरी आँखों के ऊपर घनी भौहें और दुबला-पतला चेहरा, यह असुरों का नया मुखिया वाशकल था। वह हिरण्यकश्यप और अन्य असुरों से बिल्कुल अलग दिखता था, जो आमतौर पर बलवान होते थे। नरसिम्हा को कुछ समय पहले पता चला था कि वाशकल एक ऐसी हड्डी की बीमारी से पीड़ित है जिससे उसका विकास रुका हुआ है। लेकिन उसने अपने छोटे कद की कमी को राजनीति में अपनी कुशलता और व्यापार में अपनी चतुराई से पूरा कर लिया था। वह हिरण्यकश्यप के शासनकाल में मुद्रा मंत्री रह चुका था, उसने अपने करियर की शुरुआत मंत्रालय में सबसे निचले पद से की थी और अपनी प्रतिभा के कारण जल्दी ही ऊंचे पदों पर पहुंच गया था। अब, असुरों के मुखिया के रूप में, वह इतना शक्तिशाली और आत्मविश्वासी था कि नरसिम्हा की उपस्थिति में भी अपनी बात मनवा सकता था।

'वाशकल... मेरा मानना है कि तुम्हारा स्थान शहर में ही है,' नरसिम्हा ने कहा।

'और मेरा मानना है कि आपको हमारे बेचारे कैदियों को यातना नहीं देनी चाहिए।' वाशकल मुस्कुराया। 'लेकिन हम यहाँ हैं, एक-दूसरे को आश्चर्यचकित कर रहे हैं। दरअसल, मैं आपसे बात करने आया हूँ। एक ज़रूरी मामले पर।' उसकी मुस्कान गायब हो गई और उसने गरुड़ की ओर देखा, जो छुपकर सुन रहा था।

'तो ऐसा कहिए।'

'अकेले रहना बेहतर है।'

'मैं अकेला हूँ।' नरसिम्हा ने गरुड़ को पास आने का इशारा किया।

वाशकल ने आह भरी। 'और तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें अपने रहस्य क्यों नहीं बताती।'

'मैं तुम्हारे और तुम्हारे लोगों को तुम्हारे पैसों के लिए बर्दाश्त करता हूँ, वाशकल। मुझे पुनर्विचार करने पर मजबूर मत करो।'

घुंघराले बालों वाला युवक पास आया। 'तुम्हारी यह सेना, इन्हें खिलाने वाला अनाज, तुम्हारे हथियार—यह सब मेरा पैसा है, ठीक है? यह युद्ध मेरा है, भले ही तुम इसे लड़ रहे हो। मेरे और मेरे जैसे लोगों के बिना, तुम्हारे लिए अपनी मुद्रा स्थापित करना और लोगों को नई मुद्रा का उपयोग करने के लिए मजबूर करना बहुत मुश्किल होगा।'

नरसिम्हा ने अपना जवाब देने से खुद को रोका। वाशकल एक आवश्यक बुराई थी... लेकिन केवल अभी के लिए। इंद्र से निपटते ही, वह वाशकल और असुरों से छुटकारा पाकर अपनी मुद्रा स्थापित करेगा। तब तक, उसे उनकी बकवास सुननी ही पड़ेगी। 'तुम क्या चाहते हो?'

'आप आलोचना का जवाब देते हैं, तो मैं भी यहाँ आलोचना कर रहा हूँ। एक असुर परिवार के खिलाफ नफरत भरी हिंसा की घटना हुई। दंगा करने वाले शराबी, मानव, आए, उन्होंने महिला का बलात्कार किया और पुरुष की हत्या कर दी। क्या यह आपके प्रशासन में एक बुरा दृश्य नहीं है?'

'मुझे इसकी जानकारी नहीं है।' नरसिम्हा ने गरुड़ की ओर देखा, जिसने कंधे उचका दिए।

'आप कैसे होंगे? ये सब बातें आपके लिए तुच्छ लगती हैं, लेकिन शहर आपकी शक्ति के नशे में चूर है। वे सोचते हैं कि आप उन्हें बचाएंगे; वे सोचते हैं कि आप दिल से असुर विरोधी हैं। असुर मंत्री खुश नहीं हैं और अपने राजा से शीघ्र न्याय की मांग कर रहे हैं।'

'यह प्रहलाद का काम है।'

'मुझे पता है, लेकिन मैं स्पष्ट कारणों से आपके पास आया हूँ।' वाशकल की सुनहरी आँखें चमक उठीं। 'महाराज, यदि आप हमारा समर्थन चाहते हैं, तो मेरा मानना है कि आपको एक न्यायप्रिय राजा की तरह व्यवहार करना शुरू कर देना चाहिए।'

नरसिम्हा रुक गया। यह एक धमकी जैसा लगा। और उस क्षण वह खुद को शक्तिहीन महसूस कर रहा था। 'मैं जांच करवाऊंगा।'

'ठीक है।'

'गरुड़ इस जांच का नेतृत्व करेंगे।'

सुपर्न का सरदार हैरान था। यहाँ उसकी ज़रूरत तो थी, लेकिन वह राजा के खिलाफ़ जाने की हिम्मत कैसे कर सकता था?

वाशकल ने कहा, 'मुझे परवाह नहीं कि इसका नेतृत्व कौन करता है। लेकिन मेरा मानना है कि सत्ता में बने रहने के लिए आपको त्वरित निर्णय लेने होंगे। जिस तरह हमने धन दिया है, उसी तरह हम उसे वापस भी ले सकते हैं।'

'यह सारी दौलत प्रहलाद की है। वही इसका वारिस है।'

'अदालत ने आपको राजहत्या का दोषी पाया, लेकिन हमने आपको सज़ा नहीं दी, है ना? जनता न्याय चाहती है, उन्हें वही दो जो वे चाहते हैं और वे चुप हो जाएंगे।' वाशकल मुस्कुराया।

दबाव में आकर निर्णय लेने पर नरसिम्हा को बहुत गुस्सा आया। उसने अपने जबड़े भींच लिए और मुट्ठी भींच ली। 'ठीक है।'

वाशकल ने सिर हिलाया। 'धन्यवाद, महाराज। मैं दासों को अपने साथ ले जाने की योजना बना

रहा हूँ। हम उनका उपयोग अपनी कुछ क्षतिग्रस्त संपत्तियों के पुनर्निर्माण के लिए कर सकते हैं।'

'कौन से गुलाम?' नरसिम्हा ने पूछा और अपना हाथ उठाया।

तुरंत ही, उसके सैनिकों ने बाणों की बौछार कर दी और कैदी ज़मीन पर गिर पड़े। उनकी सदमे और दर्द भरी चीखें हवा में गूंजती रहीं और फिर धीरे-धीरे शांत हो गईं। चारों ओर सन्नाटा छा गया। गरुड़ को विश्वास नहीं हो रहा था कि नरसिम्हा ने इस मोड़ पर इतना बड़ा फैसला ले लिया है।

'यह अनावश्यक था,' वाशकल ने गंभीर स्वर में कहा।

'मैं राजा हूँ। मैं ही तय करता हूँ कि क्या आवश्यक है और क्या नहीं,' नरसिम्हा ने कहा और चले गए।

चौथा अध्याय

इंद्र महज एक उपाधि से कहीं अधिक बन गए थे। वे एक ऐसे व्यक्ति बन गए थे जो 'इंद्र' नाम का साक्षात स्वरूप थे। उनसे पहले भी कई इंद्र हुए थे। वे जिन्होंने सत्य के लिए और असत्य के लिए भी संघर्ष किया था। ये सभी इंद्र धर्म के पक्ष में खड़े रहे।

उसका असली नाम देवेंद्र था। वह कभी एक छोटा लड़का था जिसने सीखने की बहुत कोशिश की, लेकिन असफल रहा। उसने खुद को शक्तिशाली साबित करने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहा। उसने बहुत कम उम्र में अपने माता-पिता को मरते हुए देखा था और उसने सोचा था कि दुनिया बहुत क्रूर है—और उसे इसे सुधारने के लिए कुछ करना चाहिए।

तब से कई वर्ष बीत चुके थे। अब देवेंद्र एक पहाड़ी की चोटी पर खड़ा था, जहाँ से युद्धक्षेत्र दिखाई दे रहा था। पास ही उसे अपने शिविर के नीले तंबू दिखाई दे रहे थे, जहाँ पुरुष और महिलाएं अलाव के चारों ओर धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे। टुकड़ियाँ अपने-अपने कप्तानों के अनुसार विभाजित थीं। कौवे आकाश में उड़ रहे थे, हाथियों के शवों के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे। इंद्र चुपचाप गंभीर भाव से देख रहा था। उसकी आँखें हल्के नीले रंग की थीं और होंठ एक पतली रेखा में दबे हुए थे। उसके शरारती बेटे जयंत और नागलोक में मिले शव की याद बार-बार उसके मन में आ रही थी। यह एक दर्दनाक याद थी, एक ऐसी याद जिसे वह कभी नहीं भूल पाएगा।

‘क्या आप ठीक हैं?’ पीछे से एक आवाज आई।

यह परिचित होते हुए भी दूर का सा लग रहा था। उनके पुत्र की मृत्यु के बाद से ऐसा ही था। उन्होंने मुड़कर देखा तो सामने साची खड़ी थीं। उनकी पत्नी। वह कद में छोटी, उम्रदराज महिला थीं, जिनके बाल मुलायम और घुंघराले थे और उनकी सुनहरी आँखें बेहद आकर्षक थीं। साची इंद्र के जीवन में एक मजबूत स्तंभ थीं, वह व्यक्ति जो जरूरत पड़ने पर उनकी मदद और मार्गदर्शन करती थीं। वह एक असुर की पुत्री थीं, लेकिन देवेंद्र से प्रेम होने पर उन्होंने असुर जीवन शैली त्याग कर देव बन गई थीं।

उन्होंने जवाब दिया, 'मैं दुविधा में हूँ। हम एक और झड़प हार गए।'

‘ओह।’ उसकी आवाज कोमल थी। ‘लेकिन क्या आप ठीक हैं?’

मैं कैसे हो सकता हूँ?

उसने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, 'तुमने एक दुश्मन बना लिया है। तुम्हें इसके परिणाम पता थे।'

मुझे नहीं पता था कि वह अंततः खूनी राजा बन जाएगा।

‘खैर, अप्रत्याशित घटनाएं तो होती ही रहती हैं। अब आप बस इंतजार कर सकते हैं।’

'किस के लिए इंतजार?'

‘उसके अगले कदम के लिए।’

तब तक मेरी सेना जा चुकी होगी।

वह थोड़ी देर रुकी और फिर बोली, 'तुम जानते हो ना कि मैं तुम्हें इंतजार करने के लिए क्यों कह रही हूँ?'

देवेंद्र ने सिर हिलाया। वह यह बात मानना नहीं चाहता था, लेकिन एक और व्यक्ति था जो उसे पूरी ताकत लगाने से रोक रहा था। वह थी उसकी बेटी जयंती। युवा लेकिन उससे कहीं अधिक समझदार। उसका जन्म काफी देर से हुआ था, लेकिन वह बेहद चतुर थी। वह अमरावती में थी, इंद्र से नाराज़ थी, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि वह यह युद्ध छेड़े। वह नहीं चाहती थी कि वह और अधिक रक्तपात करे। वह कुछ और चाहती थी। जो उसने किया था उससे कहीं अधिक कठिन।

देवेंद्र को अपने बाकी साथियों की तरह जश्न मनाना चाहिए था, लेकिन वह यहाँ अपने अध्ययन कक्ष में बैठा आसमान को देख रहा था। उसने मातृकाओं पर हमला किया था और इस मामले में अंधका का साथ दिया था, लेकिन समझौते के बाद अंधका गायब हो गया था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसने सही किया है या नहीं।

दरवाजे पर दस्तक हुई। जब उसने मुड़कर देखा, तो उसे एहसास हुआ कि पहरेदारों ने उसकी क्रोधित आगंतुक को हिरासत में नहीं लिया था। वह अब गुस्से से लाल, चिढ़ती हुई उसकी ओर बढ़ी।

'तुमने क्या किया?' जयंती कद में छोटी थी—आखिरकार, वह अभी बच्ची ही थी। उसकी आंखें उसके पिता जैसी थीं और उसमें उसकी मां जैसी उग्रता थी।

मैंने तुम्हारे भाई के साथ वही किया जो उचित था।

'और वह यही चाहता था?'

वह बदला लेना चाहता होगा।

'वह एक बेवकूफ था।' वह थोड़ी देर रुकी। 'तुमने क्या किया?'

'मैं...' वह रुक गया। 'मुझे उन सभी को मारना था, लेकिन मैं... मैं ऐसा नहीं कर पाया। और उनमें से एक, नरसिम्हा की पत्नी... उसकी मृत्यु हो गई।'

'नरसिम्हा... वो आदमी जो तुम्हारा दोस्त है... जिसके बारे में तुम बातें करते हो... वो जिससे तुम डरते हो।'

इंद्र ने सिर हिलाया।

'और तुमने उसकी पत्नी की हत्या की?'

उसके भीतर एक रहस्य छिपा था। एक ऐसा गहरा रहस्य जिसे केवल वही जानता था। उसने उसे कभी नहीं बताया था, लेकिन उसे इसका कुछ आभास था।

'मैं तुम्हारा अंत देख रहा हूँ, पिता। मैं तुम्हारे अपने ही खूनी हाथों से तुम्हारा अंत देख रहा हूँ।'

'मुझसे इस तरह बात मत करो!' गुस्से से उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। 'मैंने वही किया जो मेरे खून के लिए सही था। तुम गुंडों को अपने ऊपर हावी नहीं होने दे सकते।'

'तुमने उससे बात तक नहीं की।'

'प्रत्यक्षदर्शियों ने नरसिम्हा को जयंत को विमान से नीचे फेंकते हुए देखा। आपको और क्या चाहिए?'

'कम से कम इस समय तो नहीं।' उसने सिर हिलाया। 'मैं तुम्हारी ज़रूरत के समय तुम्हारा साथ नहीं दूंगी। और तुम जानते हो, तुम जानते हो कि तुम्हें मेरी ज़रूरत है।' उसके कहने के तरीके से उसे

सब कुछ स्पष्ट हो गया।

शायद उसे पता हो। शायद उसने कानाफूसी और गपशप सुनी हो।

लेकिन इस बार वे सच थे।

'मुझे पता है।'

उसने निराशा में सिर हिलाया और कमरे से बाहर निकल गई। हारा हुआ वह पीछे की ओर लड़खड़ाया और दीवार के सहारे बैठ गया, उसे थोड़ा अकेलापन और थोड़ा दुख महसूस हो रहा था।

'हो सकता है आपको उससे मदद मांगनी पड़े,' साची ने कहा।

इंद्र ने सिर हिलाया। 'नहीं। मैं खुद ही इसका हल निकाल लूंगा।'

एक सैनिक उनके पास आया। 'महामहिम, गुरु बृहस्पति आपसे मिलना चाहते हैं। वे युद्ध कक्ष में हैं।'

इंद्र ने सिर हिलाया। उन्होंने अपनी पत्नी को चूमा और युद्ध कक्ष की ओर चल दिए, जहाँ वे योजनाएँ और रणनीतियाँ बनाते थे। वे सोच रहे थे कि यह सब किसलिए या किसके लिए हो रहा है। उन्हें ऐसा लग रहा था मानो वे न केवल युद्ध हार रहे हों, बल्कि सब कुछ... हर किसी को खो रहे हों। अग्नि मर चुका था। वरुण मर चुका था। और मरुत, उनके चचेरे भाई, उनके भाई, सब मर रहे थे। हालाँकि उनके पास ज़मीन और धन था, लेकिन उन्हें बाँटने वाला कोई नहीं था।

अपनों के साथ बांटे बिना खुशी का क्या अर्थ? जयंती की आवाज उनके मन में गूंज उठी और वे मुस्कुरा उठे।

वह युद्ध कक्ष में दाखिल हुआ और उसने देखा कि उसके गुरु और अमरावती के सबसे वृद्ध ऋषि बृहस्पति उसका इंतज़ार कर रहे हैं। उन्होंने टखनों तक लंबा चोगा ओढ़ा हुआ था। उनके लहराते हुए भूरे बाल तेल से अच्छी तरह संवारे हुए थे। उनके गोल-मटोल, मासूम चेहरे पर हमेशा एक शिकन बनी रहती थी, मानो उन्हें कोई गंभीर समस्या हो। उनके बगल में वायु खड़े थे, जो इंद्र के अधीन राजाओं में से एक थे। वायु ही एकमात्र बचे हुए मरुत थे; बाकी सब मर चुके थे। वे सबसे छोटे और बेहद सुंदर थे, उनकी नाक नुकीली और आंखें भूरी और खूबसूरत थीं।

और उसके पास एक शक्ति थी। वह हवाओं को नियंत्रित कर सकता था।

मुझे यह आनंद किस कारण से मिल रहा है?

वायु गुर्राते हुए बोला, 'हम हार रहे हैं। हे इंद्रदेव, मेरी सेनाएँ यहाँ मर रही हैं। हमें एक वैकल्पिक योजना बनानी होगी। जब से उस नीच दुष्ट ने असुरों का साथ दिया है, तब से उसकी मनमानी चल रही है।'

'और आपको क्या लगता है कि मुझे क्या करना चाहिए?' इंद्र ने पूछा। 'मैंने अपने हाथी भेज दिए हैं। मैंने अपने सबसे श्रेष्ठ पुरुष भेज दिए हैं। हम किसी मनुष्य से नहीं, बल्कि एक देवता से निपट रहे हैं।'

'और केवल एक देवता ही उसे रोक सकता है,' बृहस्पति ने कहा। केवल वही इस रहस्य को जानता था। 'मेरा मानना है कि अब इसे समाप्त करने का समय आ गया है। वज्र को प्रकट करो।'

'और क्या मैं कश्यपुरी को पूरी तरह नष्ट कर दूँ?' इंद्र ने उपहास करते हुए कहा। 'मैंने एक

जीवनकाल में ही काफी विनाश कर दिया है।'

'यह धर्म के लिए है, बेशक।'

'लेकिन क्या धर्म शांति नहीं है?' इंद्र ने पूछा। 'क्या हम सब शांति के प्रचारक नहीं हैं?'

दोनों चुप थे। इंद्र लंबी महोगनी की मेज के पास गए और उस पर रखे सेबों में से एक उठा लिया।

रसीले फल को खाते हुए उन्होंने कहा, 'मैं परमाणु हथियार नहीं छोड़ सकता।'

'क्यों?' वायु ने पूछा।

मैंने किसी से वादा किया था।

'तो हम हारेंगे,' बृहस्पति ने कहा। 'यदि यह व्यापक हित के लिए हो तो वादा तोड़ा जा सकता है।'

'हमें कोई दूसरा रास्ता ढूंढना होगा।' इंद्र ने सिर हिलाया। 'मेरी बेटी...'

'मेरी भतीजी को इसमें मत घसीटो।' वायु ने कंधे उचकाते हुए कहा। 'वह बच्ची है। हम रक्तपात के सेनापति हैं। ऋषि कश्यप चाहते थे कि हमें ये शक्तियां मिलें ताकि हम इस देश पर सबसे धार्मिक तरीके से शासन कर सकें। जब लोग धर्म के विरुद्ध लड़ते हैं, तो हम पलटवार करते हैं, या क्या तुम यह भूल गए हो? यही हमारा उद्देश्य था। इसीलिए हम लड़ते हैं... या कम से कम मैं तो लड़ता हूँ। तुम इसे कहीं भूल गए हो।'

इंद्र ने निराशा से सिर हिलाया। उन्होंने अपनी शक्तियां बहुत पहले ही खो दी थीं। लेकिन यह एक बड़े हित के लिए हुआ था। अब वे बस पछतावे से भरा एक बूढ़ा आदमी थे। 'मैं कुछ सोच रहा था।'

'और वो क्या है? क्या फिर से अंधका के साथ हाथ मिला रहे हो?' वायु हँस पड़ा।

'वह गायब हो गया है, इसलिए नहीं।' इंद्र ने सिर हिलाया। 'यह काम मुझे सालों पहले कर लेना चाहिए था।'

'क्या?' बृहस्पति ने थूकते हुए कहा।

इंद्र ने कहा, 'एक संधि, नरसिम्हा के साथ एक संधि।'

अध्याय पाँच

पार्वती दौड़ रही थी।

वह किसी चीज़ की ओर दौड़ रही थी, लेकिन उसे पता नहीं था कि किस ओर। वह बर्फ पर नंगे पैर थी, लगभग नग्न, लेकिन उसने यह सुनिश्चित कर लिया था कि उसका बेटा कंबल में अच्छी तरह लिपटा हुआ है। वह वातावरण की भयावहता को सहन कर सकती थी, लेकिन वह अपने बेटे को ऐसा नहीं करने दे सकती थी।

वह जवान थी। उसके काले बाल हवा में लहरा रहे थे जब वह उस अफरा-तफरी और हिंसा से भाग रही थी।

एक जोरदार धमाके से उसका बेटा रोने लगा। वह हांफते हुए रुकी और उसे दिलासा देते हुए बोली, 'सब ठीक है, मेरे बच्चे, सब ठीक है।'

लेकिन हालात बिल्कुल भी ठीक नहीं थे। दूर आसमान में धुएं का एक बादल उठता हुआ दिखाई दिया। वह बर्फीली पहाड़ियों से घिरी हुई थी। उसकी निगाहें धुंध भरे आसमान की ओर खिंची चली गईं, जहाँ सूरज बड़ी बेरुखी से छिपा हुआ था।

मुझे भैरव को ढूंढना है। मुझे उसे ढूंढना ही होगा…

वह कहीं गायब हो गया था। उसे याद नहीं आ रहा था कि कैसे और कब।

जैसे-जैसे वह आगे बढ़ती गई, उसने देखा कि उत्तर दिशा में स्थित किले के पीछे से धुआँ उठ रहा है। उसका किला। उसका घर। जिस पर राजा हिरण्याक्ष के खूनी गुंडों ने हमला किया था। काश्यपुरी के राजा हिरण्याक्ष, जो हिरण्यकश्यप का भाई था।

पार्वती तब तक चलती रही जब तक उसके पैर जवाब नहीं देने लगे। उसने आश्रय, झोपड़ी, कुटिया या गाँव की तलाश में चारों ओर देखा... लेकिन कुछ नहीं मिला। थकावट और कमजोरी के बावजूद, उसने खुद को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

अचानक ही उसे घोड़ों के खुरों की जानी-पहचानी आवाज सुनाई दी।

घुड़सवार!

वे पगडंडी से उसकी ओर आ रहे थे। उसे राहत मिली। वह पास के किसी गाँव तक लिफ्ट मांग सकती थी, जहाँ वह तब तक छुप सकती थी जब तक उसे आगे की योजना न सूझ जाए। जैसे-जैसे घुड़सवार करीब आते गए, उसने देखा कि वे औसत से बड़े और लंबे थे। उन्होंने काले कवच और गहरे रंग के हेलमेट पहन रखे थे और उनकी आँखें... काँसे रंग की थीं।

उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।

असुर।

'देखो तो सही, ये तो शिव की स्त्री है!' उनमें से एक हँस पड़ा। 'क्या हम इसे ऐसे ही ले जाएं या यहीं दफना दें?' उसने बाकी लोगों से पूछा। बाकी सब चुप रहे। धीरे-धीरे वे उसके चारों ओर घेरा बनाने लगे।

ठंड और भूख से कमजोर पार्वती डर के मारे सिकुड़ गई।

'चलो बस उसका सिर धड़ से अलग कर देते हैं और उससे छुटकारा पा लेते हैं।'

'या फिर उसे ऐसे ही छोड़ दें? उसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। ठंड उसे खुद ही मार डालेगी,' दूसरे ने सुझाव दिया और सब जोर से हंस पड़े।

'शायद।' पहला असुर घोड़े से उतरा और उसकी ओर धीरे-धीरे बढ़ा। उसने भागने की कोशिश की, लेकिन उसने उसे शॉल से पकड़कर जमीन पर पटक दिया।

दर्द से व्याकुल होकर उसे एहसास हुआ कि असुरों ने उसके बेटे को पकड़ लिया है। उसने अपने ऊपर मंडरा रहे असुरों से उसे छीनने का पुरजोर प्रयास किया, लेकिन असुरों ने हंसते हुए उसे खींच लिया।

वह रोने और सिसकने लगी। उसकी इच्छा थी कि वह उनसे लड़ सके, अपने भीतर की मातृका शक्ति को फिर से जगा सके, लेकिन वह बेहद कमजोर थी। उसने कुछ ही दिन पहले बच्चे को जन्म दिया था और वह बेहोश होने वाली थी। लेकिन फिर भी उसने कोशिश जारी रखी...

अचानक, उन्हें दूर से तुरही की तेज़ आवाज़ और घोड़ों के खुरों की धमक सुनाई दी। पल भर के लिए उनका ध्यान भटक गया, पार्वती और असुरों ने मुड़कर देखा…

भैरव अपने दर्जनों आदमियों के साथ उनकी ओर तेजी से बढ़ रहा था।

असुर भागने लगे। उनमें से एक उसे भी पकड़ना चाहता था, लेकिन दूसरे ने कहा, 'उसे छोड़ दो!'

जब असुर घोड़े दौड़ाते हुए चले गए, तो पार्वती ने देखा कि वे उनके बच्चे को ले जा रहे हैं। उन्होंने एक असुर को पकड़ लिया और उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन उसने उनके हाथ पर पैर रखकर उन्हें लात मारकर एक तरफ धकेल दिया। वह दर्द से चीख पड़ीं और पीछे हट गईं।

असुर अपने घोड़े पर सवार होकर अपने साथियों के पीछे दौड़ पड़ा।

पार्वती बिल्कुल अकेली रह गई थी। उसके काले बाल अब बर्फ के टुकड़ों से ढके हुए एकदम सफेद हो गए थे।

उसने अपनी आंखें खोलीं।

वह तारों भरे आकाश के नीचे जमीन पर लेटी हुई थी। अकेली। एक तीखी आवाज सुनकर उसने बगल में देखा और पाया कि वह कौन था।

मातृकाएं। अलाव के चारों ओर बैठी हुई, ठीक उसी तरह जैसे उस समय जब वह चेनचेन को लेकर आई थी।

चेनचेन…

ओह, बेचारी स्त्री! पार्वती ने ही उसे बहकाया था। उसे नृत्य के पास ले आई। उसे मातृकाओं के समूह में शामिल कर लिया। जिनके बीच उसे मुक्ति तो मिली, लेकिन अंत में उसे विनाश भी प्राप्त हुआ।

धिक्कार है अंधका!

उसने एक बार उसे उसके जन्म के नाम से पुकारा था, लेकिन अब उसके लिए वह नाम अस्तित्वहीन हो चुका था। वह वह व्यक्ति नहीं था जिसे उसे वर्षों पहले त्यागना पड़ा था। वह एक क्रूर राक्षस था। हिरण्यक्ष ने उसे भयानक बना दिया था। घिनौना। दुष्ट।

लेकिन भैरव हमेशा कहता था कि कोई भी पूरी तरह से बुरा नहीं होता... हर कोई अपनी कहानी का नायक होता है।

अंधका अपने ही अजीब तरीके से अंत तक पहुँच जाएगा। उसे पता नहीं था कि वह गर्भवती है...

मैं उसके कार्यों को क्यों उचित ठहरा रही हूँ? मातृत्व की भावनाएँ! मुझे उन्हें खत्म करना होगा।

पार्वती ने अपने विचारों को त्याग दिया और अलाव की ओर चल पड़ीं, जहाँ उन्होंने चामुंडी, नरसिम्ही, ब्राह्मणी और अन्य मातृकाओं को देखा। वे सभी अपनी अगली चाल पर चर्चा कर रही थीं।

हमले के बाद वे नरसिम्हा और प्रहलाद को वहीं छोड़कर चले गए थे। पार्वती रुकना चाहती थीं, लेकिन ब्राह्मणी ने कहा कि उनका युद्ध इंद्र से नहीं, बल्कि अंधक से है। उसे ही हराना होगा—कोई और नहीं। उसने पार्वती को चोट पहुंचाई थी। इंद्र तो अंधक का सिर्फ एक हथियार था।

वह उनके आसपास की अधिकांश बुराइयों का मूल कारण था, और मूल कारण को मारना स्वयं इंद्र की पराजय का कारण बनेगा।

वे गाँव के बाहर, उत्तर-पूर्व दिशा में थे जहाँ हवाएँ तेज़ चल रही थीं। वे उसके पदचिह्नों का पीछा कर रहे थे। पूछताछ करते हुए, वे उसके बारे में धीरे-धीरे और अधिक जानकारी प्राप्त कर रहे थे। वह अपने साथियों के साथ यात्रा कर रहा था। उसे आसानी से पहचाना नहीं जा सकता था। क्योंकि जिन्होंने उसे देखा, उन्होंने उसे सचमुच देखा था। और उन्होंने देखा कि उसके पदचिह्न उत्तर-पूर्व दिशा की ओर जा रहे थे।

लेकिन क्यों? वह हर चीज़ से क्यों भाग रहा था? वह तो संघर्ष के केंद्र में रहना पसंद करता था, फिर भी वह यहाँ कहीं गुमनाम सा था।

‘हमने क्या फैसला किया है?’ पार्वती ने पूछा। उसकी आँखें सूजी हुई थीं।

ब्राह्मणी ने कहा, 'हम संपर्क का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने उसे कुछ दिन पहले गांव में देखा था, लेकिन उन्हें यकीन नहीं है कि वह कहां गया।'

पार्वती ने सिर हिलाया। वे जानकारी के बदले सोना, चांदी या जो भी सिक्का उन्हें मिलता था, दे रहे थे, और बदले में जरूरतमंदों की मदद के लिए छोटे-मोटे काम भी कर रहे थे।

‘क्या तुम ठीक हो?’ ब्राह्मणी ने पूछा।

नहीं। लेकिन क्या मेरे पास न होने का विकल्प है?

'जब हम इसे करेंगे तब आपका वहां मौजूद रहना जरूरी नहीं है।'

पार्वती ने अपने जबड़े भींच लिए। ‘मैं जानती हूँ। मैं बस आप सबकी मदद करना चाहती हूँ।’ उसे नहीं पता था कि वह अंधका का सामना कर पाएगी या नहीं। उसके बेजान शरीर को देख पाएगी या नहीं। उसने पूरी जिंदगी यही सोचा था कि उसका बेटा मर चुका है, लेकिन वह जीवित था। बिल्कुल जीवित था। और तबाही मचा रहा था।

मातृकाओं में से एक ने कहा, 'हम जानते हैं।'

पार्वती उन सभी को नहीं जानती थी क्योंकि वह सबसे बहुत अलग-थलग महसूस कर रही थी। वह एक ही समय में हताश और चिंतित महसूस कर रही थी। उन्होंने कुछ देर इंतजार करने का

फैसला किया और पार्वती वापस सो गई। उसे पता था कि ब्राह्मणी सब कुछ संभाल लेंगी। हालांकि, जैसे ही उसे नींद आने लगी, उसने परछाई में कुछ हिलता हुआ देखा…

फिर एक और बात…

उसे महसूस हुआ कि कुछ गड़बड़ है। शायद यह सहज प्रवृत्ति थी, लेकिन उसने पीछे मुड़कर अपने समूह की ओर देखा। वे बेखबर थे—अभी भी आपस में बातचीत कर रहे थे। यहाँ तक कि चामुंडी का पैंथर भी हल्की खर्राटे ले रहा था।

मुझे उन्हें चेतावनी देनी चाहिए... या क्या मैं इस बारे में ज्यादा सोच रहा हूँ?

लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाती या कर पाती, एक तीर हवा में तेज़ी से आया और उसके कंधे में जा लगा। वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ी। इस आवाज़ ने अन्य मातृकाओं को सतर्क कर दिया, जिन्होंने तुरंत अपने हथियार निकालकर अज्ञात शत्रु पर हमला कर दिया।

लेकिन दुश्मन ज़्यादा देर तक अज्ञात नहीं रहा। जंग लगे कपड़ों वाला एक डाकू जंगल से निकला और हाथ में एक कागज़ लिए उनकी ओर बढ़ा। उसके पीछे-पीछे धनुष और बाण लिए और भी लोग आ गए, जो मातृकाओं पर हमला करने के लिए तैयार थे।

पार्वती असहनीय पीड़ा में थी। उसने बाण को निकालने की कोशिश की, जिससे उसे बहुत दर्द हो रहा था।

'तुम्हारे दोस्त का संदेश। "मेरा पीछा मत करो। मेरे पीछे मत आओ। जहाँ मैं जाऊँगा, वहीं तुम गिरोगे। दूर रहो।"' डाकू ने संदेश पढ़ना बंद कर दिया और उसे फेंक दिया। 'मुझे लगता है तुम्हारा दोस्त तुम्हें पसंद नहीं करता। और न ही हम, क्योंकि उसने हमें तुम्हें नापसंद करने के लिए पैसे दिए हैं।'

पार्वती रेंगते हुए अपने पलंग तक पहुँची, जहाँ उसने अपना खंजर रखा था। कंधे में अभी भी तीर लगा हुआ था, उसने दर्द भरी कराह के साथ खंजर उठाया और उसे चला दिया। अगले ही पल, डाकू ज़मीन पर पड़ा था, उसके मोटे सिर से एक धार निकली हुई थी।

अपने गिरे हुए नेता को देखकर बाकी डाकू घबरा गए। मातृकाओं ने इस मौके का फायदा उठाकर उन्हें चुनौती दी। एक डाकू की ओर त्रिशूल फेंका गया, जबकि एक फंदा दूसरे डाकू के गले में फंदा डालकर उसे जकड़ लिया और उसकी गर्दन मरोड़ दी। कुछ मातृकाओं ने पार्वती को उस भयानक स्थिति से निकलने में मदद की, ठीक वैसे ही जैसे उसने वर्षों पहले किया था। वह एक बार फिर असहाय, टूटी हुई थी और अब और सहन नहीं कर सकती थी। वह इस दर्द और पीड़ा से मुक्ति पाना चाहती थी।

मैं वापस नहीं जा सकता। मैं दोबारा भाग नहीं सकता। पिछली बार जब मैंने भागा था, तब मैं अकेला था।

अपनी बची-खुची ताकत से उसने तीर निकाल लिया। घाव से खून बह रहा था, लेकिन उसने अपनी धोती का एक टुकड़ा फाड़कर किसी की मदद से घाव पर लपेट लिया। अचानक एक चीख ने उसका ध्यान खींचा। जब उसने आवाज़ की दिशा में देखा, तो उसने ब्राह्मणी को ज़मीन पर पड़ा देखा और एक डाकू उसकी गर्दन पर भाला ताने खड़ा था। पार्वती दौड़कर उस डाकू पर झपटी, जो अचानक हुए हमले से अचंभित रह गया। वह पीछे की ओर लड़खड़ा गया और भाले पर से उसकी

पकड़ छूट गई। पार्वती ने गिरे हुए भाले को उठाया और डाकू को मार डाला। जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो मातृकाओं ने बाकी डाकुओं में से अधिकांश को हरा दिया था और मार डाला था। उसने ब्राह्मणी की ओर हाथ बढ़ाया और उसे उठने में मदद की।

'धन्यवाद। उसे पता है कि हम उसका पीछा कर रहे हैं।'

'उसके आसपास कौवे हैं। बेशक होंगे ही।' पार्वती मुस्कुराई। 'लेकिन इस सब में एक अच्छी खबर भी है।'

और वह क्या होगा?

पार्वती ने कहा, 'हम सही रास्ते पर हैं।'

अध्याय छह

कश्यपुरी अब वैसा नहीं रहा जैसा पहले हुआ करता था।

शहर तबाह लग रहा था, मानो युद्ध के बाद की धरती हो या शिकारी के शिकार के बाद कोई कौआ। सड़न की दुर्गंध गलियों और सड़कों में फैली हुई थी। वेल्डिंग ब्लेड की आवाज़ें गूँज रही थीं और चीख-पुकार हवा में गूंज रही थी। न शांति थी, न सुकून। चारों ओर सिर्फ़ खौफ़ था।

ऐसा लग रहा था मानो शहर में कोई महामारी फैल गई हो।

गरुड़ को आश्चर्य हुआ कि क्या उसके मित्र नरसिम्हा ने इसमें कोई भूमिका निभाई थी।

शायद। वह राजा था, फिर भी नहीं था। उसने राज्य चलाने के लिए अपने प्रतिनिधि नियुक्त किए थे, जबकि वह अपना बदला लेने में लगा हुआ था, लेकिन किसी शहर को चलाना केवल लोगों को नियुक्त करने से कहीं अधिक होता है। यह उपस्थिति दर्ज कराने के बारे में था।

गरुड़ अपने कुछ सुपर्ण रक्षकों के साथ शहर से गुज़र रहे थे। उनके बगल में, अपने साथियों के साथ, वाशकल था। गरुड़ ने अपना सिर घुमाकर उसे देखा। उस असुर में कुछ रहस्यमय सा था। शायद उसकी नाक या उसकी चालाक सुनहरी आँखें। शायद उसकी सुंदरता। या शायद यह तथ्य कि वह किसी ऐसे व्यक्ति से मिलता-जुलता था जिससे गरुड़ पहले मिल चुके थे...

कौन...? गरुड़ा को ठीक से समझ नहीं आ रहा था।

लेकिन जो भी था, वह बेहद कष्टदायक था।

हम नरसंहार से कितनी दूर हैं?

'ओह, बस थोड़ी ही दूर है। तब तक नज़ारों का आनंद लीजिए।'

गरुड़ ने घृणा से सिर हिलाया। चारों ओर फैली जर्जरता की गंध से उसकी नाक फड़क उठी। चूहे इधर-उधर भाग रहे थे। नालियों से बदबू आ रही थी। सड़कों पर खड़े लोग उन्हें घृणा भरी निगाहों से देख रहे थे। कुछ तो चिल्लाकर धमकी भी दे रहे थे, लेकिन पहरेदार उन्हें पीछे धकेल रहे थे। गरुड़ को इस बात पर आश्चर्य नहीं हुआ कि नरसिम्हा यहाँ नहीं आना चाहता था। यह उसके किए गए कर्मों की जीती-जागती याद दिला रहा था। राजा की हत्या करके उसने जनता के क्रोध को आमंत्रित किया था। उसके पक्ष में केवल वाशकल और अन्य मंत्रियों की टीम ही थी।

'हम यहाँ हैं।' वाशकल की आवाज़ ने उसके विचारों को भंग कर दिया।

घर लोगों से घिरा हुआ था, उनका गुस्सा साफ झलक रहा था। गार्डों ने भीड़ को चीरते हुए गरुड़ के लिए रास्ता बनाया।

गरुड़ जीवन भर दयालु स्वभाव का व्यक्ति रहा था। वह अपनी माँ से बहुत प्रेम करता था। और भले ही उसके साथ अन्याय हुआ हो, उसने कभी भी इस दुनिया से नफरत नहीं की। वह हमेशा सबसे कठिन परिस्थितियों में भी सकारात्मक पहलू देखता था।

लेकिन यहाँ...

उसने घृणा देखी। उसने आतंक देखा।

उसके सामने दो लोग लेटे हुए थे। एक महिला, जो जली हुई थी और जिसकी खोपड़ी उखड़ी हुई थी, और एक पुरुष जिसके अंग मुड़े हुए, टूटे हुए और नष्ट हो चुके थे।

जैसे ही उसके गले में पित्त उमड़ आया, उसने अपने दूसरे सबसे बड़े अधिकारी को आदेश दिया, 'यहां जमा हुए लोगों को हटा दो।'

गार्डों ने लोगों को धक्का देकर दूर हटाया, जिससे समस्या और बढ़ गई। भीड़ ने थूकना और जवाबी कार्रवाई करना शुरू कर दिया।

हमें अपना शहर वापस चाहिए!

किसी ने गरुड़ पर पत्थर फेंका, जिसे उसने अपने दस्ताने से रोक दिया।

'इन्हें यहाँ से बाहर निकालो!' गरुड़ चिल्लाया।

'तुम बहुत क्रूर हो!'

'तुम्हारा शासक एक राक्षस है!'

हम बुराई के शासन में हैं!

लोगों को घसीटकर ले जाते समय उन्होंने विरोध प्रदर्शन किया।

गरुड़ चुपचाप, सतर्क खड़ा रहा। भीड़ छंटने और उसके रक्षकों द्वारा घटनास्थल को घेर लेने के बाद, वह घुटनों के बल बैठ गया और शवों का निरीक्षण करने लगा। उसने मुड़कर देखा तो वाशकल उसे देख रहा था।

'मुझे लगता है कि जनता आपको ज्यादा पसंद नहीं करती,' असुर ने टिप्पणी की।

गरुड़ा ने उसकी बात अनसुनी कर दी। 'क्या यह सब नशे में हुई लड़ाई का नतीजा है?'

'वास्तव में।'

ऐसा लगता तो नहीं है।

सबसे पहले शवों की पहचान करने वाला स्थानीय सिपाही एक तरफ खड़ा था, हवा में सूखे पत्ते की तरह कांप रहा था। गरुड़ ने उसे इशारा करते हुए पूछा, 'यह तुम्हें कहाँ मिला?'

'यह सराय के ठीक बाहर था, महाराज।'

'क्या कोई गवाह है?'

'यह घटना आधी रात को घटी, महाराज।'

'ये शराबखाने जल्दी बंद हो जाते हैं, है ना? तो उसके बाद ऐसा हुआ।'

'देखने से तो ऐसा लगता है, महाराज, कि वे एक जोड़ा हैं। वे अवश्य ही रहे होंगे...'

गरुड़ ने सिर हिलाया। 'हां, मुझे ऐसा ही लगता है। क्या हमारे पास कोई संदिग्ध है?'

'हां, वे रंगे हाथों पकड़े गए, बिल्कुल। उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया और रो रहे थे।'

रो रही हो? दिलचस्प।

गरुड़ उठ खड़ा हुआ।

वाशकल ने कहा, 'मेरा मानना है कि आपको उनसे मिलना चाहिए। कमांडर गरुड़, उनकी नीली आंखें बहुत सुंदर हैं।'

गरुड़ ने वाशकल की रहस्यमयी टिप्पणी को समझते हुए सिर हिलाया—अपराधी नाग थे। 'चलो चलें!'

जेल में एक लंबा गलियारा था जिसके एक तरफ दीवार और दूसरी तरफ कोठरियाँ थीं। जब गरुड़

वहाँ से गुज़रा तो कैदियों ने उस पर चिल्लाया और उसे घूरा। नरसिम्हा के साथ युद्ध और राजहत्या के बाद, नरसिम्हा के विरोधियों में से कई को चुप कराने के लिए कैद कर दिया गया था।

वाशकल एक कोठरी के बाहर रुक गया। गरुड़ ने सलाखों के बीच से अंदर झाँका और कोने में दो लोगों को दुबके हुए देखा। सैनिकों ने दरवाज़ा खोला और वह अंदर चला गया, उसके पीछे वाशकल भी गया। गरुड़ ने नागों को देखा। वही नाग जिनका नरसिम्हा ने समर्थन किया था। एक सुपर्ण होने के नाते, उसे नागों में कभी कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन इस समय, उसे उन पर दया आ रही थी।

उसने सीधे-सीधे पूछा, 'तुमने उन दो लोगों की हत्या क्यों की?'

वे कांप रहे थे। वे डरे हुए थे। वे बोल नहीं पा रहे थे।

'बोलो,' गरुड़ ने कठोर स्वर में मांग की। 'बोलो, धिक्कार है तुम पर!'

'हमें ऐसा करने के लिए पैसे दिए गए थे। हमने यह सब पैसों के लिए किया। बस इतना ही। हम भिखारी हैं। कूड़ा बीनने वाले हैं।'

गरुड़ ने सिर हिलाया। 'दिलचस्प। तुम दोनों को किसने पैसे दिए?'

'हमें नहीं पता। वह एक सैनिक था... नहीं... एक... एक व्यापारी—' वे रोते हुए रुक गए। 'हमें नहीं पता कि वह कौन था।'

गरुड़ ने सिर हिलाया। 'लेकिन तुमने हत्या की है और इसके लिए कोई क्षमा नहीं है। तुम्हें इसका भुगतान करना होगा।'

इतना कहकर उसने जेल अधीक्षक को फांसी की तैयारी करने का आदेश दिया। जब वह बोल रहा था, तभी उसने देखा कि वाशकल मुस्कुरा रहा है।

उस बदमाश का इसमें ज़रूर हाथ है। वरना वो इतना खुश क्यों होता?

गरुड़ा ने आगे कहा, 'जिस व्यक्ति ने उन्हें पैसे दिए हैं, उसे ढूंढो। मुझे पूरा यकीन है कि वह यहीं कहीं आसपास है—जैसे कोई चूहा हमें अंदर से खा रहा हो।'

वाशकल की मुस्कान अचानक गायब हो गई।

गरुड़ ने मन में सोचा, मेरी नजर तुम पर है।

प्यार फीका पड़ जाता है।

जैसा आप सोच रहे हैं वैसा नहीं। यह विस्मृति में विलीन हो जाता है। यह पूर्ण भ्रष्टाचार में विलीन हो जाता है।

नरसिम्हा अपने शरीर को कांपता हुआ महसूस कर रहा था, जैसे उसके सपने के भयानक दृश्य उसकी हड्डियों और त्वचा को जकड़कर चीर रहे हों। वह सिसक रहा था और रो रहा था, आंसुओं और पसीने से भीगा हुआ था। लेकिन विचार रुक नहीं रहे थे। वह अंधेरे में देख सकता था...

प्यार।

यह एक तारे की तरह टिमटिमा रहा था। गर्म अंगारों की तरह जल रहा था, लेकिन बर्फ पिघलने जितनी जल्दी बुझ रहा था।

चेनचेन।

भयानक, विवेकशील।

वह अंधेरे में भी चमक रही थी। वह मुस्कुरा रही थी। लेकिन उसकी आँखों में आंसू थे।

'तुम क्या कर रहे हो?' उसने पूछा।

'आपका क्या मतलब है?'

आपको वो नहीं करना चाहिए जो आप कर रहे हैं।

'तुम वास्तविक नहीं हो। तुम मर चुके हो,' नरसिम्हा ने आँखों में आँसू लिए हुए कहा।

'आपने यह कहा—इसी से यह वास्तविक बन जाता है।'

वह रुक गया। वह मरी नहीं थी। कम से कम उसके दिल में तो नहीं। फिर भी उसने अभी-अभी यह कह दिया था। उसे अपराधबोध हुआ, भले ही वह जानता था कि वह वास्तविक नहीं थी, बल्कि उसके मन की कल्पना मात्र थी।

मैं कुछ भी गलत नहीं कर रहा हूँ।

'तुम्हें अभी इसका एहसास नहीं है। लेकिन जब सूरज ढल जाएगा, और तुम खेतों के बीच खड़े होगे और तुम्हारे ऊपर चांदी की तलवार पड़ी होगी— उस दिन तुम पछतावे से मर रहे होगे।'

उसके शब्द अपशगुन जैसे लग रहे थे।

मैं यह तुम्हारे लिए कर रहा हूँ।

'क्या हिरण्यकश्यप ने यही नहीं कहा था? सिंहासन तुम्हें वही बना रहा है जिसे तुमने मारा था,' चेनचेन उसके करीब आते हुए बोली। पिछले सपने के विपरीत, अब उसके पास बच्चा नहीं था। 'तुम यहाँ के नहीं हो, मेरे प्रिय।' उसने उसके चेहरे को छुआ, उसकी उंगलियाँ धीरे से उसकी पलकों और नाक को सहला रही थीं।

उसके सिर पर बाल नहीं थे। बालों के बिना वह खुद को असुरक्षित और नंगा महसूस कर रहा था—ठीक वैसे ही जैसे उसे चेनचेन के साथ रहना पसंद था।

'मैं तुम्हारे साथ ही रहना चाहता हूँ,' उसने धीमी आवाज़ में कहा।

उसने सिर हिलाया। दोनों के सिर एक दूसरे से मिले। और दोनों रो पड़े।

उसने अपने हाथों से उसका चेहरा थामते हुए कहा, 'फुसफुसाहटों से सावधान रहो। तुम्हारे आस-पास जहर फैला हुआ है।'

नरसिम्हा झटके से जाग उठा।

उसे सांस लेने में दिक्कत हो रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसके सीने पर कोई भारी बोझ पड़ा हो, जिससे अगली सांस लेना नामुमकिन हो रहा था। उसने अपने बिस्तर के पास रखी मदीरा वाइन पी और खुद को संभालने की कोशिश की। सुबह का सूरज उष्णकटिबंधीय आकाश में अपनी चमक बिखेर रहा था।

दिन की शुरुआत करनी होगी।

वह युद्ध कक्ष की ओर बढ़ा, उसके अंगरक्षक उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। उसने अपनी कमर पर सोने की धोती बाँध रखी थी और उसकी छाती पर बना श्रीवत्स चिन्ह चमक रहा था। उसकी आँखें गहरी और धँसी हुई थीं। कमरे में प्रवेश करते ही उसने गहरी साँस ली, लेकिन वहाँ पहले से ही कोई मौजूद था, जो मानचित्र की मेज पर बनी आकृतियों से खेल रहा था।

घुंघराले बालों वाला वह भयानक जीव…

नरसिम्हा को वाशकल बिल्कुल पसंद नहीं था। सच कहें तो, वे उसे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। खासकर तब से जब गरुड़ ने वाशकल की हरकतों के बारे में बताया था। असुरों के नरसंहार में उसका हाथ था—जिसके कारण नरसिम्हा को अभी तक पता नहीं थे। नरसिम्हा एक योद्धा थे, एक सिपाही थे। वे आसानी से युद्ध के मैदान में जाकर अपने शत्रुओं का नाश कर सकते थे। लेकिन यहाँ, युद्ध के तंबुओं में, अपनी सेना और मंत्रियों से घिरे होने के कारण, उन्हें जीवित रहने के लिए राजनीति का सहारा लेना पड़ रहा था। लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि यह कैसे करें या किसका विश्वास करें; वे असहाय थे।

नरसिम्हा ने वाशकल को केवल सिर हिलाकर अभिवादन किया और शराब की मेज की ओर चल दिए, जहाँ उन्होंने अपने लिए एक गिलास शराब डाली। उन्होंने गरुड़ द्वारा कही गई बात का कोई जिक्र नहीं किया; वे शत्रु को सचेत नहीं करना चाहते थे।

'महाराज, आप जो पीते हैं, वो मैं ही बनाता हूँ। मेरे पास एक वाइनरी और एक बड़ा बगीचा है जहाँ मैं बेहतरीन अंगूर उगाता हूँ। आपको कभी वहाँ ज़रूर आना चाहिए। मुझे शून्य से चीज़ें उगाने का शौक है,' वाशकल ने कहा। 'जब मैं बच्चा था, गोद लिया हुआ, तब मेरे पिता एक स्थानीय जमींदार के घर में माली थे। और वे कितने प्यारे इंसान थे! उन्होंने मुझे खाद, मिट्टी और पौधों के बारे में बहुत कुछ सिखाया। आपको पता है, मुझे एक पौधा खास तौर पर पसंद है—नाइटशेड। कितना सुंदर नाम है, है ना?'

नरसिम्हा ने कई शत्रु देखे थे। वे आम तौर पर हट्टे-कट्टे, विशालकाय और डरावने दिखने वाले होते थे। लेकिन यह व्यक्ति उनसे अलग था। वह कद में छोटा, सुंदर और आकर्षक था, और उसकी मुस्कान मनमोहक थी।

क्या वह सचमुच दुश्मन है?

'तो मुझे आपका शुक्रिया अदा करना चाहिए,' नरसिम्हा ने कहा। 'मदीरा ने मुझे व्यस्त रखा

हुआ है।' उसने एक ही घूंट में प्याला खाली करते हुए मन ही मन मुस्कुराया। 'आप यहाँ क्या कर रहे हैं?' उसने संक्षेप में पूछा।

'मुझे लगा था कि सुबह आपका मूड बेहतर होगा, लेकिन ऐसा लगता नहीं है।' वाशकल ने अपना हाथ कुर्सी की पीठ पर टिका दिया। 'इंद्र ने एक कौआ भेजा है। क्या आप उसे सुनना चाहेंगे?'

'हमें कौवे के हम तक पहुँचने से पहले ही उसकी छाती फाड़ देनी चाहिए थी।' नरसिम्हा की आँखें सिकुड़ गईं।

"अरे, लेकिन फिर तो शायद हम संदेश चूक गए हों।" वाशकल रुका। "इंद्र ने युद्धविराम की घोषणा कर दी है। जश्न मनाने का कारण?'

'युद्धविराम?' नरसिम्हा गुर्राया।

"जी हां, वह अमरावती को छोड़कर बाकी सारी जमीनें सौंपने को तैयार है। और हमें अपनी राजधानी से करों के रूप में मिलने वाले कुल राजस्व का पंद्रह प्रतिशत देगा। मुझे लगता है, यह एक ऐसा सौदा है जिसे ठुकराया नहीं जा सकता।"

नरसिम्हा शांत भाव से अपने प्याले में शराब घुमाते हुए चुपचाप सुनते रहे। 'और बदले में, वह पीछे हटना चाहता है?'

'हां, उसे अपने काम से मतलब रखना चाहिए।'

'क्या आपने परिषद से बात की है?'

मैंने सोचा कि मैं यह प्रस्ताव पहले आपके सामने रखूं... जब तक कि आपके मन में कुछ और न हो।'

नरसिम्हा चुप थे। उनके भीतर बहुत गुस्सा भरा हुआ था। उन्हें अपमानित महसूस हो रहा था।

'क्या उसे लगा कि यह सिर्फ पैसों का मामला है? यह उससे कहीं ज़्यादा बड़ा मामला था!' गुस्से से उसकी आँखें सिकुड़ गईं और उसने पूरी ताकत से प्याला एक तरफ फेंक दिया। ज़ोरदार आवाज़ हुई और एक पल के लिए वाशकल की आँखों में डर की एक झलक दिखी, लेकिन उसने खुद को संभाल लिया।

'महामहिम, आपको अपने क्रोध से ऊपर उठकर सोचना होगा,' वाशकल ने कहा। 'आपको उस राज्य के बारे में सोचना होगा जिस पर आप शासन कर रहे हैं।'

मुझे परवाह नहीं, नरसिम्हा ने लगभग बुदबुदाते हुए कहा।

उसने एक ही झटके में मेज को खाली कर दिया, शराब के जग उलट गए और उनका सारा पेय ज़मीन पर बिखर गया। गिलास भी उसी तरह ज़मीन पर गिर पड़े। नरसिम्हा ने मेज को पकड़ा और ज़ोरदार आवाज़ के साथ उसे दो टुकड़ों में तोड़ दिया।

हिंसक आवाज़ें सुनकर पहरेदार दौड़ते हुए अंदर आए, लेकिन वे चुपचाप एक कोने में खड़े रहे।

'मेरे पास एक विचार है,' वाशकल ने नरसिम्हा द्वारा मचाई जा रही तबाही को अनदेखा करते हुए बेपरवाही से कहा। 'एक कहानी है। और मैं तुम्हें वह कहानी सुनाऊंगा अगर—'

नरसिम्हा उसकी ओर झपटा। 'मैं तुम्हारी तुच्छ कहानियाँ नहीं सुनना चाहता!'

'ओह, लेकिन आपको यह सुनना होगा। यह आपसे संबंधित है,' वाशकल ने मुस्कुराते हुए

कहा।

नरसिम्हा ने अपने जबड़े और मुट्ठी भींच ली और पीछे हट गए, जबकि वाशकल अपनी कुर्सी से उठकर एक टूटे हुए जग में थोड़ी शराब डाली। 'टूटी हुई चीजों से एक खास तरह की काव्यात्मकता जुड़ी होती है।'

'अपनी कहानी सुनाना शुरू करो। मेरा धैर्य खत्म हो रहा है।'

एक बार एक राजा, वास्तव में एक देवता, ने महसूस किया कि उसके पास बहुत अधिक शक्ति है। वह इससे थक गया था। वह जानता था कि यह उसे अंदर से नष्ट कर रही है। लेकिन उसने इसका इस्तेमाल जारी रखा। मानो उसने दुनिया को नियंत्रित किया। लेकिन जब उसकी बेटी का जन्म हुआ तो चीजें बदलने लगीं। हालांकि उसने एक भयानक जीवन जिया था, वह अपनी बेटी के लिए कुछ भी करने को तैयार था और उसे अपने जैसा नहीं, बल्कि एक नेक जीवन जीने में मदद करना चाहता था।

लेकिन कुछ तो गड़बड़ थी। शायद उसका कर्मफल। उसने जवानी में भयानक काम किए थे और कर्मफल उसे भुगतना पड़ा। उसे अपनी नन्ही बच्ची को सांस लेने में तकलीफ झेलते देखना पड़ा। आयुर्वेद से भी उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। वह चिंतित था। वह तांत्रिकों, जादूगरों और टोना-टोटका करने वाली महिलाओं के पास गया, लेकिन कोई भी उसे ठीक नहीं कर सका। जब तक कि...

वाशकल मुस्कुराया। 'मृत्यु की देवी नृति ने उसे बताया कि क्या करना है। देवी ने कहा, "अपनी शक्ति अपनी पुत्री को दे दो। तुम्हारा एक अंश उसमें समा जाएगा और बदले में मैं उसे जीवनदान दूंगी।"'

ध्यान से सुनने पर नरसिम्हा का क्रोध धीरे-धीरे कम होने लगा। वह समझ गया था कि कहानी किस ओर जा रही है और वाशकल किसके बारे में बात कर रहा है।

और उसने ऐसा ही किया। उसने अपनी सारी शक्ति खो दी, लेकिन बदले में उसे वह मिल गई।

मुझे पता है कि आप किसके बारे में बात कर रहे हैं।

'अब तो हर कोई यही मानता है क्योंकि यह एक मिथक बन चुका है। क्या मिथक इसी तरह नहीं बनते?'

नरसिम्हा ने धीमी आवाज़ में गुर्राते हुए कहा, 'तुम क्या कहना चाह रहे हो?'

'मैं कहना चाहता हूँ कि या तो उससे समझौता कर लो और शांति से राज्य पर शासन करो, या अगर तुम बदला लेने के लिए इतने बेताब हो, तो सही भूमिका निभाओ।' वह रुका। 'तुम उसे वहीं चोट पहुँचाओ जहाँ उसने तुम्हें चोट पहुँचाई है।'

'तुम पागल हो!' वाशकल का मतलब समझकर नरसिम्हा चौंक गया।

'क्या मैं हूँ? क्या वह था?' वाशकल ने पूछा। 'मैंने इस समस्या को हर पहलू से देखा है। यही सबसे अच्छा समाधान है। आप उसके भीतर छिपी हुई शक्ति को प्राप्त कर सकेंगे।'

नरसिम्हा आगे बढ़े, असुर की गर्दन पर हाथ रखकर उसे ज़मीन से उठा लिया। वाशकल भय और पीड़ा से कराह उठा। वह रोने या बेहोश होने की कगार पर था, क्योंकि वह सांस नहीं ले पा रहा था और उसकी आंखें बाहर निकलने लगी थीं।

'मुझे ये भयानक विचार मत बताओ,' नरसिम्हा क्रोध से गुर्राया। 'मुझे नहीं पता कि तुम क्या कर रहे हो और क्यों, लेकिन मैं एक बात जानता हूँ। अगर मुझे तुम्हारा असली मकसद पता चल गया, तो तुम्हारे लिए बहुत बुरा होगा... बहुत बुरा। मुझे तुम्हारी चिंता है।'

'तुम... गलत हो... बिलकुल गलत...' वाशकल खांसा। 'मैं तो बस तुम्हारे साथ सही करना चाहता हूँ। मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ।' वह हांफते हुए बोला। 'तुम्हें बाद में समझ आ जाएगा।'

तो फिर आप ऐसे भयानक विचार क्यों सुझाते हैं? ऐसे काम जिनसे मैं प्रेम के मिशन पर निकले व्यक्ति की बजाय एक तानाशाह की तरह दिखूंगा।

वाशकल बोलने के लिए संघर्ष कर रहा था। 'मैं तुम्हें इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि'—वह खांसा —'तुम्हें अपने दुश्मनों को हराने के लिए उस शक्ति की आवश्यकता पड़ सकती है...'

'कौन से शत्रु? मेरे तो कोई शत्रु ही नहीं,' नरसिम्हा ने ताशकल को झकझोरते हुए कहा। उनका श्रीवत्स तेज चमक रहा था, जिससे असुर की आंखें लगभग चौंधिया गईं।

'दानवों के बीच कुछ हलचल हो सकती है...'

जैसे ही उसने यह कहा, नरसिम्हा ने उसे छोड़ दिया। वाशकल जमीन पर पड़ा हांफ रहा था, खांसते-खांसते सांस लेने की कोशिश कर रहा था।

'क्या हलचल है?'

'दानव शायद यहाँ से नहीं जाएँगे। वे तख्तापलट कर सकते हैं। मैं उन्हें काबू में करने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन वे मुसीबत खड़ी कर सकते हैं।' वाशकल ने गला साफ किया। 'सबसे बुरी स्थिति में, उन्हें हराने के लिए शायद आपको किसी देवता की शक्ति की आवश्यकता पड़ सकती है।'

मैं पहले से ही भगवान हूं।

'ऐसा तो कोई देवता कभी नहीं कहेगा।' वाशकल ने फिर खांसा और तंबू को सहारा देने वाले लकड़ी के खंभों पर झुक गया। 'मुझे नहीं लगता कि दानव कोई समस्या पैदा करेंगे, लेकिन सावधानी बरतना बेहतर है।'

नरसिम्हा तंबू से बाहर निकल गए, उन्हें देखकर सावधान खड़े हुए पहरेदारों की अनदेखी करते हुए। वाशकल के शब्द उनके मन में गूंज रहे थे और वे सोचने लगे। क्या कोई दूसरा रास्ता है? ज़रूर होगा।

अन्यथा, यह एक समस्या होगी।

बड़ी समस्या।

अध्याय आठ

प्रहलाद को वह दिन अच्छी तरह याद था जब यह घटना घटी थी।

रात हो चुकी थी। सूरज क्षितिज के पार डूब चुका था और तूफ़ानों का कहर छंटने के बाद, अँधेरे आकाश में कुछ तारे झिझकते हुए दिखाई दे रहे थे। प्रहलाद अपनी बालकनी में बैठा अपने प्रिय देवता और रक्षक, भगवान नरसिम्हा से मिलने के क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके पिता, राजा हिरण्यकश्यप की मृत्यु के बाद से ही सब कुछ अस्त-व्यस्त था; कश्यपपुरी नगर में उथल-पुथल मची हुई थी। हर गली के कोने में बहसें और चर्चाएँ हो रही थीं और अंतहीन झगड़े चल रहे थे। हर विचार, हर प्रस्ताव, हर सुझाव का ज़बरदस्त विरोध हो रहा था और कभी-कभार हत्या का प्रयास भी किया जा रहा था। फिर भी, उसने इन सब के बावजूद नरसिम्हा के साथ खड़े रहने का संकल्प लिया था।

नरसिम्हा ने भी डटकर मुकाबला किया। उन्होंने कठोरता से लड़ाई लड़ी। उन्होंने समस्याओं का सामना किया। प्रहलाद ने एक कर्तव्यनिष्ठ भाई, पुत्र और मित्र की तरह उनका साथ दिया।

एक आवाज ने पूछा, 'तुम अपने सामने की दुनिया को कैसे देखते हो?'

वह उस आदमी का इंतज़ार कर रहा था, इस उम्मीद में कि उससे वह बातचीत हो सकेगी जो काफी समय से नहीं हो पाई थी। वे कभी बात करते थे, लेकिन अब सब कुछ भुला दिया गया था...

लेकिन आज रात का अनुभव कुछ अलग था।

'अरे, आखिरकार तुमने काम पूरा कर ही लिया,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

नरसिम्हा ने सिर हिलाया। 'क्या आपने खाना खा लिया?'

'शायद एक बत्तख। और आप?'

'एस्पैरगस।' वह गुर्राया। 'मेरा पेट खराब है। इसे मांस चाहिए, लेकिन मैंने परहेज किया है।'

उसकी आँखें थकी हुई थीं। उसने अपने बाल संवारे हुए थे और उसका चेहरा छाया हुआ था, लेकिन उसकी आँखों में दर्द और खालीपन साफ झलक रहा था। प्रहलाद ने चेनचेन के बारे में बात करने से परहेज किया था। इससे नरसिम्हा को बहुत दुख होता और वह उसे दोबारा उस दर्द से गुजारना नहीं चाहता था। उसे आज भी वह दिन याद था जब उन्हें सच्चाई पता चली थी... नरसिम्हा घंटों रोया था और उसकी गुर्राहट रात के कौवों से भी तेज थी। और जब उसने राजा बनने का प्रस्ताव रखा... प्रहलाद समझ गया कि कुछ गड़बड़ है।

लेकिन अब नहीं। उसके सामने खड़ा व्यक्ति थका हुआ और घायल था, लेकिन दुष्ट नहीं था। उस तरह का दुष्ट नहीं जैसा उसने अंत्येष्टि (अंतिम संस्कार) में देखा था।

'परिवर्तन की प्रक्रिया कैसी चल रही है?'

'काफी मुश्किल था,' नरसिम्हा ने कहा। 'हालांकि मैंने आपके लिए कुछ करने का समय निकाल ही लिया।'

प्रहलाद ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और भौंहें चढ़ा लीं। 'और वह क्या होगा?'

'मैंने एक जौहरी से आपके लिए कुछ बनवाया है। यह थोड़ा शरारतीपन है, लेकिन आपका शुक्रिया अदा करने का इससे बेहतर तरीका नहीं है, इसलिए आभारी रहिए।' नारा थोड़ी झिझकते

हुए, बेमन से मुस्कुराते हुए आगे आई और उसे कुछ थमा दिया।

'यह क्या है?' प्रहलाद ने धीरे से कहा और फिर अपनी हथेली पर नजर डाली।

यह एक अंगूठी थी। बीच में लगा पत्थर पुखराज और नीलम के मिश्रण जैसा दिखता था। इसके ऊपर कुछ उकेरा हुआ था—एक प्रतीक जो नरसिम्हा के सीने पर बने प्रतीक से काफी मिलता-जुलता था।

'श्रीवत्स का चिन्ह।' प्रहलाद मुस्कुराया।

'जी हाँ। मुझे याद है कि आप भगवान विष्णु के अवतार में विश्वास करते हैं।' नारा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। 'मैं शायद एक अवतार हूँ और शायद नहीं, मुझे नहीं पता।' वह रुका। 'लेकिन इसका महत्व इससे कहीं अधिक है। इसमें आशा का मूल्य निहित है। कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। अगर मेरे लिए नहीं, तो कम से कम आपके लिए।'

'तुम्हें इसकी मुझसे ज़्यादा ज़रूरत है।' प्रहलाद हँस पड़ा। अंगूठी पहनते समय उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसे कभी किसी ने कुछ उपहार नहीं दिया था, यहाँ तक कि उसके पिता ने भी नहीं, और अब नारा ने उसे यह अनमोल उपहार दिया था... जिससे वह मूर्ख की तरह मुस्कुरा रहा था।

'मेरे पास भी एक है।' नरसिम्हा ने अपनी उंगली में पहनी अंगूठी प्रहलाद को दिखाई, जिसे प्रहलाद ने तब तक देखा ही नहीं था। 'बिल्कुल तुम्हारी जैसी। यह इस बात की याद दिलाती है कि चाहे दिन कितने भी अंधकारमय क्यों न हों, हम प्रकाश की किरण बनकर रहेंगे।'

प्रहलाद मुस्कुराया। वह भगवान विष्णु से नारा को होश में लाने की प्रार्थना कर रहा था। शायद उसकी प्रार्थना का उत्तर मिल गया था। नारा फिर से सामान्य लग रहा था। प्रहलाद उसे गले लगाना चाहता था, लेकिन शर्मिंदगी के मारे उसने सिर हिला दिया। 'इसके लिए धन्यवाद।'

उसने अंगूठी को दोबारा देखा...

अंगूठी पहले से भी ज्यादा गंदी थी। और कितना भी साबुन लगा लो, वो साफ नहीं हो रही थी।

वह खाने की मेज पर बैठा उसे देख रहा था, और उसे कुछ महीने पहले हुई बातचीत याद आ रही थी—नरसिम्हा के साथ हुई उसकी आखिरी दिल की बातों में से एक। उसके बाद हालात बेकाबू हो गए थे। अब उनकी बातचीत बस एक याद बनकर रह गई थी। शायद अंगूठी का कोई महत्व नहीं था, या शायद उसका महत्व खो गया था।

'तुम क्या सोच रही हो?' धृति ने मेज के दूसरी ओर से पूछा।

प्रहलाद ने सिर हिलाया। वह अपने तम्बू में खाना खा रहा था। आज का दिन खुशनुमा होना चाहिए था।

यह वही दिन था जब युद्धविराम की घोषणा हुई थी। उसने इंद्र के आत्मसमर्पण की अफवाहें सुनीं और खुशी से खिलखिला उठा। अब और खून-खराबा नहीं। अब और किसी भी तरह की भयावहता और चीख-पुकार नहीं। आखिरकार, सब कुछ खत्म हो गया था।

'मैं... मुझे नहीं पता।' पहली बार, प्रहलाद अपनी प्रेमिका के सामने कुछ कह नहीं पा रहा था।

धृति, जो किसी भी बात को ना में नहीं मानती थी, अपनी कुर्सी प्रहलाद के पास खींचकर उसके बगल में बैठ गई। 'क्या बात है, मेरे प्रिय?'

‘तुम बेवकूफ की तरह लग रहे हो।’

‘मैं यही तो चाह रहा था... बेवकूफ।’

प्रहलाद मुस्कुराया। 'मैं सोच रहा था कि क्या मुझे नरसिम्हा से मिलना चाहिए और उनसे युद्धविराम के बारे में बात करनी चाहिए। उन्हें उस शांति की ओर प्रेरित करना चाहिए जो इससे दोनों पक्षों को मिलेगी।'

‘तुम्हें करना चाहिए। तुम दोनों आपस में बातचीत नहीं करते।’

‘क्योंकि उसने मुझे खुद से दूर कर दिया है। इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।’

‘तुम भी मुझसे दूर हो गई हो। अब तुम खुलकर अपनी बात नहीं कहती। इसमें तुम्हारी भी उतनी ही गलती है जितनी उसकी। मुझे यकीन है कि वह तुम्हारी भावनाओं का ख्याल रखता है।’

प्रहलाद ने सिर हिलाया, हालाँकि उसे इस बात पर यकीन नहीं था। धृति महज़ अच्छी बनने की कोशिश कर रही थी, उनके बीच सुलह कराने की कोशिश कर रही थी, लेकिन नरसिम्हा उसके लिए एक अजनबी था, एक पराया। उसने बात का रुख बदल दिया। 'तुम क्या सोच रही हो? क्या तुम शादी के बारे में सोच रही हो?'

मैं इस समय तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ।

'आप झूठे हो।'

नहीं, मुझे चिंता है। शादी बाद में भी हो सकती है।

‘मुझे नहीं पता।’ प्रहलाद ने आह भरी।

उन्होंने इस मुद्दे पर कई बार चर्चा की थी, लेकिन एक बार भी वे किसी संतोषजनक निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाए थे। वह भी जवान था और धृति भी, लेकिन राजपरिवार में इस उम्र में ही शादी होती है। उम्र मायने नहीं रखती। सबकी नज़र में वे दोनों वयस्क थे और धृति, जिसने कभी शादी के बारे में सोचा भी नहीं था, अब शादी करना चाहती थी। वह अनाथ थी और उसने अपने जीवन का अधिकांश समय कठिनाइयों में बिताया था। लेकिन अब प्रहलाद उसके साथ था और वह चाहती थी कि वे हमेशा साथ रहें।

प्रहलाद थोड़ा झिझक रहा था। जीवन का नया अध्याय शुरू करने से पहले वह अपनी सारी चिंताओं से छुटकारा पाना चाहता था। शहर और वहां की अस्थिरता के बारे में सोचते हुए उसके चेहरे पर शिकन आ गई।

आपको अभी इसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है। हम इसका हल बाद में निकाल लेंगे।

‘लेकिन मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ। बस मुझे चिंता हो रही है।’ उसने मुट्ठी भींच ली। ‘मुझे नहीं पता कि अभी हालात कैसे हैं और कितने बिगड़ सकते हैं। मैं इसे सुलझाने से पहले ही सब कुछ ठीक करना चाहता हूँ—’

‘तो फिर कुछ करो,’ उसने बीच में ही टोकते हुए कहा। ‘उससे बात करो। उसे युद्धविराम स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करो।’

प्रहलाद को अपने सामने आने वाली चुनौती का ख्याल आते ही मुंह बनाने लगा। लेकिन उसके पास कोई विकल्प नहीं था; वह बहुत लंबे समय से एक सार्थक बातचीत से भागता आ रहा था। उसने आह भरी, थोड़ा पानी पिया और मन ही मन सहमति में सिर हिलाया।

मैं नरसिम्हा से बात करूंगा।

प्रहलाद और उसके अंगरक्षक शाही तंबू के बाहर काफी देर से इंतजार कर रहे थे। हालांकि वे अपने ही युद्ध शिविर में थे, फिर भी वरिष्ठ अधिकारियों को व्यक्तिगत सुरक्षा दी गई थी, ताकि अगर उनके बीच कोई हत्यारा हो तो उससे निपटा जा सके।

लोग तम्बू में आए और चले गए। रात ने अचानक बूंदा-बांदी करके अपना गुस्सा दिखाया। फिर भी प्रहलाद इंतजार करता रहा।

अंत में गार्ड ने कहा, 'महामहिम ने आपको बुलाया है।'

प्रहलाद ने सिर हिलाया और अपने पहरेदारों को बाहर छोड़कर तम्बू में प्रवेश कर गया। तम्बू के अंदर शराब और सड़े हुए फलों की तेज़ गंध आ रही थी। उसने नरसिम्हा को अपने अस्थायी सिंहासन पर बैठे शराब पीते देखा। वह अकेला था। वह कुछ समय से अकेला था।

अगर कोई मीटिंग ही नहीं थी तो वह मुझे किस बात का इंतजार करवा रहा था?

प्रहलाद ने उससे पूछने की जहमत नहीं उठाई। वह आदमी स्पष्ट रूप से नशे में था।

'क्या तुम ठीक हो?' प्रहलाद ने पूछा। 'तुम्हारी किसी उत्सव की रात?'

'जी हां। क्या हो रहा है, लड़के?' कर्कश स्वर में जवाब आया।

नरसिम्हा की आवाज़ उसके पिता जैसी थी। ठंडी। दूर। यहाँ तक कि उनके बीच की दूरी भी अनंत प्रतीत होती थी। प्रहलाद ने अपनी अंगूठी के ऊपरी हिस्से को रगड़ा, मानो उससे शक्ति प्राप्त कर रहा हो।

मैंने युद्धविराम के बारे में सुना। मैं सोच रहा था कि आप इसके बारे में क्या करने वाले हैं।

नरसिम्हा ने धीमी आवाज़ में गुर्राते हुए लड़खड़ाते हुए खड़े हुए। 'हर कोई उस खूनी संधि की बात कर रहा है। उसमें ऐसी क्या खास बात है? जो आदमी बिना लड़े हार मान लेता है, वह मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता।'

'तो आप क्या करने वाले हैं?'

'मुझे नहीं पता।'

प्रहलाद को इसकी उम्मीद थी। नरसिम्हा निर्णायक नहीं थे, क्योंकि उन्हें राज-प्रबंधन का कोई अनुभव नहीं था। उनके सलाहकार तो थे, लेकिन वे केवल चापलूस थे। केवल प्रहलाद ने ही उन्हें कड़वा सच बताया और इसके बदले उन्हें कठोर उपेक्षा का सामना करना पड़ा।

आपको कुछ तो अंदाजा होगा ही।

'कमांडर, आपको क्या लगता है मुझे क्या करना चाहिए?'

कमांडर... यह नाम उसे सताता रहता था। वह यह नाम नहीं चाहता था, पर यह उस पर थोपा गया था। उसे युद्ध में कभी कोई दिलचस्पी नहीं थी, भले ही वह इसमें काफी माहिर हो गया था।

मुझे लगता है कि आपको इसे स्वीकार कर लेना चाहिए।

और मुझे क्या मिलेगा?

'शांति।'

'मेरे बदले का क्या? तुम्हें चेनचेन की कोई परवाह नहीं है,' नरसिम्हा अचानक बोल पड़ा।

‘हाँ, मैं करता हूँ।’ प्रहलाद ने आह भरी। ‘हाँ, मैं करता हूँ। मैं... चिंतित हूँ।’ उसने सिर हिलाया। ‘मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे पिता की तरह बदले की भावना से अंधे हो जाओ।’

‘मुझे लगता है यह उस अस्तबल का श्राप है।’ नरसिम्हा ने सिंहासन की ओर पीछे मुड़कर मूर्खतापूर्वक हंसते हुए कहा। ‘मैं तुम्हें बताता हूँ, यह उस मनहूस अस्तबल का ही कमाल है। इसमें एक ऐसी अपार शक्ति समाई हुई है जो मुझे श्राप देती है और मुझे इस बात पर मजबूर करती है कि बदला लेने की कोशिश करके मैं सही काम कर रहा हूँ।’

प्रहलाद ने अपने होंठ सिकोड़े। 'सही काम करने के लिए अभी भी समय है। अपने दुश्मनों से बेहतर बनने के लिए।'

‘हाँ, बिल्कुल।’ नारा ने प्याला ज़मीन पर फेंक दिया। ‘या फिर...’

'या?'

‘मैं उसे मार डालूंगा। मैं अभी उस पर हमला करूंगा और उसे मार डालूंगा। मुझे क्या करना चाहिए?’

प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'ऐसा करना बुद्धिमानी नहीं होगी।'

‘हम जानते हैं कि इंद्र कैसा है। आपको कैसे पता कि यह हम पर किया गया उसका कोई छल नहीं है?’

क्योंकि उसके लिए करतबों से ज्यादा अहमियत उसके अहंकार को होती है। उसने हार मान ली है और यह उसके अहंकार पर बहुत बड़ा आघात है।

नरसिम्हा चुपचाप अपने शब्दों पर विचार करने लगे और फिर सीना पीटते हुए मन ही मन धुन गुनगुनाने लगे। “यह एक युद्ध गीत था। मन को शांत करने वाला, ध्यान से सोचने वाला गीत। मुझे बचपन में यह सिखाया गया था, ताकि मैं शांत रह सकूँ। अब तो बस मेरा दिल दुखता है। शायद इसलिए कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ या शायद इसलिए कि हालात अब पहले जैसे नहीं रहे।”

प्रहलाद आगे बढ़ा और उस व्यक्ति के पास घुटने टेक दिए जिसे वह अपना पिता, अपना मित्र मानता था। ‘मैं दृढ़ता से मानता हूँ कि आपको युद्धविराम स्वीकार कर लेना चाहिए।’ उसने नरसिम्हा की आँखों में देखा और मुस्कुराया, उन्हें उस गर्माहट से घेर लिया जिसकी उन्हें सख्त ज़रूरत थी। ‘मुझे विश्वास है कि आप भी मेरी तरह जानते हैं कि हमारे राज्य को युद्ध से ज़्यादा शांति की आवश्यकता है। आइए हम अपने समाज के पुनर्निर्माण पर काम करें, भूखे लोगों को सड़कों से हटाकर उन्हें आश्रय दें और उन्हें रोटी और काम मुहैया कराएँ।’

प्रहलाद ने अपने हाथ में पहनी अंगूठी की चमक देखी। नरसिम्हा ने सिर हिलाया और मदहोश होकर उसे गले लगा लिया। एक पल के लिए, दोनों को वही परिचित सुकून महसूस हुआ जो कभी उनके बीच हुआ करता था।

‘ठीक है। मैं आपकी बात मानूंगा,’ नरसिम्हा ने जवाब दिया।

प्रहलाद को लंबे समय से ऐसी उम्मीद का अनुभव नहीं हुआ था।

अध्याय नौ

ऐसे क्षण भी आते थे जब वह पुरानी यादों में खो जाती और बीते हुए वाकये को याद करती। जैसे कि जब उसकी आंखों के सामने उसका बच्चा उससे छीन लिया गया और उसे ठंड में अकेला छोड़ दिया गया; भृंगी की आखिरी झलक।

इस बार यह कुछ और ही था, उतना ही अप्रिय लेकिन उतना ही भयानक।

वह अनाथ अवस्था में गुरुकुल लौट आई थी। उसकी मुलाकात ब्राह्मणी से अभी-अभी हुई थी। उसने आध्यात्मिक ग्रंथ मनुस्मृति चुरा ली थी और इसके लिए उसे डांट पड़ी थी, क्योंकि गुरु की अनुमति के बिना इसे छूना मना था, विशेषकर महिलाओं द्वारा। लेकिन वह ज्ञान प्राप्त करना चाहती थी। इसके अलावा, मनुस्मृति के पन्नों के बीच नामों से भरी एक फाइल क्यों रखी थी? हालांकि वह छोटी थी, लेकिन वह समझती थी कि इसमें कुछ छिपा हुआ है।

पार्वती गुरु के सामने बैठी थी, उसकी आँखों में शर्म झलक रही थी। 'मुझे क्षमा करें, गुरुजी। मैं तो केवल ज्ञान की खोज में थी,' उसने गुरु की ओर दबे स्वर में देखते हुए कहा।

उस झुर्रियों से भरे चेहरे में बुद्धिमत्ता की झलक साफ दिखाई दी। 'तुम्हें समझ नहीं आ रहा, है ना? तुमने एक नियम तोड़ा है, और इसके लिए तुम्हें दंडित किया जाना चाहिए—तुम्हें शाप मिलना चाहिए।'

पार्वती निर्दोष थी। तब तक उसे श्राप का अर्थ और उसके परिणाम पता नहीं थे। लेकिन अब उसे पता चल गया था। किसी बात को इतनी ईमानदारी से कहना कि भाग्य ने उसे सच कर दिखाया, यही श्राप का परिणाम होता है।

'जिन लोगों से आप प्यार करते हैं, उनसे आपको हमेशा परेशानियां रहेंगी। आप उन्हें कभी छू नहीं पाएंगे क्योंकि वे हमेशा आपसे दूर चले जाएंगे। आप ही उनके पतन का कारण बनेंगे।'

पार्वती ने ये शब्द सुने और श्राप स्वीकार करते हुए सिर झुका लिया। चाहे वह श्राप की हकदार थी या नहीं, यह पूरी तरह से व्यक्तिपरक था, क्योंकि उसके कार्यों में कोई दुर्भावना नहीं थी। श्राप के बावजूद, वह जानती थी कि एक दिन वह राज करेगी।

और उस दिन महिलाओं को भी पुरुषों के समान ही ग्रंथ पढ़ने की अनुमति मिल जाएगी।

पार्वती का दिल तेजी से धड़क रहा था और उसके मन में लाखों विचार उमड़ रहे थे। वह जानती थी कि वह सही रास्ते पर है। हवा में एक जानी-पहचानी ठंडक थी, मानो उसके लौटने का इंतज़ार कर रही हो; यह डरावनी थी। उसने पहले हुई घटनाओं के बारे में सोचा। रक्तपात की प्यास बुझाने के लिए, अंधका ने मातृकाओं पर हमला करने के लिए भाड़े के सैनिकों को भेजा था, लेकिन वे असफल रहे थे। उसने उन्हें कम आंका था—या शायद वह उन्हें बस धीमा करने की कोशिश कर रहा था।

मातृकाएँ उनके साथ-साथ चल रही थीं, उनके हथियार तैयार थे, वे हमले के लिए तत्पर थीं। रात उजाली थी—चाँद अपनी पूरी चमक में था, मानो उन्हें उनके गंतव्य तक पहुँचने में मदद कर रहा हो। पैरों के नीचे कुचले हुए सूखे पत्तों की आवाज़, जंगल की गहराई में छिपे रात्रि जीवों की

आवाज़ों के साथ मिल रही थी, जो लोगों की नज़रों से दूर थे। उन्होंने इन पौराणिक जीवों के बारे में अक्सर सुना था, खासकर उत्तर में रहते हुए। देवों और असुरों के बीच युद्ध शुरू होने से पहले, ये जीव जंगलों पर राज करते थे। कुछ लोगों का मानना था कि वे युद्ध के शिकार थे जिनकी आत्माएँ पेड़ों में निवास करती थीं; वे पत्तों के माध्यम से बोलते थे और अपनी नुकीली शाखाओं और लताओं से घुसपैठियों को मार डालते थे। पार्वती ने सुना था कि शिकार करते समय वे रूप बदलकर सुंदर जीव भी बन सकते थे।

मातृकाओं का पालन-पोषण जंगलों में हुआ था, फिर भी उनके मन में एक अजीब सी बेचैनी थी जिससे उनके रोंगटे खड़े हो गए। हवा में ठंडक होने के बावजूद उनके माथे पर पसीने की बूँदें आ गईं।

'हे भगवान!' चामुंडी चिल्लाया।

पार्वती ने मुड़कर देखा तो पाया कि एक पेड़ की जड़ें लंबी होकर चामुंडी के पैरों के चारों ओर लिपट गई थीं।

वे रुक गए, यह महसूस करते हुए कि अचानक अंधेरा छा गया था। चंद्रमा अब पेड़ों की बढ़ती शाखाओं के पीछे छिप रहा था, जो उन सभी को घेरे हुए थीं।

पार्वती ने सबसे पहले आक्रमण किया। त्रिशूल उठाकर, उन्होंने अपने हाथों और पैरों को जकड़ रही जड़ों पर प्रहार करना शुरू किया, लेकिन हर बार जब वह एक जड़ को काटने में कामयाब होतीं, तो दूसरी उग आती और उन्हें जकड़ लेती। चामुंडी अब तक उल्टी लटक रही थीं, उनके पैर उन बुरी जड़ों की जकड़ में थे।

ब्राह्मणी जड़ों से बचने में बाकियों से कहीं अधिक सफल रही थी। उसकी चपलता और गति ने उसे एक भी जड़ को छूने नहीं दिया था।

'यह तकनीक बिल्कुल काम नहीं कर रही है, महिलाओं,' चामुंडी ने एक जड़ पर वार करते हुए चिल्लाकर कहा।

‘हमें कुछ सोचना होगा। यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा,’ पार्वती चिल्लाई।

अचानक, पार्वती ने महसूस किया कि नरसिम्ही असामान्य रूप से शांत थी। दूसरी मातृका बाकी सभी की तुलना में जंगल में अधिक समय बिताती थी। पार्वती ने चारों ओर देखा और पाया कि वह पूरी तरह से जड़ों से ढकी हुई थी, फिर भी वह न तो विरोध कर रही थी और न ही हिल रही थी।

‘नरसिम्ही, क्या तुम हमें सुन सकते हो?’

कोई जवाब नहीं था।

‘नरसिम्ही, कृपया हमसे बात करो।’

कुछ नहीं।

स्त्रियाँ भयभीत थीं; उनके दिल ज़ोर से धड़क रहे थे। पार्वती के चेहरे पर भय का भाव था। उनके माथे से पसीना टपक रहा था। उन्हें ठंड लग रही थी और डर से उनकी त्वचा में सिहरन हो रही थी। उन्हें महसूस हो रहा था कि लड़ने की इच्छा धीरे-धीरे उनसे दूर होती जा रही है। उन्हें ऐसा पहले भी दो बार महसूस हो चुका था। पहली बार तब जब उनका बेटा उनसे छीन लिया गया था, जब वह

बर्फ पर अकेली और असहाय पड़ी थीं। और दूसरी बार तब, जब वह चेनचेन के पास गईं, जो शरीर में तीर लगने से बेजान पड़ी थीं।

वह अब किसी को खोना नहीं चाहती थी। उसे अपने विचारों से बाहर निकलकर अपनी इन महिलाओं को बचाना था। वे उसके प्रियजनों में से आखिरी थीं; वह पहले ही अपने बेटे, पति और सबसे अच्छी दोस्त को खो चुकी थी—वह अब किसी और को नहीं खो सकती थी।

मुझे यह करना होगा।

पार्वती को अपने बचपन में मिली सारी शिक्षा याद आने लगी। कैसे वह रानी बनकर नहीं, बल्कि असुरों के आलीशान राज्य में एक गरीब, मदिरा बेचने वाली के रूप में रही थी। कैसे वह जंगलों में एक गुरु से मिली और उनसे ज्ञान प्राप्त किया। कैसे वह छोटी बच्ची के रूप में अन्य मातृकाओं से मिली और उन्हें पसंद करने लगी। और कैसे इंद्र ने उन्हें अपने साथ ले लिया... कैसे वह भैरव से मिली और उनसे प्रेम करने लगी। तब वह बस एक छोटी बच्ची थी, चाहत से भरी हुई।

पार्वती का मन इतिहास के रहस्यों से होकर तेज़ी से गुज़रने लगा।

और फिर उसे याद आ गया।

लताएँ! वह जानती थी कि वे क्या हैं—और क्या करना है! गुरुकुल की एक किताब में उसने पढ़ा था... ओह, नरसिम्ही! उन्होंने इसे साथ में पढ़ा था!

'मेरी बात मानो। मरने का नाटक करो,' उसने अपने बगल में खड़ी ब्राह्मणी से कहा।

'तुम्हारा क्या मतलब है?' ब्राह्मणी ने कांटों वाली एक लता को काटते हुए पूछा।

'इन वृक्षों में चेतना है, लेकिन ये दुष्ट नहीं हैं। ये हमें दुष्ट समझते हैं क्योंकि हम घुसपैठिए हैं। मरने का नाटक करो और इन्हें पीछे हटने दो। जब ये पीछे हटेंगे, तब हम भाग निकलेंगे,' पार्वती ने समझाया। 'नरसिम्ही भी यही कर रहा है। मरने का नाटक कर रहा है।'

कोई और उपाय न सूझने पर मातृकाओं ने पार्वती के सुझाव का पालन किया और लताओं का विरोध करना बंद कर दिया। जैसे ही उन्होंने ऐसा किया, लताएँ उनके चारों ओर कसने लगीं। कुछ क्षण बीत गए...

और, जिस अचानकता से उन्होंने हमला किया था, उसी अचानकता से लताएँ पीछे हट गईं।

जैसे ही वे मुक्त हुए, पार्वती चिल्लाई, 'चलो!'

मातृकाएं एक साथ दौड़ीं, लेकिन एक ऐसे गांव में आकर रुक गईं जहां की हवा अधिक भारी थी और सन्नाटा मन को मोह लेने वाला था।

वे अंधेरे आसमान के नीचे डेरा डाले हुए थे, एक चौकी बना रहे थे। रात ढल रही थी और सूरज निकल रहा था। वे उत्तर की कड़ाके की ठंड में थे, उस जगह से बहुत दूर जहाँ से उन्होंने शुरुआत की थी। अंधका को खोजने की यात्रा एक चुनौती थी, रोमांच से भरी एक यात्रा। अब, आराम करना आवश्यक था।

पार्वती ढलते हुए चाँद को निहार रही थीं: वह बेहद खूबसूरत लग रहा था। अधिकांश मातृकाएँ गर्म आग के पास सो चुकी थीं। उन्होंने आराम करने से पहले इलाके का जायज़ा लिया था। कोई खतरा नहीं था।

‘क्या तुम ठीक हो?’ ब्राह्मणी ने उसके बगल में बैठते हुए पूछा। वह थकी हुई लग रही थी, लेकिन उसने शांत मुस्कान के साथ कहा, ‘हमें वहाँ बचाने के लिए धन्यवाद।’

‘बस नारंगी चमक का इंतजार कर रही हूँ,’ पार्वती ने धन्यवाद को अनसुना करते हुए जवाब दिया। वे एक टीम थीं।

'आप क्या सोच रहे हैं?'

'मेरे पति की मृत्यु तक मेरी कोई पहचान नहीं थी।'

ब्राह्मणी ने नीचे देखा। 'तुम्हें ऐसा क्यों लगा?'

‘मैंने अपने अंदर इतना कुछ दबा रखा था कि मुझे इसका एहसास भी नहीं हुआ। इसमें भैरव की कोई गलती नहीं थी। मैं खुशकिस्मत थी कि मुझे इतना अच्छा इंसान मिला। बस मेरे आस-पास की परिस्थितियाँ ऐसी ही थीं। मैं सारा दिन घर में रहती और रोती रहती। जब भी मैं कुछ करने की कोशिश करती, सैनिक मेरी मदद के लिए आ जाते। मैं रानी नहीं, बल्कि नाजुक कांच की तरह थी। अब, इस तरह खुले में आकर, मैं खुद को जीवित महसूस कर रही हूँ।’

‘यह जानकर अच्छा लगा। इसीलिए हमारे गुरु ने हमसे कहा था, “विवाह मत करो।” क्योंकि इससे तुम्हारा ध्यान देश को बुराई से बचाने के उद्देश्य से हट जाएगा।’

‘और फिर भी वह मेरे किताबों को छूने के खिलाफ था? कितना बड़ा पाखंडी!’

‘तुम्हें वो कभी पसंद नहीं आया।’ ब्राह्मणी हंस पड़ी।

नहीं, बात बस इतनी सी है... हर मामले में वो चाहते थे कि हम विपरीत लिंग से बेहतर स्थिति में हों, लेकिन जब बात उनके धर्म की आती थी तो वो पुरुषों को ही श्रेष्ठ मानते थे। धर्म के मामले में वो कहते थे, पुराने रीति-रिवाजों का पालन करो।’ उसने अपने होंठ सिकोड़ लिए। ‘मुझे आश्चर्य होता है —क्या पुराने रीति-रिवाज बनाने वालों में नए युग के लिए दूरदर्शिता थी?’

ब्राह्मणी ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'तुम तो काफी दार्शनिक बन गई हो।' उसने उसकी पीठ थपथपाई।

पार्वती मुस्कुराई। वे आराम से चुपचाप बैठे आकाश को निहार रहे थे, तभी दिन निकल आया, पक्षी उड़ने लगे और सूरज की हल्की रोशनी में बर्फ अब उतनी ठंडी नहीं लग रही थी।

एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे घर आ गए हों। और शायद पार्वती को इसी की ज़रूरत थी।

‘नृति ने मुझसे कहा था कि स्कंद वह नहीं है जैसा हम उसे समझते हैं। वह एक असुर है।’ उसने बात शुरू करते हुए कहा।

‘जी हां। यह अंधका है।’

लेकिन अंधका असुर नहीं है। उसका पालन-पोषण एक असुर ने किया था।

उसने स्पष्ट रूप से नहीं बताया। इसलिए हमें नहीं पता।

'क्या होगा अगर कोई स्कंद हो और हमें इसके बारे में पता ही न हो? क्या होगा अगर वह अभी तक भ्रष्ट न हुआ हो?' पार्वती ने पूछा।

'मुझे नहीं लगता कि पार्वती, तुम्हारे अलावा हममें से किसी के बच्चे थे। इसलिए इसका कोई मतलब नहीं बनता।'

पार्वती ने सिर हिलाया। वह सही थी। यह अंधक ही होना चाहिए था। 'मुझे लगता है कि

फिलहाल मैं दुनिया को अधिक आशावादी नजरिए से देखना चाहती हूँ। मुझे उम्मीद थी कि स्कंद के जीवित होने के विचार से मैं इस सोच से बच सकूँगी कि दुनिया भ्रष्ट हो गई है। स्कंद का जीवित होना आशा का प्रतीक है।'

'मैं समझता हूँ।'

हमें लगता है कि वह हिरण्यक्ष के देश हिरण्ययेत्र जा रहा है।

पार्वती ने इसके बारे में सुना था। हिरण्यक्ष की पूजा के लिए समर्पित एक भूमि, जहाँ मुर्दे चलते थे और लाशें पड़ी रहती थीं, जहाँ जंगली जानवर शिकार करने के लिए घात लगाए बैठे रहते थे। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसे उन भूमियों पर चलना पड़ेगा।

उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई।

क्या तुम्हें उस जगह से डर लगता है?

पार्वती ने सिर हिलाया। 'नहीं, लेकिन मुझे उस कारण से डर लगता है जिसके चलते अंधक वापस जा रहा है।' उसने ब्राह्मणी की ओर देखा। 'वह उस जगह जा रहा है जिससे उसे सबसे ज़्यादा नफ़रत थी।'

अध्याय दस

कभी-कभी इंद्र अतीत में झांकता, उस दिन की तलाश करता जब यह सब शुरू हुआ था। उसे उस दिन का कोई पछतावा नहीं था। वास्तव में, वह उस दिन को संजोकर रखता था, चाहे वह कितना भी कठिन रहा हो और वह कितना भी भयभीत रहा हो।

उसे गुफाएँ याद आ गईं। बर्फ पिघलते समय पानी की टपकने की आवाज़। उसकी साँसों की गूँज और वहाँ बसे उस विचित्र ड्रैगन वृक्ष की याद। सूरज की रोशनी दीवारों को भेदकर यहाँ तक नहीं पहुँच पाती थी, फिर भी वह वृक्ष बेरोक-टोक बढ़ता जा रहा था, और जुगनुओं की रोशनी से वह जगह दीपकों की तरह जगमगा रही थी।

इंद्र वहाँ मौजूद थे। युवा। अकेले। योद्धा के कवच की तरह फर से बने वस्त्र पहने हुए। उनके बाल कमर तक लंबे थे और चेहरा झुर्रियों रहित था। तब वे वैसे नहीं थे जैसे आज हैं। वे अमरावती के राजा, गर्जन के देवता थे।

'क्या मेरा यहाँ आना गलत था?' उसने पुकार कर कहा। 'या फिर वो चुड़ैल यहीं रहती है?'

उस हवा रहित गुफा में अचानक हवा का एक झोंका आया।

'हे मृत्यु की देवी, तुम कहाँ हो, जिसने मेरी बेटी का जीवन छीन लिया?' उसका चेहरा उदास और पीड़ा से भरा हुआ था।

कुछ ही महीने पहले इंद्र ने देखा कि जयंती को सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। वह बार-बार खांसती थी और कभी-कभी खून की उल्टी भी करती थी। यह स्पष्ट था कि वह गंभीर रूप से बीमार थी। इंद्र ने हर संभव कोशिश की थी...

सिवाय उस व्यक्ति से बातचीत करने के जो उसे अपने साथ ले जाना चाहता था।

नृति के प्रति घृणा से जलते हुए उसने कहा, 'मैंने सुना है कि तुम मुझे चोट पहुँचाने की शक्ति रखती हो, और मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता। तुम मृत्यु को नियंत्रित करती हो। तुम परलोक को नियंत्रित करती हो। मैं यहाँ बात करने आया हूँ। कोई रास्ता निकालने आया हूँ। मैं अपनी बेटी, अपनी बच्ची को'—उसकी आवाज़ भर्रा गई—'पीड़ा में नहीं देख सकता। हे सर्वशक्तिमान देवी, कृपया मुझे उत्तर दो।'

फिर से हवा चलने लगी।

'तुम मेरे साथ ऐसा क्यों कर रही हो! क्या तुम चाहती हो कि राजाओं का राजा तुमसे भीख मांगे? घिनौनी, गंदी औरत!' इंद्र ने शाप दिया। वह अपने गुस्से पर काबू नहीं रख पा रहा था। उसके लबादे पर बना हाथी का चिन्ह गुस्से से घूर रहा था।

आपकी चुप्पी में आपके द्वारा उगले गए जहर से कहीं अधिक शब्द हैं।

'तुम ये कैसे कर रही हो?' उसने घबराकर चारों ओर देखा, धुंधली गुफा में उसकी तलवार चमक रही थी। आवाज़ फुफकार जैसी थी, किसी साँप की नहीं, बल्कि एक विधवा की कानाफूसी जैसी। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे दिमाग में घुसने की, गंदी औरत?'

आप अपनी मृत बेटी के लिए यहां आए हैं, फिर भी आप ऐसी अश्लील बातें करते हैं।

'वह मरी नहीं है!'

अभी नहीं, महाराज।

इंद्र गुर्राया और उसकी उंगलियों से बिजली की शक्तिशाली तरंगें निकलने लगीं। 'अगर तुम प्रकट नहीं हुए तो मैं इस पेड़ को जला दूंगा और तुम्हें भी जलते हुए देखूंगा।'

हे कश्यप पुत्र, मुझे देखने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्या तुम वही नहीं हो जो निर्धन पैदा हुए थे, इल्लावर्ती देश में परदेसी थे, जिन्हें ऋषि कश्यप ने यहाँ लाया और आकाश, गरज और बिजली के नियम सिखाए? उन्होंने तुम्हें अपनी गोद में लिया और अपने दत्तक भाइयों की तरह तुम्हें भी अपना स्थान दिया। क्या यह सच नहीं है?

अपने बचपन के दिनों को... इंद्र ने याद न करने का फैसला किया। बहुत रोना-धोना, बहुत गुस्से वाले चेहरे और बहुत चिंता थी, और सौतेले पिता द्वारा की गई यातनाओं का खौफ तो था ही।

तुम और असुर... तुम एक जैसे हो। तुम सब नफरत के साथ पैदा हुए हो। और तुम सब सोचते हो कि तुम्हें धर्म की समझ है।

इंद्र ने कहा, 'मेरे भाई सही के लिए खड़े हैं।'

अविश्वास भरी हंसी सुनाई दी।

कश्यप ने एक सपना देखा था। कि देवों को इल्लावर्ती देश पर शासन करने दिया जाए। वे तुम्हारी माता अदिति से बहुत प्रेम करते थे और तुम्हें देखकर उनका प्रेम और भी बढ़ गया। वे अपने ही पुत्रों, असुरों से घृणा करने लगे। उन्होंने उन्हें तिरस्कृत किया और इल्लावर्ती लोक से बहिष्कृत कर दिया। क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे बीच अंतहीन युद्ध क्यों होंगे? क्योंकि तुम सगे भाई हो। लेकिन एक रहस्य है... उह... एक अत्यंत महत्वपूर्ण रहस्य।

इंद्र चुप रहे।

असुर जन्म से ही कुरूप थे, जबकि देव जन्म से ही सुंदर थे और उन्हें स्वीकार किया जाता था। अंततः, कश्यप के लिए, यह सब उनके रूप-रंग के बारे में ही था।

उस बच्चे की पीड़ा की कल्पना कीजिए। कितना भयानक दृश्य रहा होगा! जिन लोगों ने उसे जन्म दिया, उन्हीं ने उसे ठुकरा दिया।

इंद्र ने इसके बारे में सुना था, लेकिन उन्हें कोई परवाह नहीं थी। उन्होंने बहस करने की कोशिश भी नहीं की। भले ही वे और असुर सौतेले भाई हों, पर उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं था। वे एक देव थे। शुद्ध वंश के। आदित्यों के वंशज, दक्ष के वंश से। उन्होंने कुछ अफवाहें सुनी थीं, लेकिन उन्हें सुनी-सुनाई बातें मानकर खारिज कर दिया।

कश्यप इल्लावर्ती में एक क्रूर गणराज्य चाहते थे और इसलिए, नियोग के अभ्यास के माध्यम से, उन्होंने कई वंशों की संतानें पैदा करने की योजना बनाई थी - लेकिन असुरों के मामले में वे असफल रहे।

तुम्हारे अहंकार की कीमत तुम्हें अपने बच्चे से चुकानी पड़ेगी।

मैं चाहता हूं कि वह बच जाए। मुझे कोई रास्ता बताओ। मौत को चकमा देने का कोई न कोई तरीका तो जरूर होगा।

आप मौत को धोखा नहीं दे सकते। हल्की हंसी सुनाई दी। मौत आपको धोखा देती है।

इंद्र रुक गया। इस निरर्थक बातचीत से उसे कोई लाभ नहीं हो रहा था। हवा फिर चली और

उसके कान खड़े हो गए।

उसे बचाने के लिए, आपको उस चीज़ को त्यागना होगा जो आपको अहंकारी बनाती है। आकाश और बिजली पर आपका अधिकार। वज्र को बुलाने की शक्ति।

इंद्रा हंस पड़ी। 'यह असंभव है। मूर्खतापूर्ण तो है ही। मैं ऐसा नहीं कर सकती। मेरे शत्रु मुझ पर टूट पड़ेंगे।'

तो फिर अपनी बेटी को दर्दनाक मौत मरने दो!

उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। 'क्या कोई और रास्ता नहीं है?'

नहीं। लेकिन आपकी शक्ति आपको नहीं छोड़ेगी।

'आपका क्या मतलब है?'

यह उसके भीतर ही रहेगा। हालांकि, इसे वापस पाने के लिए, आपको इसे उससे छीनना पड़ सकता है, सचमुच उसकी त्वचा को नोंचकर, उसका दिल खाना और उसका खून पीना पड़ सकता है। आपको उसे मारना भी पड़ सकता है ताकि आप फिर से वही अहंकारी व्यक्ति बन सकें जो आप अभी हैं। गर्जन के देवता बनने के लिए।

यह अब तक का सबसे चौंकाने वाला आश्चर्य था जो उसे मिला था। इंद्र ने अपने होंठ चाटे। 'अगर मैं उसे छोड़ दूं... तो क्या वह ठीक रहेगी?'

हाँ। उसके इस स्वरूप का कारण तुम्हारा कर्म है। उसका भाग्य बदलने का प्रयास करना, अपने ही भाग्य को मोड़ना है।

इंद्र ने भयानक काम किए थे। और किसी भी चीज़ से उसका प्रायश्चित नहीं हो सकता था। उसने आह भरी, नीचे देखा, अपनी तलवार खोली और उसे ज़मीन पर गिरने दिया। धातु के चट्टान से टकराने की आवाज़ विशाल गुफा में गूंज उठी।

'ठीक है। ठीक है। मैं समझ गया। चलो शुरू करते हैं।' वह जानता था कि उसे उसे बचाना ही होगा। इसके परिणाम गंभीर होंगे, लेकिन वह अपनी बेटी से बहुत प्यार करता था।

और उसी क्षण, जब उनकी इच्छा पूरी हुई, आसमान में कोई तूफान नहीं था। कई वर्षों में पहली बार, आसमान एकदम शांत हो गया था।

इंद्रा एक कोने में आदरपूर्वक खड़ी होकर जयंती को अपने सामने रखे पन्नों पर कुछ लिखते हुए देख रही थी। कलम से उसका रिश्ता बचपन से ही शुरू हो गया था, जब वह अपने विचारों को लिखती थी। अब हालात अलग थे। अब वह कहानियां, नाटक और कविताएं लिखती थी। हर रचना पिछली रचना से अधिक सुंदर।

इंद्र ने अपने हाथ में मौजूद पांडुलिपि पर एक नज़र डाली। यही उनके यहाँ आने का कारण था।

जब उसने जयंती को रुकते देखा, तो वह मुस्कुराते हुए उसकी ओर बढ़ा। 'हैलो?'

कोई जबाव नहीं।

क्या तुम अपने पिताजी से बात कर रहे हो?

जयंती ने ऊपर देखा। उसकी आँखों में जो क्रिस्टल जैसी धूसर आँखें थीं, वे उसके भीतर उमड़ते तूफानों का संकेत थीं। 'यह निर्भर करता है। अगर उसने फिर से कुछ ऐसा गड़बड़ कर दिया हो जो

हमेशा के लिए रहे।'

'मैंने आपकी बात सुनी और मैंने ऐसा किया।' उसने उसे वह दस्तावेज़ दिखाया और उसे दे दिया।

वह खड़ी हो गई। सुबह की तेज धूप दोनों के चेहरों पर पड़ रही थी। 'क्या है?' जैसे ही उसने पढ़ा, उसके होंठों पर मुस्कान आ गई।

इंद्र ने अपनी शर्मिंदगी छिपाने के लिए गला साफ किया। अपनी दबंग और आत्मविश्वासी बेटी के सामने वह खुद को कांपता और अनिश्चित महसूस कर रहा था, लेकिन वह उससे प्यार करता था। ओह, वह उससे बहुत प्यार करता था। 'मैंने सुलह का प्रस्ताव रखा था और नरसिम्हा ने इसे स्वीकार कर लिया है। हम इस पर आगे बढ़ रहे हैं। हम बीच का रास्ता निकालकर व्यवस्था को अंतिम रूप देंगे। मैंने बेशक बहुत कुछ खोया है, लेकिन मुझे कुछ बहुत महत्वपूर्ण मिला है,' उसने जयंती पर निगाह रखते हुए कहा।

उसने प्रश्नवाचक भाव से ऊपर देखा, उसके चेहरे पर अब भी हल्की सी मुस्कान थी।

मुझे वो लुक मिल गया है।

जयंती मुस्कुराई। 'क्या तुम आगे लड़ना नहीं चाहते?'

इंद्र ने अपना सिर हिलाया। 'मैं अब और नहीं लड़ूंगा।'

उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह अपने ही पिता से ऐसी बात सुन रही है। 'मुझे उम्मीद है कि तुम ऐसे ही रहोगी।'

'मैं करूँगा।'

क्या वे काफिले में आ रहे हैं?

'नहीं, हमें जाना है। उन्होंने परिवार को आमंत्रित किया है।' उनकी आवाज़ में अचानक डर की एक हल्की सी कंपकंपी झलक रही थी। 'मुझे पता है कि इससे कोई परेशानी नहीं होगी, लेकिन इसका कुछ मतलब तो होगा। मैं नरसिम्हा को जानता हूँ। उन्हें गुस्सा आता है। बहुत गुस्सा। लेकिन वो धोखेबाज नहीं हैं। वो मेरी पीठ में छुरा नहीं घोंपेंगे,' उन्होंने लगभग खुद को दिलासा देते हुए कहा।

'क्या आपको यकीन है?'

'हां।' इंद्र मुस्कुराई। 'और मुझे लोगों में अच्छाई ढूंढनी है। क्या आपने मुझे यही नहीं बताया था?'

जयंती ने सिर हिलाया। 'जब आप महान लोगों की कहानियां सुनते हैं, तो आपको पता चलता है कि उनमें नायक होते हैं। बचपन से ही मैं उन नायकों के बारे में पढ़ती आई हूं। मैं चाहती हूं कि मेरे पिता को भी वही सम्मान मिले। मैं चाहती हूं कि आने वाली पीढ़ियां महान इंद्र की कहानियां सुनें।'

इंद्र को पता ही नहीं चला कि जयंती इतनी परिपक्व कब हो गई। 'मैं भी यही चाहता था। इसीलिए मैंने इतने सारे क्षेत्रों को जीतने के लिए इतना संघर्ष किया। इसीलिए मैंने इतने सारे लोगों से लड़ाई की और उन्हें मारा। लेकिन वर्षों के अनुभव से मुझे यह समझ आया कि तलवार चलाने से आप नायक नहीं बनते। आप तब नायक बनते हैं जब आप उसे नीचे न रखने का फैसला करते हैं।'

वह मुस्कुराई। 'मुझे आप पर गर्व है, पिताजी।' और फिर उसने उन्हें गले लगा लिया। पहले से

भी ज़्यादा कसकर। 'लेकिन आपको यह पता होना चाहिए,' उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'कि मैं जानती हूँ कि मैं क्या हूँ और बचपन में मुझे जो भयानक बीमारी हुई थी, उससे मैं कैसे बची। मैं लोगों को इसके बारे में बात करते सुनती हूँ और मुझे पता है कि जब मुझे गुस्सा आता है, तो धरती काँप उठती है और आसमान हिलने लगता है।'

इंद्र जम गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह ये सब बातें तब कह रही थी जब उसकी बाहें उसकी गर्दन के चारों ओर लिपटी हुई थीं। उसे इस बात का पछतावा हो रहा था कि उसने यह बोझ उस पर डाल दिया, कि उसने उसे पहले नहीं बताया। वह खुद को समझाना चाहता था, अपने कार्यों को सही ठहराना चाहता था, लेकिन वह चुप रहा क्योंकि वह बोलती रही।

मैंने इधर-उधर पूछताछ भी की है और मैं किसी का नाम नहीं लूंगी, लेकिन मुझे पता है कि अगर तुम मुझे मार दोगे, तो तुम्हारी शक्ति वापस आ जाएगी।' वह पीछे हट गई। 'मैं प्रार्थना करती हूं कि वह दिन कभी न आए,' उसने कहा, उसकी आंखों में आंसू भर आए, 'लेकिन अगर ऐसा हुआ और तुम खुद को नुकसान में पाओ, तो संकोच मत करना। मैं कभी भी इसका बदला नहीं लूंगी।'

'इस तरह से बात मत करो। मैं लाखों साल में भी ऐसा कभी नहीं करूंगा।'

उसने सिर हिलाया, उसकी आँखों में आँसू थे। 'और मैं यही कामना करती हूँ कि ऐसा ही हो। लेकिन अगर वह पल आए, तो बिल्कुल भी संकोच मत करना। कृपया। मैं अपनी सुरक्षा से भी ज़्यादा तुम्हें और माँ को सुरक्षित देखना चाहती हूँ।'

इंद्रा ने बिना कुछ कहे उसे वापस गले लगा लिया। बाहर, आसमान कुछ पल पहले की तुलना में और भी भयावह हो गया था। बारिश धरती पर मूसलाधार बरसने लगी।

उसे पता था कि उसे क्या करना है।

गरुड़ शायद सुपर्णों की तरह स्नेहशील नहीं थे, लेकिन वे दूसरों की परवाह ज़रूर करते थे। विशेषकर इस राज्य की। वे इसकी शान-शौकत में डूबे रहते थे क्योंकि उन्हें यहाँ सुकून मिलता था। वे जानते थे कि वे यहाँ सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। लेकिन फिर वरुण ने उन्हें उनके ही घर से बहिष्कृत कर दिया…

उन्हें एक घर चाहिए था। लेकिन वरुण की मृत्यु के बाद नागलोक इंद्र का गढ़ बन गया था। यह वह पहला कदम था जो देवताओं ने अपने समुद्री व्यापार और नौसैनिक वर्चस्व को स्थापित करने के लिए उठाया था। हिरण्यकश्यप की मृत्यु के बाद भी उन्होंने ही इस पर कब्जा कर लिया था।

गरुड़ के पास इन बुरे विचारों के लिए समय ही नहीं था। हिरण्यकश्यप को मारने से उसे कुछ भी हासिल नहीं हुआ था। बल्कि, इससे उसकी मुश्किलें और बढ़ गई थीं और वह नरसिम्हा के साथ जुड़ गया था। भले ही वह प्रतिशोध की भावना से प्रेरित था, फिर भी उसे नरसिम्हा और उनके विश्वदृष्टिकोण पर पूरा भरोसा था। नरसिम्हा एक जल्लाद थे। वे काम को अंजाम देते थे।

और उसने ऐसा कर दिखाया था। धीरे-धीरे, लेकिन लगातार, उसने दक्षिणी शहर कश्यपुरी पर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया था और उसे असुरों के अलावा अन्य जनजातियों के लिए एक भूमि में बदल दिया था। गरुड़ को यह अच्छा लगा। वह हमेशा से असुरों से घृणा करता था। लेकिन फिर, जैसा कि वह स्वयं जानता था, देवता भी बहुत दयालु नहीं थे। उसकी जो भी योजना थी, वह घर जो वह अपनी माँ की समाधि पर बनाना चाहता था, वह जीवन जिसकी उसने अपने लिए कल्पना की थी, एक स्त्री, एक बच्चा...

सब कुछ छीन लिया जाएगा। एक शातिर आदमी द्वारा—वाशकल द्वारा।

गरुड़ को असुर पर भरोसा नहीं था। और उसने यह बात अपनी प्रेमिका से भी कही थी, जिसके साथ वह बिस्तर पर था, और प्रेम-प्रसंग के बाद उसका कांस्य शरीर पसीने से चमक रहा था।

‘तुम क्या सोच रहे हो?’ सोनापत्रा ने उससे पूछा।

उसने उसे देखा और उसके चेहरे पर एक हल्का सा निशान देखा। सोनापात्रा सुपर्ण नहीं, मानव थी। लेकिन वह कितनी सुंदर थी! उसने उसे शिविरों की कैंटीन में देखा था और देखते ही उसे पसंद कर लिया था। वह उम्र में बड़ी थी, लेकिन बेहद आकर्षक थी। उसमें एक सुकून देने वाला भाव था। वह उसे अपनी माँ के सभी गुणों और कमियों की याद दिलाती थी और इससे उसे अधिक सुरक्षित महसूस होता था।

उसने मुस्कुराते हुए उससे कहा, 'नारा के अलावा मुझे यहां किसी पर भरोसा नहीं है।'

और आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। नारा जुनून के बल पर काम करती है। बाकी सब लोग किसी न किसी तरह का स्वार्थी दिमागी खेल खेल रहे हैं।

'हाँ।'

‘इधर आओ।’ वह पलंग के सहारे बैठ गई और अपनी बाहें खोल दीं। उसने अपना सिर उसकी छाती पर रख दिया और एक शिशु की तरह उसे बाहों में भर लिया, हालाँकि वह उससे दुगना बड़ा

था। 'तुम क्या करने की सोच रहे हो?'

'अवैध प्रवेश।'

'यह गैरकानूनी है।'

'अच्छा हुआ कि मैं शहर का कमांडर हूँ।'

'नारा को आपसे युद्ध के मैदान में होने की उम्मीद होगी।'

'कोई लड़ाई नहीं है। मैं इसलिए लौटा क्योंकि नारा ने युद्धविराम की घोषणा की और मुझे वापस भेज दिया। उसने प्रहलाद की बात मान ली।'

'क्या आपको लगता है कि यह एक समझदारी भरा कदम था?'

'मुझे नहीं पता। मुझे नहीं पता कि क्या सही है, लेकिन यह उसके लिए सही है। मैं इंद्र को उसकी पत्नी की हत्या करने और उसके बच्चे को उससे छीन लेने के लिए नोंच-नोंच कर मार डालने को तैयार था।'

वह उसके बालों से खेलने लगी। 'क्योंकि तुम भी उसकी तरह भावुक हो, इसीलिए उसका ऐसा करना असामान्य है।'

मुझे पता है। लेकिन यह विदाई का एक तरीका है। जबकि मुझे उस खूनी वाशकल के बारे में और अधिक जानकारी हासिल करनी है।

उसने उसे कसकर गले लगा लिया और वह उसकी बाहों के आराम में वहीं पड़ा रहा, यह सोचता हुआ कि वाशकल का पतन कैसे किया जाए...

वह आसमान में उड़ रहा था।

उसे और अधिक शोध करना था। उसे पता लगाना था कि वाशकल कौन था। वह किन लोगों के संपर्क में था। वह क्या कर रहा था। वह क्या सोच रहा था।

आकाश में विचरण करते हुए, वह स्वयं को वाशकल के किले के सामने पाया। विशाल शहर के एक कोने में स्थित, यह किला ईंट और सीमेंट से बनी एक भव्य संरचना थी, जो पहरेदारों से घिरी हुई थी।

वही गार्ड जिन्होंने कुछ घंटे पहले उसे बाहर निकाल दिया था जब वह अपने सुपर्नों के गिरोह के साथ द्वार पर पहुंचा था और प्रवेश की मांग की थी।

मैं वाशकल से मिलना चाहूंगा।

द्वार पर खड़े असुर सैनिक ने कहा था, 'कमांडर, वह युद्ध शिविरों में है।'

'कोई बात नहीं। मैं उनके प्रतिनिधि से मिलूंगा। मुझे कुछ राजनीतिक काम पर चर्चा करनी है।'

सिपाही ने सिर हिलाया और अंदर जाकर प्रबंधक से पूछा कि क्या यह संभव होगा। गरुड़ अपने घोड़े पर बैठा इंतज़ार कर रहा था, जबकि घोड़ा तेज़ धूप में हताशा से हिनहिना रहा था और ज़मीन पर पैर पटक रहा था। कुछ मिनट बाद, उसे किले में प्रवेश मिल गया। जब वह अपने आदमियों के साथ गलियारों से गुज़र रहा था, तो उसने किले के ठीक बीच में हरे रंग की धुएँ से घिरा एक विशाल बगीचा देखा। वहाँ हर तरह के पौधे थे, कुछ जाने-पहचाने, लेकिन अधिकतर अपरिचित, और उनके बीच लोगों के चलने के लिए संकरे रास्ते बने हुए थे।

‘यह क्या है?’ उसने बगीचे के पास खड़े एक सैनिक से पूछा।

‘ये स्वामी की अनमोल धरोहर हैं, मानव जाति को ज्ञात सबसे विषैले पौधे, जिन्हें यहाँ लगाया और पाला-पोसा गया है, कमांडर।’

गरुड़ ने घबराकर घूंट भरा। यह एक आदमी के लिए अजीब शौक है।

कुछ देर बाद, प्रबंधक से बात करने गया सिपाही लौट आया। उसकी आँखें कठोर और गंभीर थीं, बिलकुल भी दोस्ताना नहीं। 'प्रबंधक इस समय व्यस्त है और मालिक की उपस्थिति में ही मिलना चाहता है।'

‘यह तो बस एक साधारण सी मुलाकात है, बेटा।’ गरुड़ा ने बड़ी मासूमियत से मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन इसका सैनिक पर कोई असर नहीं हुआ, जो उसे भावहीन आँखों से घूर रहा था।

'दुर्भाग्यवश, मुझे आपसे जाने के लिए कहना पड़ेगा।'

गरुड़ ने धीमी आवाज़ में गरजते हुए कहा, 'मैं राजा का दाहिना हाथ हूँ, और मुझे एक नीच दरबारी निकाल रहा है।'

उसने गार्ड से बहस करने की जहमत नहीं उठाई और चला गया।

लेकिन वाकई में नहीं।

कुछ ही क्षणों में वह आकाश में उड़ रहा था, उसके पंख फैले हुए थे और वह सहजता से हवा में विचरण कर रहा था। किले को देखते ही वह नीचे उतरने लगा। वह जानता था कि उसे वाशकल के निजी अध्ययन कक्ष में प्रवेश करना है। उसने पहले किले का दौरा करते समय यह अनुमान लगाया था कि उसे अंदर नहीं जाने दिया जाएगा, लेकिन कम से कम अब उसे किले की बनावट का मोटा-मोटा अंदाजा तो था।

गरुड़ उस खिड़की की ओर बढ़ा जिसे उसने वाशकल का अध्ययन कक्ष समझा और तुरंत अपने पंख फैला दिए, जो ऊर्जा से भरपूर होकर हवा में लटके रहे। उसने खिड़की से अंदर छलांग लगाई और एक शानदार ड्रॉप-एंड-रोल किया...

इसे केवल एक दुबले-पतले बूढ़े व्यक्ति ने देखा जो एक स्टूल पर बैठा था और अपनी कलम से कागज के एक टुकड़े पर कुछ लिख रहा था।

‘मुझे लगता है कि तुम प्रबंधक हो।’ गरुड़ मुस्कुराया। उसने एक चोगा पहना हुआ था जिसका हुड उसके चेहरे पर नीचे तक झुका हुआ था।

‘आह…आह…! तुम कौन हो! गुआ—’

गरुड़ा एक ही कदम में उसके पास पहुँच गया। अपना मुँह ढकते हुए उसने कर्मचारी को दीवार से धक्का दिया। 'एक शब्द भी मत बोलना।'

दरवाजे पर कोई खटखटाहट हुई थी।

‘क्या आप ठीक हैं, महोदय?’ दस्तक तेज हो गई।

गरुड़ा ने कहा, "शांति से जवाब दो। क्या तुम मुझे समझ रहे हो?" उसका चेहरा अभी भी हुड के नीचे छिपा हुआ था।

कर्मचारी ने तुरंत सिर हिलाया, उसकी आंखें सदमे से चौड़ी हो गई थीं।

गरुड़ ने धीरे से अपना हाथ हटा लिया। 'बोलो,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'बोलो वरना मैं तुम्हें

यहीं मार डालूंगा।'

'मैं ठीक हूँ! मैं ठीक हूँ!' वेटर ने ज़ोर से कहा। 'मुझसे बस कुछ गिर गया था। कोई बात नहीं, सब ठीक है।'

दरवाजे के दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया। फिर सिपाही ने जवाब दिया, 'ठीक है, महोदय। धन्यवाद।'

कदमों की आवाज धीमी पड़ते ही गरुड़ ने सेवक की ओर मुड़कर देखा। 'अब तुम मुझे वाशकल के बारे में सब कुछ बताओगे।'

'तुम मुझे मार ही डालो तो बेहतर होगा,' कर्मचारी ने कहा और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

गरुड़ा गुस्से से फुफकारते हुए उसके ऊपर से निकल गया। खैर, मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है। वह मेज के पास गया और बिखरे हुए दस्तावेजों को देखने लगा और दराजों में झाँकने लगा। 'चलो, चलो...' उसकी नज़र पत्रों के एक बंडल पर पड़ी। कुछ मंत्रियों को संबोधित थे, कुछ बाहरी लोगों को... और एक पत्र - मेज के नीचे छिपे एक अलंकृत बक्से में रखा हुआ - ...

गरुड़ अविश्वास से उस नाम को घूरता रहा।

हिरण्यकश्यप.

'यह अजीब है। पूर्व राजा ने उस जैसे मामूली साहूकार को पत्र क्यों लिखा होगा?' उसने खुद से पूछा।

उसने पत्र पढ़ना शुरू किया। जब उसने पढ़ना समाप्त कर लिया, तो उसने उसे वापस डिब्बे में रख दिया। वह डिब्बे को उसकी मूल जगह पर रख ही रहा था कि दरवाजा ज़ोर से खुल गया।

घबराकर गरुड़ पीछे हट गया और अपने दस्तानों का इस्तेमाल करते हुए अपनी ओर आ रहे तीरों को रोकने लगा। अचानक हमला करने का फायदा उठाते हुए वह ज़मीन पर सरकते हुए सामने खड़े दो रक्षकों की ओर बढ़ा और उनकी तलवारें छीनकर उन पर वार करने लगा।

'घुसपैठिया! घुसपैठिया!' पहरेदारों ने चिल्लाकर खतरे की घंटी बजा दी। किले में चारों ओर तुरही बजने लगीं, जिससे सैनिकों को सतर्क किया जा सके।

दोनों ओर से भारी हथियारों से लैस सैनिक गरुड़ की ओर दौड़ रहे थे, ऐसे में गरुड़ ने बचने का एकमात्र रास्ता चुना। वह बालकनी से कूद गया और बाल-बाल तीरों से बच निकला। एक नज़र डालते ही उसका शक सही साबित हो गया—वह ज़हरीले बागों के ठीक बीचोंबीच गिरने वाला था। जैसे ही उसके पैर रास्ते पर पड़े, उसने खुद को गेंद की तरह समेट लिया और ज़मीन पर लुढ़कने लगा ताकि गिरने का असर कम हो। जब वह उठा, तो उसने खुद को रास्तों के चौराहे पर पाया, जहाँ चारों ओर से पहरेदार उसकी ओर बढ़ रहे थे।

मुझे लगता है कि मुझे इस मुसीबत से निकलने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।

'किस बात का इंतजार कर रहे हो?' गरुड़ ने पुकार कर कहा।

सैनिक हिचकिचाते हुए कुछ कदम उसकी ओर बढ़े, और दोनों ओर के पौधों को सावधानी से देखने लगे। गरुड़ ने सबसे नज़दीकी सैनिक पर झपट्टा मारा और उसे धुएं में धकेल दिया। वह आदमी दर्द से कराहते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा, और अपने जलते हुए चेहरे को हथेलियों से थाम

लिया। बाकी सैनिक उस आदमी की हालत देखकर रुक गए।

गरुड़ ने उन पर मुस्कुराते हुए अपनी तलवारें लहराईं। 'अगर तुम और करीब आए तो तुम्हारा भी यही हाल होगा।'

जैसे ही सैनिक पीछे हटे, गरुड़ ने अवसर का लाभ उठाते हुए उनकी पंक्तियों पर धावा बोल दिया, कुछ को तलवार से काट डाला और कुछ को जहरीली गैसों में फेंक दिया। वह तेजी से ऊपर उस अध्ययन कक्ष में गया जिससे वह अंदर आया था और अपने पीछे आ रहे क्रोधित सैनिकों के नए झुंड के लिए दरवाजा बंद कर दिया। वह खिड़की की ओर भागा…

यहाँ कुछ भी नहीं।

…और कूद गया।

गरुड़ ने किसी तरह हवा में लटके हुए पंखों को पकड़ लिया और उन्हें धारण कर लिया। जब तक पहरेदार दरवाजा तोड़कर कमरे में घुसे, तब तक वह आकाश में गायब हो चुका था।

जैसे-जैसे वह ऊपर की ओर उड़ता गया और कश्यपपुरी शहर को छोटा होता हुआ देखता गया, उसके विचार स्पष्ट होते गए।

अंततः उसे वह मिल गया जिसकी उसे जरूरत थी - वाशकल पर दबाव बनाने का एक तरीका, जिसे वाशकल कभी भी प्रकट नहीं होने देना चाहता था।

वह वाष्कल हिरण्यकश्यप का पुत्र और प्रह्लाद का भाई था।

अध्याय बारह

इंद्र को समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे प्रतिक्रिया दे।

वह अपने आदमियों को उस मैदान के करीब ले आया था जहाँ वे मिलने वाले थे, ठीक उस युद्ध शिविर के बीचोंबीच जहाँ चांडाल लोग युद्ध में क्षत-विक्षत शवों को ढोते हुए आ-जा रहे थे। चारों ओर खून की तीखी, तांबे जैसी गंध फैली हुई थी। घोड़ों के खुरों की आहट के अलावा सन्नाटा छाया हुआ था। नरसिम्हा द्वारा चुना गया युद्ध शिविर लोगों से भरा हुआ था, जो मशालें लिए उनका स्वागत कर रहे थे। उन्होंने बीच में मिलने और विश्वास के शांतिपूर्ण सौदे के तहत प्रत्येक सौ-सौ आदमी लाने का फैसला किया था।

इंद्र अपनी घोड़ी से कूद पड़े, और बगल में उन्हें जयंती, साची, बृहस्पति और वायु दिखाई दिए। वे सभी चिंतित थे, लेकिन इंद्र आश्वस्त थे। दूर स्थित तम्बुओं को देखकर उनकी आंखें सिकुड़ गईं, जो बड़े-बड़े कीलों से मजबूती से जड़े हुए थे।

गहरी खामोशी ढोल की हल्की थाप से टूट गई। कुछ ही क्षणों में नरसिम्हा प्रकट हुए। वे इंद्र की यादों से भिन्न, अधिक राजसी रूप में दिखाई दिए। उन्होंने अपने बाल संवारे हुए थे और उनके ऊपर मुकुट था, हिरण्यकश्यप के समान सोने की धोती और कंधों पर अंगवस्त्रम था। उनके एक ओर घुंघराले बालों वाला एक व्यक्ति और दूसरी ओर प्रहलाद थे। दूर से देखने पर दोनों युवक एक जैसे लग रहे थे, उनकी कद-काठी और सुनहरी आँखें भी एक जैसी थीं। इंद्र ने नरसिम्हा को देखा और दोनों ने एक दूसरे को घूरकर देखा। सभी सैनिक चुप थे।

'नमस्कार, नारा।' इंद्र आगे आया।

नरसिम्हा का चेहरा उनके बालों से आंशिक रूप से ढका हुआ था। उन्होंने झुककर अपने हाथ फैलाए।

इंद्र मुस्कुराई और उसे गले लगा लिया।

पुराने दोस्त, सहयोगी, कट्टर दुश्मन—वे एक-दूसरे का साथ देते रहे।

प्रहलाद को नृत्य में कोई खास महारत हासिल नहीं थी।

लेकिन उसने कोशिश की। धृति के लिए। वे संगीत की धुन पर थिरकते हुए एक जगह से दूसरी जगह उछल-कूद कर रहे थे। जुगनू टिमटिमा रहे थे और दीपक तेज़ रोशनी से जगमगा रहे थे। मेजें खाने-पीने की चीजों से भरी हुई थीं—भुना हुआ मांस, स्वादिष्ट सब्जियों के ढेर, शराब और अन्य मादक पेय पदार्थों से भरे जगमगा रहे थे। शाम बांसुरी, ढोल, हंसी और गिलासों की खनक से जीवंत हो उठी थी।

प्रहलाद ने धृति की कमर पकड़ रखी थी; उसने उसे घुमाया और उसके गाल पर चुंबन किया। वह एक सुंदर साड़ी में थी और इच्छा और आशा से दमक रही थी।

जैसे ही उसने उसे अपने करीब खींचा, उसने कहा, 'तुमने ही कर दिखाया। तुमने उन दोनों के बीच मामला सुलझा दिया।'

'मुझे उन्हें याद दिलाना पड़ा कि वे पहले कौन थे। कैसे हुआ करते थे।' प्रहलाद मुस्कुराए और

उस ऊँची मेज की ओर देखा जहाँ विरोधी गुटों के सभी सरदार और मंत्री बैठे थे, नरसिम्हा और इंद्र एक दूसरे के बगल में बैठे थे।

नरसिम्हा चुपचाप पी रहे थे। प्रहलाद जानता था कि नरसिम्हा के लिए इंद्र को अपना मित्र मानना कठिन होगा, वह इसे पचा नहीं पा रहे थे।

'मैं बस यही उम्मीद करता हूं कि वह ठीक हो। मुझे उसकी चिंता है,' प्रहलाद ने सोच-समझकर कहा।

'इधर देखो।' धृति ने उसे अपनी ओर घुमाया। 'आज रात तुम मेरे हो, मेरे प्रिय। हमें जश्न मनाना चाहिए, चिंता नहीं। आज तुम्हारी जीत हुई है। मानवता की सद्भावना की जीत हुई है और ऐसा कम ही होता है, इसलिए जब तक मौका है... नाचो!'

'हां, शायद आप सही हैं।'

'मैं हूँ। मुझे चूम लो।'

प्रहलाद शरमा गया। 'ठीक है, अगर तुम ऐसा कहते हो।'

'अगर मैं ऐसा कहूँ तो? इससे तुम्हारा क्या मतलब है? अगर मैं नहीं कहूँगी तो तुम नहीं करोगे —क्या यही बात है?'

'अह, नहीं, ऐसा कुछ नहीं।' वह हँसा, उसे अपने करीब खींचा और देर तक चूमा। दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए। 'अच्छा लगा।'

धृति ने सिर हिलाया। 'हाँ। जब से तुम मेरे जीवन में आई हो, मैं बहुत ज़्यादा समझदार हो गई हूँ।'

अचानक संगीत तेज़ हो गया और नृत्य में जोश बढ़ गया। प्रहलाद कुछ कहने ही वाला था कि उसकी नज़र फिर से ऊँची मेज पर पड़ी।

नरसिम्हा लापता था।

इंद्र ने नरसिम्हा को कमरे से बाहर जाते देखा। वह सोचने लगा कि नरसिम्हा कहाँ गायब हो गए और क्यों। उसकी नज़र जयंती पर पड़ी, जो उतनी ही चिंतित लग रही थी, लेकिन इससे पहले कि वह इस बारे में और सोच पाता, उसके बगल में बैठे धन मंत्री वाशकल ने पूछा, 'हाथ मिलाने में कैसा लग रहा है?'

इंद्र ने सवाल को अनसुना कर दिया। इसके बजाय उन्होंने बगल वाली खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा, 'उसका क्या हुआ?'

'ओह, उसका पेट खराब है।' वाशकल मुस्कुराया। 'मैंने देखा कि आपका गिलास खाली है। महाराज, मैं आपके लिए थोड़ा भर देता हूँ,' उसने कहा।

इंद्र ने मीठी शराब की चुस्की लेते हुए कहा, 'मैं समझ गया। मुझे उम्मीद है कि यह उसका अपना फैसला था - मेरा मतलब है युद्धविराम का।'

'बिल्कुल, महाराज, ऐसा ही था। राजा नरसिम्हा ने यह निर्णय स्वयं लिया था, चाहे उन्हें कुछ भी बताया गया हो।'

'आपका क्या मतलब है?'

“वह तुम्हें और तुम्हारे पूरे परिवार को मारना चाहता था, लेकिन प्रहलाद, जो कि एक नेक बालक है, ने उसे ऐसा करने से रोक दिया। बेचारा कितना बेचारा है!” वाशकल ने इंद्र के प्याले से अपना प्याला टकराया। “समझौते की खुशी में जयकार!”

इंद्र ने उकसावे में आने की जहमत नहीं उठाई। 'हमें बहुत सी बातों पर चर्चा करनी है। कर। आय। निर्यात। मेरा क्या है और उसका क्या है...'

और तुम ऐसा करोगे। मेरे साथ। राजा नरसिम्हा को कोई परवाह नहीं है।

हे भगवान! राजा नरसिम्हा! इंद्र ने भौंहें चढ़ाईं। 'मैं उन्हें एक सैनिक के रूप में जानता था। मेरा सैनिक, और अब मैं उनका ध्यान पाने के लिए गिड़गिड़ा रहा हूँ।'

‘अब पासा पलट गया है, महाराज।’ वाशकल मुस्कुराया। ‘आप जानते हैं, मेरे पास एक खूबसूरत विषैला बगीचा है। मैं इसे आपको कभी दिखाना चाहूंगा।’

मुझे नहीं लगता कि नरसिम्हा खुश है।

वाशकल ने बात शुरू करते हुए कहा, ‘वहाँ एक वीनस फ्लाईट्रैप है। मुझे नहीं पता कि आपने इस तरह के पौधे के बारे में सुना है या नहीं। यह वाकई एक अनोखा पौधा है। इसका मुँह लंबा और नुकीले दाँतों जैसा होता है... और यह काटता है। बहुत दिलचस्प।’

‘मुझे समझ नहीं आ रहा।’ इंद्र ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं। ‘तुम मुझे यह कहानी क्यों सुना रहे हो?’

‘अरे, कोई कारण नहीं। बस यूँ ही बातचीत कर रहा था। मुझे पौधे बहुत दिलचस्प लगते हैं। देखो, वीनस फ्लाईट्रैप उन जीवों को निगल जाता है जिनसे उसे पोषण मिलता है। यह उन्हें काटता है और उनका रस चूस लेता है। लेकिन इसकी सबसे दिलचस्प बात यह है कि यह देखने में बिल्कुल हानिरहित लगता है। मानो एक खुला पर्दा हो जिसके सामने लोग आकर आनंद लेते हैं, यह जाने बिना कि यह कितना खतरनाक है।’ वाशकल की आँखें गंभीर हो गईं और उसकी आवाज़ में निर्ममता का भाव आ गया। ‘और जैसे ही कोई मक्खी उस पर बैठती है और उसके रस को पीने लगती है, पौधा उसे फँसा लेता है और मार डालता है। अब सवाल यह उठता है कि क्या मक्खी को मारने में फ्लाईट्रैप की गलती थी या मक्खी की लापरवाही की?’

इंद्र ने आह भरी। ‘मैं तुम्हारी कहानी सुनने के लिए यहाँ नहीं हूँ। मैं जा रहा हूँ। मुझे नारा से मिलना है और मामले सुलझाने हैं।’ जैसे ही वह उठा, वाशकल ने उसका हाथ पकड़ लिया।

'मुझे यह ज्यादा पसंद आएगा अगर आप यह मानना शुरू कर दें कि कहानियों में डर से कहीं ज्यादा आपको डराने की शक्ति होती है।'

‘कुछ तो गड़बड़ है,’ प्रहलाद ने कहा। उसने देखा कि इंद्र जा चुका था और वाशकल शराब पीने में व्यस्त था। ‘ज़रूर कुछ गड़बड़ है। मुझे यह पसंद नहीं आ रहा।’

‘क्या हुआ?’ धृति ने पूछा।

‘यह ठीक नहीं लगता। मुझे उन दोनों का अनुसरण करना चाहिए।’

'लेकिन ...'

प्रहलाद ने उसकी आँखों में देखा और उसे सुकून मिला, हालाँकि वह जानता था कि वह भोली

थी और हालात से बेपरवाह थी। पास से गुजर रहे एक वेटर ने उसे शराब की पेशकश की, जिसे उसने मना कर दिया, क्योंकि उसका ध्यान आसपास मौजूद सैनिकों पर था।

'धृति,' उसने हांफते हुए कहा। 'हमारे सैनिक सामान्य से अधिक दुबले क्यों हैं? वे बहुत कमजोर और थके हुए लग रहे हैं।'

'मैं... मैं...' धृति ने पीछे मुड़कर देखा और पास खड़े कुछ आदमियों के बड़े-बड़े कवच पर ध्यान दिया। 'मुझे नहीं पता। वे ऐसा क्यों करेंगे—'

'क्योंकि वे हमारे सैनिक नहीं हैं,' प्रहलाद ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया। 'वे हमारी तरफ से नहीं हैं। उन्हें यहाँ आने के लिए पैसे दिए गए होंगे।'

'आपका क्या मतलब है?'

प्रहलाद ने उसकी आँखों में देखा; उसकी अपनी आँखें चिंतित और बेचैन थीं। 'ये सिर्फ एक छलावा हैं।'

इंद्र ने महान राजा नरसिम्हा के विशाल तम्बू में प्रवेश किया। वही व्यक्ति जिसके साथ उन्होंने अपनी जवानी के दिन बिताए थे। अपने घने बालों के साथ, नरसिम्हा सिंहासन के पीछे खड़े होकर दूर तक देख रहे थे।

'नारा, क्या तुम ठीक हो?' इंद्र ने धीरे से पूछा। 'तुम क्यों चले गए थे?'

मौन।

'मुझे नहीं पता था कि वह वही है,' इंद्र ने कहा। 'मुझे नहीं पता था कि वह मातृकाओं के साथ है। मेरा इरादा सिर्फ उन्हें मारने का था। अगर मुझे पता होता...' उसने अपना सिर हिलाया। 'अगर मुझे पता होता तो मैं ऐसा कभी नहीं करता।'

'तुम झूठ बोल रहे हो!' गुस्से भरी प्रतिक्रिया आई।

'नहीं, मैं नहीं हूँ।' इंद्र ने पलकें झपकाईं। 'मैं क्रूर हो सकती हूँ, लेकिन निर्दयी नहीं। मैं अपनी सीमाएँ जानती हूँ।'

नारा ने उसकी ओर देखा। 'वह गर्भवती थी।'

इंद्र का दिल बैठ गया। उसे पता ही नहीं था। सचमुच। और किसी कारणवश, वह चाहता था कि नारा को यह बात पता चले। 'तुम मेरे सैनिक से पहले हमेशा मेरे दोस्त रहे हो। कृपया समझने की कोशिश करो। मैंने जो किया, वह इसलिए किया क्योंकि मैं...'

'तुम अब भी झूठ बोल रहे हो। अंधका ने तुम्हें बताया था कि चेनचेन उनके साथ था। तुमने बदला लेने की ठान ली।' नरसिम्हा मेज के चारों ओर घूमे, उनकी निगाहें इतनी तीखी थीं मानो इंद्र की आत्मा को भेद सकती हों। 'इसीलिए तुम उन्हें मारने वहाँ गए थे। मान लो! कम से कम इस संधि के खातिर ही सही, मान लो कि तुम जानते थे'—वे इंद्र से कुछ कदम दूर रुक गए और तम्बू की धुंधली रोशनी में उन्हें घूरने लगे—'और मैं तुम्हें क्षमा कर दूंगा।'

इंद्र ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में आंसू थे। वह व्यक्ति पूरी तरह टूट चुका था। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि नारा चेनचेन से इतना प्यार करता था... और उस बच्चे से भी... इंद्र को अपराधबोध सताने लगा।

‘मुझे खेद है।’ उसने नीचे देखा। ‘आप… सही हैं। मुझे पता था। लेकिन मुझे बच्चे के बारे में नहीं पता था… कसम से मुझे नहीं पता था।’

और अगर आपने ऐसा किया होता? क्या आप उसकी जान बख्श देते?

'शायद नहीं। मैं बदला लेने पर तुला हुआ था और अब मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता।'

‘तुम कर सकते हो,’ नारा ने धीरे से कहा।

'क्या?'

'कसम खाना।'

'मैंने अभी किया।'

‘नहीं।’ उसने सिर हिलाया। ‘अपनी बेटी की कसम खाओ।’

‘मैं…’ इंद्र असमंजस में थी।

लेकिन यह क्षणिक था। कुछ ही क्षणों बाद, उसने नरसिम्हा के एक सैनिक को चाकू की नोक पर किसी को तम्बू में घसीटते हुए देखा। भ्रम की स्थिति सदमे और भय में बदल गई।

जयंती!

अचानक, असुर रक्षक सभा में घुस आए और तम्बू में आग लगाते हुए इंद्र के सैनिकों पर हमला कर दिया। पल भर में प्रहलाद समझ गया कि क्या हो रहा है। उसने तुरंत धृति को पकड़ा, ऊँची मेज की ओर बढ़ा और उसके नीचे छिप गया।

इंद्र की पत्नी साची चिल्ला रही थी, 'जयंती कहाँ है? जयंती कहाँ है?'

वायु ने आग्रह किया, ‘हमें यहाँ से निकलना होगा, साची। इससे पहले कि आग हमें जलाकर राख कर दे।’

प्रहलाद यह देखकर दंग रह गया कि सैनिक आपस में लड़ रहे हैं। उसे लगा कि यह वाशकल की चाल है। वाशकल ने सैनिकों के वेश में आम नागरिकों को धोखे के तौर पर संधि वार्ता में लाया था, और असली असुर सैनिकों को उनके शिविर में ही छोड़ दिया था—सिवाय उस छोटे समूह के जो उनके पीछे आया था और अब इंद्र के सैनिकों पर हमला कर रहा था।

'क्या हो रहा है?'

‘धोखा,’ प्रहलाद ने कहा। ‘हमें कुछ करना होगा।’

तंबू में आग लग चुकी थी; लपटें उनके पैरों को छू रही थीं और चारों ओर धुआँ छाया हुआ था। जैसे ही वे मेज के नीचे से निकले, इंद्र के एक सैनिक ने तलवार से उन पर वार किया। धृति ने तुरंत पलटकर सैनिक के सिर पर ऊँची लात मारी। सैनिक बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। प्रहलाद ने सैनिक की तलवार छीनने की कोशिश की, जबकि धृति ने पास ही गिरे एक अन्य सैनिक की तलवार उठा ली।

‘उन्हें पकड़ो!’ इंद्र के कुछ सैनिकों ने नकली सैनिकों के एक समूह को मार गिराया था और अब उनका ध्यान धृति और प्रहलाद पर केंद्रित था। वे दोनों सैनिक उनके और दरवाजे के बीच खड़े थे।

'तुम बाईं ओर वाला ले लो और मैं दाईं ओर वाला ले लूंगा,' प्रहलाद ने कहा।

धृति ने इंतजार नहीं किया—वह तेजी से आगे बढ़ी और एक जोरदार प्रहार से एक का सिर

काट दिया और दूसरे को भाले पर गाड़ दिया।

'या फिर'—उसने आँख मारी—'शायद मैं दोनों ले लूँ।'

'ऐसा मत करो,' इंद्र ने विनती की।

लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। असुर ने जयंति के गले के बिल्कुल पास, उसकी त्वचा के करीब चाकू रखा हुआ था, और अगर इंद्र ज़रा भी हिचकिचाते, तो भी वे उसे बचा नहीं पाते।

'मैंने तुम्हारा तम्बू जला दिया है। तुम्हारे सभी प्रतिष्ठित मंत्री, सरदार और परिवार के लोग इस समय जलकर मर रहे हैं,' नरसिम्हा ने गर्व से कहा। 'वह कितना भयानक दृश्य होगा। मुझे इसकी कमी खल रही है, लेकिन मुझे कोई अफसोस नहीं है; मुझे अभी जो दिख रहा है वह बहुत अच्छा लग रहा है।'

'ऐसा मत करो।' इंद्र घृणा से जल रहे थे। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उनका परिवार, उनके सैनिक... नहीं, वे ज़रूर बच निकले होंगे। उन्हें पूरा यकीन था। वे मूर्ख नहीं थे। वायु ने आग बुझाने के लिए हवाओं का आह्वान किया होगा, भले ही कभी-कभी उसे आग पर काबू पाने में परेशानी होती थी। 'तुम मुझसे क्या चाहते हो?'

डरी हुई जयंती के पास नरसिम्हा आया, जो रो रही थी और अपने पिता को पुकार रही थी, फुसफुसाते हुए उनका नाम ले रही थी और उनसे कुछ करने की गुहार लगा रही थी। 'आप नहीं समझते—मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। मैं बस आपको इस हालत में देखना चाहता था और हमेशा के लिए अपना बदला लेना चाहता था।'

'अपने राजनीतिक उद्देश्यों में प्रतिशोध को शामिल करना—तुम मूर्ख हो। तुम सब कुछ बिगाड़ दोगे। तुम अभी भी वापस लौट सकते हो।'

नारा ने धमकी भरे लहजे में गुर्राते हुए कहा, 'नहीं, मैं नहीं कर सकता! मेरे पास वापस जाने के लिए कोई जगह नहीं है, मेरा कोई नहीं है। जब से तुमने मेरे बच्चे और मेरे प्यार को मार डाला है, तब से मैं अकेला हूँ।' उसने अपने हाथ ऊपर उठाए और चाकू से वार करने के बजाय, अपने पंजों से जयंती का गला फाड़ दिया।

आकाश का रंग बदल गया और इंद्र का हृदय बैठ गया। उन्होंने अपनी पुत्री के पास जाने का प्रयास किया, लेकिन पहरेदार पीछे से आया और उन्हें रोक दिया। नरसिम्हा ने जयंती को खून बहते हुए मरते देखा, फिर उसके पास घुटने टेककर उसका खून चखा। इंद्र असहाय होकर देखते रहे, तभी नरसिम्हा ने जयंती की छाती चीर दी और अपने विशाल हाथ से उसके धड़कते हुए हृदय को कुचल दिया। उन्हें उसके शरीर में उठ रही धाराओं से एक विचित्र शक्ति का अहसास हुआ...

अचानक तेज रोशनी चमकी।

इंद्र एक पल के लिए अंधा हो गया। यह महसूस करते हुए कि अब उसे कोई जकड़ नहीं रहा है, वह अंधेरे में लड़खड़ाते हुए चलने लगा, जब तक कि वह किसी चीज़ से टकराकर गिर नहीं गया। जब उसकी दृष्टि वापस आई, तो उसने तंबू के चारों ओर देखा—वह खाली था। वह किसी चीज़ से टकराकर गिर गया था...

उनकी बेटी का शव।

उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे, उसने शव को उठाया और सीने से लगा लिया। 'प्लीज़! प्लीज़, नहीं... तुम ऐसा नहीं कर सकती। तुमने वादा किया था, नृति। तुमने वादा किया था कि तुम उसे नहीं ले जाओगी!' वह गुस्से से गुर्राया और दांत भींच लिए।

लेकिन उसकी पुकार अनसुनी रह गई।

प्रहलाद बाहर से देखता रहा, पीड़ा से जम गया, असहाय। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे और इससे उसका दिल टूट गया। तभी किसी ने उसके कंधे पर धीरे से स्पर्श किया।

'उसने... उसने... उसने इंद्र की बेटी को मार डाला।' प्रहलाद को विश्वास नहीं हो रहा था कि क्या हुआ है।

'नहीं!' धृति हांफते हुए बोली। वे कुछ पल चुपचाप खड़े रहे। उनके चारों ओर के तंबू आग की लपटों में घिरे थे, सिवाय उस तंबू के जिसमें इंद्र थे। धुआं रात के आकाश में फैल रहा था; नारंगी रंग की रोशनी हर जगह छाई हुई थी। उसने इंद्र का हाथ पकड़ा और धीरे-धीरे उसे उस घोड़ी की ओर ले गई जिसे उसने एक सैनिक से चुरा लिया था। 'हमें यहाँ से निकलना होगा,' उसने कोमल स्वर में कहा।

प्रहलाद भारी कदमों से उसके पीछे-पीछे चला। वह जानता था कि अगर वह देर करेगा तो पकड़ा जाएगा। आखिर वह एक असुर था—नरसिंह का सेवक, भले ही अब वह अपने नेता के कार्यों पर विश्वास नहीं करता था। घोड़ी की पीठ पर चढ़ते हुए उसने सोचा कि वह नरसिंह को इस विश्वासघात के लिए कैसे माफ करेगा। लेकिन उससे भी बढ़कर, क्या वह इंद्र का चेहरा कभी भूल पाएगा। उसने इंद्र की क्रूरता और निर्दयता की कहानियां सुनी थीं, फिर भी उसने अभी-अभी अपनी बेटी के शव को सीने से लगाए हुए जिस व्यक्ति को देखा था, वह एक टूटे हुए इंसान के खोखले शरीर से ज्यादा कुछ नहीं था।

प्रहलाद को अब एक बात पक्के तौर पर पता थी। यह ऐसी बात थी जिसके बारे में उसने पहले भी सोचा था, लेकिन कभी अमल नहीं किया था। लेकिन अब...

उन्हें नरसिम्हा के अत्याचार को रोकना होगा।

उसे उसी व्यक्ति को हराना होगा जिसे उसने सत्ता में लाने में मदद की थी।

अध्याय तेरह

मृत्यु की गंध, स्वाद और अनुभूति अलग होती है।

पार्वती को इसका एहसास हो गया था।

मातृकाओं के लिए मृत्यु से बचना इस यात्रा पर निकलने के बाद से बच्चों का खेल बन गया था। वे लगभग एक सप्ताह से पैदल यात्रा कर रही थीं, केवल आराम करने और थोड़ी नींद लेने के लिए रुकती थीं। कभी-कभी, जब पार्वती अन्य महिलाओं के सोते समय पहरा देती थी, तो वह आकाश में ऊँचाई पर उनके ऊपर एक काले कौवे को चक्कर लगाते और उड़ते हुए देखती थी।

वह जानती थी कि इसका क्या मतलब है।

अंधका देख रहा था। वह नियमित रूप से अपने शत्रुओं का पता लगाने के लिए कौवों का इस्तेमाल करता था। पक्षी लगातार उनका पीछा कर रहे थे; उसे पता चल जाता था कि वे आ रहे हैं।

अपनी यात्रा के अंतिम पड़ाव पर आगे बढ़ते हुए पार्वती ने उस जगह के बारे में कुछ अजीबोगरीब बात देखी जहाँ से वे गुज़र रहे थे। चारों ओर सूखे पेड़ ही पेड़ थे। जगह-जगह गिद्ध हिम तेंदुओं और अन्य जानवरों के शवों को खा रहे थे। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। यह कस्बा कुछ पहाड़ियों की तलहटी में बसा था, लेकिन वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उन्हें बता सके कि वे सही रास्ते पर हैं या नहीं। वे जीवन के कुछ संकेतों की तलाश में आगे बढ़ते रहे, कुछ लोग ठंडे पानी को देखने के लिए दर्रे को पार कर गए।

'मुझे कोई नजर नहीं आ रहा। हम करीब दस घंटे पहले कस्बे में दाखिल हुए थे,' नरसिम्ही ने कहा।

'यहाँ घर और दुकानें तो हैं, लेकिन सब बंद हैं।' हाथ में त्रिशूल लिए चामुंडी समूह से आगे चल पड़ी। उसे अपनी जीभ पर हवा की तीखी गंध महसूस हो रही थी।

मातृकाओं को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि उस जगह का नाम क्या है या वे दुनिया के किस हिस्से में हैं; वे केवल अपने सामने के रास्ते पर ही भरोसा कर सकती थीं। जैसे-जैसे रात होती गई, तापमान अचानक गिर गया। उत्तर में अपना घर छोड़ने के बाद से पार्वती को इतनी ठंड कभी नहीं लगी थी, लेकिन वह इस सोच से उत्साहित होकर आगे बढ़ती रही कि वह अपने लक्ष्य के करीब पहुंच रही है। जैसे-जैसे पार्वती और अन्य महिलाएं चलती रहीं, उन्हें सुनसान शहर के पास जंगल के भीतर से एक आवाज सुनाई दी।

उन्होंने इसका अनुसरण करने का निर्णय लिया।

कुछ मिनट चलने के बाद, मातृकाओं को जंगल के बीचोंबीच एक खुला मैदान दिखाई दिया। दूर-दूर तक लगभग बीस लकड़ी और मिट्टी की झोपड़ियाँ बनी हुई थीं। लोग बाहर घूम रहे थे, कुछ छोटी-छोटी आग के चारों ओर जमा थे, जबकि अन्य एक ऐसी मेज पर बैठे थे जिस पर पचास लोग आराम से बैठ सकते थे। मातृकाओं के आने की आहट सुनते ही, निवासियों ने अपने हथियार निकाल लिए और तीरों की बौछार कर दी। मातृकाओं ने खुले मैदान के किनारे पेड़ों के पीछे छिपकर हमले के रुकने का इंतजार किया, लेकिन उन्होंने जवाबी हमला नहीं किया। उन्हें इन लोगों से उस वीरान कस्बे के बारे में जानकारी चाहिए थी।

'हम शांति के साथ आए हैं,' ब्राह्मणी ने पुकार कर कहा।

कबीले के लोग चुप रहे, सतर्क रहे और अजनबियों से सावधान रहे। कई मिनट बाद, वे खुले मैदान में उतरे, और अचानक हमले की स्थिति में अपने हथियार तैयार रखे।

पार्वती को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनके हमलावर जानवरों की खाल से बने अधूरे वस्त्र पहने हुए थे और उनके शरीर प्रतीकों और चिह्नों से सजे हुए थे। उन्हें सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह थी कि वे सभी बेहद दुबले-पतले थे—उनकी हड्डियाँ उभरी हुई थीं, जबड़े बाहर निकले हुए थे, गाल पिचके हुए थे और आँखें गड्ढों में धँसी हुई थीं। ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने सदियों से भरपेट भोजन नहीं किया था, बस उतना ही खाया था जितना उन्हें जीवित रखने के लिए आवश्यक था।

'मैं ब्राह्मणी हूँ, ये मेरे मित्र हैं।' ब्राह्मणी ने एक-एक करके सबका परिचय कराया।

लंबे सफेद बालों और राख जैसी त्वचा वाला एक व्यक्ति आगे आया। पार्वती देख सकती थी कि उसकी आँखें तो युवा थीं, लेकिन पोषण की कमी के कारण वह दशकों बूढ़ा लग रहा था।

'मैं हिरण्यकशिपु का सरदार स्वपन हूं।'

हिरण्यकशिपु, मृतकों का शहर।

पार्वती को अंततः पता चला कि वे आदिवासी कौन थे: वे साधारण प्राणी नहीं थे; वे मृतकों की संतानें, वैतरली थे।

उसने उनके बारे में पहले सुना था। शंकर के बालों से उत्पन्न वैतरली मृत, अमर प्राणी थे। वे आमतौर पर एकांतप्रिय थे और क्षेत्र के किसी भी प्रमुख शहर में उन्हें ढूंढना मुश्किल था।

वे किसी के लिए नहीं लड़े, किसी का समर्थन नहीं किया, बल्कि अपनी अमरता जंगलों में निवास करने और उनकी रक्षा करने में व्यतीत करने का विकल्प चुना। कोई भी व्यक्ति एक विशेष अमरता अनुष्ठान द्वारा वैतरली बन सकता था।

'बाहर शहर का क्या हुआ?'

'हम उन अत्याचारी शासकों से पहले मानव थे जो ताजपोशी करके आए थे। राजा हिरण्यक्ष का पैतृक घर हिरण्यकशिपु के दूसरे कोने में छिपा हुआ था। हमें राजा के निवास की रक्षा के लिए उत्तर से लाया गया था। उन्होंने हमें धन और भोजन दिया। एकमात्र शर्त यह थी कि हमें एक यज्ञ करना होगा।'

स्वपन ने आगे कहा, "यज्ञ के बाद, चीजें बदलने लगीं। हमारे शरीर खोखले होने लगे, हमें भूख नहीं लगती थी, रात को नींद नहीं आती थी। साल बीतते गए, लेकिन हम वैसे ही रहे—हमारे बच्चे बड़े नहीं हुए, बड़ों की उम्र नहीं बढ़ी। तभी हमें राजा की साजिश का पता चला। अब हम यहां से नहीं जा सकते—बाहरी दुनिया की परिस्थितियां हमारे लिए बहुत कठोर हैं, हम मारे जाएंगे।"

लेकिन फिर, यहाँ क्यों छुपना, वहाँ क्यों नहीं रहना?

'राजा की मृत्यु के बाद, वर्षों तक कोई नहीं आया। हम शांति से रहे। हमारे जैसे लोगों को जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता नहीं होती। हमें कभी भी यहाँ से जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी, जब तक कि—'

'कब तक?' पार्वती ने स्वपन की ओर मुड़कर देखते हुए पूछा।

जब तक कोई महल में वापस नहीं आ जाता।

'कौन?'

'वह राजकुमार जो यहीं पला-बढ़ा।'

मातृकाएं कुछ ही समय बाद वैतरली से निकल पड़ीं, उस स्थान के रहस्यों को जानने की खोज में। जैसे-जैसे वे उसके करीब पहुँचती गईं, उनके चारों ओर का वातावरण और भी घना होता गया। पार्वती की इंद्रियां सचेत थीं, उन्हें अपने सीने में धड़कन महसूस हो रही थी। जिस पुत्र को उन्होंने अत्यंत प्रेम किया था और युद्ध के संकट में खो दिया था, वह उनके बहुत करीब था। उनका हृदय भारी हो गया यह जानकर कि उन्होंने उसे खोजने के लिए यह यात्रा क्यों की थी: उन्हें अपने हाथों से उस बालक को मारना होगा जिसकी रक्षा करने का उन्होंने वादा किया था।

वह किसी को भी ऐसा दर्द नहीं देना चाहती थी।

घर अपनी अंतिम अवस्था में था; छत के कुछ हिस्से लटक रहे थे, मानो गिरने ही वाले हों। उसे सीधा खड़ा रखने वाली एकमात्र चीज़ सात खंभे थे, हर तरफ छह और बीच में एक। अंधेरी रात में, पूर्णिमा के चांद की रोशनी में, लाल रंग का अग्रभाग विचित्र रूप से चमक रहा था।

पार्वती अत्यंत सावधानी से घर में दाखिल हुईं, उनके पीछे अन्य मातृकाएँ भी थीं। उन सभी ने अपने हथियार निकाल रखे थे। वे बिल्कुल खामोशी से कदम रख रही थीं, कोई आवाज नहीं कर रही थीं।

'आखिरकार तुम आ ही गए'—मुख्य हॉल में एक चीखती हुई, तीखी आवाज गूंजी।

मातृकाएं चलना बंद करके तुरंत एक-दूसरे को सुरक्षा प्रदान करते हुए आक्रमण के लिए तैयार हो गईं। अचानक उनके पीछे के दरवाजे से कौवों का एक झुंड अंदर आया और सीढ़ियों की नक्काशीदार रेलिंग पर बैठ गया। दरवाजा ज़ोरदार आवाज़ के साथ बंद हो गया।

उन्हें अंदर बंद कर दिया गया था।

पार्वती को सीढ़ियों के ऊपर एक आदमी की परछाई दिखाई दी। हालांकि अंधेरा था और उसका चेहरा छिपा हुआ था, फिर भी वह जानती थी कि वह कौन है। उनका लक्ष्य, वह व्यक्ति जिसका वे इतने लंबे समय से पीछा कर रहे थे।

अंधका।

'मुझे ढूंढने में तुम्हें ज्यादा देर नहीं लगी,' उसने हंसते हुए कहा और अंधेरे से बाहर निकलकर अपनी सफेद खोपड़ी और आंखों पर बंधे लाल रुमाल को दिखाया। वह इतना पीला और बीमार लग रहा था कि पार्वती की ममता जाग उठी; वह उसे डांटना चाहती थी और पौष्टिक भोजन करने के लिए कहना चाहती थी।

उन्होंने आगे कहा, 'मैं आप महिलाओं का इंतजार कर रहा था। मैं यहां काफी देर से अकेला हूं।'

पार्वती दौड़कर उसके पास जाना चाहती थी और कहानी यहीं खत्म करना चाहती थी, लेकिन उसने चारों ओर देखा और चौंक गई। वे उन्हीं वैतरली अनुयायियों के समूह से घिरे हुए थे जिनसे वे कुछ घंटे पहले मिले थे, लेकिन अब वे सभी रहस्यमय ढंग से मुस्कुरा रहे थे।

चामुंडी ने जरा भी इंतजार नहीं किया; उसने अपना त्रिशूल बगल में खड़ी महिला पर घोंप दिया,

लेकिन खून नहीं निकला। हथियार निकालते ही घाव भर गए।

'वैतरली मेरे लिए काम करते हैं। उनकी आत्माएं इस स्थान से बंधी हुई हैं, इसलिए वे केवल राजा के प्रति ही वफादार हैं। तुम मूर्खों को इतना समय लगाते देख मैंने उन्हें तुम्हारी मदद करने के लिए कहा। मेरे पास समय बर्बाद करने का समय नहीं है,' अंधक ने कहा। 'इन्हें खत्म कर दो,' उसने वैतरली को निर्देश दिया और अपने कक्षों की ओर वापस चलने लगा। 'मुझे काम करना है।'

मातृकाओं का प्रतिरोध व्यर्थ था। देखते ही देखते, उन्हें विशाल सभागार में एक-एक खंभे से बांध दिया गया। वैतरली उनके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गए, उनकी आँखें भूख से चमक रही थीं।

'हमने अपने खाने के बारे में झूठ बोला,' स्वपन ने पार्वती से कहा और अपने दांत दिखाते हुए धमकी भरी मुस्कान दी। 'हम जीवित प्राणियों को खाते हैं।'

अध्याय चौदह

प्रहलाद अपने किले के चारों ओर मौजूद भारी-भरकम पत्थरों से टकराती लहरों को देख रहा था। किला समुद्र के किनारे पर बना था। ज़्यादातर दिनों में यह खूबसूरत नज़ारा—दूर क्षितिज, ढलता सूरज और आसमान में उड़ती चिड़ियाएँ—उसके मन को प्रसन्न कर देता था। लेकिन आज वह गंभीर था। शांत। वह तैयार था। उसने अपनी पैंट और कुर्ता, साथ में लंबी शेरवानी पहनी थी और अपने बाल पीछे की ओर बाँधे थे। उसकी आँखें गहरी थीं, मानो उसके सामने ही रोशनी बुझ गई हो। उसकी साँसें धीमी थीं। वह धीरे-धीरे अपने आप से कुछ बुदबुदा रहा था, अपने भाषण की तैयारी कर रहा था।

संधि सम्मेलन में हुए नरसंहार के बाद, इंद्र की सेना ने आगे लड़ने के बजाय पीछे हट गई। अगले पखवाड़े भर में, वाशकल ने पूरे क्षेत्र में दूत भेजे और घोषणा की कि इंद्र की भूमि, गाँव, फसल और कर अब नरसिम्हा के हैं। कुछ ही हफ्तों में, कश्यपुरी का राज्य लगभग दुगुना हो गया। केवल अमरावती ही इंद्र की बची थी, लेकिन जिस तरह से हालात चल रहे थे, उसे देखते हुए जल्द ही वह भी उनसे छीन ली जाएगी।

पूरे समय नरसिम्हा चुप और अनुपस्थित रहे। अफवाहें थीं कि वे बीमार पड़ गए हैं, पागल हो रहे हैं। प्रहलाद ने इस अफवाह को सुनते ही खारिज कर दिया; नरसिम्हा पहले से ही पागल थे।

प्रहलाद अपने अध्ययन कक्ष में अकेला बैठा था, जो कोने में रखे दीपक की टिमटिमाती रोशनी से जगमगा रहा था। क्या मैं तैयार हूँ? धोखा देने के लिए? सत्ता हथियाने के लिए? विश्वासघात करने के लिए? या फिर से वही करने के लिए?

वह श्रीवत्स की अंगूठी को रगड़ रहा था। हे भगवान विष्णु, यदि कोई आशा है, तो मुझे ज्ञान दीजिए। मुझे मार्ग दिखाइए, मैं अपनी योजना छोड़ दूंगा।

लेकिन कुछ नहीं हुआ। बिजली नहीं गिरी। आसमान वैसा ही रहा। और कौवे बादलों को चीरते हुए किले के ऊपर मंडरा रहे थे, मानो कोई ज्योतिषी शगुन बता रहा हो।

बाहर जाते समय, उसने वह पत्र देखा जिसे उसने कई बार लिखा और संशोधित किया था—जिसमें सभी को महत्वपूर्ण, गोपनीय मामलों पर चर्चा के लिए बुलाया गया था। यह पत्र सभी क्षेत्रों के मंत्रिपरिषद को भेजा जाना था। यह जानकारी किसी के साथ साझा नहीं की जानी थी, हालांकि प्रहलाद जानता था कि नरसिम्हा को इसकी जानकारी होगी।

लेकिन तब तक फैसला लिया जा चुका होगा।

दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई। प्रहलाद कुछ कह पाता, तभी आगंतुक अंदर आ गया।

मैंने सुना कि क्या हुआ।

गरुड़।

'हैलो।' प्रहलाद ने हल्की सी मुस्कान दी।

जब उसके पिता ने विद्रोहियों के युद्ध शिविर में उन पर घात लगाकर हमला किया था, तब गरुड़ ने उसकी जान बचाई थी। अपने साजो-सामान के बिना भी वह गंभीर और प्रभावशाली लग रहा था। 'मेरे आदमियों ने मुझे बताया है कि एक सभा हो रही है। तुम लोग क्या कर रहे हो?'

‘प्रधानमंत्री होने के नाते, क्या मैं बैठक नहीं बुला सकता?’

‘आप जो चाहें कर सकते हैं, बशर्ते इससे राज्य को लाभ हो।’

और इस प्रकार बैठक समाप्त हुई।

गरुड़ ने गंभीरता से कहा, 'मैंने खुद भी एक जांच की है, बालक। और मुझे ऐसी बातें पता चल रही हैं जो नारा के पक्ष में नहीं हैं। वह खतरे में है।'

हाँ, वो है। मेरी तरफ से।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि किससे बात करूं। मुझे लगा कि आपसे बात करना सबसे अच्छा रहेगा। मैंने उससे संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन संधि भंग होने के बाद से—लोग इसे यही कह रहे हैं—वह पहले जैसा नहीं रहा। उसने खुद को सबसे अलग कर लिया है। मैंने सुना है कि उसने इंद्र की बेटी को मार डाला और बिजली की शक्ति को सोख लिया। मुझे नहीं पता कि उसने ऐसा क्यों किया, लेकिन वह निश्चित रूप से मुसीबत में है...

‘इससे किसी युवती की हत्या को जायज नहीं ठहराया जा सकता।’

गरुड़ ने माथे पर शिकन डालते हुए कहा, 'मुझे अब सही और गलत का पता नहीं चलता।'

प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'नारा के खिलाफ इन कपटपूर्ण साजिशों के बारे में तुमने क्या सुना है?'

'मैं-'

दरवाजे पर दस्तक से उसकी बात अधूरी रह गई। बाहर एक सिपाही खड़ा था। 'मालिक, वे इंतज़ार कर रहे हैं।'

प्रहलाद ने सिर हिलाकर उसे जाने का इशारा किया। 'बाद में बात करते हैं।' जैसे ही वह गरुड़ के पास से गुजरा, गरुड़ ने उसका हाथ पकड़ लिया।

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, 'किसी पर भरोसा मत करो।'

प्रहलाद ने फिर सिर हिलाया। वह जानता था कि इस समय यह चेतावनी किसी और के मुकाबले नरसिम्हा के लिए ज़्यादा उपयोगी होगी।

जब प्रहलाद ने प्रवेश किया तो हॉल लोगों से खचाखच भरा हुआ था। मानव, असुर, यक्ष, नाग और अन्य कुलों के मंत्री असमंजस भरी निगाहों से एक-दूसरे को देख रहे थे, यह सोच रहे थे कि उन्हें इस बार इतनी जल्दी क्यों बुलाया गया है। प्रहलाद ने उनके बैठने का इंतज़ार किया, तभी उनकी नज़र कमरे में अभी-अभी प्रवेश करने वाले व्यक्ति पर पड़ी और वे अविश्वास से दंग रह गए।

वाशकल।

‘मुझे लगता है आप अपने वित्त मंत्री को आमंत्रित करना भूल गए। मुझे आपके एक सहायक से निमंत्रण छीनना पड़ा।’ वाशकल ने कंधे उचकाते हुए कहा, ‘लेकिन मुझे खुशी है कि मैं यहाँ हूँ।’

वाशकल एक वफादार था। प्रहलाद ने अपनी योजना को रद्द करने पर विचार किया, लेकिन यदि यह निर्णय तुरंत लिया जाता, तो वाशकल कुछ भी नहीं कर पाता।

प्रहलाद हॉल के बीचोंबीच चला गया। 'मैंने आप सबको यहाँ इसलिए बुलाया है ताकि हम उस विषय पर चर्चा कर सकें जिसे हम सबने देखा तो है लेकिन जिसके बारे में बात नहीं की है।'

उनकी बातों पर सन्नाटा छा गया।

"जब हमने... बल्कि मैंने... अपने पिता हिरण्यकश्यप को मार डाला, तब हमने लोकतंत्र और शांति का राज्य बनाने का फैसला किया था," प्रहलाद ने आगे कहा। "फिर भी हम यहाँ एक बार फिर युद्ध लड़ रहे हैं। एक ऐसे शहर के लिए जो पहले से ही बहुत सारे संसाधन और धन खो रहा है, सेना और भाड़े के सैनिकों पर और अधिक पैसा बर्बाद करना ताकि हम लूटपाट और लड़ाई जारी रख सकें, समझदारी भरा नहीं लगता।" उसने अपना सिर हिलाया। "हम फिर से युद्ध में जाने के लिए तैयार नहीं हैं—"

'हमें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है,' वाशकल ने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'जैसा कि आप सभी जानते हैं,' जब प्रहलाद ने भौंहें चढ़ाकर उसकी ओर देखा, तो उसने घोषणा की, 'हमने युद्ध जीता था, एक ऐसा तथ्य जिसे हमारे प्रिय प्रधानमंत्री भूल गए प्रतीत होते हैं। क्या नारंगी लपटों ने आपकी स्मृति को झुलसा दिया है, महाराज?'

मुझे यह बात स्पष्ट रूप से याद है। लेकिन हमें एक ऐसे नेता की जरूरत है जो राजनीति को समझता हो, न कि केवल युद्ध कला को।

वाशकल ने गंभीर मुस्कान के साथ कहा, 'हमें एक कुशल शासक की आवश्यकता है। और नरसिम्हा वही हैं। महाराज, आप जो कर रहे हैं वह राजद्रोह जैसा प्रतीत हो रहा है। मैंने आप पर कृपा करते हुए आपको आगे बढ़ने नहीं दिया—यदि आप ऐसा करते हैं, तो रक्षक आपके खिलाफ विद्रोह कर देंगे।'

'उन्हें करने दो!' प्रहलाद क्रोधित होकर बोला। 'मैं इतनी बार जेल जा चुका हूँ कि जानता हूँ कि जिस शहर का पतन पहले ही तानाशाही के कारण हो चुका है, वहाँ हमें तानाशाही की ज़रूरत नहीं है। हमारे राज्य को स्थिरता, शांति, पुनर्निर्माण... प्रगति चाहिए! भला कब कोई देश युद्ध को ज़्यादा महत्व देता है और जनता को कम? हम कुछ लोगों के अहंकार को पूरे देश पर हावी क्यों होने देते हैं?'

प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'हाँ, राजा नरसिम्हा ने युद्ध जीता। उन्होंने दुष्ट इंद्र को हराया। और वह युवती जो मारी गई—उसका क्या? राजा उसके वध को कैसे उचित ठहरा सकते हैं?' वह रुका, अपने आस-पास के लोगों को उलझन में बड़बड़ाते और कानाफूसी करते हुए देखता रहा। 'मैं यह नहीं कह रहा कि भगवान नरसिम्हा बेईमान राजा हैं। वे नहीं हैं। वे धर्मात्मा हैं और वे उस चीज़ पर काम करते हैं जो किसी अन्य शासक में नहीं है: सहज ज्ञान। लेकिन उनका मन विषैला हो रहा है'—उन्होंने वाशकल की ओर देखा—'और जो शासक इस तरह के छल के आगे झुक जाता है, उसे सिंहासन पर नहीं बिठाया जाना चाहिए। इसलिए मैं यहाँ आया हूँ, अपनी रगों में असुरों का रक्त लिए, लेकिन अपने हृदय में भगवान विष्णु में आस्था लिए, आपसे विनती करने। हमें राजा को सिंहासन छोड़ने और किसी और को सौंपने के लिए विवश करना होगा।'

'और वह कौन हो सकता है?' मंत्रियों में से एक ने पूछा। 'आप ही तो थे जिन्होंने भगवान नरसिम्हा का समर्थन किया था, जिन्होंने आपकी जगह उन्हें राजा बनाने पर ज़ोर दिया था। आपने राज-अधिकार त्याग कर उन्हें दे दिया, जबकि राज्य के नियमों के अनुसार सबसे बड़े पुत्र को सिंहासन का उत्तराधिकार प्राप्त होता है। और अब आप यहाँ आकर कह रहे हैं कि आपने अपना

मन बदल लिया है!'

'मैं भोला था और शायद ज़रूरत से ज़्यादा आशावादी था।' प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'मुझे अपनी उम्र को दोष नहीं देना चाहिए; मैं सही साबित होना चाहता था।' उसकी आवाज़ काँप रही थी। 'मैं चाहता था कि वह राज्य का संचालन करे क्योंकि मुझे विश्वास था कि वह मुझसे बेहतर करेगा। लेकिन मैं गलत था। वह नहीं कर सकता। अब, परिषद के सदस्य के रूप में, केवल आपके पास ही उसे पद से हटाने की शक्ति है। उसे गिराने की शक्ति है।'

वाशकल खड़े हुए और भीड़ को संबोधित करते हुए बोले, 'आप जो भी फैसला लें, मुझे उसमें शामिल न करें, लेकिन मैं आपको एक बात का आश्वासन देता हूँ—जिस व्यक्ति को आप पदच्युत करने की योजना बना रहे हैं, वह वही व्यक्ति है जिसके रक्त में अब वज्र की शक्ति समाहित है। वह राजद्रोह के आरोप में आप में से किसी को भी मारने के लिए अपने आदमियों को नहीं भेजेगा—वह स्वयं आएगा।'

वहाँ एकत्रित मंत्री और सरदार दबी आवाज़ में बोलने लगे। उन सब पर भय छा गया था। उन्हें देखकर प्रहलाद को हार का एहसास हुआ। वह नहीं चाहता था कि सब कुछ इस तरह समाप्त हो।

अंत में मंत्रियों में से एक ने पूछा, 'लेकिन राजा कौन होगा?'

प्रहलाद ने पलकें झपकाईं। 'मैं अपने पिता का अनुसरण करना चाहता हूँ।'

परिषद के सदस्य अचंभित रह गए। मंत्री आपस में विचार-विमर्श कर रहे थे, तभी प्रहलाद एक कोने में खड़ा हो गया। इससे पहले जब उसने नरसिम्हा को राजा चुनने के लिए उन्हें मनाने के लिए इसी तरह की बैठक बुलाई थी, तब भी वे उसकी बात मानकर सहमत हो गए थे। क्या इस बार भी ऐसा ही होगा? उसने देखा कि वाशकल उस पर व्यंग्य कर रहा है, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ सोच पाता, परिषद के सदस्य वापस आकर अपनी कुर्सियों पर बैठ गए।

'हम सर्वसम्मति से इस निर्णय पर पहुंचे हैं।'

प्रहलाद प्रतीक्षा करता रहा।

मंत्री ने कहा, 'प्रधानमंत्री प्रहलाद, वे बने रहेंगे। नरसिम्हा राजा बने रहेंगे।'

अध्याय पंद्रह

आपने वही किया जो आप करना चाहते थे।

नरसिम्हा एक बार फिर यहीं लौट आया था, वह जगह जहाँ उसे हमेशा सुकून मिलता था, लेकिन साथ ही साथ बेचैनी और मतली का एहसास भी होता था। वह खाड़ी में खड़ा था, जिसका काला पानी चाँदनी में चमक रहा था।

'मैं कहाँ हूँ?' उसने खुद से पूछा। पानी में उसके साथ कोई और भी था। उसने मुड़कर देखा कि वह कौन है। 'मेरी जान,' उसने उस परिचित चेहरे को देखते हुए कहा।

उसने उसकी अभिवादन को अनसुना कर दिया। 'तुमने वही किया जो तुम चाहते थे। तुमने उसे भी उतना ही कष्ट दिया जितना मुझे खोने पर दिया था,' उसने ठंडी आँखों से कहा।

'हाँ।'

'यह कैसी लगता है?'

नारा को पता नहीं था। उसे कई तरह की भावनाएं महसूस हो रही थीं, लेकिन क्या जीत भी उनमें से एक थी, वह सोच रहा था। इसका जवाब देने के बजाय, उसने पूछा, 'क्या तुम खुश नहीं हो? क्या तुम संतुष्ट नहीं हो?'

'तुम ऐसे कह रहे हो जैसे तुमने ये मेरे लिए किया हो।'

मैंने किया।

'क्या तुमने मेरे लिए एक छोटी बच्ची को मार डाला?' उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'यह दिलचस्प है कि सारा दोष मुझ पर आ गया है।'

नारा को अपराधबोध होना चाहिए था, लेकिन उसके दिल में बहुत कड़वाहट भरी हुई थी। 'तुम चाहे जो भी कहो, मेरे प्रिय, वह इसके लायक ही था।'

'और अब क्या? उसे भी मार डालेंगे?'

उसने सिर हिलाया। 'आखिरकार। लेकिन अभी के लिए, मैं चाहता हूं कि वह पछतावे और दर्द के साथ जिए।'

'और बाद में?'

'आपका क्या मतलब है?'

'एक बार जब तुम उसे मार दोगे, तो तुम्हारा उद्देश्य क्या रह जाएगा?'

'मुझे नहीं पता।' उसने सिर हिलाया। 'शायद मैं तुम्हारे पास आऊंगा।'

लेकिन अब तुम मेरे साथ रहने के लायक नहीं हो।

नरसिम्हा ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। जीवन भर उन्हें यही लगता रहा कि वे एक हत्यारा, एक घिनौना इंसान, एक लुटेरा हैं। इंद्र की सेना में रहते हुए वे भाड़े के सैनिक थे। 'ओह, तो जब मैंने पहले दूसरों के लिए ये सब किया, तो सब ठीक था। लेकिन अब, जब मैं अपने लिए करता हूँ, तो मैं गलत हूँ?'

'जब तुम मुझसे मिले थे, तब तुम मुक्ति की तलाश में थे। अब तुम नरसंहार की तलाश में हो,' चेचन ने कहा। 'और जब तुम नरसंहार की तलाश करते हो, तो तुम खुद उसके शिकार बन जाते हो।

मैंने तुमसे कहा था: मैं तुम्हें खेतों में ज़मीन पर पड़ा देख रहा हूँ, तुम्हारे दिल में खंजर है, तुम्हारी जान निकल रही है। मरने लायक एकमात्र चीज़ मैं हूँ... लेकिन अब, मैं तुम्हारा इंतज़ार नहीं करूँगा।'

जैसे ही वह जाने के लिए मुड़ी, नरसिम्हा ने उसे पकड़ने की कोशिश की। लेकिन व्यर्थ। वह हवा के झोंके की तरह उसकी पकड़ से फिसल गई।

नहीं, मत जाओ!

'मैं तो बस एक स्मृति हूं... एक टूटे हुए इंसान की।'

नहीं, तुम इससे कहीं बढ़कर हो। तुम यहाँ एक स्मृति बनकर रहोगे।

वह पीछे मुड़ी। जैसे ही वह घुटनों के बल बैठी और पानी की एक बूंद अपने गालों पर लगाई, पानी चमक उठा और वह मुस्कुराई। 'क्या हमने सपने देखे थे, नारा? क्या हमने कभी अपने आश्चर्यों में डूबने का सपना देखा था?'

'आप क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं?'

'उस आदमी का क्या हुआ जिसके इतने सारे सपने थे? क्या वह अब भी सपने देखता है? क्या तुम्हें फिर से प्यार हो गया है?'

नहीं। और न ही मैं ऐसा करने जा रहा हूँ।

'तुम्हें आगे बढ़ना होगा। जल्द ही एक साल हो जाएगा। असल में, हमारे साथ बिताए समय से भी ज़्यादा।' वह जाने लगी। नारा उसके पीछे-पीछे तब तक चलती रही जब तक उसने कहा, 'मैं जहाँ जाऊँ, वहाँ तुम मेरा पीछा नहीं कर सकती। तुम्हारा शरीर, तुम्हारा खून—ये सब दूषित हैं।'

और फिर वह गायब हो गई, उसे एक टूटे हुए इंसान के रूप में पीछे छोड़ गई।

लड़की का खून पीने के बाद नरसिम्हा लगभग दो सप्ताह तक गंभीर रूप से बीमार रहे। उन्हें पहले ही बताया गया था कि वे बीमार पड़ेंगे, लेकिन फिर भी उन्होंने ऐसा किया। उन्हें तेज बुखार था और वे प्रलाप के दौर से गुजर रहे थे। जब चौदहवें दिन उनका बुखार उतरा, तो उनसे वह व्यक्ति मिलने आया जो उनका अप्रत्याशित सहयोगी और सलाहकार बन गया था: वाशकल।

अभी भी कमजोर, नरसिम्हा कमरे के एक कोने में रखी एक लंबी मेज की ओर लड़खड़ाते हुए बढ़ा और अपने लिए शराब डाली। इस प्रयास से वह पसीने से तरबतर और थका हुआ हो गया।

'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' उसने कर्कश स्वर में पूछा।

'ओह, कुछ नहीं। क्या मैं बैठ सकता हूँ, मेरे स्वामी?'

'तुम इतने खुश क्यों हो?' नारा ने मुस्कुराते हुए वाशकल को घूरकर पूछा।

'मेरी रात बहुत शानदार रही, इसीलिए।'

'वेश्यालयों में तुम्हारे कारनामे जगजाहिर हैं। उन पर इतराने की कोई जरूरत नहीं है।' उसने शराब का एक घूंट लिया। इसका स्वाद अलग था।

वाशकल की मुस्कान गायब हो गई। 'क्या तुम्हें शक्तिशाली महसूस हो रहा है?'

'मुझे कुछ महसूस नहीं हो रहा। मुझे नहीं लगता कि उसमें वज्र शक्ति थी।' वह बेहद कमजोर और असहाय महसूस कर रहा था... लेकिन पेय पदार्थ—उसने एक और घूंट लिया—उसे आराम दे रहा था। 'क्या ऐसा हो सकता है कि आप गलत हों?'

'नहीं,' वाशकल ने दृढ़ता से कहा। 'हमें तुम्हारी नई शक्तियों को आजमाना चाहिए।'

'कोई शक्तियां नहीं हैं!'

'अभी नहीं। लेकिन अगर आप अपनी मांसपेशियों का व्यायाम करेंगे, तो मुझे यकीन है कि आपको वे शक्तियां अपने भीतर मिल जाएंगी। आपको भी तब तक पता नहीं था कि आप एक अवतार हैं, जब तक आपको वास्तव में उन शक्तियों की आवश्यकता नहीं पड़ी, है ना?'

नरसिम्हा ने सिर हिलाया। 'ठीक है, हम इसका परीक्षण कर सकते हैं। लेकिन वास्तव में, इसका उद्देश्य क्या है? मैं तो सोना चाहता हूँ और परिषद या राज्य के बारे में चिंता नहीं करना चाहता।'

वाशकल ने कहा, 'तुम्हें चिंता करनी चाहिए।'

'क्यों?'

'प्रहलाद आपको पद से हटाने के लिए परिषद को आगे बढ़ा रहा था... धिक्कार है।' उसने अपना सिर हिलाया।

एक पल के लिए नरसिम्हा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह अचंभित रह गया। 'क्या?'

'वह परिषद से आपको हटाने का आग्रह कर रहा था, लेकिन जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, उन्होंने आपके पक्ष में मतदान किया। आखिरकार, हर कोई डरा हुआ है। आपने युद्धविराम भंग के दौरान जो किया—लोग उसके लिए आपका सम्मान करते हैं... या वे आपसे डरते हैं, बात एक ही है। वे आपके खिलाफ जाने की हिम्मत नहीं करेंगे।'

'प्रहलाद ने मेरे खिलाफ साजिश रची?' नरसिम्हा इस जानकारी को पचा नहीं पा रहा था।

'हाँ। मुझे खेद है कि उसने तुम्हारे विरुद्ध काम किया। लेकिन यह मत भूलो, वह अभी भी हिरण्यकश्यप का है...' वाशकल ने खिड़की से बाहर देखते हुए अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

बाहर, चमकता हुआ पूरा चाँद धुंधला हो गया था, रात के आकाश में तूफ़ानी बादल घिर आए थे और ज़ोरदार बिजली कड़की। कुछ ही मिनटों में मौसम पूरी तरह बदल गया था। वाशकल ने झट से मुड़कर नारा की ओर देखा। राजा अपनी नाक के नथुने फड़कने के अलावा बिल्कुल स्थिर थे। उनका क्रोध स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह उनके शरीर से रिस रहा हो। अचानक उनकी उंगलियों में ऊर्जा की चिंगारी उठी और उन्होंने कमरे में बिजली का एक झटका फेंका, जिससे पलंग दो टुकड़ों में टूट गया। जब धूल छटी, तो दीवार पर बिजली के निशान जैसा एक बड़ा सा चिह्न बना हुआ था।

'और आपने कहा था कि आपको अभी तक अपनी शक्तियां प्राप्त नहीं हुई हैं!' वाशकल ने बड़ी मुस्कान के साथ कहा। 'देवियों और सज्जनों, मैं आपके सामने वज्र धारण करने वाले नरसिम्हा को प्रस्तुत करता हूँ।'

इंद्र की सेवा करते समय नारा ने वज्र की अपार शक्ति देखी थी। इस शक्ति ने इंद्र को अजेय बना दिया था। वे चमत्कार कर सकते थे, आकाश को गिरा सकते थे, बादलों से बिजली गिरा सकते थे... या मात्र एक इशारे से राजवंशों का अंत कर सकते थे और शहरों को चूर-चूर कर सकते थे। इंद्र जिसे भी स्पर्श करते, उसे असहनीय पीड़ा सहनी पड़ती—उसका शरीर कैंसर कोशिकाओं से भर जाता और उसका मन भयानक दृश्यों से ग्रस्त हो जाता, जिससे उसकी धीमी और दर्दनाक मृत्यु हो

जाती। यह वज्र की शक्ति थी, और यह जानकर नारा चकित रह गया कि यह शक्ति उसके भीतर मौजूद है। इस समय, उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि उसे यह शक्ति कहाँ से मिली—बल्कि, उसे लगता था कि वह इसके योग्य है।

उसने दांत भींचते हुए कहा, 'मैं चाहता हूं कि तुम मुझे बताओ कि आखिर हुआ क्या था।'

वाशकल ने नारा के चारों ओर उठते काले धुएं और उसकी उंगलियों से निकलती बिजली की चिंगारियों को भय और मनोरंजन के मिश्रण से देखा और तुरंत आज्ञा का पालन किया। वाशकल की बात सुनते-सुनते नारा का क्रोध बढ़ता चला गया। यह वही क्रोध था जो उसने तब महसूस किया था जब इंद्र ने उसे गले लगाया था और ऐसा दिखाने की कोशिश की थी जैसे उनके बीच सब कुछ ठीक है, जब उसने इंद्र की पुत्री की हत्या की थी...

क्रोध साम्राज्यों को नष्ट करने और हजारों लोगों को मारने में सक्षम है।

'अब अगर आप उसे कैद करने या जान से मारने के बारे में सोच रहे हैं, तो मैं कहूंगा कि यह एक मूर्खतापूर्ण सोच है।'

'आपका क्या मतलब है?'

'वह पूर्व राजा का पुत्र है। यदि आप असुरों के प्रकोप से बचना चाहते हैं, तो उसे मत मारिए। आप उसे कहीं निर्वासित कर सकते हैं ताकि वह ज्यादा परेशानी न पैदा करे। यहाँ से इतनी दूर, जहाँ वह परिषद को प्रभावित करने का प्रयास न कर सके। आपका क्या विचार है?'

'मुझे उससे बात करनी है।'

'बातें करने से और भी बड़ी समस्याएँ पैदा होंगी। उससे छुटकारा पाओ। उसे भगा दो। उसे बता दो कि तुम गुस्से में हो ताकि वह दोबारा तुमसे उलझने की हिम्मत न करे। मुझे डर है कि अगर तुम उसे देख लो, तो कहीं उसका गला न घोंट दो।'

नरसिम्हा ने सिर हिलाया। 'मैंने बहुत पहले उससे वादा किया था कि मैं हर हाल में उसकी रक्षा करूंगा। और मैं तब से ऐसा करता आ रहा हूं। लेकिन वह मुझे इस तरह मजबूर नहीं कर सकता।'

'वह बस आपके लिए चिंतित हैं, महाराज। मेरा मानना है कि उन्हें अपनी पत्नी के साथ दुनिया के अन्य हिस्सों को देखने के लिए कुछ समय की छुट्टी की जरूरत है।'

नारा ने सिर हिलाया। वाशकल सही कह रहा था। हालांकि उसका गुस्सा शांत हो गया था, फिर भी उसे धोखा महसूस हो रहा था। 'मैं जो ज़रूरी होगा वो करूँगा।'

'इसका क्या मतलब है?'

उन्होंने तीखे स्वर में कहा, 'आपको सब कुछ जानने की जरूरत नहीं है। आपकी अत्यधिक कृतज्ञता का रवैया काफी चिंताजनक है।'

'मैं सिंहासन की सेवा करता हूँ और उस व्यक्ति की... सुधार... उस देवता की जो उस पर विराजमान है।' उसने आँख मारी और बाहर चला गया, नारा को उसके विचारों में डूबा हुआ छोड़कर।

प्रहलाद द्वारा धोखा दिए जाने के ज्ञान से नारा बुरी तरह परेशान था। वह उस लड़के को मार डालना चाहता था, पर ऐसा कर नहीं पा रहा था। कुछ समय से वह प्रहलाद को नज़रअंदाज़ कर रहा था क्योंकि वह नारा के लिए बहुत ज़्यादा नैतिक था, लेकिन शायद अब उससे सामना करने का

समय आ गया था। जैसे ही उसने उस अंगूठी को देखा, ठीक वही अंगूठी जो प्रहलाद के पास भी थी, वही अंगूठी जो नारा ने उसके लिए बनाई थी, उसके मन में धीरे-धीरे एक विचार आकार लेने लगा...

मुझे उससे छुटकारा पाना होगा।

अध्याय सोलह

मुझे लगता है कि हमारे सामने एक समस्या है।

वायु, साची और बृहस्पति एक मेज के चारों ओर एकत्रित थे, उनके तनावग्रस्त, उदास चेहरे मंद प्रकाश में जगमगा रहे थे। वे सभी इंद्र का आदर और सम्मान करते थे, लेकिन इस समय वे सभी उनसे बच रहे थे। वे सभी अपने राज्य अमरावती लौट आए थे। संधि बैठक में हुए हमले से पीछे हटकर वे सैकड़ों-हजारों मील की यात्रा करके अपने परिचित परिवेश के सुख में लौट आए थे। पहले तो जब उन्हें पता चला कि नारा ने जयंती की हत्या कर दी है, तो उन्होंने प्रतिशोध लेने का निश्चय किया था, लेकिन अपने राजा और रानी को असहाय और सिसकते हुए देखकर उन्होंने पीछे हटने का विकल्प चुना। ताकि वे अपने भंडार, आपूर्ति और ऊर्जा को बचा सकें और घर लौट सकें। अतिरिक्त सैनिकों को इकट्ठा कर सकें, जरूरत पड़ने पर भाड़े के सैनिकों को किराए पर ले सकें, अपनी संख्या बढ़ाने के लिए आस-पास के कबीलों से संबंध बना सकें और फिर तुरंत बदला ले सकें।

'मैं अपनी भतीजी के निधन से दुखी हूँ।' वायु ने साची की ओर देखा, जो झुकी हुई निगाहों से उसके बगल में खड़ी थी। वह यहाँ इसलिए थी क्योंकि उसका पति नहीं था। उनमें से किसी एक को निर्णय लेना था। अमरावती के बाहर खतरा मंडरा रहा था। 'लेकिन हमें अभी की समस्या पर ध्यान देना चाहिए। मैंने शहर से महज़ एक हज़ार कदम दूर एक गाँव के पास स्थानीय अशांति के बारे में सुना है।'

'क्या?' बृहस्पति ने पूछा।

वायु उस सुबह अपने घोड़े पर सवार होकर शहर की धुंध और भव्यता को पीछे छोड़ते हुए निकल पड़ा था। उसके पीछे बारह सैनिक थे, सभी पूरी तरह से हथियारों से लैस। मुखिया होने के नाते, वह स्वयं उस भयावहता और विनाश को देखना चाहता था जिसका वर्णन उसके सैनिकों ने उससे किया था।

कुछ देर बाद, वह एक लूटे हुए गाँव में पहुँचा। उसके कुछ सैनिकों को घुमाया गया, कोड़े मारे गए और पीटा गया, जबकि अन्य मारे गए थे।

'इसका क्या मतलब है?' उसने अपने बगल में खड़े सैनिक से पूछा।

'हे स्वामी, नरसिम्हा की सेना तेजी से अमरावती की ओर बढ़ रही है। बस कुछ ही दिन बचे हैं और वे यहाँ, हमारे पास आ जाएँगे। उन्हें रोकने वाली एकमात्र चीज हमारी आसमान छूती दीवारें हैं। उन्हें पार करना मुश्किल होगा।'

जब तक किसी के पास वज्र न हो, नारा आकाश से एक ही झटके में अवरोधों को आसानी से तोड़ सकता है।

वायु ने सिर हिलाया। 'कितने गाँव?'

'मालिक, गिनती बंद करने के लिए इतना काफी है।' सैनिक कांपते हुए रुका। 'हमें अपनी तोपें बनाना शुरू करना होगा।'

'क्या हमें हमला करना चाहिए?' एक अन्य सैनिक अपनी घोड़ी को पीछे से लेकर आया, उसके खाली हाथ में एक भाला था।

वायु चिंतन में डूब गया। उसकी पैनी निगाहें आकाश, ओस और चारों ओर फैली अफरा-तफरी की ओर खिंची चली गईं।

"अगर हम लापरवाह बने रहे, तो हम गुमनामी में खो जाएंगे, महाराज," सैनिक ने कहा। "मेरा सुझाव है कि हम उन्हें खत्म कर दें। उन सभी को। हमें टुकड़ियां भेजनी चाहिए और हर उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए जो हमारे करीब आने की हिम्मत करे।"

'वे रुकेंगे नहीं।' वायु ने सिर हिलाया। 'पीछे हटो। सब लोग पीछे हटो!'

मुझे इसकी उम्मीद करनी चाहिए थी।

वायु ने बड़बड़ाहट सुनी। वह मुड़ा और पूछा, 'यह किसने कहा?'

किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन वायु समझ गया था। उसने अपने संदिग्ध सैनिक को देखा और उसकी गर्दन पर मुट्ठी कसकर दबा दी, जिससे उसका दम घुटने लगा और दिल की धड़कन तेज हो गई, जब तक कि वह जमीन पर गिर नहीं गया। वायु ने चारों ओर सख्ती से देखा, गाँव की नारंगी लपटें उसकी चमकदार आँखों में प्रतिबिंबित हो रही थीं।

वह घोड़े पर सवार होकर अमरावती लौट गया।

'घटना के बाद, मैंने देश भर में अपने अन्य प्रांतों में दूत भेजे। हमारी हालत अच्छी नहीं है। हमारे अधिकांश सेनापतियों की हत्या कर दी गई है और उनकी जमीनें कश्यपुरी को दे दी गई हैं। हमें राजस्व का नुकसान हो रहा है। हमें आपूर्ति की कमी हो रही है। दिन-ब-दिन हमारा सम्मान भी घटता जा रहा है,' वायु ने कहना शुरू किया।

शची और बृहस्पति शांत थे।

वायु ने कराहते हुए अपने बालों में उंगलियां फिराईं। 'मुझे लगता है कि आपके अनुसार मौन रहना ही सबसे अच्छा विकल्प है।'

बृहस्पति गुर्राया। 'इंद्र प्रतिशोध लेने की योजना नहीं बना रहा है।'

साची ने अपने पति का बचाव करते हुए कहा, 'यह बुद्धिमानी भरा कदम होगा। खासकर पिछली बार जब उसने पलटवार करने का फैसला किया था, उसके बाद जो कुछ हुआ था।'

लेकिन हमें कुछ तो करना होगा। हमला करना होगा। योजना बनानी होगी। मुझे नहीं पता।

'वह अपने कमरे में बैठकर खिड़की से बाहर देखता रहता है। कभी-कभी वह जयंती के कमरे में जाकर वहीं रुक जाता है,' साची ने सिर हिलाते हुए कहा।

'तो फिर हमें बात करनी होगी,' वायु ने कहा। 'तुम्हें क्या लगता है कि वह किसकी बात सुनेगा?'

साची और इंद्र ने बृहस्पति की ओर देखा। वह वृद्ध व्यक्ति शुरुआत से ही इंद्र का गुरु था। कश्यप उनके पिता थे, लेकिन बृहस्पति ने ही उन्हें जीवन भर मार्गदर्शन दिया था। उनका गंजा सिर, बड़ी-बड़ी आंखें और झुर्रीदार चेहरा, साथ ही सफेद वस्त्र, उनके नाम से ही दमक रहे थे।

अमरावती के ऋषियों में सर्वोपरि बृहस्पति का आदर किया जाता था। उन्हें हर युद्ध में देवताओं

की विजय का सूत्रधार माना जाता था। परन्तु अब वे वृद्ध हो चुके थे और उनमें वह उत्साह नहीं रहा था जिससे वे पहले दूसरों का मार्गदर्शन करते थे। ऐसी अफवाहें थीं कि उनकी स्मृति कमजोर हो रही थी, वे बातचीत और यहाँ तक कि पढ़ी हुई किताबें भी भूलने लगे थे।

'ठीक है,' बृहस्पति ने कहा, 'मैं उससे बात करूंगा।'

इंद्र बालकनी में बैठे सूर्यास्त और अमरावती के सुंदर, भव्य शहर को निहार रहे थे, जो धूसर, सफेद और नीले रंगों में रंगा हुआ था। वे एक ऊंचे बुर्ज में थे, जिसका सबसे ऊंचा बुर्ज राजा का था। सड़कों पर लोग थे, जो इस समय शहर के चारों ओर बने गोलों और विशाल बैरिकेड्स को देख रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे शहर को गले लगा रहे हों, ठीक वैसे ही जैसे उनके पिता ने उन्हें गले लगाया था।

पिछले कुछ दिनों से वह ज्यादा बोल नहीं रहा था। उसका गला सूख रहा था और उसे एक अजीब सी सुन्नता महसूस हो रही थी। वह जानता था कि लोग उसे दुखी समझते हैं। लेकिन इंद्र को जो महसूस हो रहा था वह था खालीपन, मानो वह एक ऐसा व्यक्ति हो जिसका कोई उद्देश्य न हो। कोई लक्ष्य न हो। सबसे बढ़कर, उसे लग रहा था कि उसके पास चलने के लिए कोई रास्ता नहीं है। उसकी दिशा क्या थी? उसे कहाँ जाना चाहिए? उसे कुछ पता नहीं था।

वह खोया हुआ था, एक टूटा हुआ इंसान जिसकी आत्मा भटक गई थी। उसने सोचा, वह कितनी बड़ी त्रासदी था, और अपने इस हाल पर वह खुद से लगभग नफरत करने लगा था।

'आप कैसे हैं, मेरे स्वामी?'

इंद्र ने अपनी भौहें उठाईं और ऊपर देखा। बृहस्पति! वह अपने बड़े शॉल को ओढ़े हुए, अंडे के आकार के शरीर और सिर को हिलाते हुए, सरकते हुए आए। वे इंद्र के सामने, ओक की लकड़ी से बनी कुर्सी पर बैठ गए।

'ठीक है,' इंद्र ने धीरे से कहा।

मुझे लगता है कि आप युद्ध योजनाओं पर काम करने के लिए तैयार नहीं हैं।

मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता।

'मुझे पता है, और मैं यहाँ उस वजह से नहीं हूँ।' बृहस्पति ने सिर हिलाया। 'मैं यहाँ इसलिए हूँ क्योंकि मुझे याद है कि जब आप वज्र धारण करते थे, तब आप एक अलग ही इंसान थे। और अब आप एक अलग ही व्यक्ति हैं। लोग कहते हैं कि सत्ता पूरी तरह भ्रष्ट कर देती है। अच्छे लोगों को भी, नैतिक लोगों को भी।'

'नरसिम्हा की तरह?'

'हां। सत्ता का नशा उस पर चढ़ रहा है।'

इंद्र ने अपने जबड़े भींच लिए। 'शायद रुद्र सही था। वह दुनिया का अंत करने जा रहा है।'

क्या तुम उससे नफरत करते हो?

मुझे नहीं पता कि मैं उसके लिए क्या महसूस करती हूं।

'वज्र, तुम्हारा सबसे अनमोल रत्न, उसके पास है। वह अब लगभग अजेय है। यह सोचकर ही मुझे डर लगता है कि तुम तक पहुँचने के लिए वह कितने लोगों को मार डालेगा।' बृहस्पति ने आह

भरी। 'मुझे वह दिन याद है जब तुमने त्वस्त्र के द्वारा वज्र को बनाया था और इसके लिए उसका अपमान किया था। उसने तुम्हें वज्र की शक्ति को नियंत्रित करने में मदद की थी। लेकिन जैसे ही तुमने यह करना सीख लिया, तुमने उसे बाहर निकाल दिया। मुझे वह आदमी याद है जिसे त्वस्त्र द्वारा तुम्हें मारने के लिए वृत्र बनाने पर सबसे अधिक कष्ट सहना पड़ा था।'

इंद्र ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। बूढ़ा आदमी इस बात से क्या कहना चाह रहा है?

'जयंती को लिखने का बहुत शौक था। वो एक तरह की इतिहासकार थी, छोटी सी इतिहासकार।' बूढ़े आदमी ने हंसते हुए कहा। 'वो तरह-तरह की बेतुकी बातें लिखती थी। वो किंवदंतियों और मिथकों, नायकों और खलनायकों के बारे में पढ़ती थी और उनके बारे में लिखती थी। कलम उठाती और अपनी कल्पना को उड़ान भरने देती।' इस पर बृहस्पति ने माथे पर शिकन डाली। 'मैंने तुम्हें ये नहीं बताया, लेकिन उसने उन युद्धों की कहानियां लिखी थीं जो हम वज्र के बिना हार गए थे। उसने तुम्हारे वज्र होने और उन सभी लड़ाइयों को जीतने के बारे में काल्पनिक कहानियां लिखी थीं। अरे वाह! पता है, वो एक काल्पनिक दुनिया में रहना चाहती थी क्योंकि उसे अपराधबोध होता था।'

बृहस्पति ने आगे कहा, 'मुझे याद है मैंने जयंती को यह कहानी सुनाई थी। याद है कैसे, असुर वंश के एक ऋषि को हराने के लिए, आपने उसे उनका ध्यान भटकाने के लिए भेजा था। वह आपकी सैनिक थी। वह युवा और जोशीली थी, लेकिन तैयार थी। उसने ऋषि के सामने खुद को भगोड़ा बताकर उनसे कहा कि वह उनकी सेवा करना चाहती है, जबकि आपने पीछे से उन पर हमला करके महल को नष्ट कर दिया। जब वह लौटी, तो उसने आपको बताया कि ऋषि ने उसे बताया था कि इंद्र के लिए अपनी शक्तियाँ वापस पाने का एक और आसान तरीका है। इलवर्ती में एक ऋषि रहते थे, जिनकी अस्थियों का उपयोग कश्यप ने देवताओं को शक्तियाँ प्रदान करने के लिए किया था। इस ऋषि का नाम ददिचि था। उसने मुझसे पूछा कि क्या हम इस ऋषि को ढूंढकर आपको, उसके पिता को, फिर से शक्तिशाली बनने में मदद कर सकते हैं। तभी मैंने उसे बताया कि वह वज्र है। कि उसे आपको बचाने के लिए अपनी शक्तियों का त्याग करना पड़ा।'

इंद्र ने धीमी आवाज़ में कहा, 'यह तुम ही थे जिसने उसे बताया था।'

'हां।' उसने सिर हिलाया। 'यह उस असुर ऋषि की बातों पर विश्वास करने से बेहतर था।'

'लेकिन क्या होगा अगर वह सही थी? क्या होगा अगर कोई रास्ता हो?' इंद्र आगे झुकी। 'जयंती को हमेशा इस बात का पछतावा रहा कि उसकी जिंदगी की वजह से मुझे अपनी शक्तियां छोड़नी पड़ीं। क्या होगा अगर ये हड्डियां मुझे मेरी बेटी की इच्छा पूरी करने का मौका दें? आखिरी बार।'

'क्या यह उसके बारे में है, या सत्ता हासिल करने के बारे में है?'

इंद्र ने सिर हिलाया। 'मुझे सत्ता की परवाह नहीं है। मुझे पलटवार करने की भी परवाह नहीं है। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि नरसिम्हा मेरे करीबियों के साथ क्या करेगा। मैं अब महत्वाकांक्षा के लिए नहीं लड़ रहा हूँ। मैं सही के लिए लड़ रहा हूँ।'

इंद्र के भीतर एक बार फिर आग जल उठी थी। वह इसे महसूस कर सकता था। उसे जीवंतता का अहसास हो रहा था। उसकी आँखें चमक रही थीं।

‘तो फिर ऐसा करना ही होगा।’ बृहस्पति मुस्कुराए। ‘लेकिन अगर यह व्यर्थ का प्रयास साबित हुआ तो?’

‘तो मैं मूर्ख हूँ।’ इंद्र मुस्कुराई।

इंद्र को पता था कि उसने शायद अपनी बेटी के लिए कभी सही काम नहीं किया था। अब वह इस गलती को सुधारना चाहता था। उसने कुछ ऐसा करने की योजना बनाई जिससे उसकी बेटी खुश होती, और उसे यह तसल्ली मिलती कि उसकी मृत्यु व्यर्थ नहीं गई। कि उसकी बेटी ने उसे वज्र को पुनः प्राप्त करने की प्रेरणा दी थी। अगर संभव हो तो, यही सही। इंद्र जानता था कि उसे क्या करना है।

न लालच के लिए। न सत्ता के लिए। न बदला लेने के लिए।

वह नरसिम्हा को मार डालेगा।

अध्याय सत्रह

पार्वती को वह दिन याद आया जब उसे प्यार हुआ था। उसे याद आया कि उस पल उसने कितना सुरक्षित महसूस किया था। उन्होंने उसके लिए एक काम किया था—कुछ म्लेच्छों को सीमावर्ती इलाकों में भेजकर भगा दिया था।

जानवरों की मोटी खाल से बने वस्त्र पहने हुए वे इनाम लेने आए थे। पार्वती, जो एक तरह से उनकी नेता थीं, कमरे में दाखिल हुईं, जहाँ एक दाढ़ी वाला आदमी बैठा था। वह किसी से बात कर रहा था, लेकिन पार्वती के आते ही वह आदमी वहाँ से चला गया।

‘ओह, मुझे लगता है तुमने काम कर दिया है,’ उसने कहा। ‘मैं भैरव हूँ, जिसने तुम्हें यह काम सौंपा था।’

पार्वती ने गंभीर भाव से देखा।

‘मैंने आपसे बात नहीं की। वह ब्राह्मणी थी, है ना?’ उनके चेहरे पर एक मनमोहक मुस्कान थी।

'जी हां। कृपया मुझे सिक्के दे दीजिए ताकि मैं जा सकूं।'

'अच्छा, ज़रा रुको। क्या किसी ने तुम्हें बताया है कि तुम काफी खूबसूरत हो?'

पार्वती शरमा गई। उसे पहले कभी इस नाम से नहीं पुकारा गया था। शायद इसलिए क्योंकि वह अपने समूह के बाहर के लोगों से बहुत कम बात करती थी। 'मैं...उह...मुझे सिक्के चाहिए।'

भैरव ने तीखी निगाहों और मनमोहक मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा। वह मुड़ा और सिक्कों से भरी थैली उठाकर उसकी ओर उछाल दी। 'लो। अब क्या हम बात कर सकते हैं?'

'किस बारे में?'

‘आप। आप स्वयं। आपकी रुचियां। आपका जीवन। क्या आपके पास समय है?’

पार्वती ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। उन्हें किसी पुरुष से फालतू की बातें करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन वह पुरुष इतना आकर्षक था। वैसे भी, घोड़े चर रहे थे और उनके समूह के बाकी लोग अपने हथियार तेज करने में व्यस्त थे। उन्होंने थोड़ी देर रुकने का फैसला किया, लेकिन बहुत देर के लिए नहीं।

'जरूर हम कर सकते हैं।'

और उसके बाद जो हुआ, जैसा कि कहते हैं, वह इतिहास बन गया।

वह इतिहास बन गया।

पार्वती को पेड़ से बांध दिया गया था, उसके हाथ पीछे बंधे हुए थे और वह घुटन महसूस कर रही थी। वह जब से होश में थी, तब से वहीं थी। उसे खूब खिलाया गया था। तरह-तरह का मांस, दही और न जाने क्या-क्या। वैतरली उसे मोटा कर रहे थे। बाकी मातृकाओं के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जा रहा था।

बेशक, वैतरली उन्हें यूँ ही मारकर खा नहीं जाते। पार्वती अक्सर स्वपन को अपने फटे होंठ चाटते हुए देखती थीं। उसे इससे होने वाले भय में आनंद आता था। अगर पार्वती भोजन थूक देतीं, तो वैतरली मातृकाओं में से किसी एक को तब तक यातना देते जब तक वह खा न ले। जब दूसरी

मातृकाएँ खाने से इनकार कर देतीं, तो वे पार्वती के साथ भी ऐसा ही करते थे।

एक दिन वह आया। उसने बस उसे देखा और चला गया। उसे धुंधली सी याद है, लेकिन फिर वह नींद से बेहाल हो गई।

वह लगातार रो रही थी। उसे खुद से, अपनी ज़िंदगी से, और अपने जन्म दिए उस भयानक जीव से नफ़रत थी। उसे इस बात का बहुत गुस्सा था कि जब मौका था तब उसने नरसिम्हा को उसे मारने क्यों नहीं दिया। उसने हमेशा यही माना था कि अच्छाई बुराई पर विजय प्राप्त करेगी, लेकिन अंधका तो बुराई की पराकां थी। उसे मारना ही था।

पार्वती की आंखें भारी हो गईं। वह लगातार रोती रही, उसके आंसू सूखने का नाम नहीं ले रहे थे, और अंत में वह बेहोश हो गई।

पार्वती को जब होश आया, तो उसकी दृष्टि धुंधली थी। उसकी आँखों पर मानो पत्थर रखे हों। उसके हाथ-पैर सुन्न पड़ गए थे, और उसके भीतर जलन हो रही थी। उसे उल्टी करने की तीव्र इच्छा हो रही थी, लेकिन उसके अंदर कुछ भी ऐसा नहीं था जो बाहर निकल सके। ऐसा लग रहा था मानो वह सीधे मृत्यु की ओर बढ़ रही हो।

और फिर उसने उसे दोबारा देखा। एक लाल दुपट्टे ने उसकी आँखों और गंजे सिर को ढक रखा था। वह धमकी भरे अंदाज़ में मुस्कुरा रहा था, और एक काला गाउन उसे पूरी तरह से ढके हुए था।

“मुझे लगा था कि वे तुम्हें मार डालेंगे,” उसने कर्कश आवाज में कहा। “लेकिन मैं गलत था। उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने काफी समय से कुछ खाया नहीं है और अब वे दावत की तैयारी कर रहे हैं। खाना खाने के बाद, उन्हें अपनी शक्तियां वापस मिल जाएंगी, और फिर वे मेरी सेवा करना जारी रखेंगे।”

पार्वती ने उस पर थूका। 'मैं यहां से निकलकर तुम्हें जान से मार डालूंगी।'

‘अगर तुम ऐसा करती हो, माँ, अगर तुम चली जाती हो।’ वह मुस्कुराया। एक ठंडी मुस्कान। ‘मुझे उन्हें तुम्हें मार डालने देना चाहिए, लेकिन मुझे यह अच्छा लगता है।’

‘तुम यहाँ क्यों हो?’ वह गुर्राई। ‘तुम इस जगह पर क्यों आए? तुम्हें यह जगह बिल्कुल पसंद नहीं है। मुझे पता है।’

‘ओह, जी हाँ, मुझे पता है। आप सही कह रहे हैं। लेकिन इसके पीछे एक वजह है। क्या आप जानना नहीं चाहेंगे?’ वह मुस्कुराया। ‘मैंने हाल ही में कुछ सीखा है। एक महत्वपूर्ण बात। मुझे एहसास हुआ कि मुझे और गहराई से छानबीन करनी चाहिए और अधिक जानकारी हासिल करनी चाहिए। शायद मुझे वह मिल जाए जिसकी मुझे तलाश है। वह मेरे पिता की थी।’

‘तुमने अपने पिता की हत्या की।’

‘ओह, वह ढोंग नहीं। मेरे असली पिता—हिरण्यक्ष।’

‘वही तुम्हारा यातनादाता था।’

'खैर, जितना अधिक मैं उनके बारे में सीखता हूं, उतना ही मुझे एहसास होता है कि वह मुझे दुनिया के लिए मजबूत बनाना चाहते थे।'

'शायद हां। लेकिन वह तुमसे नफरत करता था। वह तुमसे और तुम्हारे वंश से घृणा करता था।'

'बिल्कुल सही। पूर्णता के लिए त्याग आवश्यक है।'

'और आपको लगता है कि आप परिपूर्ण हैं?'

'हो सकता है। उसने मेरे लिए कुछ छोड़ा है। मुझे पता है, वह मुझसे प्यार करता था।' वह मुस्कुराया। 'इसीलिए उसने मेरे लिए यह सेना छोड़ी। मुझे इसके बारे में तब तक कुछ पता नहीं था जब तक मुझे उसका संदेश नहीं मिला। संदेश देर से आया, लेकिन सही समय पर आया।'

पार्वती ने ब्राह्मणी, चामुंडी, नरसिम्ही और अन्य लोगों को पेड़ों से बंधे हुए देखा, जो हिलने-डुलने में असमर्थ थे।

'जल्द मिलते हैं।' अंधका मुस्कुराई। 'अच्छा हुआ कि हमारी ये बातचीत हुई। लेकिन दुख की बात ये है कि ये हमारी आखिरी बातचीत है।'

इतना कहकर वह चला गया। मातृकाओं के चारों ओर मशालें चमकने लगीं। पार्वती जानती थी कि उसे कुछ करना होगा। वह कुछ समय से बेहोशी की हालत में थी, लेकिन अंधका के साथ हुई इस बातचीत ने उसके भीतर कुछ जागृत कर दिया था। वैतरली दूर से मंत्रोच्चार कर रही थी, तभी उसने अपनी चूड़ियों को कलाई की ओर खींचना शुरू कर दिया।

मुझे इस जगह से भागना होगा।

उसे पता था कि उसे अपनी चूड़ियाँ तोड़नी होंगी। दाँतेदार किनारे रस्सी काटने में उसकी मदद करेंगे। लेकिन इससे उसकी नसें भी कट सकती थीं। सावधानी से, लेकिन जल्दी से, उसने चूड़ियों को पेड़ के तने पर पटक दिया। उसने चूड़ियों के टुकड़े उठाए और मुस्कुराई। कुछ टुकड़ों से उसे दर्द हो रहा था, लेकिन उसे पता था कि उसे गंभीर चोट नहीं आई है। एक टूटी हुई चूड़ी के एक किनारे से उसने रस्सी काटना शुरू किया।

फिर बारिश शुरू हो गई। पार्वती को कुछ साफ दिखाई नहीं दे रहा था। वह रोती हुई रस्सी काटती रही, जब तक कि उसे अपने हाथों पर बंधी रस्सी ढीली होती महसूस नहीं हुई। मुस्कुराते हुए उसने अपना शरीर आगे की ओर झटका। उसे पेट में एक तेज चुभन महसूस हुई क्योंकि एक शाखा उसके शरीर में धंस गई थी, लेकिन उसने उसे खींचकर निकाल दिया और अपने पैरों की रस्सी खोलने लगी।

रस्सियाँ टूटते ही वह ज़मीन पर गिर पड़ी, उसकी साँसें थम सी गईं और उंगलियाँ कीचड़ में धंस गईं। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह आज़ाद हो गई है। जीत और उम्मीद से भरी हुई, उसने बाकी मातृकाओं की रस्सियाँ खोलना शुरू किया और उन्हें जगाने के लिए थप्पड़ मारे।

चामुंडी जागते ही लगभग चीख पड़ी, लेकिन पार्वती ने उसे चुप करा दिया। जल्द ही, सभी के बंधन खुल जाने के बाद, मातृकाएँ चलने लगीं।

हमें सावधान रहने की जरूरत है।

उनमें से अधिकतर सुस्त थे, मुश्किल से चल पा रहे थे। 'मुझे नहीं पता कि मुझे कैसा महसूस हो रहा है,' ब्राह्मणी ने कहा।

'हमें अंधक का पीछा करना होगा।' पार्वती ने समूह को वैतरली से दूर ले जाते हुए कहा, जब तक कि...

एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी। मातृकाएँ मुड़कर देखने लगीं। वैतरली ने उन्हें देख लिया था।

भागने का समय आ गया था।

अध्याय अठारह

गरुड़ को सोनपात्रा की याद आ रही थी।

कुछ समय से अस्वस्थ होने के कारण वह अपने कमरे में ही सीमित था। उसका पेट ठीक नहीं था, शरीर बुखार से तप रहा था और उसकी आँखें लगातार झुकी हुई थीं। लेकिन सबसे बुरी बात यह थी कि सोनापात्रा का कहीं कोई अता-पता नहीं था।

गरुड़ ने अपने सैनिकों को उसे बुलाने, उसे आमंत्रित करने और यदि संभव हो तो उसे ढूंढने का आदेश दिया। लेकिन वह गायब हो चुकी थी। वह कहीं नहीं थी। ऐसा लग रहा था मानो उसका कोई अस्तित्व ही न हो।

शायद आप पर हमला हुआ हो...

उसे अपराधबोध हो रहा था। वाशकल के अतिक्रमण के बाद सब कुछ बिगड़ गया था। उसे पता होना चाहिए था कि वह आदमी खतरनाक था। अब तो आयुर्वेद भी उसका इलाज नहीं कर पा रहा था। आँसू पोंछते हुए वह पेट पकड़कर बिस्तर पर लेट गया और जल्द ही सब ठीक होने की उम्मीद करने लगा।

उसने एक पत्र लिखा। कुछ बातें थीं जो नरसिम्हा को जाननी ज़रूरी थीं, लेकिन गरुड़ के पास लिखने की भी हिम्मत नहीं थी। और क्योंकि यह जानकारी केवल नरसिम्हा के लिए थी, इसलिए वह अपने बदले पत्र लिखवाने के लिए लेखक को बुलाना नहीं चाहता था।

अंततः, गरुड़ ने स्वयं पत्र लिखा। वे इस प्रकार की जानकारी व्यक्तिगत रूप से साझा करने के महत्व को समझते थे, लेकिन पत्र लिखना दूसरा सबसे अच्छा विकल्प था। पत्र लिखने के बाद, उन्होंने उसे एक तरफ रख दिया।

एक सिपाही घबराया हुआ अंदर आया। वह एक सुपर्न था। 'आप कैसे हैं, सरदार?'

गरुड़ को पसीना आ रहा था। 'मुझे मदद चाहिए। लेकिन उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है कि तुम इसे नारा को भेज दो। ध्यान रखना कि यह सिर्फ़ उसी तक पहुँचे, किसी और तक नहीं।'

सिपाही ने सिर हिलाया। 'लेकिन उसके गार्ड हर चीज की जांच करते हैं।'

'उसे बता देना कि यह गरुड़ की ओर से है,' उसने कहा और बिस्तर पर वापस लेट गया, अपरिहार्य घटना की प्रतीक्षा करते हुए।

तभी उसे वह आवाज सुनाई दी। वह मनहूस आवाज। 'अगर यह आवाज मेरी तरफ से आई है, तो कोई रोक-टोक नहीं होगी।'

गरुड़ और सिपाही ने मुड़कर देखा तो वह कोई और नहीं बल्कि नारंगी बालों वाला वाशकल था, जिसकी कांस्य रंग की आंखें और मोहक मुस्कान थी, और उसने एक रंगीन गाउन के ऊपर एक लंबी शॉल लपेटी हुई थी।

'ओह, मुझे माफ करना, लेकिन उन्होंने मुझे अंदर आने दिया। उन्होंने कहा कि आप बीमार थे।'

'भगवान वाशकल, आप कैसे हैं?' सिपाही ने प्रणाम किया।

'काफी बेहतर। लेकिन लगता है आपका नेता काफी बीमार है।' उसके चेहरे पर शरारती मुस्कान थी। 'मुझे लगता है कोई सैनिक आपको बुला रहा था। मैं चिट्ठी ले जाता हूँ।'

गरुड़ विरोध करना चाहता था, लेकिन वाशकल ने सैनिक के हाथ से उसे छीन लिया और कमरे से निकलते समय दरवाज़ा बंद कर दिया। गरुड़ बोलना चाहता था, लेकिन वह असहनीय पीड़ा में था।

'अच्छा, तुम तो बड़े शरारती लड़के रहे हो।' वाशकल मुस्कुराया और पत्र खोला। उसने पत्र पढ़ा और कहा, 'अरे, तो तुम्हें पता चल गया।'

'तुम मर चुके हो। मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम मर जाओ।'

वाशकल मुस्कुराते हुए आगे झुकी। 'मुझे लगता है कि जहर आपको दिया गया है और आप मरने वाले हैं, मुझे नहीं।'

ज़हर?

धृति ने पूछा, 'क्या हमें यकीन है कि हम सही काम कर रहे हैं?'

प्रहलाद हुड पहने हुए भीड़ को धकेलते हुए आगे बढ़ रहा था। धृति भी आगे बढ़ने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसके इरादे में प्रहलाद जैसी स्पष्टता नहीं थी।

'हां,' प्रहलाद ने कहा।

वे शहर के द्वार के पास थे। वहां सैनिक और असुर मौजूद थे, जो बाहर जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को देख रहे थे और उनकी पहचान की जांच कर रहे थे।

'लेकिन क्यों?' धृति ने पूछा।

'क्योंकि अगर मैं यहाँ रुका तो मुझ पर राजद्रोह का मुकदमा चलेगा।' प्रहलाद ने चिंता से अपने होंठ चाटे। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, कहाँ जाए, क्योंकि पहरेदार उसे घेरकर घूरने लगे थे। 'मुझे अभी पता चला है कि वह मुझे बुलाना चाहता है, और मैं यह जोखिम नहीं उठा सकता। मैंने उसके साथ विश्वासघात किया है और उसकी मानसिक स्थिति को देखते हुए, वह मुझे जान से मारने की कोशिश करेगा।'

धृति ने कहा, 'मुझे लगता है तुम इस बारे में ज्यादा सोच रही हो। मुझे यकीन है कि वह समझ जाएगा।'

'तुमने उसे नंगे पंजों से लड़की की हत्या करते नहीं देखा। मैंने देखा है। और मैं जानता हूँ कि वह अब पहले जैसा इंसान नहीं रहा।'

जैसे ही प्रहलाद आगे बढ़ा, उसकी नजर सैनिकों पर पड़ी। उनमें से एक सैनिक लगभग तुरंत ही उसके सामने खड़ा हो गया।

'मेरे स्वामी, हम आपसे हमारे साथ आने का अनुरोध करते हैं।'

प्रहलाद रुक गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह गार्ड को मुक्का मारना चाहता था, शायद उसे चाकू भी मार देना चाहता था, लेकिन इसका मतलब हत्या के मुकदमे का सामना करना होता, जिसका मतलब फांसी की सजा होता। धृति ने उसके हाथ पकड़ लिए और कसकर थाम लिए।

मुझे जाने दो।

'मुझे लगता है हम ऐसा नहीं कर सकते,' गार्ड ने कहा। उसने प्रहलाद का हाथ पकड़ा और उसे

खींचने लगा।

प्रहलाद ने पहरेदार को धक्का देकर दूर कर दिया। वह धृति की ओर मुड़ा और बाहर निकलने के लिए तैयार था, तभी उसने देखा कि और भी सैनिक उसके चारों ओर जमा हो रहे हैं। वह जानता था कि उसके पास आज्ञा मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। उसकी तलवार उसके पास थी, और वह जानता था कि वह उसका इस्तेमाल कर सकता है।

लेकिन इसका उद्देश्य क्या था?

'क्या मैं आपके बगल में बैठ सकता हूँ, मेरे मित्र?' वाशकल ने पूछा। हालाँकि उसके शब्द अनुमति माँगते हुए प्रतीत हो रहे थे, वास्तव में ऐसा नहीं था। वह मुस्कुराते हुए बैठ गया।

'तुमने मुझे जहर दिया,' गरुड़ ने कहा।

'जी हां, बिल्कुल। मैंने किया था।' वाशकल ने कहा। 'ओह, यह एक धीमा ज़हर है। सही मात्रा में लेने पर आप दर्द से तड़पने लगते हैं। यह आपको खुद से नफरत करने पर मजबूर कर सकता है। और फिर आपको अपने अंदर एक जलन महसूस होती है, जो आपको उस बिंदु तक ले जाती है जहां आपको लगता है कि जीने से बेहतर खुद को मार डालना है।'

तुम इससे बच नहीं पाओगे।

'किस बात से बच निकलना?'

आप जो भी कर रहे हों, उसके साथ।

'अरे, आपको यह समझना होगा, आपको इस बात का पूरा यकीन होना चाहिए कि आप क्या बोल रहे हैं। आपको बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है कि मैं क्या कर रहा हूँ।'

'नारा होशियार है। वह तुम्हें अच्छी तरह समझता है।'

लेकिन वह मुझसे छुटकारा नहीं पा सकता। मैं उसे जीत दिलाता हूँ। मैं उसके जीवन में एक अनिवार्य बुराई की तरह हूँ, जो तुम या प्रहलाद कभी नहीं बन सकते। तुम दोनों ने नैतिकता का मार्ग अपनाया, जबकि मैंने अनैतिक मार्ग चुना।

'कैसे... कैसे'—गरुड़ खांसते हुए बोला—'तुमने मुझे जहर कैसे दिया?'

'वह शराब। लेकिन मुझे कहना होगा कि वह वही शराब नहीं थी जो नरसिम्हा ने पी थी। उन्होंने भी एक प्रकार का विष पिया था, जो सहज प्रवृत्ति को उजागर करता है। यह आपको तर्कशक्ति को त्यागने पर मजबूर कर देता है।'

'इसीलिए'—गरुड़ कांप उठा और सांस लेते हुए बोला—'इसीलिए वह यह सब कर रहा है।'

'छी, छी!' वाशकल ने सिर हिलाया। 'वह यह सब अपनी मर्जी से कर रहा है। यह स्वाभाविक है, याद है ना? इससे दिल की दहलीजें जाग उठती हैं। मैं तो बस एक जरिया हूँ, एक ऐसा जरिया जिसे वह इस्तेमाल करना चाहता है। इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।'

मैं पता लगाऊंगा। मैं पता लगाऊंगा कि तुम ऐसा क्यों कर रहे हो। और फिर मैं तुम्हें मार डालूंगा।

वाशकल मुस्कुराया। 'मैं अपने राजा की मदद कर रहा हूँ। तुम क्या कर रहे हो, सिवाय बिलकुल बेकार होने के?'

प्रहलाद को एक कमरे में धकेल दिया गया, एक लंबा कक्ष जिसमें वह अक्सर आता-जाता रहता था। यह राजा का कमरा था, मुख्य हॉल जिसमें ऊंचे संगमरमर के खंभे थे, संगमरमर के फर्श पर लाल कालीन बिछा था और एक चबूतरा था जिस पर लोहे का सिंहासन रखा था। उसने परछाई में किसी को देखा। सिर झुका हुआ था, लेकिन अयाल पहचान में आ रहा था। अयाल पर, जहाँ शेर की आँखें थीं—वह चमक रहा था।

वह व्यक्ति नंगे बदन था, लेकिन उसने सोने की धोती पहन रखी थी। आसपास कोई पहरेदार या सैनिक नहीं थे।

प्रहलाद को अपनी जान का डर सता रहा था। वह जानता था कि वह नरसिम्हा जितना बलवान नहीं था; वह कभी हो ही नहीं सकता था। लेकिन वह दृढ़ कदमों से आगे बढ़ा। भगवान विष्णु हमेशा की तरह उसकी रक्षा करेंगे, लेकिन नरसिम्हा तो भगवान विष्णु का अवतार थे...

अब उसे कौन बचाएगा? क्या सर्वोच्च सत्ता के अलावा कोई और भी है?

'मुझे यहाँ बुलाया गया था।' प्रहलाद ने एक तथ्य बताया।

'क्योंकि तुम भाग रहे थे,' नरसिम्हा ने कहा। 'और मुझे आश्चर्य है कि क्यों?' उसकी आवाज़ धीमी थी, लगभग धमकी भरी थी लेकिन उसमें एक भारी, कर्कश गड़गड़ाहट थी।

'मैं कुछ निजी काम से जा रहा था। क्या मैं ऐसा नहीं कर सकता?'

क्या उस मामले का मेरे राजा पद से हटाए जाने से कोई संबंध है?

प्रहलाद को इसकी उम्मीद थी। 'मुझे लगता है कि आपको सूचित कर दिया गया है।'

'बेशक मैं।'

मेरे पास इसके कारण थे।

'मुझे यकीन है कि तुम गए थे।' नारा परछाई से बाहर आया, फिर भी उसका शेर जैसा चेहरा साफ दिखाई दे रहा था क्योंकि वह प्रहलाद के बगल में खड़ा था। 'हिरण्यपुर गए हुए तुम्हें कितना समय हो गया है?'

प्रहलाद की आंखें सिकुड़ गईं। 'काफी समय हो गया है। मैं आखिरी बार तब गया था जब मैं बच्चा था।'

'अच्छा। तो शायद तुम्हें रास्ता याद आ जाए,' नारा ने कहा। थोड़ी देर रुककर उसने आगे कहा, 'मैं तुमसे नफरत नहीं करता, बच्चे। बल्कि, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मुझे पता है तुमने जो कुछ भी किया, वह दिल की मासूमियत से किया। तुम्हारा इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का नहीं था।'

नारा ने प्रहलाद के कंधे पर हाथ रखा और उसे हल्के से दबाया, जिससे प्रहलाद की धड़कन धीमी होने लगी। "मैं चाहता हूँ कि तुम हिरण्यपुर जाओ। दुर्भाग्य से, वहाँ कुछ गड़बड़ी हो गई है। दानवों की गुरु मैताली को जाने में बहुत देर हो रही है। अब मुझे समझ नहीं आ रहा कि ऐसा क्यों हो रहा है, क्योंकि मेरे आदमी पहले से ही वहाँ हैं और दानवों को पाताल द्वीप समूह के लिए रवाना कराने की कोशिश कर रहे हैं। अगर तुम वहाँ जाकर उन्हें प्रेरित करोगे, तो इससे मदद मिलेगी।"

'मुझे नहीं पता कि यह कोई कर्तव्य भी है या नहीं।' प्रहलाद समझ गया कि नारा की मांग अनावश्यक और बेतुकी थी। लेकिन वह नारा की इस कोशिश को समझ गया। प्रहलाद को

हिरण्यपुर भेजने से यह सुनिश्चित हो जाता कि वह दूर तो रहेगा, लेकिन उस पर नज़र रखी जाएगी ताकि वह कोई संदिग्ध काम न करे।

'हाँ, यह एक महत्वपूर्ण मामला है।'

प्रहलाद ने सिर हिलाया और थोड़ा झुककर अभिवादन किया। 'आपकी इच्छा ही मेरा आदेश है।'

'अच्छा।'

प्रहलाद अभी जाने के लिए मुड़ा ही था कि उसने नारा की आवाज़ सुनी। 'एक और बात, प्रहलाद।'

'जी?' प्रहलाद मुड़ा नहीं। वह जानता था कि कुछ अप्रिय होने वाला है।

'जो तुमने किया, उसे दोबारा करने की कोशिश कभी मत करना। कभी मेरे खिलाफ मत जाना।'

यह कोई धमकी नहीं थी, लेकिन प्रहलाद को यह धमकी जैसी ही लगी।

'तो बस यही है। मैं लगभग रास्ते से हट गया हूँ। आप जो भी कर रहे हैं, उसे जारी रख सकते हैं,' गरुड़ा ने कहा।

वाशकल ने होंठ सिकोड़ते हुए कहा, 'मैं तुम्हें एक-दो दिन का समय देता हूँ। मुझे पूरा यकीन है कि इसका अंत इसी तरह होना था।'

गरुड़ ने वाशकल का कॉलर पकड़ लिया। 'तुम इससे बच नहीं पाओगे। मेरा श्राप तुम्हें हमेशा सताएगा। मैंने सोनापात्रा को तुम्हारे किए के बारे में बता दिया है। वह सुनिश्चित करेगी कि सबको पता चले।'

'तुमने उस लड़की को बता दिया जिसे मैंने तुम्हारे पास भेजा था? ओह डार्लिंग, तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम किससे दोस्ती कर रही हो!'

'नहीं...' गरुड़ की पुतलियाँ फैल गईं। यह असंभव था। 'मैं पहले विष से बच गया था, मैं सोमा ले सकता हूँ...'

'यहाँ सोमा नहीं है... यह आपको नहीं मिल सकता।'

गरुड़ ने घंटी ढूंढकर उसे बजाने की कोशिश की, लेकिन वाशकल ने उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया।

'गरुड़, सड़ कर कष्ट भोगो।' वाशकल मुस्कुराया।

गरुड़ ने उसे कमरे से निकलते हुए देखा। आखिरी बात जो उसने कही वह थी: 'नरसिम्हा को पता चल जाएगा। उसे पता चल जाएगा कि तुम कौन हो।'

'मैं कौन हूँ?' वाशकल ने पूछा।

गरुड़ ने अपनी आँखें बंद कर लीं, लेकिन इससे पहले उसने हिरण्यकश्यप द्वारा वाशकल को लिखे पत्र में पढ़ी गई आखिरी बात बुदबुदाई: 'प्रहलाद का भाई, कश्यपुरी के सिंहासन का उत्तराधिकारी।'

अध्याय उन्नीस

इंद्र ने यात्रा की तैयारी की।

अब, कुछ लोग कह सकते हैं कि यह एक मूर्खतापूर्ण प्रयास था, जबकि अन्य इसे सही कार्य मान सकते हैं। इंद्र को स्वयं इसका कोई अंदाजा नहीं था; उन्हें अब इसकी परवाह भी नहीं थी। वे जानते थे कि हमेशा कुछ लोग विरोध करेंगे, और वे लोग थे...

वायु बरामदे में खड़े होकर तैयार हो रहे काफिलों को देख रहे थे। घोड़ों को चारा खिलाया जा चुका था, भोजन का भंडार जमा हो चुका था और हाथियों को बुला लिया गया था। बंदरगाहों को सूचित कर दिया गया था और जहाज तैयार थे। भगवान इंद्र अपनी अधिकांश सेना के साथ प्रस्थान कर रहे थे, जिससे अमरावती नरसिम्हा के आक्रमण के लिए असुरक्षित हो गया था।

बृहस्पति वायु के पास आए। 'तुम परेशान लग रहे हो।'

'वह क्या कर रहा है?'

अपनी बेटी की इच्छाओं को पूरा करते हुए।

'यह सब तुमने किया है, बूढ़े!' वायु कर्कश स्वर में बोला। 'तुम्हें पता होना चाहिए कि यह किसी मूर्खतापूर्ण मिशन पर जाने का समय नहीं है। वह अपने देश और अपनी प्रजा को धोखा दे रहा है। हम युद्ध में हैं, लेकिन हम एक मृत ऋषि के अवशेष लाने जा रहे हैं! क्या मैं अकेला हूँ जिसे यह सब हास्यास्पद लग रहा है? मेरा भाई हमें सीधे विनाश की ओर ले जा रहा है।'

बृहस्पति ने सिर हिलाया। 'तुम उसे क्यों नहीं बताते? जहाँ तक मुझे पता है, हम उसके साथ ही जा रहे हैं।'

'खैर, वो राजा है, इसलिए हमें उसकी आज्ञा माननी ही पड़ेगी।' वायु गुर्राया, उसे इस बात का अफसोस था कि वो राजा नहीं था। 'समुद्र से मुझे घिन आती है। वरुण बचपन में हमेशा मेरा मजाक उड़ाता था।' उसने अपना सिर हिलाया।

'इंद्र को तुम्हारी जरूरत है। कभी-कभी हवाएं अनुकूल नहीं होतीं। तुम्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि हवाएं उन्हें वहां तेजी से पहुंचने में मदद करें।'

'हाँ, मैं उसका मार्गदर्शक हूँ। मैं वही बन गया हूँ।' वायु ने कंधे उचकाए और अपना सारा खाना, कपड़े और सामान पैक करने के लिए मुड़ गया। 'क्या हमें पता भी है कि हम कहाँ जा रहे हैं? ये हड्डियाँ कहाँ हैं?'

वास्तव में, इंद्र को पता था। उन्होंने बृहस्पति और वायु को इसलिए नहीं बताया था क्योंकि उन्हें स्थान के बारे में जिस तरह से पता चला था वह चौंकाने वाला था। वे नहीं चाहते थे कि वे चिंतित हों।

बृहस्पति से बातचीत के बाद, इंद्र अपनी बेटी के कमरे में उसकी किताबें और पत्रिकाएँ ढूँढ़ने में जुट गए। पलंग बदलते-बदलते, अलमारियाँ खंगालते और यहाँ तक कि दीवारें तोड़ते-तोड़ते वे थक चुके थे। देखते ही देखते कमरा अस्त-व्यस्त हो गया और इंद्र एक कोने में खड़े हाँफ रहे थे। जैसे ही वे लेटे, उन्हें कदमों की आहट सुनाई दी।

‘हमारी बेटी के कमरे में तुमने ये क्या कर दिया?’ साची ने पूछा।

इंद्र ने कहा, 'मैं सत्य की खोज कर रही हूँ। तुम नहीं समझ पाओगे।'

इंद्र के ऊपर अपना चेहरा झुकाए हुए साची ने कहा, 'तुम्हें क्या लगता है कि मैं नहीं समझूँगी? मैं तुम्हें इस तरह हारते हुए नहीं देख सकती।'

मैं वही कर रहा हूँ जो हमारी बेटी के लिए सही है।

‘और मैं नहीं? आपको एक राज्य की रक्षा करनी है। आप यूं ही... आप यूं ही वह नहीं बन सकते जो आप बन रहे हैं।’

‘मुझे पता है। लेकिन अगर मुझे हड्डियाँ मिल गईं, तो मैं अपनी शक्तियाँ वापस पा सकूँगा। अपनी शक्तियों के बिना मैं एक कमज़ोर बूढ़ा आदमी हूँ और नरसिम्हा... खैर, वह मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली है। मुझे ढूँढ़ना होगा...’ इंद्र रुक गए, उनका गला भर आया। ‘मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैंने अपनी प्यारी सी बच्ची को असुरों का ध्यान भटकाने के लिए उनके पास जाने दिया। वह... वह बहुत डर गई होगी। हे भगवान, मैं कितना बीमार और विकृत पिता हूँ!’

‘वह अपनी मर्जी से गई थी। वह तुम्हारी मदद करना चाहती थी, और वह जवान नहीं थी। वह तुमसे कहीं ज्यादा परिपक्व थी, जितना तुम कभी हो भी नहीं सकते।’

इंद्र अब भी ज़मीन पर पड़ा हुआ था, उठने में असमर्थ। उसे भारीपन महसूस हो रहा था, मानो उसकी बेटी परलोक से निराशा भरी निगाहों से उसे घूर रही हो। ‘मैं कुछ ऐसा ढूंढ रहा हूँ जो उसने दादिची की हड्डियों के बारे में लिखा था। यह असंभव है...’ इंद्र अचानक रुक गया।

'क्या हुआ?'

इंद्र की निगाहें उस डायरी पर टिकी थीं जो उन्हें अभी-अभी बिस्तर के नीचे मिली थी। उन्होंने उसे बाहर निकाला और जल्दी-जल्दी पन्ने पलटने लगे। उन्हें अपनी बेटी के असुरों के ठिकाने पर बिताए आखिरी दिनों की एक प्रविष्टि मिली, जिसमें उसने ऋषि को लाड़-प्यार करने के लिए उनके सिर पर नारियल का पत्ता झुलाया था।

मुझे उस ऋषि का नाम नहीं पता था, और न ही मुझे इसकी परवाह थी। लेकिन उनके चेहरे पर जो शांति थी, वह प्रशंसनीय थी। वे एक सुंदर पुरुष थे, एक पवित्र पुरुष। वे मेरी देखभाल करते थे और मुझे उपहार देते थे। वे मेरे साथ एक प्रेमिका जैसा व्यवहार करते थे, और मुझे समझ नहीं आता था कि क्यों। मैं उनके लिए बहुत छोटी थी, लेकिन उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। वे मुझे कभी भी अनुचित तरीके से स्पर्श नहीं करते थे, और हमेशा मेरा सम्मान करते थे। वास्तव में, सभी असुर ऐसा ही करते थे।

मैं यहाँ नौकरानी बनकर आई थी, लेकिन उन्होंने मुझे अपने परिवार के सदस्य की तरह माना। मुझे समझ नहीं आता क्यों। क्या मेरे पिता ने मुझे इन दरिंदों के बारे में बताकर गलती की थी? क्योंकि वे मुझे बिल्कुल भी ऐसे नहीं लगे।

लेकिन वह ऋषि बुद्धिमान थे और उन्होंने दूर-दूर तक यात्रा की थी। मुझे पता था कि उनके पास उस प्रश्न का उत्तर होगा जिसे मैं घर वालों से पूछने से डर रहा था।

मैंने पूछा, 'देवों को उनकी शक्तियां कहां से मिलती हैं?'

ऋषि ने मेरी ओर देखा और मुस्कुराए। 'अरे, तुम तो बड़े जिज्ञासु हो!'

'मुझे हमेशा से यह जिज्ञासा रही है, महाराज, और मुझे आशा है कि मेरी यह जिज्ञासा कोई समस्या नहीं है।'

'बिल्कुल नहीं। मुझे जिज्ञासु लोग बहुत पसंद हैं।' ऋषि ने आगे कहा, 'देवों और असुरों के पिता कश्यप ने देवताओं को शक्ति प्रदान करने का निश्चय किया, ताकि वे असुरों पर प्रभुत्व प्राप्त कर सकें। वे दादिची के पास गए, जो सर्वकालिक ज्ञानवान ऋषियों में से एक थे। कश्यप ने वहाँ यज्ञ किया और अंततः सच्ची शक्ति प्राप्त कर ली, जिसे उन्होंने देवताओं को प्रदान किया।'

'मैं समझ गया। लेकिन ट्वास्त्र के बारे में क्या?'

'ओह, यह एक और मिथक है। कुछ लोग कहते हैं कि त्वस्त्र ने पृथ्वी के तत्वों से ये शक्तियां उत्पन्न की थीं ताकि वे कश्यप को प्रदान कर सकें।'

लेकिन इनमें से कौन सा संस्करण सही है?

'दादिचि का कथन। आपको क्या लगता है कि त्वस्त्र को तत्व कहाँ से प्राप्त हुए? ज़ाहिर है, दादिची की अस्थियों से। ऋषि ने स्वयं को बलिदान कर दिया था ताकि त्वस्त्र उन तत्वों का उपयोग कर कश्यप को वह शक्ति प्रदान कर सकें जिसकी उन्हें इच्छा थी। लेकिन, बलिदान के लिए, कश्यप को वह यज्ञ करना पड़ा जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था।'

'अहा, दिलचस्प। क्या सभी हड्डियों का इस्तेमाल हो चुका है?'

'कुछ लोग कहते हैं कि उन्हें मिल गई हैं। कुछ अन्य कहते हैं कि अभी भी कुछ हड्डियाँ बची हैं, जिनका उपयोग करने से देवताओं को उनकी कल्पना से भी अधिक शक्ति प्राप्त हो सकती है। असुरों ने इन हड्डियों को खोजने का प्रयास किया है। खैर, मुझे लगता है कि मुझे ईमानदार रहना चाहिए।' ऋषि ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैं जानता हूँ कि वे विशाल, गहरे सागर में हैं।'

मैंने ध्यान से सुना क्योंकि ये कुछ बहुत महत्वपूर्ण बातें थीं, जिनका मैंने नीचे वर्णन किया है। मैं उस स्थान के बारे में पूरी तरह आश्वस्त था जिसका संकेत ऋषि दे रहे थे। लेकिन मुझे यह पक्का नहीं पता था कि वह कितना सही था। मैं जानता था कि मुझे बृहस्पति से बात करनी होगी और उन्हें अपनी बात बतानी होगी, भले ही इसे मूर्खतापूर्ण समझा जाए। ऋषि एक मिथक की बात कर रहे थे, एक ऐसा मिथक जिसमें उन्हें हड्डियाँ नहीं मिली थीं। दरअसल, कहा जाता है कि उनकी मुलाकात एक विशाल और डरावने सर्प से हुई थी। असुरों ने कई जहाज तोड़ दिए और उनका अधिकांश सामान नष्ट कर दिया। कई सैनिकों को खोने के बाद वे वापस लौटे। ऋषि ने इसे 'झूठी उम्मीद' कहा था। शायद हड्डियाँ सर्प के पेट में हों।

लेकिन ऋषि गलत भी हो सकते हैं।

हो सकता है कि हड्डियाँ वहाँ कभी थीं ही न। वैसे भी, ऐसी यात्रा बहुत जोखिम भरी लगती है, और मैं पिताजी को विचलित नहीं करना चाहता। शायद मैं उन्हें किसी दिन बता दूँ।

आखिरकार, मेरे पास उसे इस बारे में बताने के लिए दुनिया का सारा समय है।

आखिरी पंक्ति ने इंद्र को गहरा आघात पहुँचाया। उन्हें रोने का मन हुआ। उनकी बेटी की डायरी में इस बात का कोई ज़िक्र नहीं था कि वहाँ साँप क्यों था। शायद दादिची को बलि के रूप में किसी साँप ने निगल लिया था। लेकिन इंद्र के हाथों में एक नक्शा था। वह बेतरतीब ढंग से बना हुआ था और उसमें अमरावती के पूर्व का इलाका, यानी समुद्र का इलाका दिखाया गया था। इंद्र मुस्कुराए।

'मुझे मिल गया! मुझे मिल गया!' वह चिल्लाया और उछल पड़ा, उसकी हड्डियाँ दर्द कर रही थीं। उसने अपनी पत्नी को गले लगा लिया, कुछ देर पहले कहे उसके तीखे शब्दों को अनसुना करते हुए। 'मुझे मिल गया!'

'क्या हो रहा है? आपको क्या पता चला है?'

उन्होंने उसके गालों को सहलाते हुए कहा, 'हम एक यात्रा पर जा रहे हैं। एक ऐसी यात्रा जिस पर हमारी बेटी चाहती थी कि हम जाएं।'

बंदरगाह की ओर जाते समय, इंद्र उस दिन के बारे में सोच रहा था जब उसे वह डायरी मिली थी।

काफी समय बीत चुका था। कई दिन बीत गए थे और बैलों और गायों को ले जाते हुए जुलूस घास के मैदानों और बंजर भूमि से गुजर रहा था। हजारों सैनिक उसके साथ चल रहे थे। इंद्र अपनी ऊब और थकान के अनुसार कभी हाथी, कभी घोड़ी और कभी कारवां में सवार होते थे।

बंदरगाह अभी काफी दूर था। जुलूस का सामना पहले ही कुछ लुटेरों और डाकुओं से हो चुका था, जिन्हें सजा सुनाई जा चुकी थी।

इंद्र ने इस महत्वपूर्ण यात्रा के उपलक्ष्य में एक भोज का आयोजन किया।

तुरही और बांसुरी की गूंज के बीच उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा, "मेरे प्रिय मित्रों, मेरा समर्थन करने के लिए धन्यवाद। मेरा विश्वास कीजिए, यह यात्रा हम सभी के जीवन में एक मील का पत्थर साबित होगी। हम दादिची के पौराणिक अस्थि-कलशों को खोजने जा रहे हैं, वही ऋषि जिनके सामने मेरे पिता ने प्रणाम किया था। यह मेरे लिए नहीं, बल्कि मेरे पिता के लिए कीजिए। उन्हीं की कृपा से हम सब यहां मौजूद हैं।"

उसने वायु, सची और बृहस्पति के चिंतित चेहरों को देखा, जो चुप रहे। वह मुस्कुराया और उन्हें अनदेखा करने का फैसला किया। जब वे मुझे फिर से सर्वशक्तिमान देखेंगे, तब वे जान जाएंगे... वे जान जाएंगे कि मैं सही था।

दावत के दौरान, इंद्र अपनी बेटी की डायरी पढ़ने के लिए एकांत में चले गए। उसे पढ़ते हुए उन्हें ऐसा लगा मानो उनकी बेटी की आवाज़ उनके मन में गूंज रही हो। उन्होंने देखा कि उनके तम्बू की बत्तियाँ मंद कर दी गई हैं। उन्हें आश्चर्य हुआ कि ऐसा क्यों हुआ और वे अंदर गए—वहाँ एक आदमी और एक रस्सी थी…

एक साये ने उसका गला पकड़ लिया और उसे नीचे गिरा दिया।

इंद्र का दम घुटने लगा। वह सदमे में था, लेकिन उसने संघर्ष किया और किसी तरह उठ खड़ा हुआ, और उस परछाई को ज़मीन पर गिरा दिया। उसने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि उसके अपने ही रक्षक ने उस पर हमला कर दिया था।

उसकी यह मजाल …

लेकिन सिपाही ने हार नहीं मानी। उसने इंद्र के तलवे पर वार किया, जिससे वह दर्द से घुटनों के बल गिर पड़ा, और फिर उसके चेहरे पर ज़ोरदार घूंसा मारा। इंद्र गिर पड़ा और उसके मुंह से खून बहने लगा।

'मुझे तो तुम्हें चाकू मार देना चाहिए था, बूढ़े!' सिपाही ने चाकू नीचे किया और इंद्र के दिल पर

निशाना साधा। लेकिन इंद्र ने डायरी को अपने सामने खींच लिया। चाकू डायरी को भेद गया।

इंद्र ने पत्रिका को सिपाही की ओर धकेलते हुए उसे नीचे गिरा दिया। उसने चाकू वापस खींच लिया और देखा कि उसका हत्यारा खून से लथपथ है। उसने सिपाही का गला पकड़ लिया और चाकू उसकी गर्दन के पास ले आया।

'तुम्हें किसने भेजा?'

'आप किसी पर भरोसा नहीं कर सकते। आपके सबसे करीबी लोग ही आपको मरा हुआ देखना चाहते हैं।'

इंद्र गुर्राया। 'मुझसे पहेलियों में बात मत करो। मुझे स्पष्ट-स्पष्ट बताओ। वह कौन है?'

'अगर मैंने कुछ भी कहा तो मेरे परिवार को मार डाला जाएगा,' सैनिक रोते हुए बोला।

'मुझे बताओ, वरना तुम्हें यातना दी जाएगी।'

'मेरे बेटे को एक हजार सिक्के देने का वादा किया गया है। मुझे माफ करना, बूढ़े आदमी,' सिपाही ने कहा और फिर अपनी गर्दन को चाकू के पास लाकर उस पर वार कर दिया। कुछ ही पलों में उसकी मौत हो गई।

इंद्र भयभीत होकर पीछे हट गई।

और धोखा दिया गया।

मेरे सबसे करीब...

मैं किसी पर भरोसा नहीं कर सकता।

अध्याय बीस

पार्वती यह भूल गई थी कि वह कितनी देर से दौड़ रही थी।

आधी रात का घना कोहरा था, लेकिन वैतरली अब भी उसका पीछा कर रही थीं। वह टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होते हुए और कूदते-फांदते हुए खाड़ियों और खड़ी चट्टानों को पार कर चुकी थी, बर्फ उसके शरीर में समा रही थी। वह देख सकती थी कि ब्राह्मणी, चामुंडी और नरसिम्ही उसके पीछे-पीछे आ रही थीं।

'उन्होंने हमारे हथियार छीन लिए हैं!' ब्राह्मणी ने हैरानी से कहा।

पार्वती ने अपना सिर घुमाया। मशालें अभी भी जल रही थीं। वह उनकी गुनगुनाहट और मंत्रोच्चार सुन सकती थी। वैतरली पत्थर और लाठियों से उनका पीछा कर रहे थे...

'वे हमारे ही हथियारों का इस्तेमाल हमारे खिलाफ कर रहे हैं,' उसने हांफते हुए कहा। 'हमें उनसे छुटकारा पाना होगा। अगर जरूरत पड़े तो उन्हें मार डालो।'

'वे सैकड़ों की संख्या में हैं,' ब्राह्मणी ने कहा। 'आप सैकड़ों को कैसे मारने की योजना बना रहे हैं?'

पार्वती के पास कोई जवाब नहीं था। वह थकान से जूझ रही थी और उसका शरीर जवाब देने को तैयार था। उसे अपनी हड्डियों में दर्द महसूस हो रहा था। हर हरकत से उसके घावों और चोटों का दर्द और बढ़ जाता था।

अंत में उसने कहा, 'हमारे पास भागने के अलावा कोई चारा नहीं है।'

पार्वती को हिरण्यपुर की भूमि दिखाई दी। वहाँ गिद्धों के अलावा कोई जानवर नहीं थे, जो उनके मरने का इंतज़ार कर रहे थे। वहाँ वीरान गाँव और टूटी-फूटी गुफाएँ थीं। चारों ओर मृत्यु का साया था। एक चट्टान के उस पार, बंजर बर्फीली भूमि पर, पार्वती ने एक महल जैसा कुछ देखा। कौवे उसके चारों ओर चक्कर लगा रहे थे। वह एक विचित्र संरचना की तरह खड़ा था, जिसकी मीनारें ऊँची और मज़बूत थीं। वह वीरान सा लग रहा था।

'वहाँ एक चट्टान है। हमें कूदना होगा,' पार्वती ने कहा।

'और क्या हम खुद को मार डालें?' ब्राह्मणी ने पूछा।

'वहाँ एक धारा है। अगर हम सही जगह पर खड़े हो जाएं तो हम ठीक रहेंगे।'

ब्राह्मणी को यह विचार पसंद नहीं आया, लेकिन काफी समय से वह प्रभारी नहीं थी। पार्वती ने कमान संभाल ली थी।

जैसे ही वह चट्टान के पार पहुंची, एक तीर उसके पास से गुजरा और चामुंडी के कंधे में जा लगा। सांवली रंगत वाली उस स्त्री ने तीर निकाला और विषैली आँखों से अमर प्राणियों को अपनी ओर बढ़ते हुए देखा।

'अगर हमारे पास हथियार होते तो हम उन्हें मार सकते थे। उन पर ऊर्जा क्यों बर्बाद करें जो मर भी नहीं सकते?' पार्वती ने पचास फीट नीचे चट्टान से उस धारा की ओर देखते हुए कहा जो महल की ओर टेढ़ी-मेढ़ी बह रही थी।

'वहाँ बहुत ठंड होगी। अगर हम भाग्यशाली रहे और नीचे जाकर हमारे सिर न फटें, तो भी हम

ठंड से जम कर मर सकते हैं,' नरसिम्ही ने कहा।

'शायद। लेकिन हम अंदर जाते ही बाहर निकल सकते हैं,' पार्वती ने कहा, और उसने नाले के पास एक पथरीला रास्ता देखा जिसका वे इस्तेमाल कर सकते थे।

'ठीक है! ठीक है!' ब्राह्मणी ने मुँह बनाते हुए कहा। 'चलो इसे करते हैं। मुझे उम्मीद है कि पार्वती, तुम इस बारे में सही हो।'

पार्वती को यकीन नहीं था। नदी चौड़ी और विशाल थी।

इसे भूल जाओ। मैं कर दूंगा।

पार्वती सबसे पहले कूदी। हवा के एक झोंके ने उसे नीचे धकेल दिया और उसे लगा जैसे उसका दिल सीने से बाहर निकल आएगा। उसका मुंह सूख गया और चेहरे का रंग उड़ गया।

जैसे ही उसका शरीर धारा में गिरा, पानी ने उसे घेर लिया और ठंडक उसके ज़ख्मों तक पहुँच गई। वह हाँफते हुए सतह पर आने की कोशिश कर रही थी, किनारे तक पहुँचने का रास्ता ढूँढ़ रही थी। उसने अपने पीछे दूसरों को पानी में गिरते हुए सुना।

किनारे पर पहुँचते ही उसे एहसास हुआ कि उनमें से अधिकतर सुरक्षित थे। उन्हें अब कोई गुनगुनाहट और मंत्रोच्चार सुनाई नहीं दे रहा था। गहरी साँसें लेते हुए उन्होंने राहत की साँस ली और आराम करने की कोशिश की।

जब वे खुद को सुखा रहे थे, तब ब्राह्मणी ने कहा, 'हमने कर दिखाया। मैं जल के देवताओं की आभारी हूं।'

पार्वती मुस्कुराई। उसे इस समूह के प्रति एक प्रकार की ज़िम्मेदारी का एहसास था। उसे खुशी थी कि वे वैतरली से बच निकले थे। वे पथरीले रास्ते पर आगे बढ़ने लगे।

'अब क्या?' ब्राह्मणी ने पूछा।

पार्वती ने महल की ओर देखा। वह ठीक वहीं, नदी के अंत में, चट्टानों और पत्थरों के बीच एक प्रकाशस्तंभ की तरह शान से खड़ा था।

हमें अंधका का सामना करना है।

पार्वती के विचार भैरव की ओर चले गए। मातृकाओं के आगे बढ़ने पर, उनका मन उस समय में लौट गया जब वे भैरव और संतान प्राप्ति के प्रयास कर रहे थे। उन्होंने विवाह के बाद एक स्थिर जीवन की आशा की थी, लेकिन मातृकाओं के समूह में होने के कारण यह असंभव सा लग रहा था, क्योंकि वे पहले इंद्र की सेवा में थीं और बाद में अकेले काम करने लगीं। लेकिन भैरव ने उन्हें एक सामान्य वैवाहिक जीवन का वादा किया था।

उसे याद था कि वह अपने घर के एक कोने में बैठकर शिव के किले में होने वाली दैनिक गतिविधियों को देखती रहती थी। कुछ न कुछ हमेशा होता रहता था। वहाँ कभी भी नीरस क्षण नहीं होता था।

'क्या तुम अब भी इसके बारे में सोच रही हो?' घर में बैठी पार्वती को एक आवाज़ ने पुकारा। मुड़कर देखा तो उनके दाढ़ी वाले पति मुस्कुरा रहे थे और ज़ोर से हँस रहे थे। 'चिंता मत करो, मेरी प्रियतमा,' उन्होंने कहा और उनके बगल में बैठ गए। 'सब ठीक हो जाएगा,' उन्होंने आगे कहा और

अपने हाथ उनके सिर पर रख दिए।

'तुम्हारे लिए कहना आसान है।' पार्वती ने अपना सिर हिलाया। 'मैंने तुम्हें कुछ नहीं बताया है।'

'और वह यह है कि?'

'मुझे बहुत समय पहले, बचपन में, एक गुरु ने शाप दिया था।'

'एक गुरु?' उसके पति ने अपनी भौंहें ऊपर उठा लीं।

'मुझे पता है कि महिलाओं को पढ़ाने की अनुमति नहीं है, लेकिन उसने पढ़ाया। वह अलग था,' उसने कहा था। 'और मैं तो बस एक अनाथ लड़की थी जिसे उसने तोड़ दिया था। इसलिए उसने मुझे शाप दिया।'

'वह अभिशाप क्या था?'

मुझे डर था कि मैं अपने प्रियजनों को दुख पहुंचाऊंगा और मैं सुखी जीवन नहीं जी पाऊंगा।

"खैर, मुझे उम्मीद है कि तुम उसे गलत साबित करोगे। क्योंकि हम निश्चित रूप से एक सुखी जीवन जिएंगे।" वह मुस्कुराया। "हमेशा-हमेशा के लिए।"

पार्वती ने गुस्से में अपने जबड़े भींच लिए थे। उसे वह श्राप सचमुच महसूस हो रहा था। उसे यह आभास हो गया था कि भले ही उनके बीच प्रेम था, लेकिन हालात उनके पक्ष में नहीं थे।

उसने कहा था, 'मुझे लगता है कि मुझे उससे मिलने जाना चाहिए।'

क्या वह जीवित है?

'मुझे नहीं पता। मैं उनसे क्षमा मांग सकती हूँ।' पार्वती ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'आप क्या सोचती हैं?'

उन्होंने कहा था, 'वही करो जिससे तुम्हें सुरक्षा का एहसास हो। वही करो जिससे तुम्हें निश्चिंतता का अनुभव हो। मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।'

'तुम्हें यहां बहुत काम है। मैं जा रहा हूं। कम से कम इस तरह मुझे पता रहेगा कि मैंने अपनी पूरी कोशिश की।'

भैरव ने सिर हिलाकर पार्वती को चूमा। अगले सप्ताह पार्वती और उनके अंगरक्षकों ने गुरुकुल की यात्रा की। पार्वती को इस बात का यकीन नहीं था कि वह सही कर रही हैं या नहीं। जब वे अंततः कई ज़मीनों को पार करने के बाद, सूरज के ज़रूरत से ज़्यादा करीब आने और धरती को झुलसा देने के बाद गुरु के निवास पर पहुँचे, तो उन्होंने पाया कि गुरुकुल नष्ट हो चुका था। वहाँ कोई नहीं रहता था। वह वीरान था। वह जगह जहाँ उन्होंने अपना बचपन बिताया था, अब अतीत की बात हो चुकी थी।

उसे एहसास हो गया था कि वह या तो अतीत से चिपकी रह सकती है या उसे खुद को बदलने दे सकती है। वह अपने पति के पास लौट आई और एक महीने बाद उसे पता चला कि वह गर्भवती है।

शायद श्राप का कोई असर नहीं हुआ। शायद वह सच ही नहीं था। शायद...

पार्वती गलत थी।

यह सचमुच वास्तविक था। उसने अपने मन में उमड़ रहे विचारों से खुद को बचाया और महल

पर ध्यान केंद्रित किया। यह उन कुछ महलों में से एक था जहाँ उसे केवल लताएँ और पेड़ की शाखाएँ ही दिखाई दे रही थीं, जो इमारत की पथरीली बाड़ पर टेढ़ी-मेढ़ी आकृतियाँ बना रही थीं। वहाँ न कोई इंसान था, न कोई पहरेदार, बस भेड़िये दूर से उन्हें देख रहे थे। जब तक मातृकाएँ महल पहुँचीं, तब तक उन्होंने अचानक हमले की स्थिति में खुद को शाखाओं से लैस कर लिया था।

महल इतना सुनसान और इतना शांत था कि पार्वती को ऐसा लगा मानो वह किसी दूसरी दुनिया में कदम रख रही हो।

जब हिरण्याक्ष यहाँ तैनात था, तब यह किला उसी का था। यहीं पर उसने अपने रहस्य छुपाए थे। यही कारण था कि अंधका, जो अपने सौतेले पिता से इतनी नफरत करता था कि उसने अपने असली पिता की हत्या कर दी थी, रहस्यों को जानकर मुक्ति पा गया।

अंधक ने क्या सीखा? पार्वती को यह जानने की उत्सुकता थी।

सन्नाटे, धुंध और कोहरे के बीच से पार्वती और ब्राह्मणी ने महल में प्रवेश किया।

पार्वती ने शेष मातृकाओं से कहा, 'इलाके की छानबीन करो। अगर तुम्हें कोई दिखे तो हमें सूचित करना।'

ब्राह्मणी अंदर के सभी कमरों में गई और सावधानी से दरवाजे खोले। 'क्या आपको लगता है कि वह यहाँ है?'

'अगर वह यहां होता तो खुद को दिखा देता। इसका मतलब है कि वह चला गया है।'

'तो फिर हम यहां क्यों हैं? हमें उसका पीछा करना चाहिए।'

'हम जांच करेंगे। हमें यह जानना होगा कि वह यहां क्यों था,' पार्वती ने कहा। फिर उसने एक रास्ता देखा जो एक संकरी गली से होते हुए तहखाने में जाता था।

वह ब्राह्मणी के साथ नीचे चली गई। गीले कपड़ों के कारण उसे छींक और खांसी आ रही थी, और उसकी नाक बंद थी। लेकिन महल से जुड़ा रहस्य और वहां अंधका की उपस्थिति उसे परेशान कर रही थी। वह सोच रही थी कि वह वहां क्यों था, कब गया और क्यों।

उसने देखा कि तहखाना किसी गुफा जैसा था। वहाँ मेजें और कुर्सियाँ थीं और कमरे से मृत प्राणियों की दुर्गंध आ रही थी। उसने फैले हुए कागजों, फ़ोल्डरों और कागज़ों पर नज़र डाली।

'जरा देख लीजिए,' उसने ब्राह्मणी से कहा।

उसने पन्ने पलटे और सब पढ़ डाले। उनमें से कई में हिरण्यक्ष की विस्तार योजनाओं का वर्णन था। उनमें उसकी निजी डायरी, पाताल और इलवर्ती के बीच आकाश सेतु बनाने का उसका विचार और न जाने क्या-क्या शामिल था। एक कागज़ में उसकी वसीयत का ज़िक्र था। कई कागज़ फटे हुए थे, जब तक कि...

उसने कुछ पत्र देखे। कई लोगों के नाम लिखे हुए। उनमें से एक पत्र किसी ऐसे व्यक्ति के नाम था जिसे वह अपना बच्चा कहता था।

बालक... अवश्य ही अंधक होगा।

उसने उसे सरसरी तौर पर पढ़ना शुरू कर दिया।

प्रिय बच्चे,

मुझे विश्वास है कि आपकी यात्रा फलदायी रही है। आपने मेरे लिए बहुत लंबा सफर तय किया

है। मैंने वैतरली को एक विशेष नाम दिवस पर आपको संदेश पहुंचाने का निर्देश दिया था। इस उम्मीद में कि मैं आपको वह चीज़ लौटा सकूँ जो मैंने आपसे बहुत पहले छीन ली थी। मैंने आपको कमजोर बनाया। मैंने आपकी हालत और खराब कर दी।

मेरी बस यही इच्छा थी कि तुम मजबूत बनो। मैं चाहती थी कि तुम आगे बढ़ो। मैं चाहती थी कि इस दुनिया में तुम्हें हर तरह की तकलीफें झेलनी पड़ें, इससे पहले कि तुम यह सीख सको कि यह दुनिया सिर्फ मजबूत पुरुषों का ही साथ देती है। राज सिर्फ मजबूत पुरुष ही करते हैं। और कोई नहीं।

मुझे आपको यह स्पष्ट करना होगा कि मैंने आपके साथ दुर्व्यवहार क्यों किया, मैंने आपके साथ गुलाम जैसा व्यवहार क्यों किया।

बहुत समय पहले, जब मैं हिजरत के बाद देश के कोने-कोने की यात्रा कर रहा था, तब मुझे एहसास हुआ कि यह कितनी बुरी जगह है: दुख, निराशा, अंधकार, हिंसा और न जाने क्या-क्या। मैं निराश हुआ, लेकिन फिर भी यात्रा जारी रखी। संयोगवश मुझे एक गुरुकुल मिला जहाँ मेरी मुलाकात एक वृद्ध और दुर्बल गुरु से हुई। उनकी याददाश्त कमजोर हो रही थी, लेकिन उन्होंने मुझे मातृकाओं और स्कंद के बारे में बहुत कुछ बताया, जो इस भूमि के पैगंबर नायक थे। मैं इन कथाओं से मुग्ध हो गया। जब मैं जाने की तैयारी कर रहा था, तब मुझे एहसास हुआ कि ये कथाएँ इतनी अनमोल हैं कि इन्हें किसी और के साथ साझा नहीं किया जाना चाहिए।

मुझे पता था कि मुझे दुनिया को बचाना है। मुझे स्कंदा को ढूंढना ही था। इसलिए मैंने गुरुकुल को जला दिया और उस आदमी को मार डाला जिसने मुझसे बात की थी।

याक्ष्लोक में काम करते-करते मैं मिथकों को भूल गया। फिर मैंने इस भूमि को खोल दिया ताकि मैं उत्तर से शासन कर सकूँ जबकि मेरा भाई दक्षिण में अपना अस्तित्व स्थापित कर ले।

यह तब तक था जब तक मैं तुमसे नहीं मिला। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि तुम मातृका परिवार से पैदा हुए और बड़े होकर स्कंद बनोगे। मैं बहुत प्रसन्न हुआ! तुम्हारे माध्यम से, मैं अंततः इस देश में चल रहे अन्याय को सुधार सकता था और इसे बेहतर बना सकता था। मैं इसकी प्रगति में योगदान दे सकता था।

लेकिन जैसे-जैसे तुम बड़े हुए, मैंने देखा कि तुम कमज़ोर हो। तुम हमेशा बीमार रहते थे। तुम चाहते थे कि कोई औरत तुम्हारी देखभाल करे। मैंने तुम्हारे लिए जिस तरह के नायक की कल्पना की थी, तुम वैसे नहीं थे। इसीलिए मैंने तुम्हें चोट पहुँचाना शुरू किया। मैंने तुम्हें अंदर से नष्ट करना शुरू किया। मैंने तुम्हें इस बात के लिए तैयार करना शुरू किया कि दुनिया तुम्हारे साथ क्या कर सकती है, लेकिन मैं तुम्हें प्रशिक्षित कर रहा था। मैंने तुम्हारी आँखों की रोशनी छीन ली ताकि तुम्हारी दूसरी इंद्रियाँ मज़बूत हो सकें। मैंने तुम्हारी आत्मा को तोड़ दिया क्योंकि तब तुम्हें एहसास होगा कि तुम्हारा दिमाग तुम्हारी तलवार से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली है।

और अब मैं यह सब तुम्हें वापस सौंप रहा हूँ। मेरी छोड़ी हुई सेना का नेतृत्व करो। वे अमर हैं। मेरे जाने के बाद भी वे लंबे समय तक जीवित रहेंगे। उन्हें विजय की ओर ले चलो।

मैं एक औषधि भी छोड़ रहा हूँ—सोमा और कुछ जड़ी-बूटियों से बनी एक औषधि, जिनसे आप शायद परिचित न हों, लेकिन यह बहुत शक्तिशाली है। आपकी आँखें ठीक हो जाएँगी। आप

शक्तिशाली बन जाएँगे। यह औषधि आपको ऐसी शक्ति देगी जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। और आप इसके हकदार हैं। आपको यह मिलनी चाहिए।

आप पूछ सकते हैं, क्यों? आप सोच रहे होंगे, आपका उद्देश्य क्या है?

मृत्युशय्या पर मुझे यह अहसास हुआ कि जिस देश में हम रहते हैं, वह देवों या असुरों के लायक नहीं है। उसे एक नायक की आवश्यकता है। तुम्हें सबसे पहले मेरे भाई के पास जो कुछ भी है, उस पर नियंत्रण करना चाहिए। वह बाकियों जितना बुद्धिमान नहीं है। फिर धीरे-धीरे अपना विस्तार करते जाओ।

तो बस यही बात है। मेरे स्कंदा बनो।

पार्वती ने फिर से पत्र पढ़ा। ऐसा लग रहा था जैसे कोई कट्टरपंथी गुस्से में भड़क रहा हो। किसी ने एक मिथक को इतनी गंभीरता से ले लिया था कि उसने किसी का जीवन तबाह कर दिया।

उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

'यह क्या है?' ब्राह्मणी ने गूंजती हुई आवाज में पूछा।

पार्वती ने कहा, 'अंधक देख सकता है। और मुझे पता है कि वह अपना अभियान कहाँ से शुरू करने वाला है।'

कश्यपपुरी।

हमें यहां से निकलना होगा।

'हां, यहां भी बदबू आ रही है,' ब्राह्मणी ने टिप्पणी की।

लेकिन उसमें से बदबू क्यों आ रही थी?

पार्वती ने चारों ओर देखा, परछाइयों और अंधेरे में देखने की कोशिश कर रही थी। जैसे ही वह कोनों में गई, उसने देखा कि कमरा कोनों में लाशों से भरा हुआ था। और वे सभी अंधक जैसे दिख रहे थे। उनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। पार्वती भयभीत हो गईं।

उसने उन सभी की हत्या कर दी!

'इसका क्या मतलब है?' ब्राह्मणी ने पूछा। उसने भी शवों को देखा था।

पार्वती ने कहा, 'इसका मतलब है कि हम बड़ी मुसीबत में हैं। उसने अपने डुप्लिकेटों को मार डाला है... क्योंकि अब उसे उनकी जरूरत नहीं है।'

उसने देखा कि एक शव की आंखें निकाल दी गई थीं।

अध्याय इक्कीस

प्रहलाद धृति और नरसिम्हा के एक दर्जन सैनिकों के साथ हिरण्यपुर—राक्षसों की भूमि—की ओर प्रस्थान कर रहा था।

बचपन में उसने अपने पिता से कई कहानियां सुनी थीं। हिरण्यपुर में रहने वाले विशालकाय दानवों की कहानियां। यह नगर उन्हीं के लिए बसाया गया था, जिसमें घर और अन्य इमारतें सामान्य से दस गुना बड़ी थीं। नदियां भी सामान्य से बड़ी थीं, और आसमान भी अलग था। यक्षलोक के पूर्व में धूल भरे मैदानों में स्थित हिरण्यपुर में दानवों के लिए पर्याप्त जगह थी। उस जगह में कुछ अजीब सा था। प्रहलाद को यकीन नहीं था कि ये कहानियां सच थीं या नहीं।

लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, उसे एहसास हुआ कि यह कोई काल्पनिक दुनिया नहीं थी, जब उसके पिता उसे अपनी चाची मैताली से मिलवाने ले गए, जो उस समय दानवों की नेता थीं।

दानव लोग ज़्यादा बोलते नहीं थे, लेकिन उनका व्यवहार अनोखा था। अगर आप उन्हें आदेश देते, तो वे उसका पालन करते। लेकिन अगर आप आदेश नहीं देते, तो वे बस खाते और सोते रहते। और ज़ाहिर है, वे विशालकाय थे। लेकिन मैताली अलग थी। वह बुद्धिमान थी और हालाँकि वह दूसरों की तरह पचास फीट लंबी नहीं थी, फिर भी वह आठ फीट से ज़्यादा लंबी थी, उसके पैर लंबे थे और रीढ़ की हड्डी मज़बूत थी।

हिरण्यपुर की यात्रा कठिन थी, विशेषकर यक्षलोक के धूल भरे मैदानों से होकर गुजरना। उन्हें धूल और रेत के तूफ़ानों का सामना करना पड़ा और पीने के पानी के लिए नखलिस्तान ढूंढने पड़े। हालांकि वे घोड़ियों और ऊंटों के साथ यात्रा कर रहे थे, फिर भी वे अक्सर सांस लेने के लिए रुकते थे। प्रहलाद ने एक बार भी धृति को अपने मन की बात नहीं बताई। उन्हें डर था कि कोई सुन लेगा और उनके शब्दों का गलत अर्थ निकाल लेगा। राजशाही के विरुद्ध एक भी शब्द उनके सिर कलम होने का कारण बन सकता था।

वह अक्सर रात को रोता था। उसे कैदी जैसा महसूस होता था, हालांकि वह कैदी नहीं था। उसने परिषद को जगाया था और ऐसे लोगों को ढूंढ निकाला था जिन्होंने उसका समर्थन किया था, लेकिन अंततः बहुमत उसके खिलाफ हो गया।

इस लंबी यात्रा के दौरान, उन्हें एक रक्षक मिला—एक विशेष रक्षक जो भगवान नरसिम्हा के प्रति वफादार था—जिसका नाम शांताराम था। वह शांत स्वभाव का व्यक्ति था, जिसके गाल पर एक निशान था और सीने पर एक कटार लटकी हुई थी, जिसे एक विशेष म्यान में सुरक्षित रखा गया था।

एक रात शांताराम ने प्रहलाद से कहा, 'हे स्वामी, आपका वहां जाना बहुत अच्छी बात है।'

कड़ाके की ठंड से बचने के लिए उनके पास ही अलाव जल रहा था। केवल शांताराम और प्रहलाद ही जाग रहे थे।

"शहर में पहले से ही काफी अशांति फैली हुई है। खतरे से दूर रहें।" शांताराम चिंतित स्वर में बोले।

'तुम्हारे ऐसा कहने से मेरी चिंता और बढ़ गई है। अगर मैंने कुछ गलत किया तो क्या तुम मुझे

मारने के लिए यहाँ नहीं आए हो?'

"ओह, ये तो मेरा कर्तव्य है, लेकिन आप एक अच्छे इंसान हैं। हालांकि, याद रखिए कि मेरे लिए नैतिकता से ज़्यादा मेरा कर्तव्य महत्वपूर्ण है," शांताराम ने अपने दो टूटे हुए दांत दिखाते हुए शरारती मुस्कान के साथ कहा। "भगवान वाशकल मेरे मालिक हैं, और अगर राजा नरसिम्हा न होते तो मैं आपकी हत्या कर देता। राजा को आपकी बहुत परवाह है। मैं आपके पिता की सेना में था, लेकिन मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया गया। भगवान वाशकल मुझ पर मेहरबान रहे हैं। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि मेरा परिवार भूखा न रहे। उन्होंने मुझे ज़मीन दी, उन्होंने मुझे फसलें उगाने को दीं। वे मेरे भगवान हैं। अब मुझे नहीं पता कि दूसरे लोग, यहां तक कि आप भी, इस बारे में क्या कहेंगे या महसूस करेंगे, लेकिन मैं उनका ऋणी हूं।"

प्रहलाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। उसने वाशकल के इस पहलू के बारे में कभी नहीं सुना था —कि उसने इतनी दौलत और अनुयायी कैसे जमा किए। अगर वह इस मुकाम तक पहुंचा है, तो उसने ज़रूर कुछ अच्छा किया होगा। 'तुम्हारा मालिक तो अच्छा आदमी लगता है,' प्रहलाद ने किसी तरह कहा।

लेकिन मेरे लिए, वह दुश्मन है।

जब तक वे हिरण्यपुर पहुँचे, प्रहलाद पूरी तरह थक चुका था। उसे लग रहा था कि यह यात्रा उसकी जान ले लेगी, और अगर यही वाशकल की योजना थी, तो ठीक है।

वह अपने घोड़े पर सवार था और धृति उसके पीछे बैठी थी। धृति ने पूछा, 'आप कैसे हैं?'

'मुझे नहीं पता।'

'अच्छा, यहाँ आकर कैसा लग रहा है?'

प्रहलाद समझ गया कि वह क्या कह रही है। उसके सामने वीरान ज़मीनें, ऊँचे-ऊँचे बुर्ज और किले तथा दानव थे। उसने उन्हें दूर से देखा था। वे इतने विशाल थे कि मानो आकाश को छू रहे हों। प्रहलाद देख सकता था कि वे पास ही स्थित विशाल महासागर के लिए लंबी नौकाएँ तैयार करने में व्यस्त थे। वहाँ कारवाँ और बहुत सारे घोड़े थे। जब भी कोई दानव चलता, धरती काँप उठती।

वे डरावने दिखते हैं।

वे हमें नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।

'आपको कैसे मालूम?'

क्योंकि वे केवल उन्हीं पर हमला करते हैं जो उन्हें धमकी देते हैं, और कोई भी उन्हें धमकी देने की हिम्मत नहीं करता।

प्रहलाद आगे बढ़ा, उसका दल उसके पीछे-पीछे चल रहा था।

धृति ने पूछा, 'वे जाने के लिए इतनी आसानी से राजी कैसे हो गए?'

क्योंकि वे राजनीति या किसी भी अनावश्यक रक्तपात में शामिल नहीं होना चाहते थे। दानव, अपनी कम संख्या के बावजूद, सरल लोग हैं। आप उन्हें एक घर और खाने के लिए दस भैंसें दे दीजिए, वे संतुष्ट हो जाएंगे।

'सुनने में तो काफी आसान लगता है,' उसने व्यंग्यपूर्वक कहा।

हिरण्यपुर के द्वार खुलते ही प्रहलाद ने अपनी सवारी तेज़ कर दी। वहाँ तैनात पहरेदारों का काम सरल था; नरसिम्हा ने उन्हें केवल प्रस्थान के समय ही तैनात किया था। उनका काम यह सुनिश्चित करना था कि मैताली दानवों के साथ चली जाए।

जब धृति विश्राम कर रही थी, तब प्रहलाद शांताराम के साथ टहल रहा था।

वे सौ फीट से अधिक ऊंचे ऊंचे हॉल में प्रवेश कर चुके थे, जहां उनसे दुगुनी कद की महिलाएं उन्हें भोजन की मेज तक ले जा रही थीं, जहां मैताली उनका इंतजार कर रही थी।

प्रहलाद ने कमरबंद और सोने से जगमगाता लंबा कुर्ता, अंगूठियां और नुकीली चप्पल पहन रखी थी। हालांकि मैताली उसके पिता की चचेरी बहन थी, सटीक कहें तो दूसरी चचेरी बहन, और प्रहलाद का उससे सीधा कोई रिश्ता नहीं था, फिर भी वह उसे अपनी मौसी कहता था।

खाने की मेज उनकी उम्मीद से कहीं ज्यादा लंबी थी। परोसे गए भोजन की मात्रा देखकर प्रहलाद हैरान रह गया। फिर उसने उनके लिए परोसी गई शहद और शराब देखी। और तभी प्रहलाद की नजर उस लंबी महिला पर पड़ी।

मैताली।

एक खूबसूरत महिला, वह मुस्कुराते हुए झुकी और उसे गले लगा लिया। उसकी बड़ी-बड़ी कांस्य रंग की आंखें थीं और मुस्कान बेहद प्यारी थी। प्रहलाद ने देखा कि शांताराम दूसरे पहरेदारों के साथ कोने में खड़ा है।

'माफ़ करना भतीजे, खाने के लिए। मैं और खाना बनाती, लेकिन ज़्यादातर लोग जहाज़ तैयार करने में व्यस्त हैं। हम अगले कुछ हफ़्तों में निकल रहे हैं।' वह मुस्कुराई और लंबी मेज़ के एक कोने पर बैठ गई। प्रहलाद ने उसे दी गई मीठी शराब का एक घूंट लिया।

'कोई सोच सकता है कि आप यहाँ क्यों हैं?' मैताली ने पूछा।

'मुझे यहां देखकर खुशी होनी चाहिए। मैं विदाई लेना चाहता था।' प्रहलाद मुस्कुराया।

मैताली ने उसी गर्मजोशी से जवाब नहीं दिया। 'मुझे संदेह है, लेकिन आप पर राजहत्या का आरोप है। आपने अपने पिता, मेरे चचेरे भाई की हत्या की है।'

'मैंने उसे मारने में मदद की,' प्रहलाद ने कहा। 'वह हमारे पतन का कारण बन रहा था।'

'हिरण्यक्ष को इस बात का शक था। मैं तुम्हें बता दूं, वह तुम्हारे पिता से भी ज्यादा बुद्धिमान था।' उसने अपने प्याले से घूंट भरा। 'मुझे आश्चर्य नहीं हुआ कि तुम्हें उसे मारना पड़ा। पिछली बार जब मैं उससे मिली थी, तो वह सचमुच अपना मानसिक संतुलन खो रहा था। कवच और तलवार, दोनों का उस पर गहरा असर हो चुका था।'

प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'हाँ। सत्ता भ्रष्ट करती है।' यह सच था; यह बार-बार सिद्ध हो चुका था। 'आंटी, मैं यहाँ शुद्ध इरादों से आया हूँ। आपको विदाई देने और विदा करने। मेरे पास आपके विरुद्ध कोई कुटिल षड्यंत्र रचने का कोई कारण नहीं है। मैं तो बस एक सीधा-सादा लड़का हूँ।'

'कौन दाढ़ी बढ़ा रहा है? बड़ा आकर्षक है,' उसने हंसते हुए कहा। 'लेकिन बताओ, क्या तुम यहाँ इसलिए आए हो क्योंकि हमारी रवानगी में देरी हो रही है? कश्यपूरी में इस बात को लेकर खूब गपशप हो रही होगी कि हम अभी तक क्यों नहीं निकले। मैं तकनीकी खराबी का बहाना बनाकर

उनकी शंकाओं को दूर कर सकती थी, लेकिन मुझे उन्हें थोड़ा परेशान करने में मज़ा आता है।'

प्रहलाद मुस्कुराते हुए अपने सामने रखे भुने हुए मांस को काटने लगा। 'मुझे यकीन है, चाची। दैत्य कैसे हैं?'

तुम्हारे पिता ने जो कुछ भी किया, उसके बाद ये बहुत दुखद है। वे उनसे और तुमसे भी निराश हैं। दरअसल, जाने का फैसला उनका ही था। मैं और भी जीत हासिल करना चाहता था, लेकिन उन्होंने मुझसे पूछा कि इसका क्या मतलब है। वे शांति से रहना चाहते हैं।

प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'यह सबके लिए सबसे अच्छा है।'

'क्या आपको सचमुच लगता है कि वर्तमान शासक सही व्यक्ति है? क्या आपको नहीं लगता कि आपके पिता बेहतर थे?' मैताली उत्सुक थी।

प्रहलाद ने शांतराम की ओर देखा, जो चुप था। 'भगवान नरसिम्हा मेरे राजा हैं, एकमात्र सच्चे राजा।'

'मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने तुम्हारे साथ क्या किया है। क्या उन्होंने तुम्हारा ब्रेनवाश किया है?' मैताली ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

प्रहलाद को महसूस हो गया था कि मैताली खुश नहीं है। उसे थोड़ी सी प्रेरणा और समझाने-बुझाने की ज़रूरत थी।

'क्या इस सब के पीछे धूर्त वाशकल का हाथ है? मुझे पूरा यकीन है कि वही है।' उसने सिर हिलाया और गुस्से से कहा। 'उसने सब कुछ बिगाड़ दिया है। मैं उसे अच्छी तरह से नहीं जानती, लेकिन इतना ज़रूर जानती हूँ कि उसकी माँ की जल्दी मृत्यु हो गई थी और उसका पिता एक शराबी था। वाशकल उससे तंग आ गया था और उस पर उसकी हत्या का आरोप लगा था। मुझे याद है कि वह एक बार हिरण्यकश्यप के साथ यहाँ आया था। तब तक वह राजकोष में एक बड़ा अधिकारी बन चुका था। बेशक, यह तब की बात है जब उसने मज़बूत सहयोगी नहीं बनाए थे और उसका रुतबा नहीं बढ़ा था। अब तो उसका दबदबा साफ दिखता है।'

'हां। वह एक चतुर व्यक्ति है।'

'मेरी नानी ने मुझे इन्हीं लोगों से दूर रहने की चेतावनी दी थी। अब हमारा काम हो चुका है। हम बस घर जाना चाहते हैं और पाताल को वापस पाना चाहते हैं। इतनी दूर तक आने का यह अभियान मूर्खता थी, और यह सब तुम्हारे पिता और चाचा की वजह से हुआ।'

प्रहलाद ने सिर हिलाया। खाना खाते हुए उसने किसी को कमरे में आते देखा। वह मैताली से कुछ कागजातों पर हस्ताक्षर करवाने आया था। वह स्पष्ट रूप से असुर, दानव या देव नहीं था। वह मानव था। वह अनाड़ी और कद में छोटा था, प्रहलाद से भी छोटा, जिसकी लंबाई पिछले कुछ दिनों में काफी बढ़ गई थी।

अपना काम खत्म करने के बाद, मैताली ने कहा, "अरे, मैं शिष्टाचार भूल गई! मिलिए अब तक मिले सबसे बुद्धिमान व्यक्ति से, जो इस देश से संबंधित सभी ज्ञान और जानकारी रखते हैं। वे बहुत यात्रा कर चुके हैं और कविताएँ लिखते हैं। साथ ही, वे मेरे साथ असुरों के बारे में जानने के लिए पाताल जा रहे हैं। सच में, वे बहुत आकर्षक व्यक्ति हैं! उनका नाम नारायण है।" फिर उन्होंने नारायण की ओर मुड़कर कहा, "ये मेरे भतीजे प्रहलाद हैं।"

नारायण प्रहलाद का अभिवादन करने के लिए आगे बढ़े, लेकिन प्रहलाद बैठे रहे और केवल सिर हिलाकर अपना भोजन करने लगे। इसके कुछ ही देर बाद नारायण कमरे से चले गए।

'तुमने मुझसे यह क्यों पूछा कि वह सही राजा है या नहीं?' प्रहलाद ने पूछा।

मैंने सुना है कि वह तबाही मचा रहा है। मेरे कौवे वहाँ हैं, तुम्हें पता है, छोटी से छोटी बात भी मुझे बता देते हैं। मैं उसे परेशान करना चाहता था और अंदर जाना चाहता था, यहाँ तक कि यह अफवाह भी फैलाना चाहता था कि मैं आ रहा हूँ, लेकिन हमारे पास ऐसा करने की हिम्मत नहीं है। और पिछली बार जब मैंने तुम्हारे पिता की मदद करने की पेशकश की थी, तो उन्होंने मुझे यह कहकर ठुकरा दिया था कि उन्हें मेरे बेवकूफ सैनिकों या मेरी ज़रूरत नहीं है। उन्हें लगता था कि वे काफी शक्तिशाली हैं। और देखो, अब वह रेत और मिट्टी के नीचे दबे हुए हैं।

प्रहलाद उसकी आवाज़ में तनाव महसूस कर सकता था। उसने खाना जारी रखा। उसके शब्दों ने उसके मन में कुछ विचार जगा दिए थे, जिन पर वह बाद में धृति से चर्चा करने की योजना बना रहा था।

उस रात बाद में, प्रहलाद धृति के बगल में नग्न अवस्था में लेटा हुआ था। वे ज्यादातर चुप रहे, लेकिन प्रहलाद रुक-रुक कर धृति को भोजन के दौरान हुई सारी बातें और मैताली की कही बातें बताता रहा। अंत में, उनके बीच सन्नाटा छा गया।

'वह भी नरसिम्हा और वाशकल को लेकर उतनी ही परेशान दिखती है जितनी आप।'

'हां,' उसने कहा। 'लेकिन अब उसका अहंकार आड़े आ रहा है। वह हमारी मदद कर सकती है, लेकिन वह करना नहीं चाहती। यह मेरे पिता की कब्र पर थूकने का उसका तरीका है। वह हमेशा से ही अत्यधिक अहंकारी होने से परेशान रही है।'

धृति ने उसके गाल पर चुंबन किया। 'क्या सोच रहे हो? मुझे पता है तुम्हारे दिमाग में कुछ चल रहा है।'

प्रहलाद ने कमरे में चारों ओर देखा, विशेषकर खिड़की की ओर, जहाँ से उसे डर था कि उसकी बातें निकलकर वाशकल के समर्थकों तक पहुँच सकती हैं। 'मैं नरसिम्हा को हराने में दानवों से मदद मांगने की सोच रहा हूँ।'

क्या वे ऐसा करने के लिए सहमत होंगे?

'मुझे नहीं पता,' प्रहलाद ने कहा। 'मैं उन्हें मनाने की कोशिश कर सकता हूँ। उन्होंने जाने का मन बना लिया है, लेकिन मुझे पता है कि इसे केवल वे ही सफल बना सकते हैं। वे नरसिम्हा से लड़ सकते हैं, शायद उसे नष्ट भी कर सकते हैं।'

आपको क्या लगता है कि वे बदले में क्या चाहेंगे?

'उसका सिर। वे बदला लेना चाहते हैं। अगर मैं उन्हें यह समझाने में कामयाब हो जाऊं कि हिरण्यकश्यप की मौत का बदला लेना जरूरी है, तो शायद इससे मदद मिल सकती है।'

धृति उसे घूरती रही। 'मुझे लगता है यह एक अच्छा विचार है। तुम्हें इसे आजमाना चाहिए।'

प्रहलाद मुस्कुराया। उसे अपने सीने में महसूस हो रहा था कि जेल की बेड़ियाँ टूटने लगी हैं।

अध्याय बाईस

इंद्र हमेशा से बृहस्पति के क्रोध से सावधान रहते थे।

इंद्र और उनकी सेना समुद्र से बस एक दिन की दूरी पर थे। सभी की थकान को भांपते हुए और यह जानते हुए कि उनके सामने एक बड़ा युद्ध है, उन्होंने सभी को रुकने और आराम करने के लिए कहा।

हत्या के प्रयास के बाद से इंद्र के चारों ओर सुरक्षाकर्मियों की संख्या बढ़ा दी गई थी। उन्होंने अपने शराब परखने वाले विशेषज्ञों को वापस बुला लिया था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उन्हें जहर न दिया गया हो। बृहस्पति, साची और वायु इंद्र के प्रति बहुत चिंतित थे और बार-बार उनसे पूछते रहते थे कि क्या वे ठीक हैं।

लेकिन इंद्र को हर किसी पर, विशेषकर बृहस्पति पर, संदेह था। अतीत की एक घटना के कारण इंद्र को शक था कि हत्या के प्रयास में बृहस्पति का हाथ हो सकता है।

इंद्र उस बात को भुलाने की कोशिश कर रहे थे जिसे उन्हें जबरदस्ती याद दिलाया गया था। उन्होंने बूढ़े व्यक्ति को अपने तम्बू में बुलाया, ताकि वे उनके साथ थोड़ी सी शहद की शराब पी सकें, जबकि वायु सैनिकों को तैयार कर रहे थे और साची खेत से फूल तोड़ रहे थे।

बृहस्पति को आभास हो गया था कि कुछ गड़बड़ है। बैठते ही इंद्र ने पूछा, 'तुम्हें क्या लगता है कि किसमें इतनी हिम्मत है कि वह मेरी हत्या करवाने की कोशिश करे?'

बर्फ जैसी सफेद भौंहों और अंडाकार सिर वाले बृहस्पति ने कहा, 'महाराज, यह नरसिम्हा हो सकते हैं।'

'वह उस तरह का आदमी नहीं है जो किसी की हत्या कर दे। वह तो आगे आकर अपने दुश्मन को मार डालेगा। यह कोशिश... यह एक हताश व्यक्ति की कायरतापूर्ण हरकत थी।' इंद्र ने अपने सामने बैठे बूढ़े आदमी की प्रतिक्रिया को देखते हुए कहा, 'गुरुजी, आप क्या सोचते हैं? मैं हमेशा आपका मार्गदर्शन चाहता हूँ। और मुझे अब इसकी पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है।'

बृहस्पति देवताओं के गुरु थे। वे छोटे से छोटा काम करने से पहले भी उनसे सलाह लेते थे। इंद्र को यह निर्भरता खटकने लगी थी, जिसका बृहस्पति ने अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था। इंद्र ने यह सुनिश्चित किया कि अन्य देवता भी इसे जान लें, जिससे बृहस्पति क्रोधित और निराश हो गए। बूढ़े बृहस्पति ने कभी इस बारे में शिकायत नहीं की, लेकिन यह इंद्र और बृहस्पति के बीच दुश्मनी का कारण बन गया था।

'यह अजीब बात है। मैं खुद भी काफी हैरान हूँ।' बृहस्पति कुछ खोया-खोया सा था। सौ साल से अधिक उम्र का होने के कारण, अब वह खुद को मनुष्य से ज़्यादा सड़कों पर भटकती आत्मा जैसा महसूस करता था। अब कोई उससे सलाह नहीं लेता था। उसकी याददाश्त और शब्दों से जुड़ी समस्याओं ने उसकी परेशानी को और बढ़ा दिया था। वह जानता था कि इंद्र उसे पागल समझते हैं। साथ ही, उसे यह भी एहसास था कि उसे उस समय सिर्फ दिखावे के लिए बुलाया गया था। उसने सोचा कि अगर उसकी उम्र इतनी ज़्यादा न होती, तो इंद्र उस पर और भी ज़्यादा शक करते।

लेकिन... आपको कभी पता नहीं चलेगा।

जी हां, बिल्कुल। आप जानते हैं, मैं अपने जीवन के बारे में सोच रहा था। हमारा लंबा रिश्ता रहा है। अब हम दोनों बूढ़े और सफेद बालों वाले हो गए हैं।' इंद्र ने मुस्कुराते हुए अपने शराब के प्याले को ऊपर उठाया। 'इस बात पर चीयर्स!'

बूढ़े व्यक्ति ने घबराकर हल्की सी हंसी हंसते हुए अपना प्याला उठाया।

इस बीच, इंद्र बृहस्पति के कठोर शब्दों और उनकी कसी हुई छड़ी को अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रहे थे।

जब इंद्र ग्यारह वर्ष के थे, तब बृहस्पति एक युवा ऋषि थे, और उनके प्रशिक्षण में केवल धूल और रक्त ही स्थिर थे। ऋषि से उन्हें बस यही सुनने को मिलता था: 'तुम कभी राजा नहीं बन सकते। खुद को देखो। तुम कितने डरपोक हो।'

यह कहते हुए बृहस्पति ने अपनी बांस की छड़ी इंद्र के लाल नितंबों पर मारी। नंगा और शर्मिंदा वह छोटा लड़का बिजली बुलाने का अभ्यास करता रहा। उस दिन वह बुरी तरह असफल हो रहा था।

'तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए सब कुछ बलिदान नहीं किया था कि तुम इतने निकम्मे हो जाओ,' बृहस्पति ने इंद्र से कहा था।

उस समय बृहस्पति ने अपने शब्दों को लेकर काफी जल्दबाजी की थी।

आँखों में आंसू लिए इंद्र लगभग टूट चुकी थी। 'कृपया ऐसा मत करो। मैं आराम करना चाहती हूँ... मुझे पानी चाहिए।'

बृहस्पति ने इंद्र को जमीन पर गिरा दिया और जब इंद्र खांसने और दम घुटने लगे तो उन्होंने छड़ी से उनकी छाती पर वार किया। उन्होंने गरजते हुए कहा, 'बताओ, क्या तुम देवताओं के राजा बनना चाहते हो?'

जी-जी।

'अगर तुम ऐसा व्यवहार करोगे तो क्या तुम भी वैसे ही बन जाओगे? तुम्हें मजबूत बनना होगा। तुम असफल नहीं हो सकते।'

इंद्र ने बृहस्पति की ओर देखा और पाया कि ऋषि उसे यातना देने में आनंद ले रहे थे। उनके चेहरे पर क्रूरता थी, उस परेशान लड़के को देखकर उनके चेहरे पर मुस्कान थी। इंद्र को समझ नहीं आया कि वह इतने क्रूर क्यों हो रहे थे। उन्हें इसमें क्या आनंद मिल रहा था?

'कश्यप ने मुझसे कहा था कि तुम इलवर्ती का भविष्य हो। इस हालत में तुम उनके शब्दों पर कैसे खरे उतरोगे? तुम परदेसी हो। तुम सब बाहर से आए हो। तुम इस धरती के नहीं हो, फिर भी उन्होंने तुम्हें चुना, तुम छोटे से निकम्मे!' उन्होंने लड़के पर थूका। 'और अब मुझे तुम्हें एक मर्द बनाना है, वो भी तब जब मेरे पास यहाँ काम करने के लिए ज़्यादा लोग नहीं हैं।'

इंद्र थका हुआ था। वह व्याकुल महसूस कर रहा था, मानो उसके सारे सपने चकनाचूर हो गए हों। वह दुखी था।

वह संतुष्ट नहीं था।

उस समय इंद्र ने एक प्रतिज्ञा ली थी। उसने उस बूढ़े व्यक्ति से बदला लेने की प्रतिज्ञा ली थी।

तब से कई वर्ष बीत चुके थे, लेकिन इंद्र यह नहीं भूले थे कि बृहस्पति ने उन्हें किस प्रकार प्रताड़ित किया था।

उन्हें सब कुछ याद था। समय के साथ, इंद्र शक्तिशाली हो गए। उन्होंने वज्र चलाना सीखा। उन्होंने बिजली को नियंत्रित करना सीखा। वे और भी बुद्धिमान हो गए।

हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप के आगमन से पहले, इंद्र ने पाताल लोक से आए प्रारंभिक आक्रमणकारियों में से एक, असुर सरदार वतापी को परास्त कर दिया था। इंद्र और अन्य देवताओं को वतापी को पराजित करने का दायित्व सौंपा गया था। उन्होंने वीरतापूर्वक युद्ध किया, इस दौरान कई सैनिक शहीद हुए, लेकिन अंततः वे विजयी हुए। विजय के बाद उत्सव मनाया गया, चारों ओर सद्भावना और शुभकामनाओं का माहौल था। लोग प्रसन्न थे।

इंद्र ने एक भव्य भोज का आयोजन किया था और सभी को निमंत्रण भेजा था। उन्होंने वरुण और वायु को शहद से भरे बर्तनों के पास बहस करते देखा था। उन्होंने अग्नि को एक कोने में बैठकर मटन का आनंद लेते देखा था, और उनके बाकी मेहमान भी प्रसन्न थे। वहाँ सैकड़ों लोग उपस्थित थे: किन्नर, अप्सराएँ, यक्ष। इंद्र, जो अपने भव्य आयोजनों के लिए प्रसिद्ध थे, उस समय साची से विवाहित नहीं थे। उन्हें स्त्रियों की संगति पसंद थी, जो उनके सामने लेटकर उन्हें चूमने देती थीं।

किसी ने उन्हें अंगूर और खुबानी भेंट की थी। वहाँ डफली बज रही थी और अप्सराएँ नृत्य कर रही थीं। सफेद संगमरमर चमक रहा था। सब कुछ अद्भुत था। सब कुछ सुंदर था।

सिवाय एक बात के।

एक व्यक्ति को आमंत्रित नहीं किया गया था। बृहस्पति।

फिर भी ऋषि समारोह में आए, मानो उन्हें आमंत्रित किया गया हो। इंद्र ने उन्हें देखकर मुस्कुराया, अपने सिंहासन से नीचे उतरे और सबसे मिले, बृहस्पति के पास पहुँचने से पहले सभी से हाथ मिलाया।

इंद्र ने कहा था, 'आने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।'

'जी हां, महाराज।' बृहस्पति अब किसी कठोर शिक्षक की तरह नहीं दिख रहे थे। बल्कि, वे स्नेह से मुस्कुरा रहे थे।

इंद्र ने हंसते हुए कहा था, 'तुमने बहुत पहले मुझसे कहा था कि मैं राजा बनने के योग्य नहीं हूँ। क्योंकि मैं बाहरी हूँ, एक विदेशी हूँ।' 'मुझे लगता है कि तुम गलत साबित हुए हो।'

बृहस्पति ने अपनी भौहें ऊपर उठाईं। 'हे महाराज, यह तो सिर्फ आपको चिढ़ाने के लिए किया गया था ताकि आप लड़ने के लिए और अधिक प्रेरित हों।'

'आह।' इंद्र मुस्कुराया।

'और मुझे विश्वास है कि यह कारगर साबित हुआ।' बृहस्पति की गर्मजोशी भरी मुस्कान की जगह अब बनावटी मुस्कान आ गई थी।

नहीं। इससे मुझे बहुत असुरक्षा महसूस हुई। इंद्र के नथुने फूल गए थे।

'महाराज, मेरे बिना आप असुरों से इतनी आसानी से युद्ध नहीं कर पाते,' बृहस्पति ने आत्मविश्वास से कहा था। 'मुझे खुशी है कि मैं आपकी सहायता कर सका।'

इंद्र ने अपने जबड़े भींच लिए थे। वे जीत का जश्न मनाना चाहते थे, लेकिन ऋषि हमेशा की तरह अहंकारी थे। इंद्र मुड़े और उस आसन की ओर वापस चले गए जिस पर उनका सिंहासन था। उन्होंने अपना मदिरा का प्याला आगे बढ़ाया और क्रोध से भरी आवाज़ में घोषणा की: "वातापी के साथ युद्ध हमारे लिए एक बड़ी चुनौती थी। लेकिन हमने इसे आसानी से जीत लिया क्योंकि मुझे सही लोगों का साथ मिला, सही लोगों ने मेरी मदद की और मैंने बहादुरी से लड़ाई लड़ी। मैं इस आसन पर उन लोगों को आमंत्रित करना चाहता हूँ जो इस कठिन यात्रा में मेरे साथ रहे हैं। यह उत्सव उनके लिए है। कृपया आइए..."

इसके साथ ही, इंद्र ने स्वामियों, मंत्रियों और देवताओं के नामों की घोषणा करना शुरू कर दिया, जिनमें से सभी विनम्रतापूर्वक सम्मान स्वीकार करने के लिए चबूतरे पर चढ़ गए थे।

अंत में, इंद्र ने बृहस्पति की ओर देखा, जो स्तब्ध प्रतीत हो रहे थे। इंद्र ने केवल बृहस्पति को ही आसन पर आमंत्रित नहीं किया था।

बृहस्पति के भीतर क्रोध उबल रहा था और वह गुस्से में बाहर निकल गया था।

इंद्र मुस्कुराया। वह देख सकता था कि सभी ने ध्यान दिया था कि बृहस्पति का अपमान हुआ है। वह जानता था कि अब कोई उससे पंगा नहीं लेगा।

लेकिन उसके बाद जो कुछ हुआ, उसके बारे में इंद्र हमेशा बृहस्पति से बात करना चाहते थे।

और उसने अब ऐसा करने की योजना बनाई थी।

'वातापी की घटना, उसके बाद का उत्सव...' इंद्र मुस्कुराए। 'मुझे लगता है कि आप मुझसे काफी नाराज थे।'

'वातापी की घटना...' बूढ़े व्यक्ति ने उलझन भरी नज़र से देखा। इंद्र समझ गए कि बृहस्पति याद करने की बहुत कोशिश कर रहे हैं। 'हाँ, बिल्कुल।' उन्होंने भौंहें चढ़ाईं और फिर हल्की सी हंसी हंस दी। 'तुमने तो बड़ा ही तमाशा किया था।'

'जब मैं बच्चा था तो तुम हमेशा मेरे साथ बुरा बर्ताव करते थे, इसलिए मुझे तुमसे बदला लेना पड़ा, जिसके कारण तुम मुझसे नाराज हो गए।'

'जैसा होना चाहिए वैसा ही था। तुम शासक के रूप में अहंकारी थे। तुम सोचते थे कि केवल तुम ही हमेशा सही हो,' बृहस्पति ने कहा।

'क्या आपको याद है कि उसके बाद क्या हुआ था?'

'क्या?'

'उत्सव के अगले दिन सुबह अचानक असुरों के एक समूह ने हम पर हमला कर दिया। मैंने जाँच की तो पता चला कि आपने किसी कारणवश सुबह की गश्त रद्द कर दी थी।'

'क्योंकि तुम्हारे सैनिक जीत और शराब के नशे में चूर थे। गश्त लगाना बेकार होता।' बृहस्पति चिढ़ते हुए बोले। 'मुझे अच्छी तरह याद है कि वे गश्त लगाने की स्थिति में नहीं थे, इसीलिए मैंने उन्हें आराम करने को कहा था। मुझे कैसे पता चलता कि असुर इस मौके का फायदा उठाकर हमला कर देंगे?'

यह तो बड़ा संयोग है।

इंद्र बृहस्पति को लगातार घूरते रहे, उनकी निगाहें ऋषि की आत्मा को भेदती रहीं।

'अरे वाह, आपको क्या लगता है कि मैंने उन्हें अंदर आने दिया?' बृहस्पति हँसे। 'जी महाराज, हमारी थोड़ी कहा-सुनी हो सकती थी, लेकिन मैंने कभी देवों के साम्राज्य के खिलाफ़ कुछ नहीं किया।'

'बिल्कुल। फिर भी आपने उन्हें सलाह दी?'

'मैंने कश्यप के सभी बच्चों को सलाह दी थी, इसीलिए वे मेरा आदर करते थे। कृपया यह न सोचें कि मेरी निष्ठा कहीं और है।'

इंद्र जानते थे कि अगर वे बृहस्पति को वातपी घटना से जोड़ पाते, तो वे ऋषि को हत्या के प्रयास से भी जोड़ सकते थे। लेकिन चूंकि अब उन्हें यकीन नहीं था, इसलिए वे कुछ कहना नहीं चाहते थे। वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि हमले के पीछे के मास्टरमाइंड को कोई आगाह न हो।

'मैं आपकी शंका को समझता हूँ। मुझे पता है कि हमारे बीच उतार-चढ़ाव आए हैं, लेकिन मैंने आपकी बेटी को अपनी बेटी की तरह प्यार किया। हो सकता है कि हम हमेशा एकमत न रहे हों, लेकिन मैंने हमेशा आपका सम्मान किया है और आपको प्यार किया है,' बृहस्पति ने आगे कहा। 'मैं यह भी समझता हूँ कि आप अतीत की बातों को क्यों उठा रहे हैं। आप पर अभी-अभी हमला हुआ है और आप असमंजस में हैं कि किस पर भरोसा करें। मुझ पर शक करना स्वाभाविक है, लेकिन मेरा विश्वास कीजिए कि मैं इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं हूँ। और मेरी भी गलती है। मैंने उस समय आपके साथ क्रूरता की थी क्योंकि मैं युवावस्था में विदेशियों से नफरत करता था। मैं यह स्वीकार करने को तैयार नहीं था कि कोई विदेशी आकर इस देश पर शासन कर सकता है, लेकिन मुझे विश्वास है कि कश्यप ने सही निर्णय लिया। इसलिए, कृपया मेरी विनम्र क्षमा स्वीकार करें।'

इंद्र ने अपना सिर हिलाया। वह पराजित महसूस कर रहा था। वह बस उस बूढ़े ऋषि को गले लगाना चाहता था, और उसने ऐसा ही किया। 'मेरी उम्र ने मुझे यह एहसास दिलाया है कि हम दोनों ही दोषी थे। मैं आपसे ज़्यादा। यहाँ आने के लिए धन्यवाद। मुझे लगता है कि यह बहुत पहले हो जाना चाहिए था।'

बृहस्पति मुस्कुराए। उन्होंने भी उन्हें गले लगाया।

इंद्र को वृद्ध ऋषि की बात पर पूरी तरह विश्वास नहीं था, लेकिन कम से कम उनके बीच बातचीत तो हुई थी। बृहस्पति के पास निश्चित रूप से कोई मकसद था, लेकिन इंद्र के पास उस समय कोई सबूत नहीं था।

और किसी कारणवश इंद्र को विश्वास हो गया कि बृहस्पति ने उसके साथ ईमानदारी बरती थी। जैसे ही वृद्ध ऋषि तम्बू से निकले, इंद्र को पता चल गया कि उन्हें आगे किससे पूछताछ करनी है, इससे पहले कि वे समुद्र की ओर बढ़ें और उस सर्प को खोजने का प्रयास करें जिसके पेट में जादुई हड्डियाँ थीं।

उसे अपनी प्रेमिका साची से सवाल करना ही था।

अध्याय तेईस

नरसिम्हा ने अपने मित्र गरुड़ की चिता को आग लगा दी।

उसने कभी नहीं सोचा था कि उसे धोखेबाजों और पीठ में छुरा घोंपने वालों के इस राज्य में उन कुछ भरोसेमंद लोगों को भी इतनी अप्रत्याशित रूप से छोड़ना पड़ेगा।

सबसे पहले, प्रहलाद ने उसे धोखा दिया था।

और अब गरुड़ जा चुका था।

नरसिम्हा घबरा गया। उसे लगा जैसे वह घिर गया हो। उसे लगा जैसे कोई उसका पीछा कर रहा हो। जिस दिन उसे पता चला... उसने खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया और रोया। उसने खिड़की से बाहर घूरकर यह पता लगाने की कोशिश की कि उसे मारने की कोशिश कौन कर रहा है।

मेरे दुश्मन हैं।

उसने इतना ज्यादा मीठा पेय और शराब पी ली थी कि उसके पेट में दर्द होने लगा और उसका सिर लटकने लगा।

और अब, इस धुंध भरी सुबह में, सुपर्ण प्रमुख का अंतिम संस्कार उनकी आँखों के सामने किया जा रहा था। गरुड़ के बाद, सुपर्णों ने एक और प्रमुख चुना था, लेकिन नरसिम्हा को उस पर भरोसा नहीं था। फिर भी, वे युद्ध में शामिल थे क्योंकि वे गरुड़ का सम्मान करते थे।

गरुड़ अक्सर मुझसे मिलने आता था... लेकिन मैंने उसकी बात नहीं मानी। काश मैंने मान ली होती। मुझे सावधान रहना चाहिए।

नरसिम्हा ने अपने बाल नहीं संवारे थे और न ही वह नशे में थे। वह बस अपने सामने के अँधेरे में टकटकी लगाए बैठे थे, जबकि आग धुएँ से भरे आकाश की ओर उठ रही थी। उनके आसपास के लोग, उनके तथाकथित मित्र और शुभचिंतक भी लपटों को घूर रहे थे। तांत्रिक ने नरसिम्हा को बताया था कि गरुड़ को विष दिया गया है।

जहर दिया गया।

अपने विचारों में खोए, चिंतित नरसिम्हा को गरुड़ के साथ बिताए अपने कारनामे याद आ गए। उन्हें याद आया कि कैसे वे नागलोक से बच निकले थे और कैसे गरुड़ ने उन्हें हिरण्यकश्यप से ऐन मौके पर बचाया था। नरसिम्हा को आश्चर्य हुआ कि गरुड़ को बुरा समझना उनकी कितनी बड़ी गलती थी, जबकि गरुड़ हमेशा अच्छे और मददगार रहे थे। उन्हें अपनी माता को लेकर चिंता थी। वे उनकी अस्थियां चाहते थे। वह साहसिक यात्रा अपने आप में एक अजीब उलझन थी।

'कोई भी इस बात को लेकर निश्चित नहीं हो सकता कि वह कितने समय तक जीवित रहेगा।' नारा ने यह देखने के लिए अपना सिर घुमाया कि यह किसने कहा था।

यह वाशकल था। उसके बाल बड़े ही सलीके से पीछे की ओर लहराए हुए थे और उसके होठों पर एक गंभीर मुस्कान नाच रही थी।

क्या गरुड़ की मौत के पीछे वही व्यक्ति था?

नारा ने खुद को याद दिलाया, अपनी भावनाओं पर काबू पाने की कोशिश करते हुए, "कोई भी

हो सकता है। मुझे नहीं पता था कि तुम गरुड़ के अच्छे दोस्त हो।"

'ओह, मैं नहीं था। उसने मुझे कई बातों के लिए ज़िम्मेदार ठहराया, लेकिन उसे यह समझना चाहिए था कि मैं ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति हूँ जो आपको राजा के रूप में देखना पसंद करता है। उसे लगा कि आप पर विश्वास करने के पीछे मेरे कुछ छिपे हुए इरादे हैं।' वाशकल ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'उदाहरण के लिए, असुर दंपति की हत्या को ही ले लीजिए।'

'हां। उसे लगा कि तुम यह बात हवा में उछालना चाहते हो कि मैं असुरों के खिलाफ हूं। मेरे लिए और अधिक समस्याएं पैदा करना चाहते हो,' नारा ने कहा। 'उसे लगा कि तुमने ही उनके वध का आदेश दिया था।'

'मेरा मानना है कि मरे हुए लोग कहानियां नहीं सुनाते।'

'अगर तुम इस सब के पीछे थे, और अगर मुझे इसकी जरा सी भी भनक लग गई, तो पल भर में तुम्हारा सिर धड़ से अलग हो जाएगा।' नारा गुर्राया। 'उम्मीद है तुम्हें यह बात समझ आ गई होगी।'

नरसिम्हा को देखकर वाशकल के मन में भय की एक लहर दौड़ गई। 'क्या मैं अब तक आपके विरुद्ध ही गया हूँ? आपको जनता का समर्थन प्राप्त है। आपके पास कल्पना से परे शक्ति है। मैं तो आपके लिए आशीर्वाद मात्र रहा हूँ।'

यह बात सच थी। दरअसल, नारा के चुप रहने का यही एकमात्र कारण था।

असुर बल का सम्मान करते हैं। कश्यपुरी और उसके पड़ोसी सहयोगी राज्यों की 80 प्रतिशत आबादी असुरों की है। आपने उनका सम्मान अर्जित किया है। आप पूछ सकते हैं क्यों? दरअसल, वे आपके बल, आपकी विश्वसनीयता और शांति के बजाय हिंसा को चुनने के आपके निर्णय को महत्व देते हैं। वे आपकी परवाह करते हैं। वे आपको एक नेता के रूप में देखते हैं। आप आदिवासियों के विपरीत, हम परदेसियों से नफरत नहीं करते। हम सभी अच्छे और आवश्यक बदलावों को स्वीकार करते हैं। क्या आप सहमत नहीं हैं?

नारा ने सिर हिलाया। 'आप अंतिम संस्कार में राजनीति की बात कर रहे हैं। मैं आपसे आगे बात नहीं करना चाहता।'

"ओह, लेकिन आपको देखना चाहिए, महाराज। चारों ओर देखिए," वाशकल ने मंत्रियों, रईसों और व्यापारियों से भरे मैदान पर नज़र घुमाते हुए कहा। वे गरुड़ के लिए आए थे। "आपके ऐसे शत्रु हैं जिन्होंने आपके अच्छे मित्र की मृत्यु का कारण बने, और वे आपकी भी मृत्यु चाहते हैं। इससे पहले कि वे आपकी मृत्यु की योजना बनाएं, आपको उनके साथ क्या करना है, इस बारे में सोचना शुरू कर देना चाहिए। यह मृत्यु वुल्फ्सबेन के प्रयोग से हुई है। आपको क्या लगता है कि आगे क्या होगा? एकोनाइट? यह आपको लकवाग्रस्त कर सकता है और आपको पीड़ा पहुंचा सकता है।"

वाशकल रुका और गहरी सांस ली। उसकी आवाज़ हवा में व्याप्त ठंडक की तरह ठंडी थी। 'मैंने तुम्हारे लिए बहुत मेहनत की है, मैं तुम्हें मरने नहीं दे सकता। हमें एक कार्य योजना बनानी होगी।'

नारा ने रईसों और मंत्रियों की ओर देखा, उसकी आँखों में अनिश्चितता थी और उसके चेहरे पर चिंता स्पष्ट रूप से झलक रही थी।

'क्या आप अच्छे सपने देखते हैं? क्या आप इस सोच से परेशान नहीं होते कि शायद कोई आप

पर चाकू ताने खड़ा होगा?'

'शायद,' नारा ने कहा। 'लेकिन, तुम्हें पता है, मुझे मारा नहीं जा सकता,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

लेकिन आप गंभीर रूप से घायल और लकवाग्रस्त हो सकते हैं। हे प्रभु, इस दुनिया से विदा होने का सबसे आसान तरीका हत्या करना है। यदि हत्या ही इस दुनिया का मार्ग होता, तो यह एक बेहतर जगह होती। लेकिन ऐसा नहीं है। आपके हत्यारों के पास आपको पीड़ा पहुँचाने की योजनाएँ होंगी।

नारा ने सिर हिलाया और दांत भींचते हुए बोली, 'ठीक है। मैं समझ गई। आपके मन में क्या है?'

पार्वती ने कश्यपपुरी की यात्रा से लौटते समय मातृकाओं के साथ शिव के किले की यात्रा करने का निर्णय लिया था। यह किला रास्ते में ही पड़ता था और वहाँ चिकित्सक, भोजन और शस्त्रागार आसानी से उपलब्ध थे। उन्हें हथियारों की आवश्यकता थी। शिव का किला उनके लिए आदर्श स्थान था।

हालांकि, पार्वती की उस किले से कई यादें जुड़ी हुई थीं। उनके पति वहीं रहते थे। वह खुद भी कई वर्षों तक उस घर में छिपकर रही थीं। जब पार्वती मातृकाओं को खोजने निकली थीं, तब उन्हें यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि वह कभी वापस लौट पाएंगी या नहीं, लेकिन वह लौट आईं।

उसके जीवन का वह अध्याय समाप्त हो चुका था। वह आगे बढ़ना चाहती थी।

जैसे ही पार्वती ने किले में प्रवेश किया, पहरेदारों ने झुककर और मुस्कुराकर उनका अभिवादन किया। उन्हें दयालु और कृतज्ञ माना जाता था। अंदर चलते हुए पार्वती ने अस्तबल, रसोइयों और उन छोटे-छोटे घरों को देखा जहाँ निम्न वर्ग के लोग काम करते थे। आसपास सैनिक थे, लेकिन वे शाही महल में दिखने वाले सैनिकों जैसे नहीं थे। उनमें कठोर साहस झलक रहा था और उनसे दुर्गंध आ रही थी। वास्तव में, पार्वती की नाक में कई तरह की गंधें आईं: मानव मल से लेकर लोहे और गंधक की गंध तक।

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी और उन सभी लोगों को प्रणाम किया जिन्होंने उसे प्रणाम किया। वे लोग उसके पीछे आने वाले समूह से आशंकित प्रतीत हो रहे थे, लेकिन वह जानती थी कि सब ठीक है क्योंकि वे उसके साथ थे।

बाज़ार के अंत में, उसकी नज़र शिव पर पड़ी। उन्होंने अपनी छाती पर त्रिशूल का चिन्ह धारण किया हुआ था, साथ ही भारी कवच, एक लंबा कोट और चेहरे पर मुस्कान थी। वे भैरव के दाहिने हाथ थे, उनके सबसे भरोसेमंद व्यक्ति। वीरभद्र।

पार्वती को छींक आने पर शॉल ओढ़ाई गई। आग के सामने बैठकर तुलसी की चाय पीते हुए उन्हें अपनी थकान का एहसास हुआ। उन्हें लगभग ऐसा लगा जैसे वे घर पर हों। वीरभद्र ने अपने लिए थोड़ी सी मीठी शराब ली और उनके सामने बैठ गए, नारंगी लपटों से उनका चेहरा जगमगा उठा। पार्वती मुस्कुराईं। उन्होंने कहा, 'मेरी देवी, यह सचमुच एक सुखद आश्चर्य है।'

पार्वती ने फीकी मुस्कान के साथ कहा, 'मैं अब कोई महिला नहीं रही। मैं बस एक और औरत

हूँ।'

उसने सिर हिलाया। 'काश, यह सच होता।' और फिर, कुछ देर रुककर उसने पूछा, 'तो तुम यहाँ क्यों आए हो? कोई छोटा-मोटा काम?'

उसने अपना सिर हिलाया। चूंकि मातृकाएं रात भर आराम कर रही थीं, इसलिए पार्वती और वीरभद्र को एक-दूसरे से बातचीत करने का मौका मिल गया था।

'शिव की उपाधि आपको कैसी लग रही है?'

वीरभद्र ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे नहीं पता। यह मुश्किल है। बस... कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं सही विकल्प नहीं था।'

'अरे, फिर से यही सब। भैरव ने विशेष रूप से आपको अपना उत्तराधिकारी चुना था।'

वीरभद्र ने कहा, 'क्योंकि मैं उनके प्रति वफादार था। इसलिए नहीं कि मैं सही विकल्प था।'

'और आपके अनुसार सही विकल्प कौन होता?'

'आप।'

पार्वती एक पल के लिए स्तब्ध रह गई। 'क्या?'

'वह चाहते थे कि तुम किले का नेतृत्व करो। असल में, उत्तर दिशा का।' एक गहरी साँस लेते हुए उन्होंने प्याले से घूँट भरी। 'लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि तुम भृंगी के देहांत के बोझ से पहले से ही इतने दबे हुए थे कि उस समय तुम किसी भी नई चीज़ के लिए तैयार नहीं लग रहे थे।'

लेकिन उन्हें ऐसा क्यों लगा कि मैं सही विकल्प हूं?

'क्या आपने खुद को देखा है, मेरी महिला? आप एक शक्तिशाली महिला हैं। आप दृढ़ निश्चयी और इतनी बुद्धिमान हैं कि जानती हैं कि कब बोलना है और कब चुप रहना है। आप दयालु हैं और आपने दुनिया को खुद पर हावी नहीं होने दिया। बल्कि, आप उस तरह की इंसान हैं जो यह सुनिश्चित करती हैं कि दुनिया कल से थोड़ी अधिक दयालु हो। यही एक अच्छे नेता की निशानी है।' वीरभद्र मुस्कुराए। 'और अब, हम यहाँ हैं। आप फिर से सक्रिय हो गई हैं, दुनिया में किसी काम के लिए निकली हैं—मुझे नहीं पता कि वह क्या है—लेकिन आप लड़ रही हैं और आपने हार नहीं मानी है।'

पार्वती ने सिर हिलाया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह यह सब सुन रही है। 'उम, धन्यवाद।'

क्या आप कभी यहाँ वापस आने के बारे में सोचते हैं?

'ज़रूरी नहीं।'

'तुम्हें ऐसा करना चाहिए। कम से कम इससे मुझे अपने कर्तव्य से मुक्ति मिल जाएगी। मैं सारी जिम्मेदारी तुम्हें सौंपना चाहता हूँ, लेकिन जब तुम तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें यह संदेश देने के लिए एक कौआ भेजने की योजना बना रहा था, लेकिन फिर मुझे पता नहीं चला कि उसे कहाँ भेजना है। तुम अपना सफर जारी रखो।'

पार्वती हल्की सी मुस्कुराईं। 'वीर, प्रस्ताव के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, लेकिन मैं चाहती हूं कि तुम शिव के सभी कर्तव्यों का निर्वाह करो। और चिंता मत करो। तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो।'

वीरभद्र ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया।

उन दोनों ने आग की लपटों को देखा, जो उस रात भयंकर नहीं लग रही थीं। वास्तव में, वे शांति का प्रतीक थीं।

मातृकाएं शिव के किले से निकलने के बाद से कुछ समय से यात्रा कर रही थीं। पार्वती ने एक लंबा और दांतेदार भाला प्राप्त कर लिया था। वह प्रतिदिन पीपल के पेड़ के तने पर भाला चलाने का अभ्यास करती थीं, ताकि उस पर उनकी पकड़ मजबूत हो सके।

हालांकि, घर वापसी का उनका सफर इतना आसान नहीं था। खासकर तब जब उन्हें उस पत्र और उसमें लिखी बातों के बारे में पता चला...

उन सभी ने पहले आपस में पत्र की विषयवस्तु पर विचार-विमर्श किया और फिर एक-दूसरे से बात की। वे अभी पार्वती से अपने विचार साझा नहीं करना चाहते थे, लेकिन पार्वती जानती थीं कि कुछ तो गड़बड़ है।

एक दिन, जब वे दोपहर का भोजन कर रही थीं, तब मातृकाएं पार्वती के पास आईं।

'महिलाएं बात कर रही हैं,' ब्राह्मणी ने कहा।

पार्वती मशरूम का सूप पी रही थी। 'और यह किस बारे में होगा?'

उनका मानना है कि हमें अंधका को नहीं मारना चाहिए। हमें उसे सुधारने की कोशिश करनी चाहिए।

पार्वती की भौंहें तन गईं। 'क्या तुम मज़ाक कर रहे हो? क्या तुम भूल गए कि उसने हमारे ही एक आदमी को मार डाला? उसने मेरे पति को मार डाला। वह आदमी...' वह रुक गई, यह महसूस करते हुए कि उसे इतनी उग्रता से अपना बचाव करने की ज़रूरत नहीं है। 'ये सब बातें कहाँ से आ रही हैं?'

'यह सच है कि वह स्कंद हैं। हिरण्यक्ष भी इस बात पर विश्वास करता था,' ब्राह्मणी ने सहज भाव से कहा। 'मैं भी यही मानती हूँ। उनका जन्म आपकी कोख से हुआ था।'

पार्वती ने अपने जबड़े भींच लिए। 'मुझे पता है कि हालात हमारे खिलाफ हैं, लेकिन वह स्कंद की तरह व्यवहार नहीं करता। मुझे नहीं लगता कि हमें उसे बख्शना चाहिए। उसे बचाना नामुमकिन है, और मुझे इसकी परवाह भी नहीं है।'

'वह तुम्हारा बेटा है,' ब्राह्मणी ने आगे कहा।

पार्वती मुस्कुराईं। 'अगर वह मेरा बेटा होता, तो वह हमें वैतरली के हवाले नहीं करता। वह हमें दिखाता कि उसके अंदर अभी भी कुछ दया और मानवता बची है।'

'उसे बचाया जा सकता है। हम उसकी मदद करेंगे। हम उसकी मां बनेंगे। चलो उसे एक मौका देते हैं।'

पार्वती ने सिर हिलाया। 'मुझे खेद है, लेकिन यह संभव नहीं है। उसे मरना ही होगा। मैं यह सुनिश्चित करूंगी।'

ब्राह्मणी की नाक के नथुने फूल गए। 'जब हम सब जगह घूमे, तो मैंने आपकी आज्ञा मानी, जब आपने चाहा, तो मैं कूदी और लड़ी। आपके आने तक मैंने हमारी टीम का नेतृत्व किया, आपको

कमान सौंप दी क्योंकि मैंने आपको अपना नेता मान लिया था, लेकिन आप तानाशाह की तरह अपने विपरीत सभी विचारों को यूं ही खारिज नहीं कर सकते। आपको यह समझना होगा कि अन्य दृष्टिकोण भी होते हैं जिनका सम्मान किया जाना चाहिए।'

पार्वती ने कुछ नहीं कहा। वह शांति से अपना दोपहर का भोजन करने लगीं, ब्राह्मणी को नज़रअंदाज़ करते हुए, जो नाराज़ होकर चली गई। पार्वती को वह दिन याद आया जब उन्हें वे पुस्तकें मिली थीं जिन्हें उनके गुरु ने छिपाने की कोशिश की थी। उन्होंने उनमें नाम देखे थे। वे ऐसे लोगों के नाम थे जिनके अस्तित्व के बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। और इसीलिए पार्वती जानती थीं कि अंधक, स्कंद नहीं था, क्योंकि उन्हें याद था। पार्वती और उनकी टीम से पहले भी मातृकाएँ थीं। वह जानती थीं कि महिलाओं का एक समूह था जिन्होंने गुरु के मार्गदर्शन में युद्ध और प्रशिक्षण लिया था, लेकिन स्थानीय राजा ने उन्हें प्रोत्साहित नहीं किया था।

पार्वती ब्राह्मणी को यह बात बताना चाहती थी, लेकिन वह निश्चित नहीं थी। एक नाम उसके मन में बसा हुआ था। एक ऐसा नाम जिसे वह याद करने का भ्रम पाल रही थी।

सच कहूँ तो, उसे कभी पक्का यकीन नहीं था कि उस नाम का कोई व्यक्ति सच में मौजूद भी है या नहीं। और अगर था भी, तो वह जानती थी कि असली स्कंदा कौन है।

एक परिषद बैठक आयोजित की गई।

नरसिम्हा उस लंबी मेज के शीर्ष पर बैठे थे, जहाँ से उस चबूतरे का नजारा दिखता था जिस पर सहयोगी राज्यों के सभी मंत्री, रईस और राजकुमार बैठे थे। उन्हें नगर भवन में एक बैठक के लिए बुलाया गया था, लेकिन उन्हें बैठक का उद्देश्य नहीं बताया गया था। नरसिम्हा असाधारण रूप से मौन थे।

सभी चिंतित थे। नारा उनके चेहरों पर चिंता देख सकता था, लेकिन फिर भी वह चुप रहा। वाशकल चबूतरे पर चढ़कर आगे आया। कानाफूसी जारी रही।

अंततः, हॉल के दरवाजे बंद कर दिए गए। सब लोग चुप हो गए और एक-दूसरे को देखने लगे।

'आप सभी के आने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद,' वाशकल ने बोलना शुरू किया। 'जब से भगवान नरसिम्हा ने हिरण्यकश्यप के बाद सत्ता संभाली है, हम लगातार युद्ध जीत रहे हैं। राज्य की शक्ति लगातार बढ़ रही है। हमारी अर्थव्यवस्था भी सुधर रही है। जल्द ही इल्लावर्ती भी हमारी होगी —अमरावती में इंद्र के विरुद्ध हमारा अभियान जारी रहेगा। हमें मिली नवीनतम जानकारी के अनुसार, इंद्र समुद्र की ओर जा रहे हैं। आप सोच सकते हैं कि क्यों। शायद वे हमसे डरते हैं। हमारी सेना वहाँ उनके सैनिकों पर हमला करेगी।'

वाशकल बोलते रहे, उनकी आवाज़ में धमकी भरा लहजा आ गया। "वैसे, हम एक अजीब स्थिति में हैं। मेरा मानना है कि आपमें से बहुत से लोग नरसिम्हा के विरोधी हैं, उनके शासन की आलोचना करते हैं। मेरा मानना है कि हम इस मंच का उपयोग इस विषय पर चर्चा करने के लिए कर सकते हैं। भगवान नरसिम्हा, जो एक दयालु राजा हैं, आपकी दुर्दशा और आपके दृष्टिकोण को सुनना चाहते हैं। वे यह जानना चाहते हैं कि साम्राज्य के विकास को सुनिश्चित करने के लिए आपके क्या विचार हैं। बेहतर होगा कि आप अपने प्रश्न और कथन हमें दें, ताकि भगवान नरसिम्हा उनका

उत्तर दे सकें।"

कोई खड़ा नहीं हुआ। चारों ओर सन्नाटा छा गया।

नरसिम्हा ने बोलना शुरू किया। 'कृपया संकोच न करें। जिसे भी लगता है कि मैं बेहतर कर सकता हूँ, वह आगे आए। मुझे सभी चिंताओं और सवालों का जवाब देने में खुशी होगी।'

दर्शक दीर्घा में बैठे लोग असमंजस में इधर-उधर देखने लगे। क्या यह सब सचमुच हो रहा था? क्या राजा वाकई उनकी बात सुनना चाहते थे?

फिर भी, कोई खड़ा नहीं हुआ।

नारा ने कागज का एक टुकड़ा उठाया। 'मेरा मानना है कि मेरे पास उन लोगों के नाम हैं जो मेरे खिलाफ थे जब दिवंगत हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रहलाद मुझसे सत्ता छीनना चाहते थे। मेरे पास सूची है, इसलिए बेहतर होगा कि वे मेरे पीठ पीछे साजिश रचने के बजाय सीधे मुझसे बात करें। यह हम दोनों के लिए अच्छा होगा... क्योंकि अगर मैं सूची से नाम लेना शुरू कर दूं, तो यह ठीक नहीं होगा।'

दर्शकों के बीच हल्की फुसफुसाहट फैल गई।

नारा इंतज़ार करता रहा। उसने काफी देर तक इंतज़ार किया, यहाँ जो कायरतापूर्ण कृत्य की योजना बनाई जा रही थी, उसके बारे में सोचते-सोचते उसका दिमाग चकराने लगा। 'ठीक है, मैं नामों से शुरू करता हूँ। जब मैं नाम पुकारूँ, तो खड़े हो जाना।'

नारा ने बात शुरू की। उसने पहला नाम लिया।

एक व्यक्ति विनम्रता से खड़ा हुआ। वह पूर्व का एक साहूकार था, एक असुर, जो चुपचाप खड़ा रहा। इससे पहले कि वह कुछ समझा पाता, एक तीर उसके सिर में जा लगा। वह ज़मीन पर गिर पड़ा।

अब कोई फुसफुसाहट नहीं थी। सभी लोग खड़े हो गए और पहरेदारों ने उन्हें घेर लिया, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी बाहर न जा सके। द्वार पहले ही बंद कर दिए गए थे।

"जिन्होंने मेरा समर्थन किया, चिंता न करें। आपके नाम नहीं पुकारे जाएँगे। जिन्होंने नहीं किया, वे अब खड़े हो जाएँ।" नारा ने देखा कि कई लोग बैठ गए हैं। उसने उन्हें झूठ बोलने के परिणाम याद दिलाए।

सभी को अपनी सुरक्षा का डर सता रहा था। कुछ तो सिसक भी रहे थे।

नरसिम्हा ने एक और नाम पुकारा। और फिर एक और। नरसिम्हा के हाथों में जो सूची थी, वह वाशकल द्वारा संकलित की गई थी और उसमें उनके कुछ वफादार मंत्रियों के नाम भी शामिल थे।

जैसे ही नाम पुकारे गए, पुरुष खड़े हो गए और तीरों का शिकार हो गए। जब तक नारा ने सूची के अंत तक पढ़ा, तब तक ज़मीन पर बीस शव पड़े थे।

'क्या कोई और बोलना चाहता है? अब आपका मौका है। मैं आपको माफ कर दूंगा।'

इस बार पांच लोग खड़े हुए। ये वे लोग थे जो नारा की सभी नीतियों से सहमत नहीं थे।

'बहुत बढ़िया। मुझे खुशी है कि आपने खड़े होने का साहस दिखाया, भले ही आपके दोस्त यहीं मृत पड़े हों।' और फिर वह मुस्कुराया। 'मुझे विश्वास है कि आप उनके साथ खुश रहेंगे।'

एक पल के लिए सब लोग असमंजस में पड़ गए। लेकिन तभी अचानक कहीं से पांच तीर आए

और पांचों आदमी पल भर में गिर पड़े।

नारा ने अपने बाल बढ़ा लिए, जो उसने अब तक नहीं बढ़ाए थे। वह चबूतरे के किनारे तक चला गया, उसका शरीर विशाल था और उसकी उंगलियां बिजली से कांप रही थीं।

'जो लोग बच गए हैं, वे इस दिन को याद रखें,' नारा ने कहा। कई रईस और मंत्री रो रहे थे। उनमें से कुछ डर के मारे घुटनों के बल बैठकर उन्हें प्रणाम कर रहे थे। 'जो मेरे विरुद्ध जाएंगे वे नष्ट हो जाएंगे, और जो मेरे साथ खड़े रहेंगे वे सदा धनवान होते रहेंगे।'

श्रोतागण एक स्वर में बोले: 'भगवान नरसिम्हा! भगवान नरसिम्हा!'

नारा मुस्कुराया। उसने पहले कभी इतना शक्तिशाली महसूस नहीं किया था। यह एक लत जैसा था।

पार्वती सोने ही वाली थी कि मातृकाएँ उसके पास आ गईं। वे अभी तक कश्यपपुरी नहीं पहुँची थीं।

उन्होंने कहा, 'हम आपसे बात करना चाहेंगे।'

पार्वती ने आंखें घुमाईं। 'मुझे पता है कि यह किस बारे में है। कृपया मुझे परेशान मत करो। सो जाओ।'

चामुंडी ने बोलना शुरू किया, 'पार्वती, आपको यह समझना होगा कि हमारे पास भी यहाँ एक विकल्प है। मातृकाओं ने संहिता और अपने भाइयों से जो वादा किया है, उसके अनुसार हम स्कंद की हर हाल में मदद करेंगे। वह हमारा भी बच्चा है। उसकी रक्षा करना जरूरी है।'

'तुम नहीं समझती। यह उससे कहीं अधिक जटिल है,' पार्वती ने कहा। 'तुम्हें एक पागल आदमी की रक्षा करनी होगी।'

नरसिम्ही ने कहा, 'हम उसे सुधारने में मदद करेंगे। वह ठीक हो जाएगा। उसे बस पर्याप्त समय चाहिए।'

पार्वती नाराज़ होकर खड़ी हो गईं। उन्होंने देखा कि ब्राह्मणी पीछे चुपचाप खड़ी हैं। दूसरों को धक्का देते हुए आगे बढ़ते हुए उन्होंने कहा, 'अगर आपको कुछ कहना है तो मुझसे बात कीजिए। सबको प्रभावित मत कीजिए।'

ब्राह्मणी ने कहा, 'यह एकतरफा फैसला है।'

'हम अब तक मजबूती से आगे बढ़ रहे थे। आपने दूसरों को इसमें क्यों शामिल किया? आपने सब कुछ क्यों जटिल बना दिया? हमारा एक मिशन है... अंधका को मारना... और अब यह बदल रहा है।'

ब्राह्मणी ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'हमने तुम्हारे साथ सबसे बुरे हालात देखे हैं, और पार्वती, हम तुम्हारा साथ देते रहेंगे। लेकिन तुम्हें हमारी बात सुननी होगी। तुम हमें चुप नहीं करा सकतीं।'

'मैं सहमत हूँ,' पार्वती ने कहना शुरू किया।

बेहतर होगा कि उन्हें सच ही बता दिया जाए।

'चेनचेन के नृति के पास जाने के बाद, उसने मुझे उनकी बातचीत के बारे में बताया। नृति ने विशेष रूप से कहा कि स्कंद वह नहीं है जो तुम सोचती हो। वह कोई अप्रत्याशित व्यक्ति है, कोई ऐसा जो नायक बनकर उभरेगा। मुझे तब से संदेह है। मैं सोचती रही कि वह कौन हो सकता है। मैं

सोचती रही कि कहीं मैं कोई स्पष्ट बात तो नहीं भूल रही। मैं बार-बार अतीत में जाती रही, अपनी यादों में खोजती रही। और फिर मुझे याद आया। हमसे पहले एक और मातृका थी, जो असफल रही थी,' पार्वती ने आह भरते हुए कहा।

उन्होंने आगे कहा, 'आप जानते हैं कि हमसे पहले की मातृकाओं में असुर स्त्रियाँ और आदिवासी दोनों शामिल थीं। हमारे गुरु ने असुरों को उपदेश दिया। कुछ स्त्रियों ने उन पर विश्वास किया और उनके साथ जुड़ गईं। इसी समूह से कुछ को मातृकाओं के रूप में चुना गया।'

'इसका किसी भी बात से क्या लेना-देना है?' ब्राह्मणी ने पूछा।

आग जल रही थी, लकड़ियाँ चटक रही थीं।

पार्वती ने अपने होंठ सिकोड़े। 'उन राजसी असुर स्त्रियों में एक ऐसी स्त्री थी जिसके बारे में हम सबने सुना है, जो इस देश में हुए युद्धों की वजह थी, जिसे मातृका के रूप में चुना गया था लेकिन उसने देश छोड़ने का फैसला किया।' उसने अन्य मातृकाओं की ओर देखा। उसके आगे बोलने पर वे सब चौंक गईं।

'कयाधू,' पार्वती ने कहा। 'प्रह्लाद की माँ।'

अध्याय चौबीस

इंद्र अपनी सेना के साथ बंदरगाह पर पहुंच चुके थे।

उनके सामने कई लंबी नावें, व्यापारियों का बाज़ार और जाल लिए मछुआरे मौजूद थे। हवा में छोटी मछलियों की महक फैली हुई थी। सीपियाँ बिक रही थीं और ऑयस्टर पकाए जा रहे थे। मछुआरों ने राजा और उनकी सेना को देखा। उनमें से कुछ ने झुककर उनका स्वागत किया, जबकि कुछ मुँह फेर लिया। उन्हें इसकी उम्मीद थी, क्योंकि राजा के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करने और जहाजों को तैयार करने के लिए पहले ही जासूस बंदरगाह का दौरा कर चुके थे।

इंद्र को पता था कि कहाँ जाना है; उनकी बेटी के रेखाचित्र ने उस स्थान को इंगित कर दिया था। उन्हें काला सागर, जिसे अंधकारमय खाड़ी भी कहा जाता है, की ओर बढ़ना था। इंद्र बंदरगाह पर इंतज़ार कर रहे थे, खारे पानी की गंध और दूर से आती समुद्री चिड़ियों की तेज़ आवाज़ को महसूस कर रहे थे, तभी साची उनके पास आई। इंद्र ने तैयार हो रही लंबी नावों को देखा।

'आपने मुझे फोन किया था?' उसने पूछा।

कभी बेहद खूबसूरत रही, उसका अंडाकार चेहरा अब झुर्रियों और सिलवटों से ढका हुआ था। हालांकि इंद्र अब भी उसे सुंदर मानते थे, लेकिन उन्हें याद था कि पहली मुलाकात के समय वह कितनी आकर्षक थीं। फिर भी, उनकी आंखें अब भी सुनहरी चमकती थीं।

अब वह एक माँ थी। और, ज़ाहिर है, एक पत्नी भी। उसके चेहरे पर थकावट साफ़ झलक रही थी। इंद्र जानती थी कि अपने दो बच्चों को खोने के बाद दोनों भावनात्मक रूप से टूट चुकी थीं। जहाँ साची ने मौन रहकर अपना शोक व्यक्त किया था, वहीं इंद्र ने एक पौराणिक सर्प के पेट से एक ऋषि की अस्थियाँ लाने के लिए दुनिया के छोर तक यात्रा करने का फैसला किया था।

दोनों को ही नुकसान की भरपाई करनी पड़ी।

'मैं असमंजस में हूँ। मुझे नहीं पता कि मैं सही कर रही हूँ या नहीं। लोग खुश नहीं हैं,' इंद्र ने कहा। 'मुझे डर है कि अगर इस यात्रा से कुछ हासिल नहीं हुआ तो क्या होगा।'

साची ने कहा, 'आप अपनी बेटी की बात सुन रहे हैं। और याद रखिए कि वह बच्ची थी। मैं समझती हूं कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं, लेकिन आपको सबको यहां नहीं लाना चाहिए था। अमरावती इस समय असुरक्षित है। इस पर हमला हो सकता है।'

'क्या तुम्हें लगता है कि हमें वापस लौटना चाहिए?' इंद्र अभी भी यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि क्या साची इस यात्रा पर निकलने, अमरावती छोड़ने के लिए उन्हें मरा हुआ देखना चाहती होगी।

साची ने अपने कई वर्षों के पति की ओर देखा। वह उस आदमी को अच्छी तरह जानती थी। 'यह स्थिति मुझे बहुत पहले की किसी बात की याद दिलाती है। जब हम दोनों जवान थे और हमारी हड्डियाँ मजबूत थीं, लेकिन हमारे दिमाग भटक गए थे।'

'क्या?'

'नहुशा प्रकरण।'

वृत्र नामक नाग का सिर लोगों को दिखाया गया। सब लोग खुशी से झूम उठे। वृत्र का आतंक समाप्त हो गया था। इंद्र ने उसे अपने वज्र से मार डाला था। चारों ओर उल्लास का माहौल था।

लेकिन इंद्र नदी के किनारे खड़े थे, जो अंततः वृत्र के नियंत्रण से मुक्त हो गई थी। वे नदी को निहार रहे थे और ढलते सूरज की रोशनी में उन्होंने उसमें मोती देखे।

'क्या हुआ?' साची ने पूछा था। वह जवान, खुश और गर्भवती थी। वह अपने पति के करीब चली गई थी, यह समझ नहीं पा रही थी कि वह उदास क्यों है। 'तुम्हें क्या हुआ?' उसने पूछा था।

'मैं खुश नहीं हूं।'

'खैर, आपको होना ही चाहिए। आपने हमारे लोगों की जान बचाई।'

'हां, लेकिन मैंने एक बच्चे की हत्या भी की है।'

'आपका क्या मतलब है?'

'यह त्वस्त्र की संतान थी। उसने अपने हाथों से वृत्र की रचना की थी, और अब मैंने उसे मार डाला। जब उसने मुझे वज्र पर नियंत्रण दिया था, तब मैंने उसे अपमानित किया था। और अब मैंने उसे और भी अधिक अपमानित किया है। मैंने उसे मार डाला।' इंद्र ने निराशा में सिर हिलाया। 'क्योंकि मैं जानता था कि अगर मैंने उसे नहीं मारा, तो वह मुझ पर फिर से हमला करेगा। बार-बार। मैंने उसे मार डाला, जबकि मैं ऐसा नहीं करना चाहता था।'

लेकिन आपने यह अपने लोगों के लिए किया।

क्या अनेकों की खातिर एक की हत्या करना उचित है?

साची को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। इंद्र ने पीछे मुड़कर उत्साह से जश्न मना रहे लोगों को देखा।

इंद्र ने कहा था, 'मैं जा रही हूं।'

'आप कहां जा रहे हैं?'

'मुझें नहीं पता।'

'तुम्हारा क्या मतलब है? तुम यूं ही नहीं जा सकते।'

इंद्र ने उसकी बात नहीं सुनी। वह नदी में चला गया। 'मैं लौट आऊंगा, चिंता मत करो।'

'मैं गर्भवती हूँ। मैं जुड़वा बच्चों को जन्म देने वाली हूँ... आप यूँ ही नहीं कर सकते...'

लेकिन इंद्र जा चुका था।

उसके बाद साची कई महीनों तक अकेली रही। इंद्र की अनुपस्थिति में अमरावती को एक नए राजा की आवश्यकता थी। जबकि अन्य देवताओं के देश के अन्य भागों में मजबूत गढ़ थे, कई संतानों और कई यज्ञों से संपन्न युवा मानव राजा नहुष को अस्थायी शासक नियुक्त किया गया था। वह एक सुंदर पुरुष थे—लंबे और दुबले-पतले, छोटे बालों वाले।

लेकिन साची अब भी रानी थी। नहुषा ने उसका जीवन नरक बना दिया था। वह उसे ताने मारता, चिढ़ाता और उसके साथ छेड़छाड़ करता, इस बात की परवाह किए बिना कि वह किसी और पुरुष की पत्नी है।

दरअसल, एक बार जब उसने साची को घेर लिया था, तो साची को उसे यह याद दिलाने के लिए उसे मारना पड़ा था कि वह उसकी पत्नी नहीं है।

इंद्र ने साची को घूरकर देखा। वह वही कर रहा था जो वह पहले भी कर चुका था। यह एक नियमित प्रक्रिया थी।

‘तुम्हें पता है उसके बाद क्या हुआ,’ साची ने कहा। ‘ऐला वंश के नहुष को अमरावती का राजा बनाया गया, क्योंकि दूसरे देव राजा नहीं बन सकते। उसने समर्थन जुटाया, मुझ पर बुरी नज़र डाली और अत्याचारी की तरह व्यवहार किया। तुमने राज्य को अस्त-व्यस्त छोड़ दिया। अपने बच्चों के जन्म के बाद तीन महीने बाद तुम लौटीं। तुमने नहुष को गद्दी से हटा दिया, उसकी अधिकांश भूमि वापस ले ली और उसे इल्लावती छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।’

इंद्र को याद आ गया। वह पश्चाताप करने के लिए चले गए थे। वह कैलाश जाकर ध्यान करना चाहते थे ताकि सब कुछ भूल सकें।

अंत में उसने कहा, 'तुम सही कह रहे हो। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मैं यूं ही छोड़कर सबकी सुरक्षा को खतरे में नहीं डाल सकता। क्या तुम्हें लगता है कि यही वजह है कि कोई मुझे मारना चाहता है?'

'आप एक राजा हैं। इससे कहीं छोटी-छोटी बातों के लिए भी आपकी हत्या की जा सकती है।'

इंद्रा मुस्कुराई और साची को गले लगा लिया। 'शायद तुम सही कह रही हो। मैं भले ही पलायनवादी लगूं, लेकिन मैं तुम्हें बता रही हूं कि यह सब सच है। मुझे यकीन है कि हमें वहां कुछ न कुछ जरूर मिल जाएगा।'

'मुझे भी यही आशा है।'

क्या तुम मुझसे घृणा करते हो?

'किस लिए?'

‘जयंती के साथ जो हुआ उसके लिए।’

साची की भौंहें तन गईं, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

इंद्र ने कहा, 'मुझे लगता है कि उसकी मौत के बाद से हमारे बीच दूरियां बढ़ गई हैं। मुझे लगता है कि तुम उसकी मौत के लिए मुझे दोषी ठहरा रहे हो।'

साची ने आह भरी। 'तुम मुझसे क्या कहलवाना चाहते हो? क्या तुम मुझसे झूठ सुनना चाहते हो, या सच?'

मैं कभी नहीं चाहता था कि तुम मुझसे झूठ बोलो।

‘नहीं, यह सच नहीं है,’ साची ने सिर हिलाते हुए कहा। ‘जयंती की मौत तुम्हारे बदले की भावना के कारण हुई। तुम हमेशा से ही घृणित स्वभाव के रहे हो। तुमने बेवजह भी द्वेष पाले हैं। अगर कोई तुम्हें थप्पड़ मारे, तो तुम उसे अनदेखा नहीं करते या पलटकर थप्पड़ नहीं मारते। बल्कि, तुम उसे चाकू मार देते हो। मैं जिस आदमी से शादी कर रही थी, उसे जानती थी, लेकिन मुझे कभी नहीं पता था कि तुम्हारे इस रवैये की वजह से हमारे बच्चों को खतरे का सामना करना पड़ेगा। तुम्हें यह समझना होगा कि अगर कोई तुम्हें थप्पड़ मारे, तो पीछे हटना ठीक है। अगर वह फिर से हमला करे, तो थोड़ा और पीछे हट जाओ। याद रखो, बदला ठंडे दिमाग से ही लेना चाहिए। ऐसा ही होना चाहिए।’

इंद्र जानते थे कि साची उन्हें नुकसान पहुँचाने की कोशिश नहीं कर रही थी, फिर भी उन्हें अपराधबोध हो रहा था। उनकी बेटी की मृत्यु उनके बदले की भावना के कारण हुई थी। वे स्थिति को बेहतर ढंग से संभाल सकते थे। उन्हें चेनचेन और नरसिम्हा के बच्चे को नहीं मारना चाहिए था। वे नरसिम्हा से बात कर सकते थे, या वे द्वंद्वयुद्ध कर सकते थे। उनके पास इतने सारे विकल्प थे, इतने सारे तरीके थे जिनसे वे अपने किए को टाल सकते थे।

इंद्र को यह अहसास हो गया था कि उसकी यह यात्रा उसके विनाश का कारण बन सकती है। लेकिन यह जानते हुए भी वह आगे बढ़ गया।

अपनी पत्नी से बात करने के बाद, वह चीजों को एक अलग नजरिए से देखने लगा था। शायद सबको अपने साथ लाना उसकी गलती थी।

शायद उसे रुक जाना चाहिए।

या शायद…

अध्याय पच्चीस

हिरण्यपुर में प्रहलाद मुकदमे की तैयारी कर रहा था।

यह कोई ऐसी परीक्षा नहीं थी जो उसके भाग्य का फैसला करती, बल्कि ऐसी परीक्षा थी जिसमें विशालकाय सिर उसे घूर रहे होते और वह उन्हें जाने से रोकने की कोशिश कर रहा होता। उसने पहले ही मैताली को विदाई के तौर पर दिग्गजों के साथ एक सत्र देने के लिए मना लिया था, लेकिन उसे नहीं पता था कि प्रहलाद ने इससे भी बड़ी योजना बना रखी थी।

शांताराम ने भी ऐसा नहीं किया।

प्रहलाद इसे ऐसे ही रखना चाहता था। वह अलविदा कहना चाहता था, लेकिन साथ ही कुछ और भी कहना चाहता था। वह जानता था कि अगर शांताराम सभा में आया, तो वह उस पर हमला कर देगा, या शायद उसे जान से भी मार देगा। यह एक ऐसा जोखिम था जिसे प्रहलाद उठाने को तैयार था।

जैसे ही उसने अपनी शेरवानी के बटन बंद किए और पानी में अपनी परछाई देखी, धृति पीछे से आ गई।

'क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है?' उसने पूछा।

'मैं हूँ।'

'अगर वे सहमत नहीं हुए तो क्या होगा? नरसिम्हा तुम्हें दूसरा मौका नहीं देगा।'

'मुझे इसकी जरूरत नहीं है,' प्रहलाद ने कहा। 'मुझे पूरा यकीन है कि मैं इसे हम दोनों के लिए कारगर बना सकता हूँ। मैं नरसिम्हा के खिलाफ युद्ध करने के लिए तैयार हूँ।'

बिखरे बालों और सामान्य से अधिक गहरे रंग की आंखों वाले प्रहलाद गंभीर थे। वे चिंतित भी थे। वे नरसिम्हा के चेहरे पर फिर से निराशा का भाव नहीं देखना चाहते थे, लेकिन तभी उनकी नजर अपनी उंगली में पहनी अंगूठी पर पड़ी। वे यह सब सही कारणों से कर रहे थे; वे वही कर रहे थे जो भगवान विष्णु उनसे करवाना चाहते थे।

बरसात का दिन था। गढ़ के अंदर एक चबूतरा रखा गया था। यह गोलाकार था और इसकी छत आसमान की ओर खुलती थी। लेकिन बादलों के बजाय, प्रहलाद को केवल दैत्यों के सिर दिखाई दे रहे थे, बारिश और धुंध से उनके चेहरे ढके हुए थे और उनकी आँखें गुस्से से भरी हुई थीं। उनमें से किसी के भी हिलने-डुलने से चबूतरा कांप उठता था।

किले के अंदर, जहाँ दीप जल रहे थे, उस अंधेरे में अन्य लोग भी मौजूद थे—सैनिक, मैताली, धृति, शांताराम और नारायण। वे सभी प्रहलाद के भाषण शुरू होने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

धृति सावधानी से शांताराम के पीछे खड़ी थी।

मैताली चबूतरे पर चढ़ी और ऊपर देखा। बारिश की बूँदें उसके चेहरे पर पड़ रही थीं। 'आज हमारे साथ हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रहलाद है, जो मारा गया था। प्रहलाद कल की यात्रा शुरू करने से पहले हमें शुभकामनाएं देना चाहता है। वह विदाई लेने आया है।'

इससे पहले कि घबराया हुआ प्रहलाद (क्योंकि राक्षस डरावने थे) आगे आकर कुछ बोल पाता,

एक बुलंद आवाज ने पूछा, 'हमें उसकी बात क्यों सुननी चाहिए? उसने अपने ही वंश का उल्लंघन किया है।'

उस दैत्य की आवाज कक्षों के अंदर गूंज उठी, जिससे हर किसी की रीढ़ में भय का संचार हो गया।

'क्योंकि हम शक्ति की पूजा करते हैं। और उसने आज यहाँ आकर और इससे पहले अपने भटके हुए पिता का विरोध करके महान शक्ति का प्रदर्शन किया है।' मैताली की आवाज़ में थोड़ी सी गर्मजोशी थी।

दैत्यों की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। मैताली ने प्रहलाद को बोलने का संकेत देते हुए सिर हिलाया।

प्रहलाद ने दस्ताने पहने हुए थे। वह जानता था कि उसे सोच-समझकर बोलना होगा। 'आज मैं आपके समक्ष खड़ा हूँ, हे महानुभावों। मेरी नानी के अनुसार, आप दानव वंश को हमेशा से शक्ति का सच्चा उदाहरण माना गया है। आप मेरे पिता के कारण इलवर्ती में रुके रहे। आपने तुच्छ राजनीति की परवाह नहीं की। आपने मेरे पिता का अनुसरण किया क्योंकि वे एक अच्छे, एक बलवान व्यक्ति थे। और हाँ, यह सच है कि वे भटक गए थे और उन्हें रोकना आवश्यक था।'

दैत्यों ने आह भरी। प्रहलाद को वह आह बहुत तेज लगी।

'मैंने अपने पिता को अपनी आँखों के सामने मरने दिया, मैंने अपने वंश का उल्लंघन किया, जैसा कि आपने स्पष्ट रूप से कहा, क्योंकि वह भ्रष्ट हो गए थे। मैंने उनके स्थान पर एक देवता, नरसिम्हा को बिठाया। मुझे आशा थी कि ऐसी स्थिति दोबारा नहीं आएगी, लेकिन हालात बदल रहे हैं। हाल ही में मुझे सूचना मिली है कि नरसिम्हा ने अपने कई मंत्रियों को मार डाला है, वे मंत्री जिनके विचार उनसे भिन्न थे। वह विष्णु के अवतार हैं, लेकिन शायद वह यह बात भूल गए हैं। उन्हें हराने के लिए मुझे किसी ऐसे ही शक्तिशाली व्यक्ति की आवश्यकता है।'

'तुम क्या कर रहे हो?' शांताराम ने जोर से पूछा।

प्रहलाद ने उसकी बात अनसुनी कर दी। बारिश में भीगते हुए वह ज़ोर से चिल्लाया, 'मैं तुम्हें इस राक्षस से छुटकारा दिलाने में मदद करने के लिए आमंत्रित करता हूँ। मैं तुम्हें उससे लड़ने के लिए आमंत्रित करता हूँ। मैं उसे अकेले नहीं हरा सकता; मुझे हर संभव मदद की ज़रूरत है। मुझे शांति बहाल करनी है और स्वर्ण युग को वापस लाना है।'

राक्षस शांत थे, लेकिन शांताराम ने अपनी तलवार उठाई और प्रहलाद की ओर बढ़ने लगे। धृति ने उन्हें रोका और चाकू निकाला, लेकिन शांताराम ने उसे धक्का देकर दूर कर दिया। शांताराम और उनके सैनिक चबूतरे पर चढ़ गए।

'मैंने तुमसे कहा था कि मज़ाक मत करो,' शांताराम ने प्रहलाद से कहा।

प्रहलाद मैताली को घूर रहा था, जो यह समझने की कोशिश कर रही थी कि क्या हो रहा है, लेकिन शांताराम के सैनिकों ने उसे घेर लिया था।

'तुमने कर दिखाया। तुमने उसकी अवहेलना की। मुझे स्पष्ट निर्देश दिए गए थे—देखते ही मार देना।' शांताराम ने मुस्कुराते हुए अपनी तलवार उठाई।

प्रहलाद ने अपने शरीर में छिपाई हुई तलवार से उसे रोक दिया। ऊपर गरजते तूफान के और भी

घना होने और बिजली कड़कने के साथ ही दोनों ने एक-दूसरे पर वार किए और प्रहार करते रहे। राक्षसों की आँखें और भी गुस्से से भर उठीं।

'तुम मुझे रोक नहीं सकते। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि उसे गद्दी से हटा दिया जाए,' प्रहलाद ने शांताराम से कहा।

'तुम एक मूर्ख हो। और मूर्खों को जीने का दूसरा मौका पाने का कोई हक नहीं होता।'

प्रहलाद ने धृति की ओर देखा, जो अकेले ही सैनिकों के एक समूह से लड़ रही थी, जबकि मैताली को पकड़कर जमीन पर धकेल दिया गया था।

'यह अत्याचार है, शांताराम। तुम एक अच्छे इंसान हो और मैं तुम्हें चोट नहीं पहुंचाना चाहता।'

'द्वंद्वयुद्ध में कोई अच्छा या बुरा आदमी नहीं होता। बस एक दुश्मन होता है। तुम मेरे दुश्मन हो।'

उनकी तलवारें आपस में टकराईं। फिर शांताराम ने प्रहलाद के पेट में लात मारी, जिससे वह गिर पड़ा। प्रहलाद ने गहरी सांस ली।

'तुम हारने वाले हो, नौसिखिए। तुम्हारा खेल खत्म हो गया है,' शांताराम ने कहा।

जब उसने अपनी तलवार प्रहलाद की ओर तान रखी थी, तभी उन पर एक साया छा गया। प्रहलाद और शांताराम दोनों ने ऊपर देखा। एक विशाल हाथ ने चीखते हुए शांताराम को पकड़ा, उसे ऊपर उठाया और फिर चींटी की तरह एक तरफ फेंक दिया।

एक दैत्य प्रहलाद की मदद के लिए आया था।

प्रहलाद सदमे में अपने आसपास हो रही घटनाओं को देखता रहा।

'हमारे गुरु को छोड़ दो, वरना हमारे प्रकोप का सामना करना पड़ेगा,' एक दैत्य ने गरजते हुए कहा। शांताराम के सैनिक धृति और मैताली से दूर हट गए।

उस विशालकाय व्यक्ति ने आगे कहा, 'बातचीत के दौरान हमें ध्यान भटकाना बिल्कुल पसंद नहीं है।'

प्रहलाद को यह बात लगभग हास्यास्पद लगी। उसने मुस्कुराते हुए आकाश की ओर देखा।

'हां, जारी रखो, लड़के। हमें कश्यपपुरी पर हमला क्यों करना चाहिए?'

प्रहलाद ने घबराकर निगलते हुए कहा, 'क्योंकि यही सही काम है।'

इसके जवाब में एक हल्की सी हंसी सुनाई दी, जो उपहास जैसी लग रही थी।

'अगर हम आपकी मदद करें तो हमें क्या लाभ होगा? जब से हमने इलवार्टी में लड़ाई लड़ी है, तब से हमें केवल उत्पीड़न और खराब मौसम का सामना करना पड़ा है। हम शांति चाहते हैं, और आप हमसे लड़ने को कह रहे हैं। हम जीत तो सकते हैं, लेकिन अंत में हम यही सोचेंगे कि इसका क्या मतलब था। इलवार्टी पर विजय प्राप्त करना कभी हमारा सपना नहीं था। यह आपके पिता और चाचा का सपना था, और अब यह आपका है। हमने आपके बड़ों की बात सुनी क्योंकि वे शक्ति का प्रतीक थे, लेकिन अब हम आपसे पूछते हैं—इसका क्या मतलब है?'

प्रहलाद के पास देने के लिए कुछ नहीं था। वह उन्हें विश्व प्रभुत्व के विचार नहीं दे सकता था क्योंकि वह स्वयं विश्व प्रभुत्व में विश्वास नहीं रखता था। वह उन्हें संसाधन भी नहीं दे सकता था क्योंकि उनके पास सब कुछ था। आख़िरकार, वे कपड़ों के नाम पर लंगोटी पहनते थे। प्रहलाद जानता था कि उसके पास उन्हें जवाब देने के लिए पर्याप्त समय नहीं है, लेकिन उसके पास कहने

के लिए कुछ था ही नहीं।

अंत में, उसने बोलना शुरू किया। 'मैं तुम्हारे पास इसलिए आया हूँ क्योंकि हमारा खून एक ही है। इसके बाद तुम जा सकते हो, यह जानकर कि तुमने एक ऐसे व्यक्ति की मदद की है जिसकी रगों में वही खून बहता है,' प्रहलाद ने कहा। 'मैं चाहता हूँ कि यह देश तरक्की करे, लेकिन अभी यह विनाश की ओर अग्रसर है। यह हिंसा की भूमि बन चुका है।'

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, फिर एक हल्की सी गूंज सुनाई देने लगी।

"हम तुम्हें शुभकामनाएं देते हैं, बेटा। लेकिन, दुर्भाग्य से, हमें इसमें कोई फायदा नहीं दिखता। हमने तुम्हारे पिता की मदद की और हमने अपने वंश को बचाने के लिए अपना फर्ज निभाया। हमारी प्रार्थनाएं तुम्हारे साथ हैं।"

धरती कांप उठी और गुस्से से भरी आंखें गायब हो गईं। प्रहलाद के सिर पर बस बादल छा गए। पराजित होकर वह घुटनों के बल गिर पड़ा और धीरे-धीरे रोने लगा। वह असफल हो गया था। वह उन्हें वापस बुलाना चाहता था।

सही काम करने के बारे में क्या? क्या कोई सुन भी रहा था!

'बस बहुत हो गया!' प्रहलाद चिल्लाया और हाथ में पकड़ा पीतल का प्याला फेंक दिया। 'मैं अब किसी मकसद के लिए लड़ना नहीं चाहता। किसी को सही बात की परवाह नहीं। हर कोई अपना फायदा चाहता है, लेकिन कोई मदद नहीं करना चाहता। पहले मैं मंत्रियों के पास गया, उन्होंने मना कर दिया। फिर मैं दैत्यों के पास गया, उन्होंने भी मना कर दिया। क्यों? क्योंकि वे सब स्वार्थी हैं। वे सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं। किसी को देश की परवाह नहीं, न ही धर्म की।' प्रहलाद की आँखों में आँसू आ गए।

धृति उसे दूर से देख रही थी। उसे उस पर तरस आ रहा था। वह उसके द्वारा ठुकराए जाने के बावजूद यथासंभव उसका साथ देने की कोशिश कर रही थी।

"अब तो मेरा पीछा किया जाएगा और मुझे सताया जाएगा। मेरे पास भागने और छिपने के अलावा कोई चारा नहीं होगा। मुझे कोई उम्मीद नहीं है। मैं क्या करूँ? एक देवता को कैसे मारा जा सकता है? नहीं मारा जा सकता। नहीं मारा जा सकता," प्रहलाद विलाप करते हुए खिड़की के पास खड़ा था और रेतीले शहर हिरण्यपुर को देख रहा था।

धृति ने कहा, 'हमें यहाँ से निकल जाना चाहिए। नरसिम्हा के लिए एक दूत पहले ही रवाना हो चुका है। वह जल्द ही यहाँ पहुँच जाएगा। अगर हम यहाँ रहे तो हमारा पीछा किया जाएगा। वैसे भी, भाड़े के सैनिक भेजे जाएँगे और हम पर राजद्रोह का आरोप लगाया जाएगा। हमें अभी भाग जाना चाहिए।'

प्रहलाद को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह खुद को फंसा हुआ महसूस कर रहा था।

धृति ने कहा, 'हम मैताली से पूछ सकते हैं कि क्या हम उसके साथ पाताल जा सकते हैं। यही सबसे अच्छा उपाय है। वह मान जाएगी। उसे मानना ही पड़ेगा।'

प्रहलाद ने सिर हिलाया। 'यह हमारे लिए सही जगह नहीं है। यह एक ठंडा द्वीप है जहाँ आसमान पानी से भी ज़्यादा काला है। मैं बहुत लंबे समय से दूसरों पर निर्भर रहा हूँ। मुझे खुद कुछ करना

चाहिए था।'

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। धृति ने दरवाजा खोला, उसे लगा कि मैताली होगी। लेकिन प्रहलाद को आश्चर्य हुआ, क्योंकि वहाँ नारायण थे।

'नारायण, तुम यहाँ कैसे आए?'

'मैं आपसे बात करना चाहता हूँ, भगवान प्रहलाद। अगर ठीक हो तो, अकेले में।'

प्रहलाद ने सिर हिलाया और कमरे से बाहर निकल गया, धृति का चिंतित चेहरा उसकी नजरों से ओझल नहीं हुआ। वह जानता था कि धृति उसकी पीड़ा को समझती है।

'जी हां, क्या हुआ?' प्रहलाद ने नारायण से पूछा।

'माननीय न्यायाधीश महोदय, मैं आपकी दृढ़ इच्छाशक्ति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।'

'धन्यवाद।'

मुझे नहीं पता इससे कोई फायदा होगा या नहीं, लेकिन यह शुरू से ही गलत कदम था। दिग्गज पहले से कहीं ज्यादा आलसी हो गए हैं। आपको खुद ही मामले को अपने हाथ में लेना होगा।

काश मैं कर पाता। क्या यह बातचीत मेरी गलतियों के बारे में होने वाली है?

नारायण ने घबराकर हल्की सी हंसी हंसते हुए कहा, 'नहीं, यह आपकी मदद के लिए है, महाराज।'

और यह कैसे?

मुझे नहीं पता कि यह कितना सच है, लेकिन अगर यह सच है, तो इससे आपको फायदा हो सकता है। चूंकि मैं आपकी सेवा में हूँ, इसलिए मुझे आपको यह बताना चाहिए कि मैंने उत्तर के कुछ व्यापारियों को यह कहते हुए सुना है। उनका दावा है कि उन्होंने शिव के किले की भूमिगत गुफाओं की रक्षा करने वाले सैनिकों से सुना है कि उन्होंने शरभ तलवार देखी है।

'वह क्या है?'

"ओह, मुझे लगता है कि आपको इतिहास में कोई दिलचस्पी नहीं है। यह तलवार शिव की रीढ़ की हड्डी से बनी है, और ऐसा माना जाता है कि यह एकमात्र ऐसा हथियार है जो विष्णु के अवतार को मार सकता है। मुझे नहीं पता कि यह कितना सच है, या यह वास्तव में मौजूद भी है या नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि अगर आप वाकई अपनी कही बात पर विश्वास करते हैं, तो आपको इस जानकारी पर भी विश्वास होगा। यह बात तब तक गुप्त थी जब तक आपके पिता, जिन्हें तलवार के बारे में पता था, ने इसके बारे में सबको नहीं बताया। वे इस पर मजाक भी करते थे।"

'वह इस पर विश्वास क्यों नहीं करता था?'

'हे प्रभु, वह त्रिमूर्ति में मेरी तरह विश्वास नहीं करते थे।' नारायण की नज़र प्रहलाद की उंगली में पहनी अंगूठी पर पड़ी। 'आप भी करते हैं। अगर आपको विश्वास है, तो आप अपनी खोज पूरी करने का प्रयास कर सकते हैं। मुझे आशा है कि तलवार आपकी मदद करेगी।'

प्रहलाद समय में पीछे जाना चाहता था, अपने पिता के अध्ययन कक्ष में जाकर ऐसी कोई डायरी ढूंढना चाहता था जिसमें उन्होंने तलवार के बारे में लिखा हो। लेकिन प्रहलाद ने सोचा कि अगर उन्होंने तलवार का उपहास किया होता, तो उसके बारे में लिखा ही न होता।

'धन्यवाद,' प्रहलाद ने कहा। 'बहुत-बहुत धन्यवाद।'

उसे नहीं पता था कि यह तलवार मौजूद भी है या नहीं, या यह काम करेगी भी या नहीं। लेकिन वह जानता था कि पाताल जाने से बेहतर है इसे ढूंढने की कोशिश करना।

अध्याय छब्बीस

लगभग दो सप्ताह बीत चुके थे। नरसिम्हा के सपने बेहतर हो गए थे।

उसने अपना सारा समय अमरावती पर हमले की योजना बनाने में बिताया था। उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि इंद्र कहाँ है या उसकी क्या योजना है। क्या वह सचमुच चला गया था? क्या वह सचमुच भाग निकला था? नारा ने जासूस भेजे थे, लेकिन वे अभी तक नहीं लौटे थे।

नारा चिंतित था। वह इंद्र को मारना चाहता था। वह उसकी आँखों को हमेशा के लिए बंद होते देखना चाहता था, लेकिन उसे यकीन नहीं था कि वह ऐसा कर पाएगा।

पूरा शहर भय से व्याकुल था। अन्य जागीरों के सरदार मदद मांगने, गठबंधन करने और उसे सोना और अपनी बेटियाँ देने के लिए उसके पास आए थे। लेकिन उसने यह सब ठुकरा दिया था। उसे केवल वफादारी चाहिए थी।

नारा ने सोचा, शायद यह वाशकल का ही काम था। उसे वाशकल का शुक्रिया अदा करना चाहिए और उसके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

जब नारा को यह खबर मिली तब वह युद्ध कक्ष में था। उसने शराब पीना छोड़ने का फैसला किया था।

मैंने फैसला कर लिया है। इसके बाद मैं खेतों में रहूँगा। इंद्र के मरने के बाद... या शायद मैं राज करूँ। मुझे राज करना आता है।

वह अपने विचारों में डूबा हुआ था कि तभी दरवाजा ज़ोर से खुला और वाशकल बिना बताए अंदर आ गया। उसके हाथ में एक कागज़ था, किसी प्रकार का स्क्रॉल।

'ओह, यह सुनकर आपको बहुत अच्छा लगेगा। मैं आपसे कह रहा हूँ, आपको दूसरों के साथ दयालुता के बजाय क्रूरता से पेश आना शुरू कर देना चाहिए।'

'क्या हुआ?'

वाशकल ने वह पांडुलिपि नारा को सौंप दी। उसे पढ़ने के बाद नारा चुप हो गया। उसे गुस्सा आना चाहिए था, लेकिन उसे इसकी उम्मीद थी।

'प्रह्लाद ने मुझे फिर धोखा दिया।'

'हमें क्या करना चाहिए? क्या उसे किसी दूर देश में निर्वासित कर देना चाहिए?'

'अच्छा, तुमने ही तो मुझे उसे न मारने के लिए कहा था।'

'मैं गलत था!' वाशकल ने गुस्से में थूकते हुए कहा। 'सिर्फ इसलिए कि तुम उस लड़के के करीब थे, वरना मैं उसे जिंदा जलाने का कोई न कोई तरीका ढूंढ लेता।'

'शांत हो जाओ,' नारा ने कहा। 'मेरी एक मदद करो। अपने सबसे अच्छे सैनिकों को हिरण्यपुर भेजो और उसे मरवा दो। लाश को यहाँ मत लाना।'

'अरे वाह! तो आप ऐसा करने के लिए तैयार हैं?'

'वह मेरी योजनाओं के लिए खतरा है और मैंने उसे काफी मौके दिए हैं। उसने उन मौकों की कद्र नहीं की, इसलिए उसे खत्म करना ही बेहतर है,' नारा ने बेपरवाही से कहा।

मुझे खुशी है। और मैं आपके आदेशानुसार कार्य करूंगा। लेकिन प्रहलाद हिरण्यपुर में नहीं है।

कोई नहीं जानता कि वह कहाँ है।

लेकिन वे विशालकाय लोग... शायद वह उनके साथ ही चला गया होगा।

'यह तो समझदारी भरा कदम होगा। प्रहलाद की तो बात ही अलग है।' वाशकल हँस पड़ा। 'चिंता मत करो। मैं सबको बता दूँगा—जो भी मुझे उसका सिर लाकर देगा, उसे एक लाख सिक्के मिलेंगे। वह अब हद से ज़्यादा मुसीबत बन गया है। और यह इनाम मैं अपनी जेब से दूँगा, सरकारी खजाने से नहीं।'

'आपकी ओर से बहुत उदारता।'

नारा प्रहलाद को मारना नहीं चाहता था। उसे तो बस इंद्र का सिर चाहिए था। उसने कहा, 'हमें अमरावती पर ध्यान देना चाहिए।'

'सेना तैयार है। हमारे पास युद्ध में शामिल होने के लिए पचास प्रतिशत अधिक लोग तैयार हैं। जाहिर है,' वाशकल ने शराबखाने की ओर जाते हुए और दो प्याले भरते हुए कहा, 'एक सम्मानित राजा के रूप में आपके पिछले कार्यकाल ने सभी को आपका अंधाधुंध अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया।'

मुझे अब भी लगता है कि यह बहुत ज्यादा था, लेकिन शायद यह जरूरी था।

'उन्हें तुमसे डरना चाहिए।' वाशकल ने मुट्ठी कसते हुए प्याला नारा को दिया। 'लो। आखिरकार कड़े फैसले लेने की हमारी जीत पर खुशी मनाओ।'

मैं इस आदत को छोड़ रहा हूँ।

वाशकल का चेहरा पीला पड़ गया। 'यह तो बड़ी परेशानी और शर्म की बात है। मुझे लगा था कि हम दोस्त हैं। पुरानी यादों के लिए, बस एक आखिरी ड्रिंक पी लो।'

'केवल एक।'

'इस अवसर के लिए केवल एक ही की आवश्यकता है।'

'आखिर यह अवसर है क्या?'

मुझे लगता है मैंने आपको अपने बारे में ज़्यादा कुछ नहीं बताया है। दरअसल, मैं किसी संपन्न परिवार से नहीं हूँ। हम असुर थे, लेकिन गरीब थे। मैंने पुस्तकालयों और मार्गदर्शकों से ज्ञान प्राप्त किया। लेकिन, अपने नारंगी बालों और अजीब चेहरे की वजह से मुझे बहुत उपहास का सामना करना पड़ा। मुझे बहुत तंग किया जाता था। मैंने सड़कों पर बहुत कुछ सीखा, खासकर इंसानी व्यवहार के बारे में, लेकिन वह कभी भी पर्याप्त नहीं था। मैंने राजकोष और विभिन्न राजनीतिक विभागों में काम किया, लेकिन मैं हमेशा गुमनाम ही रहा। और मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी। जानते हैं उसके बाद क्या हुआ?

नारा ने एक घूंट लिया। पेय का स्वाद खुरदुरा और धातु जैसा था, लेकिन उसने उसे पी लिया। 'क्या?'

'मेरी मुलाकात एक आदमी से हुई। एक प्रतिभाशाली व्यक्ति। एक दूरदर्शी। उसने मेरी मदद की। वह मेरा हीरो था। जब बदमाश मुझे परेशान करते थे, तो वह आकर उन्हें सबक सिखाता था। मैं उस आदमी को अपना आदर्श मानता था। इसी बीच, मुझे उन ज़हरों में दिलचस्पी पैदा हो गई जो उन फूलों और लताओं से बनाए जाते थे जिन्हें लोगों ने ठुकरा दिया था, उन्हीं लोगों ने जिन्होंने मुझे

ठुकराया था।' वाशकल ने सिर हिलाया। 'और फिर एक दिन मेरा हीरो चला गया। हम चिट्ठियों के ज़रिए बात करते रहे और तब तक संपर्क में रहे जब तक मुझे सच्चाई पता नहीं चल गई।'

'वह क्या है?'

'मैं हिरण्यकश्यप का पुत्र हूँ।' वाशकल मुस्कुराया।

नारा ने शराब पीना बंद कर दिया। 'क्या?'

"खैर, उसने मुझे गोद लिया था। मैं उसके सारे गंदे काम करता था, वो काम जो वो राजा होने के नाते नहीं कर सकता था। इसीलिए मैं हमेशा पर्दे के पीछे रहता था। जब वो खुद को महान और शक्तिशाली दिखाता था, मैं शहर में आतंक मचाने वाले चूहों से निपटता था। जब तुमने उसे मारा, मैं एक कूटनीतिक मिशन पर बाहर था। खबर सुनकर मैं फूट-फूटकर रोया, लेकिन मुझे पता था कि यह साम्राज्य और देश की भलाई के लिए था। उसे मारना ही था। आखिर, उससे भी ज्यादा ताकतवर और शक्तिशाली व्यक्ति ही उसकी हार का कारण बना था। और हम असुर, शक्ति की पूजा करते हैं, है ना?"

नारा को अपने जोड़ों में थोड़ी ढीलापन महसूस होने लगा। उसकी आँखें भारी-भारी लगने लगीं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके साथ क्या हो रहा है, लेकिन उसे बहुत दर्द हो रहा था।

क्या हो रहा है?

'मैंने तुम्हारा साथ इसलिए दिया था क्योंकि मुझे लगा था कि जब तक मेरा दोस्त पहले की तरह ही ताकतवर होकर तुम्हारी जगह नहीं ले लेता और शक्ति के सच्चे अर्थ का प्रतीक नहीं बन जाता, तब तक सर्वशक्तिमान व्यक्ति की नज़रों में अच्छा बने रहना ही सबसे अच्छा होगा। फिर सब लोग उसका अनुसरण करेंगे। लेकिन ऐसा करने में मेहनत लगती है। बहुत समय लगता है,' वाशकल ने मुस्कुराते हुए कहा।

नारा की प्याले पर पकड़ ढीली पड़ गई। प्याला ज़मीन पर गिरते ही उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। 'यह आदमी कौन है?' उसने किसी तरह पूछा।

'यह मैं ही हूँ। हम्म,' एक आवाज़ ने कहा।

'अंधका...'

नारा ने ध्यान नहीं दिया था, लेकिन कोई अंधेरे में खड़ा था। सिसकते हुए वह गिर पड़ा, हिलने-डुलने में असमर्थ। वह पलकें नहीं झपका पा रहा था और न ही अपना मुंह खोल पा रहा था। वह लकवाग्रस्त हो गया था। लेकिन वह देख, सूंघ और सुन सकता था। उसकी नज़र अंधेरे में एक आदमी को अंदर आते हुए देखने पर पड़ी। वह गंजा था, और उसकी छाती नंगी थी, जिससे उसका शरीर मजबूत और तगड़ा लग रहा था।

नारा ने उसकी आँखों पर ध्यान दिया—घोर काली आँखें, रात से भी अधिक काली। और उसकी मुस्कान एक द्वेषपूर्ण मुस्कान थी।

'हे नरसिम्हा, आपने जो सूची पढ़ी,' वाशकल ने कहा। 'उन सभी नामों में वे लोग थे जो मेरे विरोधी थे। मंत्रिमंडल और सहयोगी आपके प्रति वफादार थे। आपने मुझे उन लोगों को मृत्युदंड देने में मदद की जो मेरा विरोध कर सकते थे। अब आप जेल में सड़ेंगे, जबकि हम अपना उद्देश्य पूरा करेंगे। यदि आप अवतार न होते, तो आप मारे जाते।'

अंधका घुटनों के बल बैठ गया और नारा के बालों से खेलने लगा। 'आपसे मिलकर हमेशा अच्छा लगता है। हम्म। लेकिन इस बार मेरे साथ कोई नकली नहीं है। मैं अकेला हूँ। असली मैं। मुझे अब नकली की ज़रूरत नहीं है।' इतना कहकर अंधका ने नारा के भारी शरीर को उठाया और कमरे के दूसरी तरफ फेंक दिया। 'देखो कितना आसान है।'

नारा लकवाग्रस्त था, इसलिए उसे दर्द महसूस नहीं होता था। लेकिन उसे गुस्सा और आक्रोश महसूस होता था। हालांकि वह इस पर काबू पाने के लिए कुछ खास नहीं कर सकता था।

'याद है मैंने तुम्हें लकवे के बारे में बताया था... जी हाँ, यह एकोनाइट है। मैं इसे अपने बगीचे में उगाता हूँ। यह बहुत असरदार है। यह तुम्हें मारेगा तो नहीं, लेकिन तुम्हें ज़िंदा होने का एहसास भी नहीं होगा।' वाशकल ने ताली बजाकर पहरेदारों को बुलाया। 'कृपया इस बेचारे आदमी को मेरी नज़रों से दूर ले जाओ।'

उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने उसे बांहों से पकड़कर बाहर ले जाना शुरू किया, तभी अंधका ने उन्हें रोक दिया। वह नारा के पास गया और उसकी आंखों में आंखें डालकर देखा।

'यह अब अंधका नहीं रहा। हम्म,' उसने मुस्कुराते हुए कहा। 'यह स्कंद है।'

अध्याय सत्ताईस

अगर वो बृहस्पति नहीं होते, अगर वो साची नहीं होती...

इंद्र को पता था कि यह कौन है। यह स्पष्ट था। यह वही होना चाहिए था। इसके अलावा और कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था।

जहाज़ रवाना हो चुके थे और झंडों पर हाथी का चिन्ह शान से लहरा रहा था। इंद्र एक जहाज़ के पतवार पर खड़े होकर ऊपर देख रहे थे। बारिश लगातार हो रही थी और तूफान आने की आशंका थी। एक समय था जब वे इन शक्तियों को नियंत्रित कर सकते थे, लेकिन अब नहीं।

इंद्र खुद को शक्तिहीन महसूस कर रहा था। उसने झंडा हाथ में पकड़ रखा था। उसे एहसास हो रहा था कि वह कमजोर है। उसके हाथ कांप रहे थे। साची ने उसे कई बार डेक पर बुलाया था, लेकिन उसने मना कर दिया था। उसे खुले में रहना अच्छा लगता था।

'भाई!' इंद्र ने अपने पीछे से एक तेज़ आवाज़ सुनी। उसने आवाज़ पहचान ली। वह इस आदमी के बारे में सोच रहा था। 'अंदर आ जाओ। हवाएँ बहुत तेज़ हैं। मैंने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन वे और भी तेज़ होती जा रही हैं। अंदर आ जाओ। तुम्हारी पत्नी तुम्हें बुला रही है।'

इंद्र ने वायु की ओर मुड़कर देखा। वह एक सुंदर पुरुष था, उम्र में उनसे छोटा, जिसके बाल छोटे और घुंघराले थे। वह अग्नि जैसा बिल्कुल नहीं था, जो लोगों को विचलित कर सकता था। वायु ऐसा व्यक्ति था जो अपनी कुंठाओं को काबू में रखना जानता था।

और इंद्र के अनुसार, यही समस्या थी।

'यह तुम ही थे, है ना?' इंद्र ने पूछा।

'क्या?'

'यह तुमने किया। तुमने मेरी हत्या करने की कोशिश की।'

'क्या तुम पागल हो?' वायु ने उपहास उड़ाते हुए कहा। 'मैं ऐसा क्यों करूंगा?'

तूफान तेज हो गया था, जिससे जहाज हिलने लगा था। 'क्योंकि तुम मुझे कभी पसंद नहीं करते थे। तुमने मेरे फैसलों को कभी स्वीकार नहीं किया। तुमने कहा कि तुम करते हो, लेकिन तुम हमेशा मेरी पीठ पीछे मुझे कोसते थे। जरूरत पड़ने पर तुम मुझे चोट भी पहुंचा सकते थे।'

'यह सच नहीं है। मैंने हमेशा आपका सम्मान किया है।'

'ओह, क्या ऐसा है?' इंद्र ने अपनी भौहें उठाईं। 'मुझे उस दिन के बारे में पता है जब तुम हमारे पिता के पास गए थे।'

वायु के चेहरे के भाव बदल गए।

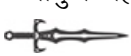

वायु को वह खाड़ी याद आ गई। बेहद खूबसूरत, अंधेरी लेकिन प्रकाशमान, जिसमें रंग-बिरंगी मछलियों से भरी एक संकरी धारा बह रही थी। कश्यप खाड़ी में पालथी मारकर बैठे ध्यान कर रहे थे। वे एक विशालकाय व्यक्ति थे, अधिकांश लोगों से लंबे। वास्तव में, वे लगभग एक दानव के समान थे। वे अपने बाल बांधे बैठे थे और उनके सिर पर पानी की एक छोटी सी धारा गिर रही थी, जिसकी उन्हें कोई परवाह नहीं थी। उनके चेहरे पर मुस्कान खिली हुई थी।

वायु तब जवान था। उसके चेहरे पर वैसी दाढ़ी नहीं थी जैसी अब थी। बल्कि, तब उसका चेहरा पूरी तरह से मुंडा हुआ था।

'इधर आओ, मेरे बच्चे। मैं तुम्हारी कैसे मदद कर सकता हूँ?' कश्यपा की आवाज गूंजी।

वायु अपने पिता से हमेशा डरता था। उनके भयावह रूप-रंग से युवा वायु भयभीत हो जाता था। 'पिताजी, मैं असमंजस में हूँ।'

'और तुम उलझन में दिख रहे हो,' कश्यपा ने आंखें खोले बिना ही कहा। 'तुम्हें किस बात ने परेशान कर दिया है?'

'अग्नि आग धारण करता है। वरुण जल धारण करता है। इंद्र वज्र और आकाश को धारण करता है। और मैं...' वायु ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं, 'मैं इस रक्तमय वायु को धारण करता हूँ। यह क्या है? मेरा मतलब है, इंद्र भी वायु को नियंत्रित कर सकता है।'

कश्यप ने आंखें बंद रखते हुए ही वायु के भ्रम को भांप लिया था। वायु हमेशा से ही खुद को इंद्र की परछाई समझता था, जिसके कारण वह असुरक्षित महसूस करता था।

मुझे कुछ और दिया जाना चाहिए था। कुछ और बेहतर।

'तुम यूं ही नहीं कर सकते...' कश्यप ने सिर हिलाया। 'मेरे पुत्र, तुम्हारे मन में ये विचार क्यों आ रहे हैं? तुम अपनी पूरी जवानी में व्यभिचारी रहे हो; तुमने स्त्रियों को अपने ऊपर हावी होने दिया है।'

वायु ने तिरस्कारपूर्वक हंसते हुए कहा, 'तुमने मुझे इंद्र समझ लिया है। वह तो ऐसा है जिसे अपने इरादों का कोई अंदाजा नहीं। वह लूटपाट करता है, वासना में डूबा रहता है और सब कुछ भूल जाता है। वह एक दोषपूर्ण इंसान है। और तुमने उसे राजा बना दिया। वास्तव में, तुमने बृहस्पति को इसलिए बुलाया ताकि वह राजा बन जाए। यह गलत है। वरुण भी उससे बेहतर विकल्प होता।'

'हाँ, उनमें कमियाँ हैं। लेकिन याद रखो कि समाज में जो गलत है, उसे वही सुधार सकता है जो अपनी कमियों को पहचान सके,' कश्यपा ने कहा। 'तुम उनकी छाया में जी रहे हो, और आगे भी ऐसे ही जीते रहोगे क्योंकि यही तुम्हारा भाग्य है। तुम्हारी बात कभी सुनी नहीं जाएगी, इसलिए नहीं कि तुम्हारे विचार अच्छे नहीं होंगे, बल्कि इसलिए कि तुम किसी ऐसे व्यक्ति का सामना नहीं कर पाओगे जो तुम्हारे विचारों पर अपने विचार रखने का साहस रखता हो, भले ही उसका इरादा बुरा ही क्यों न हो। अपनी शक्तियों के अभाव में रोने के बजाय, तुम्हें हवाओं को वश में करने और उन्हें अपने नियंत्रण में लाने पर काम करना चाहिए। लेकिन तुम इसके बजाय स्थिति के बारे में शिकायत कर रहे हो, क्योंकि तुम्हें लगता है कि तुम्हारे पिता कुछ नहीं कहेंगे।'

वायु स्तब्ध रह गया। कश्यप, जिसकी आँखें अब खुल चुकी थीं, ने स्पष्टवादिता दिखाई थी। वायु ने प्रणाम किया और खाड़ी से चला गया—इंद्र के प्रति उसका द्वेष और भी बढ़ गया था।

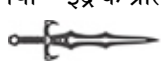

'हमारे पिता ने मुझे बताया था कि तुम मेरे खिलाफ हो गए थे,' इंद्र चिल्लाया, जब लहरें जहाज से टकरा रही थीं। 'मैंने कुछ नहीं कहा क्योंकि मुझे लगा कि तुम बदल जाओगे। लेकिन तुमने मेरी हत्या करने की कोशिश की? क्योंकि मैं तुम्हारे आदर्शों पर खरा नहीं उतरता? क्योंकि मैं वह नहीं करता जो तुम्हें सही लगता है?'

वायु चुपचाप इंद्र को देखता रहा। पानी उसके चेहरे पर ज़ोर से पड़ रहा था। 'मैंने ऐसा नहीं किया, भाई। और मुझे नहीं पता कि इसे साबित करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए। मैं भले ही आपकी छत्रछाया में रहा हूँ, और आपके कुछ फैसलों से सहमत न भी होऊँ, लेकिन मैं कभी किसी को आपको मारने के लिए नहीं भेजूँगा। अगर ज़रूरत पड़ी, तो मैं खुद ही कर लूँगा।'

'तुम तो हद से ज्यादा डरपोक हो।' इंद्र हंस पड़ी।

'तुम अपने पूरे राज्य को इस व्यर्थ खोज में यहाँ ले आए हो। तुम हमारे सिद्धांतों को ही नष्ट कर रहे हो। हम हार गए हैं, देवेंद्र! हम यह युद्ध हार गए हैं! संन्यासियों की तरह हमारे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। बाहर ऐसे बहुत शक्तिशाली लोग हैं जो हमें आसानी से हरा सकते हैं। तुमने ही हमें इस स्थिति तक पहुँचाया है। और अब, इस तूफान को देखकर, मुझे लगता है कि हम सब मर जाएँगे,' वायु चिल्लाया। 'यह सब इसलिए हुआ है क्योंकि तुम योग्य राजा नहीं हो।'

'अगर राजा बनना इतना आसान है, तो आप मेरी नजर से चीजों को देखने की कोशिश क्यों नहीं करते?'

मुझे पूरा यकीन है कि मैं बेहतर काम करूंगा।

तब तक साची और बृहस्पति सैनिकों के साथ बाहर आ चुके थे। साची ने सैनिकों को दोनों भाइयों के बीच आने का आदेश दिया, लेकिन इंद्र ने अपना हाथ उठा दिया। स्वाभाविक रूप से, सैनिकों ने इंद्र की बात मान ली।

'आप सही कह रहे हैं। मुझे नहीं पता मैं क्या कर रहा हूँ। मैं यहाँ सिर्फ इसलिए आया हूँ क्योंकि मुझे और कुछ सूझ नहीं रहा था।' इंद्र को महसूस हुआ कि आँसू उसके चेहरे पर बह रहे हैं। 'आप सही कह रहे हैं,' उसने वायु के करीब आते हुए दोहराया, 'लेकिन इससे आपको मुझे मारने का अधिकार नहीं मिल जाता।'

इससे पहले कि किसी को कुछ समझ आता, इंद्र ने अपने पास छिपाए हुए चाकू से वायु पर वार कर दिया।

वायु सदमे से बोर्ड पर पीछे गिर पड़ा। 'अरे बूढ़े मूर्ख! यह मैंने नहीं किया।'

'तुम्हारे पास मकसद था! तुम्हारे अलावा कोई और मुझे मारना नहीं चाहता था।'

'अरे मूर्ख!' वायु चिल्लाया और इंद्र की ओर झपटा।

इंद्र गिर पड़ा, साँस लेने की कोशिश कर रहा था। वायु ने अपने घाव को पकड़ते हुए कहा, "मैं तुम्हारा गला घोंट दूँगा। तुम मर चुके हो।" चाकू अभी भी उसके शरीर में धँसा हुआ था।

इंद्र लड़खड़ाए और वायु के बालों को पकड़ने की कोशिश की। जहाज लगातार हिलता रहा...

वायु अपना संतुलन खो बैठा। इंद्र ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने पैर से वायु को गिरा दिया। वायु दर्द से कराह उठा, तभी इंद्र ने उसका गला पकड़कर उसे घोंटने का प्रयास किया।

'तुम मरोगे, कमीने। तुमने मेरा विरोध किया। तुमने मुझे मारने की कोशिश की।'

वायु हांफते हुए बोला, 'मैंने... ऐसा... नहीं... किया।'

'तो फिर वो कौन था? कौन हो सकता था? अगर तुम नहीं तो और कौन हो सकता था?'

और फिर इंद्र और वायु दोनों ने इसे सुना। एकदम स्पष्ट रूप से।

'वह में था!'

इंद्र ने अपना चेहरा ऊपर उठाया। जैसे ही उसने ऊपर देखा, उसने वायु का गला छोड़ दिया और उस व्यक्ति को देखा जिसने उसे जान से मारने की कोशिश की थी।

वह साची थी।

अध्याय अट्ठाईस

कड़ाके की ठंड से प्रहलाद को बहुत तकलीफ हो रही थी, लेकिन धृति की हालत उससे भी बदतर थी। जिस खाड़ी में वे विश्राम कर रहे थे, उसके सामने एक नदी हरे और काले रिबन की तरह बह रही थी। वे काफी समय से यात्रा कर रहे थे, सुख-सुविधाओं का त्याग कर, एक-दूसरे का सहारा लिए।

प्रहलाद ने धृति और अपने लिए बैल की खाल इकट्ठा की थी। उन्हें छिपे हुए कई दिन हो गए थे, ताकि वे उन लोगों से दूर रहें जो यह पूछ सकें कि एक असुर क्यों भटक रहा है। अब तक तो ऐसा लग रहा था कि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा है। फिर भी, प्रहलाद हर दिन डर के मारे चीखते हुए जाग जाता था।

जब भी प्रहलाद ग्रामीणों को किसी वांछित लड़के के किसी लड़की के साथ यात्रा करने के बारे में बात करते सुनता, तो वह वहां से भाग जाता। वह जानता था कि कौवों ने यह खबर फैलाई थी।

'मुझे ठंड लग रही है,' धृति ने कांपते हुए कहा, हालांकि उसने अपने शरीर पर फर का आवरण ओढ़ा हुआ था।

'चिंता मत करो। हम बस पहुंचने ही वाले हैं।'

'आपको ऐसा क्यों लगता है कि वह हमें अंदर आने देगा?'

'वह शिव हैं। वह सबको प्रवेश की अनुमति देते हैं।'

धृति ने थकी हुई सी निगाहों से उसे घूरते हुए कहा, 'हम पाताल जा सकते थे।'

'मेरा यकीन मानिए, वह रहने लायक जगह नहीं है। हम यहां घर बनाएंगे। हम यहां बच्चे पैदा करेंगे। हम यहीं शादी करेंगे।'

अगर ऐसा हुआ तो मुझे 'चुड़ैल की तरह शिकार' बनाया जाएगा।

दोनों हंस पड़े।

धृति का ठंडा हाथ प्रहलाद के चेहरे को छू गया। वह मुस्कुराई। 'मुझे उम्मीद है कि तुम जानते हो कि तुम क्या कर रहे हो।'

सच कहूँ तो, प्रहलाद खोया हुआ महसूस कर रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसे छोड़ दिया गया हो। उसे हमेशा सुरक्षा और आराम मिला था। और अब वह इलवर्ती के सबसे उपेक्षित हिस्से में था।

शायद बड़े होने का यही मतलब है।

प्रहलाद ने देखा कि धृति फिर से सो गया है। वह वापस कुछ ईलों को गर्म करने और अभी पकड़ी गई मछलियों को पकाने में जुट गया। उसने सूर्योदय का इंतजार किया।

वे अगले दिन रवाना हो जाएंगे।

धृति को प्रहलाद अपने कंधों पर उठाकर ले जा रहा था क्योंकि अब उसमें चलने की ताकत नहीं बची थी। उसके पैर ठंड से जम गए थे और उसे गर्मी की सख्त जरूरत थी। प्रहलाद जानता था कि उन्हें जल्द से जल्द शिव के किले तक पहुंचना होगा।

इसलिए, हिम्मत जुटाकर प्रहलाद धृति को कंधे पर उठाकर चलता रहा। उसकी आँखें खुली रखने के लिए संघर्ष कर रही थीं, उसका शरीर आराम चाहता था। कड़ाके की ठंड में भेड़िये दहाड़ रहे थे और गिद्ध उनके गिरने का इंतज़ार कर रहे थे ताकि वे उनके शरीर को नोंच सकें।

जब प्रहलाद लगभग हार मानने ही वाला था, तभी उसकी नज़र त्रिशूल से सजे झंडे वाले विशाल किले पर पड़ी। वह मुस्कुराया और लोहे से बने उस काले किले को देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गए। एक चट्टान के किनारे पर स्थित इस किले के चारों ओर कई बस्तियाँ बसी हुई थीं।

'हमें बचाओ! हमें बचाओ!' वह चिल्लाया और फिर गिर पड़ा। धृति उसके पास ही थी।

प्रहलाद आग की गर्माहट से जागा। उसने घबराकर चारों ओर देखा तो पाया कि वह लकड़ी की बनी एक झोपड़ी में है, जिसके एक तरफ आग जल रही है। उसके पास ही सूप रखा था, जिसे उसने बड़े चाव से खाया। उसने देखा कि धृति वहाँ नहीं थी।

इसके विपरीत, वहाँ एक युवक था जिसके सीने पर त्रिशूल का चिन्ह बना हुआ था और वह उसे घूर रहा था। उसके सिर के बीचोंबीच बालों का एक गुच्छा था, जो बंधा हुआ था, जबकि किनारों के बाल मुंडे हुए थे।

'अरे, वे सही थे,' उसने प्रहलाद की आँखों में सीधे देखते हुए कहा। 'तुम एक असुर हो।'

'कहाँ है... कहाँ है...'

'वह महिलाओं के केबिन में आराम कर रही है। क्या आपने स्लेज का इस्तेमाल करने के बारे में नहीं सोचा, खासकर अगर आपको लंबी दूरी तय करनी हो? या शायद यात्रा को आसान बनाने के लिए याक लेने के बारे में सोचा हो?'

'मैं पहली बार उत्तर की ओर आया हूँ। और शायद यह आखिरी बार होगा।'

वह आदमी खिलखिलाकर हँसा। 'यहाँ एक असुर क्या कर रहा है?'

मैं भगवान शिव की शरण में जाता हूँ।

और मैं यहाँ हूँ!

प्रहलाद हैरान रह गया। 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा।'

'खैर, तुम पहले नहीं हो।' कुछ देर रुककर उसने पूछा, 'मुझे बताओ कि तुम यहाँ क्यों आए हो, इससे पहले कि मैं तुम्हारे साथ कैदी जैसा बर्ताव करूँ। पूरा शिविर... असुरों का नाम सुनते ही खुश नहीं होता।'

'मैं समझ गया। हमने अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ा है,' प्रहलाद ने कहा। 'अच्छा, मैं प्रहलाद हूं, हिरण्यकश्यप का पुत्र।'

शिव ने अपनी आँखें सिकोड़ीं। 'वही बेटा जिसने अपने पिता की हत्या की?'

'हाँ।'

मुझे विश्वास है कि आप हमारे पक्ष में हैं।

'मैं धर्म के पक्ष में हूँ।' प्रहलाद ने शिव को अपनी श्रीवत्स अंगूठी दिखाई। 'मैं भगवान विष्णु में विश्वास रखता हूँ, और धर्म को पुनर्स्थापित करने के लिए मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता है। मैं यहाँ ज्यादा देर नहीं रुक सकता, लेकिन मुझे आपको पूरी कहानी शुरू से सुनाने दीजिए।'

प्रहलाद ने हर बात बताई—नरसिम्हा के राज्याभिषेक के बारे में, उनकी प्रेमिका की हत्या के बारे में, वाशकल के बारे में। अंत तक आते-आते उनकी सांस लगभग फूल गई थी। शिव ने एक शब्द भी नहीं बोला, लेकिन वे ध्यान से सुन रहे थे, खासकर नरसिम्हा द्वारा सत्ता के लिए किए गए भयानक अपराधों के वृत्तांतों को।

'यह तो काफी भारी है,' शिव ने कहा। 'काफी भारी।'

'जी हां। इसीलिए मैं आपसे सहायता मांगने आया हूं।'

शिव ने कोमल आँखों से उसकी ओर देखा। 'बात यह है, बालक, तुम चाहे जो कहो, पर मुझे नहीं पता कि वह कितना सच है। हो सकता है वह कोई काल्पनिक कहानी हो। तुम यहाँ उस तलवार के बारे में पूछने आए हो जिसे मेरे पूर्ववर्ती ने छुपाकर रखा था। नरसिम्हा को मारने का फैसला तो मैं ही करूँगा। मैं तुम्हारी मदद करूँगा, पर मुझे पुष्टि चाहिए। मैं कश्यपुरी के पास एक चौकी पर एक कौआ भेज रहा हूँ। अगर कौआ तुम्हारी बात की पुष्टि करता है, तो मुझे लगता है कि हमें कार्रवाई करनी होगी। चिंता मत करो, तुम्हें यह अकेले नहीं करना है। भगवान रुद्र ने अपनी डायरी में स्पष्ट रूप से लिखा है कि इस युग के अवतार को मारना होगा। इसलिए, यह हमारा कर्तव्य है।'

शिव की बात सुनकर प्रहलाद को खुशी हुई कि वह वहां आया था और उसने शिव के साथ ईमानदार रहने का फैसला किया।

'तुम्हें तलवार के बारे में कहाँ से पता चला?' शिव ने पूछा।

लोग बातें करते हैं। उनमें से कई लोग जानते हैं, और कई लोग इसे मिथक कहकर खारिज कर देते हैं।

"अच्छा हुआ कि आपने इसे खारिज नहीं किया। जिसे लोग मिथक कहते हैं, वह अक्सर अपर्याप्त रूप से प्रलेखित इतिहास होता है। हमने तलवार के बारे में जानकारी इसलिए छिपाकर रखी है क्योंकि हम नहीं चाहते कि हर कोई इसकी खोज में जुट जाए। कल्पना कीजिए उस तलवार की शक्ति की जो एक अवतार को मार सकती है। यह किसी भी राजा, राज्य, साम्राज्य और जादूगर को पराजित कर सकती है। यह उसी तरह की शक्ति रखती है।"

प्रहलाद शिव की बात समझ गया। वह मुस्कुराया। 'धन्यवाद। आपकी मदद से हम निश्चित रूप से अपनी इच्छा पूरी कर लेंगे।'

'हाँ।'

इतना कहकर शिव चले गए। प्रहलाद फिर लेट गया, अपनी आँखें बंद कर लीं और लंबे समय बाद चैन की नींद सो गया।

अध्याय उनतीस

नरसिम्हा बेहद दुखी था। उसे पता नहीं था कि वह कहाँ है, जेल है या कोई और जगह। उसे वहाँ फेंक दिया गया था और इधर-उधर धकेला जा रहा था। वह गहरी साँस लेना चाहता था, हिलना चाहता था, लेकिन हिल नहीं पा रहा था। वह बस पलकें झपका सकता था, उसके हाथ-पैर स्थिर थे।

उसे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि कितना समय बीत चुका है, दिन बीत चुके हैं या हफ्ते। पहरेदार उसे पानी और खाना देने आते और फिर चले जाते।

मुझे कुछ करना होगा।

हालांकि वह कुछ करना चाहता था, लेकिन उसका शरीर साथ नहीं दे रहा था। एक दिन उसने अपनी एक उंगली उठाई और उसे बेहतर महसूस हुआ। अगले दिन उसने दूसरी उंगली उठाई और उसे लगा जैसे उसके लिए उम्मीद की किरण जगी हो। लेकिन उसकी प्रगति बस यहीं तक सीमित थी।

लेकिन आज का दिन अलग था। वह अपना हाथ हिलाने में सक्षम था। जैसे ही उसने अपने खुले हाथ में ऊर्जा का प्रवाह महसूस किया, उसके होठों पर मुस्कान आ गई। उसने बड़ी खिड़की से बाहर, जाली के पार देखा।

मैं यह कर सकता हूँ। मैं बिजली की शक्ति का आह्वान कर सकता हूँ।

जब नरसिम्हा आकाश की ओर देख रहे थे, तभी गरज की आवाज सुनाई दी।

चलो भी।

उसने बिजली को रोकने की कोशिश की। बादल छंट गए और बारिश ज़मीन पर ज़ोर से बरसने लगी।

बाहर तैनात पहरेदार सतर्क हो गए। उनमें से एक ने पूछा, 'क्या हो रहा है?'

दूसरे गार्ड ने जवाब दिया: 'भगवान वाशकल ने कहा है कि अगर ऐसा कुछ होता है, तो हमें उन्हें बुलाना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे यहां मौजूद हों।'

'चिंता मत करो, मुझे नहीं लगता कि वह तूफान लाने के अलावा और कुछ कर सकता है।'

लेकिन नारा ने हार नहीं मानी। उसने अपना हाथ और हिलाने की कोशिश की, बिजली की ताकत से दीवारों को तोड़ने की कोशिश की। उसकी याददाश्त धीरे-धीरे लौट रही थी और वह जानता था कि अगर वह ऐसा कर पाया, तो वह सीवर में उतरकर शहर से बाहर निकल सकेगा, बस कचरे में लेटकर। वह जानता था कि यह मुश्किल होगा।

और फिर, अचानक ही, उसने हार मान ली। जैसे ही उसने अपनी आँखें बंद कीं, आँसू ज़मीन पर गिरने लगे। नारा इतना पराजित हो चुका था कि वह अपना चेहरा भी नहीं पोंछ पा रहा था।

मैंने सुना है कि तुमने बिजली कड़कने का आह्वान किया है।

नारा एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनकर जाग उठा। उसे यह देखने के लिए चारों ओर देखना पड़ा कि किसने आवाज़ दी थी। अंधेरे में, एक स्टूल पर, अंधका बैठा था। उसकी खोपड़ी दिखाई दे

रही थी, और उसकी काली आँखें उसे घूर रही थीं।

'यह तो वाकई सराहनीय है,' अंधका ने आह भरी। 'तुमने मुझे सौ बार मारने की कोशिश की है, और हर बार नाकाम रहे हो। यह तो बहुत दुख की बात है।' थोड़ी देर रुककर उसने आगे कहा, 'हम्म, मुझे वाशकल की योजना में एक कमी दिख रही है। काश उसने मुझे बिजली को नियंत्रित करने की शक्ति दी होती, तो सब ठीक होता। लेकिन अभी भी वह शक्ति तुम्हारे पास है। मुझे लगता है कि मैं समझ गया हूँ कि उसने ऐसा क्यों किया।'

क्यों? नारा पूछना चाहता था। उसके भीतर क्रोध उबल रहा था। वह अंधका को मार डालना चाहता था, जिसे वह जानता था कि वह कायर है। नारा ने पहले धोखे को न समझ पाने के लिए खुद को कोसा। उसे एहसास हुआ कि सत्ता के लालच ने उसे बाकी सब कुछ देखने से अंधा कर दिया था।

'जब से तुम यहाँ कैद हो, हम मंत्रिमंडल और जनता को मुझे राजा के रूप में स्वीकार करने के लिए मना रहे हैं।' अंधका ने आह भरी। 'और यह कारगर साबित हुआ है। वोट मेरे पक्ष में हैं। हिरण्यकश्यप का पुत्र होना भी इसमें मददगार साबित हुआ। साथ ही, चूंकि मैं उसका बड़ा पुत्र हूँ, इसलिए सिंहासन पर मेरा पहला अधिकार है। जैसा कि वाशकल कहते हैं, वह गद्दी हथियाने वाला तो बस एक भटकाव था, एक अस्थायी उपाय था। हम्म।'

तुम मरने वाले हो। मैं तुम्हें और तुम्हारे दोस्त को मार डालूंगा।

'मैं राजा बनूंगा और सब कुछ खत्म हो जाएगा,' अंधका ने कहा। 'मैं एक वीर युद्ध छेड़ूंगा। आखिर मैं स्कंद हूं, इस देश का वह नायक जिसके योग्य मैं हूं, एक पौराणिक दानव जो वीरता से परिपूर्ण है। जरूरत पड़ने पर मैं पूरे देश पर शासन करूंगा। मेरे हिसाब से यहां पहले से ही बहुत सारे देव और असुर हैं। आप जानते हैं, केवल अच्छे लोगों को ही शासन करना चाहिए।'

अगर आपको लगता है कि आप अच्छे लोगों में से हैं, तो आप गलत हैं। आप सबसे बुरे हैं।

'मैं देश को गौरवान्वित करूँगा। सोचो दुनिया पर राज करना कैसा होगा। कल्पना करो, एक अंधा जिसने अपनी विकलांगता से छुटकारा पा लिया, अपने डर पर विजय प्राप्त की और एक राजा जो थक जाने के कारण अपने कर्तव्यों से भाग गया। यही कहानी हम गढ़ रहे हैं,' अंधका ने कहा। 'हम्म, मुझे लगता है कि अब आपको आराम करना चाहिए। और यहाँ अच्छा समय बिताने की कोशिश करो क्योंकि तुम कुछ समय के लिए यहाँ रहने वाले हो।'

फिर अंधक ने नारा की गर्दन के बाल निकाले। घुटने टेककर नारा को वे बाल पहनाते हुए उन्होंने कहा, 'मैं नहीं चाहता कि तुम यह भूल जाओ कि विष्णु के अवतार का नाश इसी प्रकार हुआ था।'

अंधका हँसा और फिर जेल के ताले से बाहर निकलकर गायब हो गया।

नारा ने अपनी मुट्ठी कसकर भींच ली। उसे याद आया कि कुछ समय पहले तक वह खुद को सही काम करने वाला नायक समझता था। शायद सत्ता में रहने वाला कोई भी व्यक्ति सही काम करने में सक्षम नहीं होता। शायद वह हमेशा से गलत काम करता आ रहा था, इसीलिए प्रहलाद उसके खिलाफ था।

प्रहलाद...

नारा जानता था कि प्रहलाद को उसके आदेश पर खोजा जा रहा है। उसकी जान भी जा सकती

थी। नारा को उन आदेशों को जारी करने का पछतावा था, लेकिन सत्ता में रहते हुए उसने इस बारे में ज़रा भी नहीं सोचा था।

नारा ने आह भरी। उसकी आंखें बंद हो गईं और वह सो गया।

नारा आसमान में गरजती बिजली की आवाज सुनकर जाग उठा। वह मुस्कुराया। उसने खुद बिजली नहीं बुलाई थी, लेकिन अब वह ऐसा कर सकता था।

नींद से जागते हुए उसने अपना हाथ फैलाने की कोशिश की। उसने चिकित्सा का अध्ययन किया था और जानता था कि एकोनाइट शरीर पर क्या प्रभाव डालता है। उसे याद आया कि बहुत समय पहले उसने उत्तर में एक व्यक्ति का इलाज किया था।

एकोनाइट के असर को कम करने के लिए उसे एड्रेनालाईन की ज़रूरत थी। और वह खुद को बिजली का झटका देकर अपनी नसों में एड्रेनालाईन का प्रवाह बढ़ा सकता था। यह विचार उसे डरा रहा था, लेकिन वह जानता था कि उसे यह करना ही होगा।

अब उसका हाथ पहले से काफी बेहतर था। वह अपने शरीर को थोड़ा हिला-डुला भी सकता था। थोड़ी मशक्कत के बाद उसने अपना हाथ खिड़की की ओर, गरज की आवाज़ की तरफ उठाया।

मैं तुम्हें बुलाता हूँ। आओ!

पलक झपकते ही, प्रकाश की एक तेज़ किरण खिड़कियों से टकराई और जेल की दीवारों को चीरते हुए अंदर घुस गई, जिससे लाशों और टूटे पत्थरों व कंकड़ों का ढेर लग गया। बाहर, पहरेदार दरवाज़े खोलने लगे। नारा को गटर का पानी दिखाई दिया जो सीधे राज्य से बाहर बह रहा था।

पहरेदार नारा के कारागार में दाखिल हुए। नारा ने मुट्ठी भींच ली। तभी आसमान में बिजली कड़की और एक-एक करके उन पर गिरी, जिससे वे सब मारे गए।

उसने फिर से अपनी मुट्ठी भींची और आंखें बंद कर लीं, जिससे बिजली की गड़गड़ाहट उस पर हावी हो गई। उसने महसूस किया कि उसकी शक्ति और ऊर्जा वापस लौट रही है।

जब बिजली कड़की, तो नारा अपने पैरों पर खड़ा हो गया और टूटी-फूटी, जर्जर जेल की दीवार को देखने लगा। वह अभी भी कमजोर महसूस कर रहा था, लेकिन लंगड़ाते हुए आगे बढ़ने में सक्षम था। उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई, मानो वह एक बार फिर दुनिया पर राज करने के लिए तैयार हो।

लेकिन अगले ही पल उसे फिर से कमजोरी महसूस हुई और वह गिर पड़ा...

सीवर के पानी में।

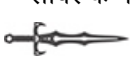

नारा पूरी तरह से मैला हो चुका था। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह पानी में बह रहा हो। किसी तरह खुद को पानी से बाहर निकालते हुए उसने देखा कि कश्यपपुरी की इमारतें दूर होती जा रही थीं। कुछ ही समय पहले वह हिरण्यकश्यप को मारने के लिए इसी रास्ते से शहर में दाखिल हुआ था और अब उसी रास्ते से भाग रहा था।

मुझे अपनी ऊर्जा वापस चाहिए।

तूफान आने वाला था। नारा उठने की कोशिश कर रहा था, लेकिन हर बार नाकाम हो रहा था। तभी उसे महसूस हुआ कि कोई उसे देख रहा है। क्या वो लोमड़ी थी या गिलहरी? उसे पक्का पता नहीं था। उसने ऊपर देखा कि आखिर वो क्या है।

वह एक ऐसी महिला थी जिसे वह बहुत अच्छी तरह जानता था।

पार्वती हांफते हुए बोलीं, 'नारा, भगवान के नाम पर तुम्हें क्या हो गया है?'

अध्याय तीस

तेज आवाज से प्रहलाद की नींद टूट गई।

उसे चीखने-चिल्लाने और अजीब सी चटकने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। वह यह देखने के लिए बाहर भागा कि क्या हो रहा है और अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर सका। आग से लथपथ बड़े-बड़े पत्थर लुढ़क रहे थे। कई झोपड़ियाँ और किले की दीवारें क्षतिग्रस्त हो चुकी थीं। भाड़े के सैनिकों जैसे दिखने वाले सिपाही लोगों पर हमला कर रहे थे और उन्हें चाकू मार रहे थे।

शिव के सैनिक लड़ रहे थे।

क्या हो रहा है?

खतरे की घंटी बज रही थी, हालांकि उस तबाही और खून-खराबे की घोषणा करने की कोई जरूरत नहीं थी।

धृति।

वह दौड़कर उस कमरे की ओर गया जहाँ धृति थी और उसने दरवाजा खोला। हमलावरों में से एक पहले ही अंदर घुस चुका था। धृति ने उसे बुनाई की सुई से गर्दन पर वार कर दिया था, जिससे खून की बौछार हो गई।

मुझे लगता है कि हम पर हमला हुआ है।

'तुम ऐसा नहीं कहोगे, मेरी जान?'

तभी उसके पीछे एक सिपाही प्रकट हुआ, लेकिन धृति ने झपट्टा मारकर उसी छुरी से उसे घायल कर दिया। वह पीछे गिर पड़ा। प्रहलाद ने मृत व्यक्ति की तलवार छीन ली और छुरी धृति को सौंप दी।

'हमें यहाँ से निकलना होगा,' उसने कहा। उसकी आवाज़ किसी आदेश जैसी लग रही थी।

लेकिन तलवार? हमें शिव को ढूंढना होगा।

उसे ढूंढना मुश्किल नहीं था। शिव अपने त्रिशूल से तीन हमलावरों से लड़ रहे थे।

इसके लिए कौन जिम्मेदार है?

आकाश से बाणों की बौछार होने लगी। प्रहलाद ने धृति को बचाने के लिए एक कोने में धकेल दिया। उसने स्त्रियों और बच्चों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया और फिर शिव की ओर बढ़ने लगा। तभी द्वार खुले और उसने किसी परिचित व्यक्ति को देखा।

वह कोई और नहीं बल्कि शांताराम था, जिसके हाथ में एक छड़ी थी और उसके आगे घोड़ों पर सवार सैनिकों की एक टुकड़ी हमले के लिए तैयार खड़ी थी।

प्रहलाद को यह समझ जाना चाहिए था। उस दानव ने उसे एक तरफ फेंक दिया था, लेकिन मारा नहीं था। इस प्रक्रिया में उसका एक पैर ज़रूर कट गया होगा, लेकिन इससे प्रहलाद का पीछा करने से नहीं रुका। और चूंकि उसके पास राजा का पत्र था, इसलिए वह स्थानीय भाड़े के सैनिकों को इकट्ठा करके शिव और उसके सैनिकों से उसके किले में लड़ने में सक्षम हो गया।

प्रहलाद को पूरा यकीन था कि वाशकल और नरसिम्हा ने शिव के किले पर हमला करके एक सीमा का उल्लंघन किया था, क्योंकि शिव एक पवित्र स्थान थे। लेकिन उन्हें इसकी परवाह नहीं थी

क्योंकि वे सिर्फ प्रहलाद को ही पाना चाहते थे।

हमें उनके हम तक पहुंचने से पहले ही भाग जाना चाहिए।

प्रहलाद ने उस झोपड़ी को बंद कर दिया जहाँ महिलाएं और बच्चे थे और शिव तक पहुँचने के लिए कई योद्धाओं के बीच से रास्ता बनाया। धृति उसके पीछे थी, कटार को अपने हृदय से सटाए हुए।

तब तक शिव के सीने में कई जगह चाकू के वार हो चुके थे। वह ज़मीन पर पड़ा था। प्रहलाद चिल्लाया और हमलावरों पर कूदकर उन्हें चाकू मारने लगा, वहीं धृति ने लात-घूंसे मारे। उसने एक धनुष उठाया और पास आने वाले भाड़े के सैनिकों पर तीर चला दिए।

प्रहलाद ने शिव को थाम लिया। 'मेरे प्रभु, आप…'

शिव को खून की खांसी आई। 'मैं नहीं... पार्वती... किले को बचाओ।'

मैं नहीं कर सकता। शांताराम के पास तो पहले से ही बहुत सारे हैं।

'यह नरसिम्हा है। इसने ही किया है। मुझे बताओ तलवार कहाँ है। मैं सुनिश्चित करूँगा कि उसे उसी तलवार से मार डाला जाए।'

शिव ने प्रहलाद को अपने करीब खींचा और उसकी आंखें बंद होने और उसके बेजान होकर लेट जाने से पहले उसके कानों में स्थान फुसफुसाया।

'चलो चलते हैं,' प्रहलाद ने धृति से कहा। 'हमें भागना होगा।'

किले के ठीक बाहर, एक टेढ़ी-मेढ़ी गली नीचे एक ठंडी झील की ओर जाती थी, जिसमें एक विलो का पेड़ उगा हुआ था। यह स्थान बंदरगाह के रूप में भी काम करता था, जिसके आगे मछली पकड़ने के लिए इस्तेमाल होने वाली नावें कतार में खड़ी थीं।

धुएं और गुस्से को पीछे छोड़ते हुए, प्रहलाद और धृति तेजी से विलो के पेड़ की ओर दौड़े।

'हम कहाँ जा रहे हैं? घोड़े तो दूसरी तरफ हैं,' धृति ने कहा।

'तलवार,' प्रहलाद ने उत्तर दिया। 'एक नाव तैयार करो। मैं तलवार लेकर आऊंगा और इस विपत्ति का अंत करूंगा जो काफी समय से हमारा पीछा कर रही है।'

धृति ने अनिच्छा से सिर हिलाया और नावों तक पहुँचने के लिए नदी में उतर गई। प्रहलाद ने विलो के पेड़ के पास एक जगह पर नज़र डाली। यह उस गुफा का प्रवेश द्वार था जहाँ तलवार पड़ी थी, जिसे ध्यान से देखे बिना आसानी से नज़रअंदाज़ किया जा सकता था।

प्रहलाद गुफा में दाखिल हुआ और बर्फ के कांच से बने एक विशाल पुल पर पहुंचा। उस पर कोई किनारा नहीं था। एक गलत कदम उसे नीचे अंधेरी गहराइयों में मौत के मुंह में धकेल सकता था। आसपास की चट्टानें अस्थिर प्रतीत हो रही थीं।

प्रहलाद सावधानीपूर्वक आगे बढ़ा, उस बहुप्रतीक्षित तलवार की एक झलक पाने की कोशिश में। यह कोई मिथक नहीं था। यह उतनी ही सुंदर थी जितनी उसने कल्पना की थी। हड्डियों और लोहे से बनी वह तलवार चट्टानों से घिरी हुई खड़ी थी। ठीक उसके ऊपर से आती हुई प्रकाश की एक किरण उसे रोशन कर रही थी।

अब तुम मेरी हो।

प्रहलाद करीब पहुंचा और तलवार पर अपना हाथ रखने में कामयाब हो गया। लेकिन जैसे ही उसने मुड़कर देखा, पुल के दूसरी तरफ कोई खड़ा था। कोई ऐसा जिसकी उसे उम्मीद नहीं थी।

शांताराम।

प्रहलाद को लगा कि तलवार एक ही समय में भारी और हल्की दोनों थी, और एक ऐसी सुंदरता से चमक रही थी जो अवास्तविक प्रतीत होती थी। ऐसा लग रहा था मानो वह तलवार प्रहलाद का ही एक हिस्सा हो।

'तुम मरने वाले हो,' शांताराम ने कहा। 'मैं यह सुनिश्चित करूँगा, और उस तलवार को भगवान वाशकल को स्मृति चिन्ह के रूप में दे दूँगा।'

प्रहलाद ने आत्मविश्वास से पुल पर कदम रखा। 'तो फिर मुझसे लड़ो।'

'ओह, ज़रूर। आपको कोई चिंता तो नहीं है?'

मैंने चिंता करना छोड़ दिया है।

शांतराम लंगड़ाते हुए आगे बढ़ा और प्रहलाद के वार को रोकने की कोशिश की। अपनी शारीरिक अक्षमता के बावजूद, वह बहुत बलवान और बेहतर तलवारबाज था। उनकी तलवारों के टकराने की आवाज गुफा में गूंज उठी।

प्रहलाद ने अपनी तलवार घुमाकर शांताराम के घायल पैर पर वार करने का फैसला किया।

शांताराम हँस पड़ा। 'हाहा! मेरे पास तो वो नहीं है।'

प्रहलाद और शांताराम दोनों ने अपना संतुलन बखूबी बनाए रखा था। वे जानते थे कि एक भी गलत कदम मौत का कारण बन सकता है। तभी प्रहलाद को एक विचार आया।

जैसे ही शांतराम आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा, प्रहलाद ने उसकी तलवार को मोड़ दिया और उसे पुल से नीचे धकेल दिया। शांतराम की चीखें पल भर में ही गूँज उठीं और वह अचेतन अवस्था में गिर पड़ा।

इतना दबाव सहन न कर पाने के कारण पुल टूटने लगा। प्रहलाद ने किनारे की ओर छलांग लगाई और किसी तरह खुद को सुरक्षित ऊपर खींच लिया। गहरी सांस लेते हुए उसने ऐसी शांति का अनुभव किया जो उसे लंबे समय से नहीं मिली थी।

गुफा से बाहर निकलते ही उसने चमकता हुआ सूरज देखा। धृति नाव लेकर तैयार थी। प्रहलाद के बैठते ही उसने नाव चलाना शुरू कर दिया। उनकी ओर तीर चलाए जा रहे थे, लेकिन वे चूक गए और पानी में डूब गए।

प्रहलाद ने जलकर राख हो चुके किले को देखा। उसे शिव के लिए बहुत दुख हुआ। तलवार को अपने पास पकड़े हुए वह बस इस बात से खुश था कि वह उसे वापस लाने में सफल रहा।

अब नरसिम्हा से मिलने का समय आ गया है।

अध्याय इकत्तीस

जब जहाज हिल रहा था तब इंद्र कप्तान के कमरे में अकेले बैठे थे।

उसे समझ नहीं आ रहा था कि रोए या गुस्सा करे। उसकी पत्नी ने उसे जान से मारने की कोशिश की थी, लेकिन वह उसे बदले में चोट नहीं पहुँचाना चाहता था। उसे उतना गुस्सा नहीं आया जितना उसने सोचा था। वह बस सोच-विचार करना चाहता था।

वह आखिर क्या गलत कर रहा था? शायद वह अच्छा इंसान नहीं था। शायद उसने बहुत सारी गलतियाँ की थीं।

इंद्र अपनी कुर्सी पर ही बैठा रहा, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। उसने दरवाजा नहीं खोला, लेकिन दरवाजा खुल गया। उसकी नजर सामने आए चेहरे पर पड़ी... वह उसकी पत्नी थी। वह चिंतित लग रही थी।

हालांकि इंद्र ऐसा कर सकते थे, लेकिन उन्होंने साची को कैद नहीं किया। जब साची ने अपनी गलती स्वीकार की, तो पहरेदारों ने अपने हथियार तान दिए थे। इंद्र, जिन्हें वायु से भी माफी मांगनी पड़ी थी, ने सभी से साची को अकेला छोड़ने के लिए कहा था।

'मुझे लगता है कि यह कहना सुरक्षित होगा कि मुझे खेद है,' साची ने कहा।

'अगर मेरी मृत्यु हो जाती तो क्या होता?'

'तुम इंद्र हो। तुम्हारी मृत्यु नहीं होती। तुमने किसी और से कहीं अधिक हत्या के प्रयासों का सामना किया है।'

और आपने वह जोखिम उठाया?

मैं चाहता था कि आपको यह एहसास हो कि आपके आसपास के लोग खुश नहीं हैं।

'यह तरीका सही नहीं है।'

'सच में? तुम तो लोगों से अपनी गलतियों के बारे में पूछते फिर रहे हो। पुराने इंद्र तो मुझे फटकारते और बदला लेते। लेकिन इस बार उन्होंने ऐसा नहीं किया। पुराने इंद्र तो बच निकलते, पर इस बार नहीं। तुममें काफी बदलाव आया है। देखो, अब तो तुम्हारे बाल भी सफेद हो गए हैं।'

इंद्र मुस्कुराया। वह जानता था कि वह सही कह रही है। अब उसके लिए बदला लेना महत्वपूर्ण नहीं था। वह बस यह जानना चाहता था कि उसने ऐसा क्यों किया। उसे क्रोध के बजाय सहानुभूति महसूस हो रही थी।

क्या मैं सचमुच बदल गया हूँ?

'तो, इसका मकसद सिर्फ मुझे यह एहसास दिलाना था कि मैं क्या गलत कर रहा था?' उसने पूछा।

'आपने हमें अपने साथ सागर में चलने को कहा, आपने अपना राज्य पीछे छोड़ दिया। पहले आप अकेले भाग जाते थे। इस बार आपने अपने करीबी लोगों को भी भागने पर मजबूर कर दिया। क्या एक राजा ऐसा ही करता है?' वह थोड़ी देर रुकी। 'सच कहूँ तो मुझे भी गुस्सा आया था। जयंती की मौत आपकी गलती थी, और आपने इसे मानने से इनकार कर दिया।'

इंद्र ने सिर हिलाया। 'तुम सही कह रहे हो। यह मेरी गलती थी। मुझे नारा से बात करनी चाहिए

थी, उसकी बात सुनने की कोशिश करनी चाहिए थी। संक्षेप में कहूँ तो, अब बहुत देर हो चुकी है। वह आदमी मेरी जान के पीछे पड़ा है।'

फिर तुम उसका मुकाबला करते हो, लेकिन पलटवार नहीं करते। हम इसके लिए बहुत बूढ़े हो चुके हैं। जब मैंने हत्या का आदेश दिया था, तब मैं दुविधा में था। मुझे पता था कि यह गलत है, लेकिन मैं तुम्हें सबक सिखाना चाहता था। इस प्रक्रिया में, मैं तुम बन गया। मैं इंद्र बन गया, जबकि मुझे बस खुद होना चाहिए था।

इंद्र ने कभी इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि वह अपने आस-पास के लोगों को कितना कष्ट पहुंचा रहा है। उसने सिर हिलाया और अपनी पत्नी को गले लगाने के लिए उठ खड़ा हुआ। 'मुझे खेद है। मुझे उस दिन तुम्हें नहीं छोड़ना चाहिए था जब मैंने वृत्रा का वध किया था। मुझे नारा से बदला नहीं लेना चाहिए था। मुझे भागने की कोशिश नहीं करनी चाहिए थी। मैं एक असफल व्यक्ति हूँ।'

साची पीछे हट गया। 'कोई भी व्यक्ति असफल नहीं होता अगर वह अपनी असफलता स्वीकार कर लेता है। केवल अहंकार ही अच्छे लोगों को घुटने टेकने पर मजबूर करता है।'

वह मुस्कुराया। 'मुझे नहीं लगता कि कभी कोई सांप था।'

'शायद है।'

उन्होंने कहा, 'शायद इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जो मायने रखता है वह यह है कि मैं अपने लोगों के साथ रहूं।'

एक आह भरते हुए उसने कहा, 'हे भगवान! मैंने लगभग अपने भाई को मार ही डाला था। हालांकि, यह पहली बार नहीं है। हम कभी-कभार ही आपस में भिड़ जाते हैं।'

साची मुस्कुराई। 'तो, कहाँ जाना है?'

इंद्र ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'घर, मेरी जान। चलो घर चलते हैं।'

अध्याय बत्तीस

पार्वती और अन्य मातृकाएँ कश्यपपुरी के बाहरी इलाके में डेरा डाले हुए थीं। उन्होंने एक अलाव जला रखा था और जंगल उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा कर रहा था, क्योंकि वे शहर पर हमले की योजना बना रही थीं। वे जानती थीं कि उन्हें तेज़ी से और सावधानी से काम लेना होगा, वे यूँ ही अंधाधुंध हमला नहीं कर सकती थीं। उन्हें अंदर तैनात कई सैनिकों का भी ध्यान रखना था।

और अब उनके पास नरसिम्हा थे।

पार्वती को यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि वह नाले के रास्ते कैसे बच निकला। जब भी उसमें थोड़ी ऊर्जा होती, वह उसे अपनी कहानी सुनाता था। अब तक पार्वती जान चुकी थीं कि वह राजा कैसे बना और अंधका ने उसे कैसे धोखा दिया। नारा द्वारा अंधका के वर्णन से मातृकाओं को यह स्पष्ट हो गया था कि उन्हें उससे निपटने में सावधानी बरतनी होगी।

'प्रहलाद कैसा है? वह क्या कर रहा है?' चामुंडी ने पूछा।

'मैंने उसे मारने के लिए एक दल भेजा था।' नारा की आवाज़ थकी हुई लग रही थी। वह अस्वस्थ था, ठीक से खाना खाने और सही दवाइयाँ लेने के बावजूद वह ज़्यादा हिल-डुल नहीं पा रहा था। 'उसने मुझे गद्दी से हटाने की कोशिश की।'

'क्या वह मर गया?' ब्राह्मणी ने धीमी आवाज़ में पूछा। 'यह आश्चर्यजनक है क्योंकि तुम दोनों काफी करीब लगते थे।'

'हम हैं। मतलब, हम थे।' नारा ने सिर हिलाया। 'लेकिन... वह पूरी तरह से मेरे खिलाफ है और मुझे खुद को बचाना होगा। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।'

मातृकाओं ने एकमत होकर सिर हिलाया। उन्होंने नारा को यह नहीं बताया कि प्रहलाद ही स्कंद हो सकता है—वह बालक जो इलवर्ती देश को बचा सकता है।

जब वे नारा को आराम करने देने के लिए उसके तम्बू से बाहर चले गए, तो ब्राह्मणी ने पूछा: 'हमें उससे राज्य के बारे में सही सवाल पूछना शुरू करना होगा। हमें अंदर जाकर वह काम करना होगा जिसके लिए हम यहां आए हैं।'

पार्वती ने कहा, 'उसे आराम करने दो।'

ब्राह्मणी ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। 'तुम चुप हो। क्या हुआ?'

'कुछ नहीं।'

'तुम टालमटोल कर रहे हो। क्यों?'

पार्वती ने अपने जबड़े भींच लिए। 'उम, हम इतने करीब हैं कि मुझे अंधका को मारने का मन नहीं कर रहा है। वह अब भी मेरा बेटा है। वह अब भी मेरा लाडला है। और मैं बस... मुझे नहीं पता। मैं डर रही हूँ।'

ब्राह्मणी ने पार्वती के कंधों पर हाथ रखा। 'कोई बात नहीं। हम समझ गए। हम भी इसी दौर से गुज़रे थे, लेकिन हमने महसूस किया कि जो हमने करने का ठान लिया है, वही करना सबसे अच्छा है।'

'हां,' पार्वती ने सिर हिलाया।

साथ ही, हमें प्रहलाद को नरसिम्हा से बचाना होगा। हम उस लड़के को शिकार नहीं बनने दे सकते।'

'बिल्कुल। लेकिन नारा को कुछ मत बताना।'

आने वाले दिनों में, नारा ने मातृकाओं को साम्राज्य के बारे में और अधिक जानकारी दी: वे स्थान जहाँ से वे घुसपैठ कर सकती थीं, प्रवेश द्वार कहाँ थे, सैनिकों की शिफ्टें क्या थीं। अब मातृकाओं को इस बात का अच्छा अंदाजा हो गया था कि अंधका कहाँ रहता है और वहाँ कैसे पहुँचा जा सकता है।

नरसिम्हा ने राजा के रूप में पुनः ताजपोशी की उम्मीद में उन्हें सब कुछ बता दिया। वह भगोड़ा कहलाना नहीं चाहता था। बहुत से लोग उसका सम्मान करते थे और उसकी परवाह करते थे। वह यूँ ही छोड़कर नहीं जा सकता था।

अंततः, एक रात पार्वती ने निश्चय किया कि अब समय आ गया है। उन्होंने मातृकाओं को योजना समझाई। उन्होंने नक्शे की ओर इशारा करते हुए कहा, 'तुम यहाँ से छलांग लगाओगी और मैं पहरेदार मीनार पर हमला करूँगी। हमें सीवर के रास्ते प्रवेश करना होगा, पिछले दरवाजे तक आना होगा और चुपचाप अंदर जाना होगा। फिर हमें पहरेदारों को मार गिराना होगा और तीसरी मंजिल पर जाना होगा।'

वे सभी ध्यान से सुन रहे थे, जबकि नारा अपनी छड़ी के सहारे कमजोरी से खड़ा था।

'नारा, मुझे लगता है कि तुम हमारे साथ नहीं आओगी।'

'मैं चाहता हूँ। मैं वाशकल को अपने हाथों से मारना चाहता हूँ क्योंकि उसने मुझे धोखा दिया है।' वह रुक गया, स्थिर खड़ा नहीं हो पा रहा था। 'लेकिन मुझे लगता है कि मुझे यहीं रुकना चाहिए। मैं अभी भी ठीक हो रहा हूँ।'

आधी रात के सन्नाटे में, वे साजिश की योजना पर चर्चा करते रहे, और सभी खामियों को दूर करते रहे। अंततः, उनके पास एक अचूक योजना तैयार हो गई।

निर्धारित दिन पर, जब वे कश्यपपुरी के लिए प्रस्थान करने की तैयारी कर रहे थे, तभी एक तीर तंबू में आया और एक मातृका के सीने में जा लगा।

ब्राह्मणी दर्द से चीख उठी और गिर पड़ी। पार्वती नरसिम्हा और चामुंडी के साथ तुरंत अपने तम्बू से बाहर भागीं।

उनके सामने, घोड़े पर सवार, वाशकल और कई सैनिकों के साथ, अंधका था। वह पहले से कहीं अधिक बलवान दिख रहा था और उसकी त्वचा पारदर्शी थी। उसके बगल में नारंगी बालों वाला एक लड़का था जो मुस्कुरा रहा था।

नारा लंगड़ाते हुए आगे बढ़ा, उसके दांत बाहर निकले हुए थे और उसके बाल चमक रहे थे। 'तुमने हमें ढूंढ लिया।'

'और हमने तुम्हें ढूंढ लिया!' वाशकल ने खुशी से ताली बजाई। 'मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि तुम्हें इतनी आसानी से, वह भी यहाँ, कुछ महिलाओं की देखरेख में पा सकूँगा।'

'हम तुम्हें ढूंढने आए थे, लेकिन हमें कुछ और मिल गया। हम्म,' अंधका ने मुंह बनाया। 'लगता

है तुम चुपचाप हार मानकर मरना नहीं चाहते। तुम्हें हार मानना सीखना होगा।'

वह अपने घोड़े से उतरा। उसके सैनिक धनुष, ढाल और तलवारों से लड़ने के लिए तैयार थे। लगभग पचास सैनिकों की तुलना में मुट्ठी भर मातृकाएँ और एक कमजोर नरसिम्हा थे। युद्ध का पलड़ा अंधक के पक्ष में झुका हुआ था।

'मैं तुम सबको खत्म कर दूंगा,' अंधका ने घोषणा की।

'और मैं तुम्हें यहीं छोड़ता हूँ। मेरे पास लड़ने से ज़्यादा ज़रूरी काम हैं। मेरे आदमी तुम्हारा ख्याल रखेंगे।' वाशकल ने एक शरारती मुस्कान के साथ कहा।

पार्वती मुस्कुराईं। चलिए शुरू करते हैं।

तीर बाएँ से दाएँ उड़ने लगे। नारा ने अपनी छड़ी फेंक दी और गरज और तूफ़ान को बरसा दिया, जिससे कई सैनिक घायल हो गए, ताकि अंधका से लड़ रहे मातृकाओं को सहायता मिल सके।

नारा ने कुछ सैनिकों को मातृकाओं की ओर बढ़ते देखा। वह दहाड़ा और उन पर हमला कर दिया। एक सैनिक ने उसे चाकू मारने की कोशिश की, लेकिन नारा ने सैनिक को चकमा देकर उस पर बिजली गिरा दी।

मुझे वाशकल का पीछा करना होगा। उसे मरना होगा।

नरसिम्हा ने अपनी उंगलियों से बिजली प्रवाहित करके सैनिकों को झटका दिया, और तब तक नहीं रुके जब तक उन्हें यह विश्वास नहीं हो गया कि मातृकाएँ बाकी स्थिति को संभाल लेंगी। वे पास ही हिनहिना रहे एक घोड़े पर सवार होकर वाशकल की ओर दौड़ पड़े।

जैसे ही नारा वाशकल के करीब पहुंचा, उसे एहसास हुआ कि वह घिनौना आदमी विषैले तीरों से लैस है। नारा को उनमें से हरे रंग का भयानक धुआं उठता हुआ दिखाई दिया। वाशकल मुड़ा और नारा पर तीर चलाया, जो बाल-बाल चूक गया, लेकिन फिर उसने एक और तीर चलाया जो नारा के कंधे पर लगा।

नारा घोड़े से गिर पड़ा। दर्द से कराहते हुए उसने विषैला तीर निकाला। उसे पता था कि उसके शरीर पर दोबारा लकवा हावी होने से पहले उसके पास ज्यादा समय नहीं बचा है, इसलिए उसने बिजली का आह्वान किया और उससे एक तेज बिजली बनाई। उसने उसे वाशकल की ओर निशाना बनाया।

बिजली का झटका वाशकल पर लगा और उसे तुरंत बिजली का झटका लगा। वह जमीन पर गिर पड़ा।

नारा यह देखने के लिए दौड़ा कि वाशकल जीवित है या मृत। उसने देखा कि वाशकल लगभग हिल-डुल नहीं रहा था। वह उस व्यक्ति के पास घुटनों के बल बैठ गया, जिसकी त्वचा बिजली के तेज झटके से जल गई थी। हालाँकि, उसकी आँखें अभी भी हिल रही थीं। वह अपनी अंतिम साँसें ले रहा था।

'तुम्हें पता है जब इस तरह बिजली का झटका लगता है, तो खून खौल उठता है। अभी तुम्हें यही दर्द हो रहा है। मेरी दुआ है कि तुम मर जाओ,' नारा ने कहा और पीछे मुड़े बिना चली गई।

अजीब बात यह थी कि उसे जीत और घबराहट दोनों महसूस हो रही थी।

पार्वती अपने भाले से पूरी ताकत और ऊर्जा लगा रही थीं, लेकिन अंधक के मुक्के और ढाल उन पर भारी पड़ रहे थे। उसने ब्राह्मणी का गला पकड़कर उन्हें मांस के टुकड़े की तरह दूर फेंक दिया, फिर पार्वती की ढाल भी फेंक दी और उन्हें भी रास्ते से हटा दिया।

'तुम्हें मेरे प्रकोप का सामना करना पड़ेगा,' उसने चामुंडी को पकड़कर अपनी ढाल से उस पर प्रहार करते हुए कहा। जैसे ही वह गिरी, उसने ढाल को उसके गले पर वार किया और उसे दबाकर गला घोंटने की कोशिश की।

ब्राह्मणी खड़ी हुई और पार्वती की ओर देखा। 'मैं उसका ध्यान भटकाती हूँ। तुम हमला करो।'

पार्वती ने सिर हिलाया। ब्राह्मणी ने अंधक पर हमला किया और उसकी आँखों पर वार करते हुए उसे दर्द से तड़पा दिया। पार्वती अंधक के पैरों के बीच से फिसलकर निकली और अपना भाला उसके पैरों पर मारा, जिससे उसके पैर कट गए और गहरे घाव हो गए।

अंधक गुर्राया और ब्राह्मणी को पार्वती पर पटक दिया। दोनों मातृकाएँ कराह उठीं।

पार्वती ने कहा, 'वह बहुत शक्तिशाली हो गया है।'

जब तक वे उठे, नरसिम्ही और चामुंडी उससे लड़ रहे थे। अंधका ने अपनी ढाल से उन पर प्रहार किया और उनकी हड्डियाँ तोड़ दीं। फिर उसने नरसिम्ही की गर्दन मरोड़ दी।

ब्राह्मणी भय से चीख पड़ी। पार्वती भी चीख पड़ी।

हमें उसे चौंकाने की जरूरत है ताकि हम उसे हरा सकें।

वह चामुंडी को भी चोट पहुँचाने ही वाला था कि पार्वती चिल्लाईं: 'मुझे कूदने के लिए एक मंच दो।'

ब्राह्मणी और पार्वती दोनों अंधक की ओर दौड़ीं। कुछ कदम आगे पहुँचकर ब्राह्मणी अचानक अंधक के सामने घुटने टेक बैठीं। अंधक यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि उनके पास कोई हथियार नहीं था। पार्वती ने ब्राह्मणी के कंधे का सहारा लेकर भाला ऊपर उठाते हुए छलांग लगाई...

अंधका ने अपनी ढाल ऊपर उठाने की कोशिश की, लेकिन चामुंडी ने उसे ऐसा करने नहीं दिया।

पार्वती ने उसकी आंख में वार किया और भाले को उसकी खोपड़ी में गहराई तक घुसा दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई।

अंधका एक पल के लिए खो गया, और फिर गिर पड़ा।

पार्वती ने उसकी ओर देखा और सोचने लगी कि कुछ देर पहले वह कितनी घबरा गई थी। लेकिन अंधका को उस हालत में देखकर उसे यकीन हो गया कि उसने सही काम किया है। इसे स्वीकार करने में कोई शर्म नहीं थी।

दुर्भाग्यवश, नरसिम्ही की मृत्यु हो चुकी थी।

लेकिन लड़ाई खत्म हो चुकी थी। बात खत्म।

अध्याय तैंतीस

कुछ ही महीने बाद ...

प्रहलाद उत्तर की ओर लौट आया था। इस बार वह शिव के किले के आसपास कहीं नहीं था। अकेले यात्रा करते हुए, वह महेंद्रगिरि पर्वतमाला में तलवार को छुपाने के लिए एक आदर्श स्थान की तलाश कर रहा था।

प्रहलाद को पूरा यकीन था कि वह तलवार को छिपाना चाहता है, भले ही वह जानता था कि यह हर युद्ध और हर लड़ाई में उसकी जीत सुनिश्चित करेगी। और उसे यह भी पूरा यकीन था कि यह तलवार किसी आम आदमी के हाथ में नहीं पड़नी चाहिए।

नरसिम्हा के साथ हुई घटना के बाद उसने यह निर्णय लिया था। उसे पूरा यकीन था कि तलवार ने फिलहाल अपना उद्देश्य पूरा कर दिया है।

नरसिम्हा शांति से सो रहे थे। अंधका और वाशकल द्वारा मातृकाओं और उन पर हमला किए हुए कई सप्ताह बीत चुके थे।

इस बीच, राज्य में हालात स्थिर नहीं थे। नारा व्यापार और अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने और अपने भरोसेमंद मंत्रिपरिषद की सहायता सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा था। वह जानता था कि शहर को सशक्त प्रशासन की आवश्यकता है और उसे अमरावती पर कब्ज़े की बात भुला देनी चाहिए। लेकिन नारा का समय अभी समाप्त नहीं हुआ था। वह सिंहासन वापस लेने के लिए तैयार था, और ज़रूरत पड़ने पर अपनी रक्षा करने के लिए भी तैयार था।

हालांकि, उसका शरीर अभी तक पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ था। कंबल और गद्दी के आराम के बावजूद, वह कमजोर महसूस कर रहा था। वह अक्सर लंगड़ाकर चलता था और उसकी बाहें कांपती थीं। वह पहले जैसा नहीं था। अच्छी बात यह थी कि उसके बुरे सपने आना बंद हो गए थे। उसकी दवाइयां उसे गहरी नींद में सुलाने के लिए काफी असरदार थीं।

नारा खुश थी।

लेकिन आज रात कुछ अलग थी। उसे डर महसूस करने के लिए सपने में जाने की ज़रूरत नहीं थी। वह सीधे डर का सामना कर रहा था, एक हथियारबंद घुसपैठिए के सामने जिसका चेहरा, आँखों को छोड़कर, छिपा हुआ था।

'तुम कौन हो?' नारा ने पूछा। वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था, सिवाय झींगुरों की चहचाहट के।

घुसपैठिए ने अपना मुखौटा उतार दिया।

'प्रहलाद' नारा ने गले में अटकी हुई बात को निगलते हुए कहा, 'तुम्हें देखकर अच्छा लगा, बेटा। काफी समय हो गया।'

नारा ने प्रहलाद के हाथ में तलवार देखी; उसने पहले कभी ऐसी तलवार नहीं देखी थी। उसकी गुणवत्ता देखकर वह दंग रह गया और बोला, 'मुझे लगता है तुम मुझे मारने आए हो।'

'मैं अब भी दुविधा में हूँ,' प्रहलाद ने कहा। वह गंभीर और आहत दिख रहा था।

'लेकिन तुम मुझे मार नहीं सकते। मुझे मारा नहीं जा सकता,' नारा ने अपनी छाती पर श्रीवत्स

चिन्ह दिखाते हुए कहा।

मुझे नहीं लगता कि यह सच है। मेरे पास इसका समाधान है।

प्रहलाद के बोलने के आत्मविश्वास को देखकर नारा आश्चर्यचकित रह गई और डर गई। 'तुम अंदर कैसे आ गए?'

'आपने मातृकाओं को शहर और उसकी सुरक्षा व्यवस्था के बारे में सब कुछ बता दिया था। मुझे पता था कि कब चुपके से प्रवेश करना है।'

'तुम गलत कर रहे हो। जब हम दुश्मनों को मार रहे थे तब भी तुम मेरा विरोध कर रहे थे। मैं अब बेहतर इंसान हूँ,' नारा ने विनती की। 'मुझे नहीं लगता कि इसकी कोई ज़रूरत है। हम इस बारे में बात कर सकते हैं। कृपया, चलिए बैठते हैं...'

'ताकि तुम मुझे मार सको? नहीं।'

'तुमने मेरी जगह लेने की कोशिश की। मुझे धमकी दी गई थी, प्रहलाद। तुम और क्या उम्मीद कर रहे थे?'

'मुझे तुमसे सही काम करने की उम्मीद थी। मैं तुम्हारे कार्यों में हमेशा भगवान विष्णु के न्याय के मार्ग को खोजता रहा, और फिर मुझे एहसास हुआ कि मुझे ही न्याय करना होगा। जनता इसके लायक है।' उसने आह भरी और आगे कहा, 'इंद्र की बेटी की हत्या के बाद, मुझे पता चल गया था कि सत्ता तुम्हारे सिर पर चढ़ गई है।'

'मैं भी वैसा ही हूँ,' नारा ने मुस्कुराते हुए कहा। तलवार उसकी गर्दन से कुछ ही इंच दूर थी। 'क्या तुम्हें एहसास नहीं है? हम दोनों एक दूसरे से बंधे हुए हैं।'

प्रहलाद ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'क्या तुम सचमुच बदल गए हो?'

'कल आपको फर्क नजर आएगा। मैं आपको वे बदलाव दिखाऊंगा जिन्हें मैं लागू करने की योजना बना रहा हूं, ये सभी बदलाव अहिंसक हैं और धर्म के अनुरूप हैं। कृपया समझें कि आप गलत काम कर रहे हैं।'

प्रहलाद की आँखों में नरमी आ गई। 'तुम सही कह रहे हो। मैं... उम्म...' उसने आह भरी और नारा की गर्दन से तलवार हटाने लगा। लेकिन तभी उसकी नज़र नारा के हाथ पर पड़ी और वह थम गया।

'क्या हुआ?' नारा ने प्रहलाद के चेहरे के भावों को समझने की कोशिश करते हुए पूछा।

'तुमने अपनी अंगूठी नहीं पहनी है।'

'क्या?'

'आपकी अंगूठी,' प्रहलाद ने नारा को अपनी उंगली में पहनी हुई अंगूठी दिखाते हुए कहा, जो नारा ने उसे उपहार में दी थी। 'धर्म की अंगूठी, अंगूठी—'

'मैंने शायद इसे खो दिया है। काफी भागदौड़ भरी जिंदगी रही है—'

प्रहलाद ने उसका गला काटकर उसकी सजा को बीच में ही रोक दिया। नारा के संघर्ष करने पर खून तेजी से बहने लगा।

वह हांफता और हांफता रहा जब तक उसकी आंखें बंद नहीं हो गईं और चादर पर उसकी पकड़ ढीली नहीं पड़ गई। उसके आखिरी शब्द थे: 'मैं उसे देख सकता हूँ।'

प्रहलाद टूट गया और उसने नारा के लिए मौन प्रार्थना की।

मुझे आशा है कि तुम्हें शांति मिलेगी, मेरे दोस्त। मैं सचमुच यही आशा करता हूँ।

नारा की मृत्यु के कुछ दिनों बाद, जैसे ही सूरज डूबा, इंद्र अपनी सेना के साथ अमरावती के बाहर प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने सहयोगियों और वायु के साथ, इंद्र आक्रमण के लिए तैयार थे... उनके पीछे हजारों सैनिक थे।

तो, हम कब घोड़े पर सवार होकर नरसिम्हा को युद्ध के लिए चुनौती देने की योजना बना रहे हैं?

इंद्र ने कहा, 'जब स्काउट्स ने हमें सूचना दी, तब पता चला कि वह किसी भी समय हमला कर सकता है। और यह लगभग अजीब है कि उसने अभी तक हमला नहीं किया है।'

उन्होंने एक घोड़ी को अपनी ओर आते देखा। वह एक संदेशवाहक थी, लेकिन इंद्र की जासूस नहीं। और वह एक युवती थी! वह घोड़ी से उतरी और इंद्र के एक सैनिक को एक पत्र सौंप दिया, जिसने उसका रास्ता रोक दिया।

'इसका क्या अर्थ है?' इंद्र ने पूछा।

'राजा का एक पत्र। युद्धविराम के बारे में और उनकी युद्ध न करने की इच्छा के बारे में।'

'नरसिम्हा ने हार मान ली?' इंद्र असमंजस में पड़ गए।

'नरसिम्हा नहीं। प्रहलाद। वह कश्यपुरी का नया राजा है। वास्तव में, पूरे राज्य का।'

'बच्चे,' इंद्र ने पूछा, 'नरसिम्हा को क्या हुआ?'

वह मुस्कुराई और फिर बोली, 'वह मर गया है। राजा प्रहलाद ने स्पष्ट रूप से कहा था कि वह हिंसा नहीं चाहता। वह चाहता है कि सभी लोग सद्भाव और शांति से रहें। वास्तव में, वह आपसे व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने और बाजार को विदेशियों के लिए खोलने के बारे में बात करना चाहता है ताकि अधिक राजस्व प्राप्त हो सके। वह परोक्ष रूप से शासन करना चाहता है।'

'अरे हाँ...' इंद्र ने सिर हिलाया। 'हाँ, ज़रूर।'

लेकिन बदले में, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि उन्हें कोई विश्वासघात या पीठ पीछे छुरा घोंपना नहीं चाहिए। उनके अनुसार, यह देश षड्यंत्रकारी नेताओं और नकारात्मक सोच वाले लोगों से बेहतर का हकदार है। इस देश को सिर्फ एक नायक नहीं, बल्कि कई नायकों की जरूरत है। वह चाहते हैं कि तुम भी उनमें से एक बनो। इतना कहकर लड़की अपने घोड़े पर वापस सवार हो गई।

इंद्र असमंजस में थी।

वायु ने कहा, 'मेरा मानना है कि हमें हमला करना चाहिए। हमें इस कमजोर नेतृत्व का फायदा उठाकर अपना हक छीन लेना चाहिए।'

इंद्र ने पलकें झपकाईं। 'या शायद हम अपनी चीज़ें आपस में बाँट लें। क्या यह बेहतर बात नहीं है?' उन्होंने वायु से कहा, जिसने सिर हिलाकर सहमति जताई।

वायु ने मुस्कुराते हुए कहा, 'और मैंने सोचा था कि तुमने मेरे साथ जो पहले किया था, उसका बदला लेने के लिए मैं तुम्हें इस युद्ध में मौत के मुंह में धकेल दूंगा।'

इंद्रा खिलखिलाकर हँसी। 'चलो घर चलते हैं, भाई। आराम करने का समय हो गया है।'

'अंत में!'

'हाँ अंत में।'

प्रहलाद शिखर पर पहुँचकर एक ठंडी, गुफा जैसी संरचना में प्रवेश कर गया जिसकी कोई छत नहीं थी। चारों ओर हिमखंड थे। कड़ाके की ठंड के बावजूद, प्रहलाद ने जो फर पहना हुआ था, उसके नीचे उसे गर्माहट महसूस हो रही थी।

उसे याद आने लगा कि उसने राज्य कैसे जीता था। इसमें समय लगा था। पार्वती शिव के किले में रुकी थीं, उस स्थान पर नियंत्रण स्थापित किया था और उसका पुनर्निर्माण शुरू किया था।

प्रहलाद के मन में हाल की घटनाएँ, यहाँ तक कि धृति को दिया गया उसका प्रस्ताव भी, तेज़ी से घूमने लगीं। आखिरकार उसने हिम्मत जुटाकर धृति से पूछ ही लिया था, यह जानते हुए कि वह उसे मना नहीं करेगी।

उसने तलवार को शिला पर रखा, पीछे हटकर उसे देखा। वह अब भी नरसिम्हा के खून से चमक रही थी। उसमें अब भी हिंसा की यादें बसी हुई थीं।

वह नीचे उतरने लगा, अपने घर, अपने राज्य और अपनी मंगेतर की ओर वापस जाने लगा…

उन्हें पता था कि एक दिन, कई वर्षों बाद, इस तलवार का फिर से उपयोग किया जाएगा। उन्हें आशा थी कि उस समय, यह किसी बेहतर उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस्तेमाल की जाएगी।

किसी अवतार को मारना नहीं, बल्कि उसकी मदद करना।

***** समाप्त *****

आभार

मैं अपने पाठकों को धन्यवाद देना चाहता हूँ।

मैं अपने माता-पिता को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे लेखन के लिए प्रोत्साहित किया और मुझे आज का लेखक बनने के लिए प्रेरित किया। मैं रेडिंक लिटरेरी एजेंसी की भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस श्रृंखला को हार्परकॉलिन्स इंडिया में प्रकाशित करवाने में मदद की। यह इस श्रृंखला की उनके साथ आखिरी किताब है, और हार्परकॉलिन्स ने पाठकों के बीच श्रृंखला की लोकप्रियता सुनिश्चित की है। मैं अपनी टीम, हबहॉक्स की आभारी हूँ, जिन्होंने एक शानदार कवर बनाने में मदद की। मैं अपनी चेंचिता, किरण मलिक की भी आभारी हूँ, जो लेखन प्रक्रिया के दौरान एक मजबूत स्तंभ रहीं और मेरे विचारों को साकार करने में मेरी मदद की। वह मेरे अंदर के लेखक के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं हैं।

अंत में, मैं उन सभी लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने किसी भी रूप में नरसिम्हा त्रयी का समर्थन किया है। यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। आशा है कि आपको श्रृंखला का अंतिम भाग पसंद आया होगा।

किताब के बारे में

बदला। क्रोध। न्याय।

तीन आदमी, भाग्य के बंधन में बंधे, सम्मान के कारण अलग हुए।

कौन बचेगा?

नरसिम्हा अपने जीवन में इतना क्रोधित कभी नहीं हुआ था।

हिरण्यकश्यप की मृत्यु के बाद नरसिम्हा कश्यपुरी पर शासन करता है और अपना समय बदला लेने की योजना बनाने में व्यतीत करता है। नरसिम्हा ने इंद्र को मारने की प्रतिज्ञा की है, जो चेन्चेन की मृत्यु के लिए जिम्मेदार है।

जैसे-जैसे प्रहलाद नारा के क्रोध को बढ़ते हुए देखता है, वह समझ जाता है कि नारा को रोकना ही होगा, इससे पहले कि वह और निर्दोष लोगों की जान ले ले और सब कुछ अराजकता में डूब जाए। लेकिन क्या वह वह कर पाएगा जो आवश्यक है? क्या वह अपने जीवन के एकमात्र पिता तुल्य व्यक्ति को अंधकार में डूबे बिना मार सकता है?

केविन मिसल की बेस्टसेलर नरसिम्हा त्रयी की अंतिम पुस्तक भगवान नरसिम्हा और प्रहलाद की मार्मिक, प्रेरणादायक और रोमांचक कहानी का अंत करती है।

लेखक के बारे में

केविन मिसल ने चौदह वर्ष की आयु में अपनी पहली पुस्तक लिखी और बाईस वर्ष की आयु में, सेंट स्टीफंस विश्वविद्यालय से स्नातक के रूप में, वे अपनी कल्कि श्रृंखला की पहली दो पुस्तकों के साथ बेस्टसेलर लेखक बन गए, जो बेहद सफल रहीं। केविन को फंतासी कथा साहित्य बहुत पसंद है और वे पौराणिक कथाओं के प्रशंसक रहे हैं। उनकी पुस्तकें द संडे गार्जियन, द न्यू इंडियन एक्सप्रेस और मिलेनियम पोस्ट जैसे प्रकाशनों में प्रकाशित हो चुकी हैं। वे गुरुग्राम में रहते हैं और उनसे kevin.s.missal@gmail.com पर संपर्क किया जा सकता है।

केविन मिसल द्वारा भी।

नरसिम्हा (नरसिम्हा त्रयी का पहला भाग)

हिरण्यकश्यप (नरसिम्हा त्रयी का दूसरा भाग)

30 साल

HarperCollins *Publishers* India

हार्परकॉलिन्स में, हम सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ सुनाने और हर संभव प्रारूप में अपनी पुस्तकों के लिए व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचने में विश्वास रखते हैं। हमने 30 साल पहले प्रकाशन शुरू किया था; तब से बहुत कुछ बदल गया है, लेकिन जो चीज़ स्थिर रही है वह है हमारे लेखकों का अपनी पुस्तकें लिखने का जुनून, पाठकों का उन्हें ग्रहण करने का प्रेम और प्रकाशक के रूप में प्रकाशन प्रक्रिया का हिस्सा बनने में हमें मिलने वाली अपार खुशी और उत्साह।

पिछले कई वर्षों में, हमें उपमहाद्वीप और दुनिया भर की कुछ बेहतरीन रचनाओं और भारत के प्रकाशन इतिहास की कुछ सबसे बड़ी बेस्टसेलर पुस्तकों को प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमारी पुस्तकों और लेखकों ने अनगिनत पुरस्कार जीते हैं, और हमें स्वयं सबसे अधिक बार 'वर्ष का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशक' का पुरस्कार मिला है। लेकिन हमारे लिए इससे बढ़कर कुछ नहीं है कि लाखों लोगों ने हमारी प्रकाशित पुस्तकें पढ़ी हैं, और कहीं न कहीं, हमारी किसी पुस्तक ने बदलाव लाने में योगदान दिया है।

जैसे ही हम अपने चौथे दशक में कदम रखते हैं, हम उस एक शब्द की ओर लौटते हैं - एक ऐसा शब्द जो इन सभी वर्षों में हमारे लिए प्रेरक शक्ति रहा है।

पढ़ना।

Harper Collins | 4th | HARPER PERENNIAL | HARPER BUSINESS | HARPER BLACK | हार्पर हिन्दी

HarperCollins Children'sBooks | HARPER DESIGN | HARPER VANTAGE | Harper Sport

हमसे बात करें

ट्विटर पर बातचीत में शामिल हों

http://twitter.com/HarperCollinsIN

हमारी किताबों से संबंधित पोस्ट ढूंढने और अपने दोस्तों के साथ साझा करने के लिए हमें फेसबुक पर लाइक करें।

http://www.facebook.com/HarperCollinsIndia

इंस्टाग्राम पर हमारी फोटो स्टोरीज़ को फॉलो करें

http://instagram.com/harpercollinsindia/

Tumblr पर हमारी किताबों से जुड़ी मज़ेदार तस्वीरें, उद्धरण और बहुत कुछ पाएं।

http://www.tumblr.com/blog/harpercollinsindia

भारत में पहली बार हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स द्वारा 2023 में प्रकाशित।
चौथी मंजिल, टावर ए, बिल्डिंग नंबर 10, डीएलएफ साइबर सिटी,
डीएलएफ फेज II, गुरुग्राम, हरियाणा – 122002
www.harpercollins.co.in
2 4 6 8 10 9 7 5 3 1
कॉपीराइट © केविन मिसल 2023
पी-आईएसबीएन: 978-93-5489-294-3
ईपब संस्करण © दिसंबर 2022 ISBN: 978-93-5489-503-6
यह एक काल्पनिक रचना है और इस पुस्तक में वर्णित सभी पात्र और घटनाएँ लेखक की कल्पना की उपज हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।
केविन मिसल इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करते हैं।
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से प्रसारित नहीं किया जा सकता है।
कवर चित्रण हबहॉक्स
कवर डिज़ाइन © हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया